केन्द्रीय विद्यालय संगठन

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

जम्मू संभाग

JAMMU REGION

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

अध्ययन सामग्री (2022-23)

कक्षा- XII

हिंदी (केन्द्रिक) कोड सं. 302

मुख्य संरक्षक

डॉ. डी. मंजुनाथ

(उपायुक्त, के.वि.सं. क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू)

संरक्षक

श्री जी.एस. मेहता

(सहायक आयुक्त)

समन्वयक

श्री आर.के. श्रीवास्तव, प्राचार्य के.वि. सुंदरबनी

संकलन, सुधार एवं जाँच समिति

श्री संजय कुमार, पी.जी.टी. हिंदी, के.वि. क्र.1 उधमपुर

श्री लाल सिंह,पी.जी.टी. हिंदी, के.वि. उरी

श्री सुरेश चन्द्र शर्मा, पी.जी.टी. हिंदी, के.वि. भद्रवाह

सामग्री योगदानकर्ता

क्रम सं	शिक्षक/शिक्षिका का नाम	के.विद्यालय का नाम	पाठ/प्रकरण का नाम
01	श्री मनीष मिश्र	बारामुल्ला	1. पहलवान की ढोलक - फणीश्वर नाथ रेणु 2. उषा - शमशेर बहादुर सिंह 3. सिल्वर वेडिंग - मनोहर श्याम जोशी 4. विभिन्न माध्यमों के लिए लेखन
02	श्री संजय कुमार	क्रमांक-1 उधमपुर	1. पतंग- आलोक धन्वा 2. भक्तिन- महादेवी वर्मा 3. बाजार दर्शन- जैनेन्द्र कुमार 4. अतीत में दबे पाँव- ओम धानवी 5. अपठित बोध- गद्यांश व पद्यांश
03	श्री सुरेश चन्द्र शर्मा	भद्रवाह	1. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया 2. कैसे करे कहानी का नाट्य रूपान्तरण 3. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन
04	श्री लाल सिंह	उरी	1. कवितावली , लक्षमण मूर्च्छा और राम का विलाप - तुलसीदास 2. शिरीष के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी
05	श्री जीतेन्द्र मोसल्ल्पुरी	बांदीपोरा	1. कैमरे में बंद अपाहिज- रघुवीर सहाय 2. छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी 3. श्रम विभाजन और जातिप्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज - डॉ अम्बेडकर 4. कैसे बनता है रेडियो नाटक
06	श्री धर्मवीर बुनकर	क्रमांक-2 श्रीनगर	1. आत्म-परिचय व एक गीत - हरिवंशराय बच्चन 2. कविता के बहाने, बात सीधी थी पर - कुंवर नारायण 3. जूझ - आनंद यादव 4. विशेष लेखन स्वरुप और प्रकार
07	श्री रविन्द्र सिंह चौहान	क्रमांक-1 अखनूर	1. बादल राग - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला 2. रुबाइयां - फ़िराक गोरखपुरी 3. काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती

08	श्री महावीर प्रसाद रैगर	जिन्द्राह	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र उत्तर कुंजी सहित (सी बी एस ई द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)
09	श्री डी आर इनखिया	कारगिल	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र उत्तर कुंजी सहित (सी बी एस ई द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)
10	श्री योगेश कुमार सिंह	लेह	प्रतिदर्श प्रश्न पत्र उत्तर कुंजी सहित (सी बी एस ई द्वारा निर्धारित सम्पूर्ण पाठ्यक्रम पर आधारित)

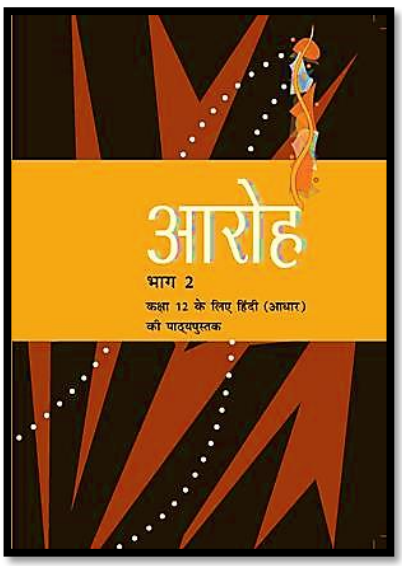

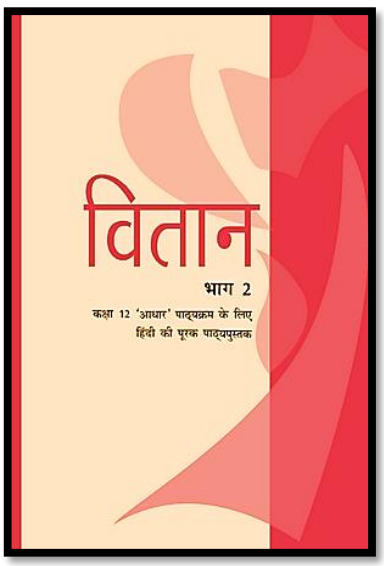

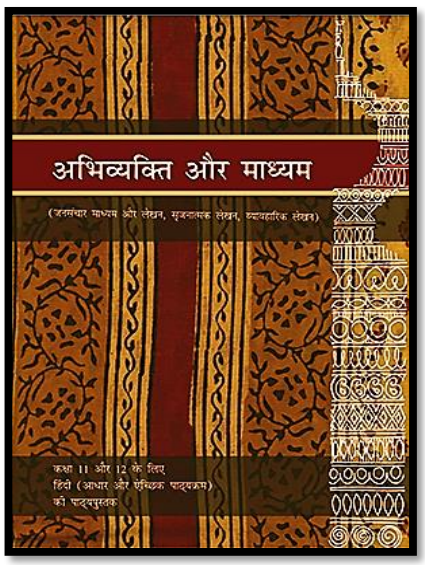

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
पाठ्यक्रम व प्रश्न-पत्र का प्रारूप	**6-7**
अपठित बोध	**8-24**
1.अपठित गद्यांश	8-17
2.अपठित पद्यांश	18-24
कार्यालयी हिंदी और रचनात्मक लेखन	**25-69**
1.पाठ 3. विभिन्न प्रकार के माध्यम के लिए लेखन	25-39
2.पाठ 4. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया	40-50
3.पाठ 5. विशेष लेखन:- स्वरूप एवं प्रकार	50-56
4.पाठ11. कहानी का नाट्यरूपांतरण	57-59
5.पाठ 12. कैसे बनता है रेडियो नाटक	59-62
6.पाठ 13. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन	62-69
पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 (काव्य खंड)	**70-137**
1. पाठ-1 आत्मपरिचय, एक गीत - हरिवंशराय बच्चन	70-77
2. पाठ-2 पतंग - आलोक धन्वा	77-84
3. पाठ-3 कविता के बहाने, बात सीधी थी पर - कुँवर नारायण	84-90
4. पाठ-4 कैमरे में बंद अपाहिज - रघुवीर सहाय	91-98
5. पाठ-6 उषा - शमशेर बहादुर सिंह	98-106
6. पाठ-7 बादल राग - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	106-111
7. पाठ-8 कवितावली, लक्ष्मण मूर्च्छा और राम का विलाप- गोस्वामी तुलसीदास	111-125
8. पाठ-9 रुबाइयाँ - फ़िराक गोरखपुरी	125-130
9. पाठ-10 छोटा मेरा खेत, बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी	130-137
पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 (गद्य खंड)	**137-189**
1. पाठ-11 भक्तिन - महादेवी वर्मा	137-146
2. पाठ-12 बाज़ार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार	146-153
3. पाठ-13 काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती	153-161
4. पाठ-14 पहलवान की ढोलक - फणीश्वरनाथ रेणु	161-172
5. पाठ-17 शिरीष के फूल - हज़ारी प्रसाद द्विवेदी	172-181
6. पाठ-18 श्रम विभाजन और जाति-प्रथा, मेरी कल्पना का आदर्श समाज- डॉ. आंबेडकर	182-189
पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2	**190-217**
1. पाठ-1 सिल्वर वैडिंग - मनोहर श्याम जोशी	190-197
2. पाठ-2 जूझ - आनंद यादव	197-208
3. पाठ-3 अतीत में दबे पाँव - ओम थानवी	209-217
प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र (1 से 5)	**218-300**

हिंदी (आधार) (कोड सं. 302) कक्षा 12वीं (2022-23) परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन

प्रश्न-पत्र दो खण्डों खंड 'अ' और 'ब' का होगा|

खंड 'अ' में 45 वस्तुपरक प्रश्न पूछे जाएँगे जिनमें से केवल 40 प्रश्नों के ही उत्तर देने होगें।

खंड 'ब' में वर्णनात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए जाएँगे।

भारांक 100 **निर्धारित समय 3 घंटे**

खंड अ (वस्तुपरक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
1.	**अपठित गद्यांश**		**15**
	अ	एक अपठित गद्यांश (अधिकतम 300 शब्दों का) (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
	ब	दो अपठित पद्यांशों में से कोई एक पद्यांश (अधिकतम 150 शब्दों का) (1 अंक x 5 प्रश्न)	05
2.	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम की इकाई एक से पाठ संख्या 3, 4 तथा 5 पर आधारित**		**05**
	बहुविकल्पात्मक प्रश्न (1 अंक x 5 प्रश्न)		05
3.	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित काव्यांश पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
	ब	पठित गद्यांश पर पाँच बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक x 05 प्रश्न)	05
4.	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 से बहुविकल्पात्मक प्रश्न**		**10**
	अ	पठित पाठों पर दस बहुविकल्पीय प्रश्न (1 अंक x 10 प्रश्न)	10
खंड- ब (वर्णनात्मक प्रश्न)			
विषयवस्तु			**भार**
5.	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम से जनसंचार और सृजनात्मक लेखन पाठ संख्या 3, 4, 5, 11, 12 तथा 13 पर आधारित**		**20**
	1.	दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेखन (6 अंक x 1 प्रश्न)	06
	2.	कहानी का नाट्यरूपांतरण / रेडियो नाटक / अप्रत्याशित विषयों पर लेखन पर आधारित दो प्रश्न (3 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 60 शब्दों में)	06
	3.	पत्रकारिता और जनसंचार माध्यमों के लिए लेखन पर आधारित तीन में से दो प्रश्न	08

		(4 अंक x 2 प्रश्न) (विकल्प सहित) (लगभग 80 शब्दों में)	
6.	**पाठ्यपुस्तक आरोह भाग-2**		**20**
	1.	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	06
	2.	काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	04
	3.	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 60 शब्दों में) (3 अंक x 2 प्रश्न)	06
	4.	गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर (लगभग 40 शब्दों में) (2 अंक x 2 प्रश्न)	04
7.	**(अ) श्रवण तथा वाचन**		**10**
	(ब) परियोजना कार्य		**10**
कुल अंक			**100**

प्रस्तावित पुस्तकें :

1. आरोह, भाग-2, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

2. वितान भाग-2, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

3.'अभिव्यक्ति और माध्यम', एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित

नोट- पाठ्यक्रम के निम्नलिखित पाठ हटा दिए गए हैं

आरोह भाग - 2	**काव्य खंड**	• गजानन माधव मुक्तिबोध सहर्ष स्वीकारा है (पूरा पाठ) • फ़िराक गोरखपुरी-गज़ल
	गद्य खंड	• विष्णु खरे-चार्ली चैप्लिन यानी हम सब (पूरा पाठ) • रज़िया सज्जाद ज़हीर-नमक (पूरा पाठ)
वितान भाग 2		• ऐन फ्रैंक- डायरी के पन्ने

प्रश्न पत्र का विस्तृत प्रारूप जानने के लिये कृपया बोर्ड द्वारा जारी आदर्श प्रश्न पत्र देखें।

अपठित बोध

अपठित गद्यांश व पद्यांश के प्रश्नों को हल करते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

1.दिए गए अवतरण को कम से कम दो बार ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए | इसे जब दूसरी बार पढ़ा जाए तो प्रश्नों को ध्यान में रखते हुए पढ़ा जाए |

2.गद्यांश/पद्यांश के मूल भाव को उचित प्रकार समझना चाहिए तथा प्रश्नों के उत्तर गद्यांश /पद्यांश में ही ढूँढने चाहिए। इसी आधार पर उपयुक्त विकल्प का चयन करना चाहिए |

3. गद्यांश/पद्यांश में सूचनाओं के माध्यम से किसी बात का वर्णन किया जाता है. उन सूचनाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

4.शीर्षक गद्यांश/पद्यांश के मूल भाव को प्रकट करता हो | शीर्षक का चयन करते समय आरंभिक या अंतिम पंक्तियों पर विशेष ध्यान देना चाहिए, लेकिन उसी आधार पर अंतिम निष्कर्ष नहीं निकाल लेना चाहिए।

5..प्रत्येक प्रश्न का उत्तर गद्यांश/पद्यांश के अनुरूप और लेखक/कवि के विचार के अनुरूप ही होना चाहिए। इसी आधार पर उपयुक्त विकल्प चुनना चाहिए |

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चुनाव कीजिए-

गद्यांश-1

समय वह संपत्ति है जो प्रत्येक मनुष्य को ईश्वर की ओर से मिली है। जो लोग इस धन को संचित रीति से बरतते हैं वे शारीरिक सुख तथा आत्मिक आनंद प्राप्त करते हैं। इसी समय की संपत्ति के सदुपयोग से एक जंगली मनुष्य सभ्य और देवता स्वरूप बन जाता है। इसी के द्वारा मूर्ख-विद्वान, निर्धन-धनवान, अज्ञ-विज्ञ और अनुभवी बन सकता है। संतोष, हर्ष तथा सुख मनुष्य को प्राप्त नहीं होता जब तक वह उचित रीति से समय का सदुपयोग नहीं करता। समय निसंदेह एक रतन राशि है। जो कोई उसे अपरिमित और अगणित रूप से अंधाधुंध व्यय करता है वह दिन प्रतिदिन अकिंचन, रिक्त हस्त और दरिद्र होता जाता है। वह आजीवन खिन्न और भाग्य को कोसता रहता है। मृत्यु भी उसे इस दुख और जंजाल से छुड़ा नहीं सकती प्रत्युत उसके लिए मृत्यु का आगमन मानो अपराधी के लिए गिरफ्तारी का वारंट है। सच तो यह है कि समय की बर्बादी एक तरह की आत्महत्या है। अंतर केवल इतना ही है कि आत्मघात सर्वदा के लिए जीवन जंजाल से छुड़ा देता है और समय के दुरुपयोग से एक निर्दिष्ट काल तक जीवन मृत्यु की दशा में बना रहता है ऐसे ही मिनट, घंटे और दिन प्रमाद और अकर्मण्यता में बीतते जाते हैं। यदि मनुष्य विचार करें गणना करें तो उसकी संख्या महीनों तथा वर्षों तक पहुँचती है। यदि उससे कहा जाता है कि तेरी आयु के 10- 5 बरस घटा दिए गए तो निसंदेह उसके हृदय पर

भारी आघात पहुँचता है परंतु वह स्वयं निश्चेष्ट बैठे हुए अपने अमूल्य जीवन को नष्ट कर रहा है और क्षय व विनाश पर कुछ भी शक नहीं करता | संसार में सबको दीर्घायु प्राप्त नहीं होती है परंतु सबसे बड़ी हानि जो समय की दुरपयोगिता और अकर्मण्यता से होती है वह यह है कि पुरुषार्थहीन और निरीह पुरुष के विचार अपवित्र और प्रदूषित हो जाते हैं। वास्तव में बात तो यह है कि मनुष्य कुछ ना कुछ करने के लिए ही बनाया गया है। जब चित और मन लाभदायक कर्म में रत नहीं होते तब उनका झुकाव बुराई और पाप की ओर अवश्य हो जाता है। इस हेतु यदि मनुष्य सचमुच ही मनुष्य बनना चाहता है तो सब कर्मों से बढ़कर श्रेष्ठ कार्य उसके लिए यह है कि उसे एक पल भी व्यर्थ न गवाएं | प्रत्येक कार्य के लिए पृथक समय और प्रत्येक समय के लिए पृथक कार्य निश्चित करें |

1. ईश्वर ने मनुष्य को क्या संपत्ति दी है?

(क) भौतिक संपत्ति (ख) समय की संपति

(ग) सोने चांदी की संपति (घ) धन दौलत की संपति

2. आत्मिक आनंद कौन लोग प्राप्त करते हैं ?

(क) जो लोग बहुत परिश्रम करते हैं (ख) जो लोग बहुत धन कमाते हैं

(ग) जो लोग समय की संपत्ति को संयमित रूप से खर्च करते हैं

(घ) जो लोग ईश्वर का भजन करते हैं

3. मृत्यु किस को इस जंजाल से नहीं छुड़ा सकती?

(क) जो लोग बहुत धन व्यय करते हैं (ख) जो लोग परिश्रम नहीं करते हैं

(ग) जो लोग समय को व्यर्थ करते हैं (घ) जो लोग धन की चिंता करते हैं

4. लेखक ने आत्महत्या किसे कहा है? क.

(क) समय का महत्व ना समझने वाले को (ख) धन का महत्व समझने वाले को

(ग) शरीर का महत्व न समझने वाले को (घ) विद्या का महत्व न समझने वाले को

5. लेखक मनुष्य को क्या करने की सलाह देता है?

(क) परिश्रम करने के लिए (ख) धन अर्जित करने के लिए

(ग)प्रत्येक कार्य के लिए पृथक समय व प्रत्येक समय के लिए पृथक कार्य निश्चित करने की

(घ) दिन रात परिश्रम करने के लिए

6. लेखक ने दरिद्र किसे कहा है?

(क) समय की संपत्ति को अंधाधुंध खर्च करने वाले को

(ख) माता पिता की संपत्ति को अंधाधुंध खर्च करने वाले को

(ग) अपनी संपति को अंधाधुंध खर्च करने वाले को

(घ) इनमें से कोई नहीं

7. इस गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है-

(क) समय की संपति (ख) ईश्वर का महत्व

(ग) अच्छा मनुष्य (घ) गिरफ्तारी का वारंट

8. सदुपयोग शब्द का विलोम शब्द है-

(क) सही उपयोग (ख) अनुप्रयोग

(ग) दुरुपयोग (घ) इनमें से कोई नहीं

9. अकर्मण्यता शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय है-

(क) अ तथा ता (ख) अ तथा याता

(ग) अक तथा आ (घ) इनमें से कोई नहीं

10.अमूल्य शब्द का अर्थ है-

(क) जिसका कोई मूल्य ना हो (ख) जिसका मूल्य आँका न जा सके

(ग) जिसका थोड़ा मूल्य हो (घ) इनमें से कोई नहीं

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	ग	ग	क	ग	क	क	ग	क	ख

गद्यांश-2

यद्यपि यह एक शाश्वत सत्य है फिर भी मृत्यु से सबको भय लगता है। वास्तव में भय किसी वस्तु से अलग हो जाने का है। जो छूटता है उसमें भय है, धन छूट जाएगा, परिवार छूट जाएगा, इसका भय है। त्याग में भय है, किस त्याग में भय हैं ? जिन वस्तुओं को या परिजनों को हम उपयोगी समझते हैं उनके त्याग में भय है। वहाँ भय नहीं होता जहाँ त्याग अपनी इच्छा से किया जाता है जैसे कपड़ा पुराना हो जाता है तो इच्छा से त्याग करते हैं। ऐसे त्याग में संतोष है। दुख वहाँ होता है जहाँ कोई अपनी वस्तु छिन या छूट जाती है। हम कपड़ा या धन दूसरों को दे सकते हैं परंतु एक वस्तु है प्राण जो हम नहीं दे सकते। शरीर से प्राण निकल जाए तो कहते हैं मृत्यु हो गई। इसमें दुख होता है क्योंकि प्राण को हम इच्छा से नहीं छोड़ते। पंच भूतों से बनाया हुआ यह शरीर पहले विकास को प्राप्त होता है और फिर ह्रास की ओर उन्मुख होता है। पंचमहाभूतों के साथ आत्मा का जुड़ जाना जन्म है। पाँच महाभूतों से आत्मा का अलग हो जाना मृत्यु है। हमारे मनीषी ही बताते हैं कि जो लोग मृत्यु से निर्भय होकर जीवन को पूर्णता के साथ और अर्थपूर्ण जीते हैं वे ही अपना जीवन विश्वास से जी पाते हैं। परंतु हम में से अधिकतर जीवन के परिवर्तन और उलटफेर में इतने तटस्थ और उदासीन रहते हैं कि मृत्यु के बारे में अज्ञानी से बने रहते हैं। मृत्यु अपने शिकार पर बाज पक्षी की तरह चुपचाप आक्रमण कर देती है | गुरु तेगबहादुर जी चेतावनी देते हैं प्रिय मित्र मृत्यु स्वच्छंद है वह कभी भी अपने शिकार के

भक्षण के लिए झपट सकती है वह चुपचाप ही आक्रमण कर देती है | अतः आनंद और प्रेम के साथ जियो |

1. शाश्वत सत्य क्या है ?

(क) जीवन (ख) मृत्यु (ग) शोक (घ) सुख

2. मृत्यु से भय क्यों लगता है?

(क) सब कुछ छूट जाने के कारण (ख) फल की चिंता के कारण

(ग) नरक के डर के कारण (घ) अगले जन्म की चिंता के कारण

3. त्याग से भय क्यों लगता है?

(क) बेकार की वस्तुएं छोड़ने के कारण (ख) उपयोगी वस्तुएं छूटने के कारण

(ग) लोभ लालच के कारण (घ) इनमें से कोई नहीं

4. हम क्या चीज दूसरों को नहीं दे सकते?

(क) धन दौलत (ख) भोजन वस्त्र

(ग) प्राण (घ) घर

5. हमारा शरीर किससे बना है?

(क) पांच महा भूतों से (ख) चार महा भूतों से

(ग) सात महा भूतों से (घ) इनमें से कोई नहीं

6. जन्म क्या होता है?

(क) पांच महा भूतों से आत्मा का मिलना (ख) सात महाभूतों से आत्मा का मिलना

(ग) पांचवा भूतों से आत्मा का निकलना (घ) इनमें से कोई नहीं

7. मृत्यु आती है-

(क) अचानक बिना बताए हुए (ख) पूर्व सूचना देकर

(ग) आने का आहट देकर (घ) इनमें से कोई नहीं

8. मृत्यु की तुलना किस पक्षी से की गई है?

(क) हंस से (ख) बाज पक्षी से

(ग) कौआ से (घ) उल्लू से

9. शाश्वत शब्द का अर्थ है-

(क) अदृश्य (ख) हमेशा रहने वाला

(ग) थोडे समय रहने वाला (घ) कभी-कभी दिखने वाला

10. मनीषी शब्द के अर्थ को प्रकट करने वाला शब्द नहीं है-

(क) मूर्ख (ख) विद्वान

(ग) ज्ञानवान (घ) ऋषि

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	क	ख	ग	क	ग	क	ख	ख	क

गद्यांश-3

दुनिया शायद अभी तक के सबसे बड़े संकट से जूझ रही है। समय को इस महामारी ने हर किसी के जीवन में हलचल दहै। इस महामारी ने जीवन की सहजता को पूरी तरह से कति कर दिया है। भारत में इतनी अधिक आबादी है कि इसमें किसी नियम कायदे को पूरी तरह से अमल में लाना अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। इस महामारी के संक्रमण को रोकने के उद्देश्य को पूर्ण बंदी लागू की गई और इसे कमोबेश कामयाबी के साथ अमल में भी लाया गया। परंतु यह भी सच है कि जिस महामारी से रहे हैं, उससे लड़ने में मुख्य रूप से हमारे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता की बड़ी भूमिका है, लेकिन सबसे बड़ी चिंता बच्चों और बुजुगों को होती है। इस मामले में अधिकतर नागरिकों ने जागरूकता और सहजबोध की वजह से अनेक सावधानियाँ बरती है, लेकिन इसके समानान्तर अन्य कई समस्याएं खड़ी हुई है। जैसे, आर्थिक गतिविधियाँ जिस प्रकार बुरी तरह प्रभावित हुई है, उसने बहुत सारे लोगों के सामने संकट और ऊहापोह की स्थिति उत्पन्न कर दी है। एक तरफ नौकरी और उसकी तनख्वाह पर निर्भर लोगों को लाचारी यह है कि जहाँ उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि उन्हें नौकरी से नहीं निकाला जाएगा, वेतन नहीं रोका जाएगा, वहीं उनके साथ हुआ उल्टा | नौकरी गई, कई जगहों पर तनख्वाह नहीं मिली या कटौती की गई और किराये के घर तक छोड़ने की नौबत आ गई। इस महामारी का दूसरा असर शिक्षा जगत पर भी पड़ा है, उसका समाधान कैसे होगा, यह लोगों के लिए समझना मुश्किल हो रहा है।

विशेष तौर पर स्कूली शिक्षा पूरी तरह से बाधित होती दिख रही है। फिर भी, इसमें किए गए वैकल्पिक इंतजामों की वजह से स्कूल भले बंद हो, लेकिन शिक्षा जारी रखने की कोशिश की गई है। स्कूल बंद होने पर बहुत सारे शिक्षकों की वेतन की चिंता प्राथमिकता नहीं थी, बच्चों के भविष्य की चिंता उन्हें सता रही है। हालाँकि एक ओर, एक बड़ी संख्या उन बच्चों की है, जो लैपटॉप या स्मार्टफोन के साथ जीते हैं, लेकिन दूसरी ओर बहुत शिक्षक ऐसे भी है, जिन्हें कम्प्यूटर चलाना ही नहीं आता। उन सबके सामने चुनौती है ऑनलाइन कक्षाएं लेने की, परंतु उन्होंने हार नहीं मानी और तकनीक को खुले दिल से सीखा। इस तरह फिलहाल जो परिस्थिति है, उसमें पढ़ाई-लिखाई को जारी रखने की पूरी कोशिश की जा रही है।

1.उपर्युक्त गद्यांश किस विषय-वस्तु पर आधारित है?

(क)बेरोजगारी पर (ख) शिक्षा की समस्या पर

(ग) आर्थिक संकट पर (घ) महामारी के प्रभाव पर

2.पूर्णबंदी लागू क्यों की गई?

(क) संक्रमण को रोकने के लिए (ख) लोगों की आवाजाही को रोकने के लिए

(ग) नियम लागू करने के लिए (घ) लोगों द्वारा नियम न मानने के कारण

3.हमें बच्चों और बुजुर्गों की चिंता क्यों है?

(क) कमजोर और अक्षम होने के कारण (ख) प्रतिरोधक क्षमता के अभाव के कारण

(ग) अधिक बीमार रहने के कारण (घ) बीमारी का अधिक प्रभाव पड़ने के कारण

4.स्कूली शिक्षा को जारी रखने की कोशिश क्यों को जा रही है?

(क) प्राइवेट स्कूलों के दवाब के कारण (ख) शिक्षा जारी रखने के लिए

(ग) बच्चों के भविष्य की चिंता के कारण (घ) शिक्षकों के वेतन के कारण

5.ऑनलाइन शिक्षा एक चुनौती कैसे है?

(क) शिक्षक की अकुशलता के कारण (ख) तकनीकी रूप से योग्य न होने के कारण

(ग) तकनीकी साधन न होने के कारण (घ) अभिभावकों की रुचि न होने के कारण

6.शिक्षकों ने तकनीक को खुले दिल से क्यों सीखा?

(क) ऑनलाइन पढ़ाने को विवशता के कारण (ख) अपने वेतन के कारण

(ग) बच्चों के भविष्य की चिंता के कारण (घ) अभिभावकों के भय के कारण

7.महामारी के समय में भी शिक्षकों ने शिक्षक होने का बोध कैसे कराया है?

(क) बच्चों की शिक्षा की चिंता द्वारा (ख) अपनी नौकरी की चिंता द्वारा

(ग) अपने वेतन की चिंता द्वारा (घ) तकनीक सीखने की हिम्मत द्वारा

8.जीवन की सहजता के बाधित होने से आप क्या समझते है?

(क) जीवन में हलचल उत्पन्न हो जाना (ख) जीवन में संकट उत्पन्न हो जाना

(ग) जीवन में संघर्ष का बढ़ जाना (घ) जीवन में आराम न होना

9.भारत में नियम-कानून लागू करना अपने आप में चुनौती क्यों है?

(क) आबादी अधिक होने के कारण

(ख) लोगों के अशिक्षित होने के कारण

(ग) लोगों द्वारा नियम न मानने के कारण

(घ) लोगों में नियम-कानून की समझ न होने के कारण

10.लोगों के जीवन में ऊहापोह की स्थिति कैसे उत्पन्न हो गई?

(क) महामारी आ जाने से (ख) आर्थिक गतिविधियाँ ठप हो जाने से

(ग) नौकरी चले जाने से (घ) वेतन न मिलने से

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	क	ख	ग	क	ग	क	ग	क	ख

गद्यांश-4

आज किसी भी व्यक्ति का सबसे अलग एक टापू की तरह जीना संभव नहीं रह गया है। मानव समाज में विभिन्न पंथों और विविध मत-मतांतरों के लोग साथ-साथ रह रहे हैं। ऐसे में यह अधिक आवश्यक हो गया है कि लोग एक-दूसरे को जाने; उनकी आवश्यकताओं को, उनकी इच्छाओं-आकांक्षाओं को समझें; उन्हें वरीयता दें और उनके धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों, अनुष्ठानों को सम्मान दें। भारत जैसे देश में यह और भी अधिक आवश्यक है, क्योंकि यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है। स्वामी विवेकानंद इस बात को समझते थे और अपने आचार-विचार में वे अपने समय से बहुत आगे थे। उन्होंने धर्म को सेवा के केंद्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी-देवताओं की तरह मंदिरों में स्थापित कर दिया जाए और मंदिरों से देवी-देवताओं की मनुष्य की मूर्तियों को हटा दिया जाए। उनका दृढ़ मत था कि विभिन्न धर्मो-संप्रदायों के बीच संवाद होना ही चाहिए। वे विभिन्न संप्रदायों की अनेकरूपता को उचित और स्वाभाविक मानते थे। स्वामी जी विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे और सभी को एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरुद्ध थे। वे कहा करते थे– "यदि सभी मानव एक ही धर्म को मानने लगें, एक ही पूजा-पद्धति को अपना लें और एक-सी नैतिकता का अनुपालन करने लगें, तो यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी, क्योंकि यह सब हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्राणघातक होगा तथा हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से काट देगा।"

1.'टापू की तरह' जीने से लेखक का क्या अभिप्राय है?

(क) घमंड में रहना
(ख) समाज से अलग रहना
(ग) समाज से जुड़कर रहना
(घ) विनम्र बनकर रहना

2.भारत जैसे देश में क्या आवश्यक हो गया है?

(क) धार्मिक स्वतंत्रता
(ख) एक-दूसरे के विपरीत रहना
(ग) एक-दूसरे से मिलकर रहना
(घ) अपने-अपने घर में रहना

3.विभिन्न पंथों और मत-मतांतरों के लोग मिलकर नहीं रहेंगे तो उसका क्या परिणाम होगा?

(क) समाज में शांति स्थापित होगी
(ख) धार्मिक संस्थानों में विवाद नहीं होगा
(ग) सभी का जीवन और अधिक कठिन हो जाएगा
(घ) सभी का जीवन सुखमय हो जाएगा

4.स्वामी विवेकानंद किस बात को समझते थे?

(क) भारत देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है

(ख) भारत में विभिन्न धर्मों, संप्रदायों के बीच संवाद नहीं होना चाहिए

(ग) भारत में सभी धर्मों को स्थान देना उचित नहीं है

(घ) भारत में धार्मिक अनुष्ठानों को महत्त्व नहीं देना चाहिए

5.विवेकानंद जी ने किसको मनुष्य की सेवा के केंद्र में रखकर आध्यात्मिक चिंतन किया?

(क) समाज को (ख) रीति-रिवाज को

(ग) अनुष्ठानों को (घ) धर्म को

6.विभिन्न धर्म संप्रदायों के बीच संवाद होने से क्या होगा?

(क) विवादों का अंत करने के लिए रास्ता मिलेगा

(ख) विभिन्न संप्रदायों की अनेकरूपता से सभी धार्मिक आस्थाओं के लोगों के विचारों का पता चलेगा

(ग) विभिन्न धार्मिक संस्थाओं व उनके मतों का भेद पता चलेगा

(घ) सभी विवादों की जड़ का पता चलेगा

7.स्वामी विवेकानंद ने सभी लोगों द्वारा एक ही धर्म, मत, पूजा पद्धति को अपनाने या मानने को कैसी स्थिति माना है?

(क) सौभाग्यपूर्ण (ख) सकारात्मक

(ग) दुर्भाग्यपूर्ण (घ) नकारात्मक

8.विवेकानंद जी ने मंदिरों में किन्हें स्थापित करने का मत दिया?

(क) देवियों को (ख) देवताओं को

(ग) दरिद्र व कुपोषण के शिकार लोगों को (घ) सामान्य मनुष्यों को

9.गद्यांश में किसकी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं का सम्मान करने की बात कही गई है?

(क) विवेकानंद जी की (ख) विभिन्न मतों को मानने वाले लोगों की

(ग) उच्च वर्ग के लोगों की (घ) निम्न वर्ग के लोगों की

10.प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?

(क) अनेकता में एकता पर (ख) धर्म आधारित समाज पर

(ग) संप्रदाय मतभेद पर (घ) समाज व्यवस्था पर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	ग	ग	क	घ	ख	ग	ग	ख	क

गद्यांश-5

भाषा का एक प्रमुख गुण है-सृजनशीलता। हिंदी में सृजनशीलता का अद्भुत गुण है, अद्भुत क्षमता है, जिससे वह निरंतर प्रवाहमान है। हिंदी ही ऐसी भाषा है, जिसमें समायोजन की पर्याप्त और जादुई शक्ति है। अन्य भाषाओं और संस्कृतियों के शब्दों को हिंदी जिस अधिकार और सहजता से ग्रहण करती है, उससे हिंदी की संभावनाएँ प्रशस्त होती है। हिंदी के लचीलेपन ने अनेक भाषाओं के शब्दों को ही नहीं, उनके सांस्कृतिक तेवरों को भी अपने में समेट लिया है। यही कारण है कि हिंदी सामाजिक संस्कृति तथा विविध भाषा-भाषियों और धर्मावलंबियों की प्रमुख पहचान बन गई है। अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि के शब्द हिंदी की शब्द-संपदा में ऐसे मिल गए हैं, जैसे वे जन्म से ही इसी भाषा परिवार के सदस्य हों। यह समाहार उसकी जीवंतता का प्रमाण है।

आज हम परहेज़ी होकर, शुद्धतावाद की जड़ मानसिकता में कैद होकर नहीं रह सकते। सूचना-क्रांति, तकनीकी विकास और वैज्ञानिक आविष्कारों के दबाव ने हमें सबसे संवाद करने के अवसर दिए है। विश्व-ग्राम की संकल्पना से हिंदी को निरंतर चलना होगा। इसके लिए आवश्यक है-आधुनिक प्रयोजनों के अनुरूप विकास और भाषा एवं लिपि से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास। इंटरनेट से लेकर बाजार तक, राजकाज से लेकर शिक्षा और न्याय के मंदिरों तक हिंदी को उपयोगी और कार्यक्षम बनाने के लिए उसका सरल-सहज होना आवश्यक है और उसकी ध्वनि, लिपि, शब्द- वर्तनी, वाक्य-रचना आदि का मानकीकृत होना भी आवश्यक है।

1.हिंदी के निरंतर प्रवाहमान रहने का क्या कारण है?

(क) संस्कृति (ख) सृजनशीलता

(ग) सीमित मानसिकता (घ) रूढ़िवादिता

2.हिंदी की संभावनाएँ कैसे प्रशस्त होती गई हैं?

(क) अन्य भाषाओं के शब्दों को सहजता से ग्रहण करने से

(ख) अपने सांस्कृतिक स्वरूप से

(ग) अपनी तटस्थता से (घ) अन्य भाषाओं को तुच्छ समझकर

3.हिंदी ने लचीलेपन के कारण क्या किया?

(क) केवल अन्य भाषा के शब्दों को ग्रहण किया

(ख) अन्य भाषाओं के शब्दों व सांस्कृतिक तेवरों को अपने में समेट लिया

(ग) अपनी सामाजिक पहचान को बनाए रखा

(घ) दूसरी भाषाओं को अधिक महत्त्व दिया

4.हिंदी भाषा के संदर्भ में शुद्धतावादी होने से क्या तात्पर्य है?

(क) गैर-हिंदी भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करना

(ख) हिंदी की बोलियों और उनके शब्दों को प्रधानता देकर हिंदी का विकास करना

(ग) क और ख दोनों (घ) केवल हिंदी को महत्त्व देना

5.आज हमें सबसे संवाद करने के अवसर किसने दिए हैं?

(क) सूचना क्रांति ने (ख) तकनीकी विकास ने

(ग) वैज्ञानिक आविष्कारों के दबाव ने (घ) उपरोक्त सभी

6.आधुनिक प्रयोजनों के अनुरूप विकास और भाषा एवं लिपि से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास करने से क्या होगा?

(क) विश्वग्राम की संकल्पना साकार हो जाएगी (ख) हिंदी की उन्नति अवरुद्ध हो जाएगी

(ग) मनुष्य यंत्रवत प्राणी बनकर रह जाएगा (घ) तकनीकी उन्नति होगी

7.हिंदी को उपयोगी और कार्यक्षम बनाने के लिए उसे कैसा होना चाहिए ?

(क) समृद्ध (ख) क्लिष्ट

(ग) सरल-सहज (घ) ये सभी

8.हिंदी अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं में भारत का प्रतिनिधित्व कब करेगी?

(क) जब सरकार की तत्परता होगी

(ख) जब जनता की इच्छाशक्ति होगी

(ग) जब सरकार की तत्परता के साथ जनता की दृढ़ इच्छाशक्ति को हिंदी से जोड़ देंगे

(घ) जब हिंदी को अधिक महत्त्व मिलने लगेगा

9.हिंदी ने अन्य भाषाओं के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए अपना स्वरूप निर्मित करके क्या किया?

(क) भारत की भौगोलिक स्थिति में परिवर्तन किया

(ख) भारत की सामाजिक संस्कृति की पहचान बन गई

(ग) हिंदी के स्वरूपों को आच्छादित किया

(घ) हिंदी के विकास को रोक दिया

10.प्रस्तुत गद्यांश किस विषयवस्तु पर आधारित है?

(क) हिंदी भाषा पर (ख) हिंदी भाषा और अन्य भाषा पर

(ग) हिंदी भाषा और तकनीकी युग पर (घ) हिंदी के विकास पर

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ख	क	ख	क	घ	क	ग	ग	ख	ग

****

अपठित पद्यांश

निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए बहुविकल्पीय प्रश्नों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चुनाव कीजिए-

पद्यांश-1

शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।
ऐसी शांति राज्य करती है
तन पर नहीं, हृदय पर,
नर के ऊँचे विश्वासों पर
श्रद्धा, भक्ति, प्रणय पर।
न्याय शांति का प्रथम न्यास है
जब तक न्याय न आता।
जैसा भी हो महल शांति का,
सुदृढ़ नहीं रह पाता।
कृत्रिम शांति शशंक आप,
अपने से ही डरती है,
खड़ग छोड़ विश्वास किसी का,
कभी नहीं करती है।
और जिन्हें इस शांति व्यवस्था में
सुख भोग सुलभ है,
उनके लिए शांति ही जीवन, सार, सिद्धि दुर्लभ है।

1.सामाजिक जीवन में अशांति का क्या कारण है?

(क) आनंद का अभाव (ख) समता का अभाव
(ग) वास्तविकता का अभाव (घ) प्रीति का अभाव

2.कृत्रिम शांति से क्या हानि संभव है ?

(क) न्याय मिलता है, शांति नहीं (ख) विद्वेष विस्तार पाता है
(ग) वास्तविक संबंधों के स्थान पर कृत्रिम भावों का प्रसार
(घ) प्राकृतिक के बजाय कृत्रिम संसाधनों की बहुलता

3.काव्यांश का संदेश क्या हो सकता है?

(क) समता व न्याय का समाज में पोषण करना चाहिए

(ख) कृत्रिम शांति और समान अवसर प्रदान करना चाहिए

(ग) योग्यता के आधार पर ही जीवन संसाधनों का बंटवारा होना चाहिए

(घ) कृत्रिम विज्ञान की सहायता से प्राकृतिक शांति स्थापित करनी चाहिए

4. कवि किस प्रकार की शांति को महत्वपूर्ण मानता है?

(क) न्याय और आर्थिक समानता पर आधारित

(ख) कृत्रिम शांति और आर्थिक समानता पर आधारित

(ग) कृत्रिम शांति से वैश्विक संघर्षों के समाधान पर आधारित

(घ) श्रद्धा, भक्ति, प्रणय व त्याग आधारित

5. देश समाज में शांति स्थापना का प्रथम न्यास न्याय को क्यों बताया गया है ?

(क) केवल न्याय और व्यवस्था द्वारा ही समाज में शांति संभव है

(ख) समानता का व्यवहार न्याय के पश्चात होता है

(ग) कृत्रिम न्याय भी न्याय को सुढ़ृढ़ करता है

(घ) न्यायालय अन्याय के ख़िलाफ़ याचिका का प्रथम सोपान हैं

1	2	3	4	5
ख	ख	क	क	ख

पद्यांश-2

प्रभु ने तुमको कर दान किए, सब वांछित वस्तु विधान किए।
तुम प्राप्त करो उनको न अहो, फिर है किसका वह दोष कहो ?
समझो न अलभ्य किसी धन को, नर हो न निराश करो मन को।
किस गौरव के तुम योग्य नहीं,कब कौन तुम्हें सुख भोग्य नहीं ?
जन हो तुम भी जगदीश्वर के, सब है जिसके अपने घर के ।
फिर दुर्लभ क्या है उसके मन को ? नर हो, न निराश करो मन को ।
करके विधि-वाद न खेद करो, निज लक्ष्य निरंतर भेद करो।
बनता बस उद्धम ही विधि है, मिलती जिससे सुख की निधि है।
समझो धिक् निष्क्रिय जीवन को, नर हो, न निराश करो मन को ।

1.वांछित वस्तुओं को प्राप्त न कर सकने में किसका दोष है ?

(क) अकर्मण्य मनुष्यों का

(ख) समाज में व्याप्त असमानता का

(ग) निराश नर नारियों का

(घ) निराशाजनक परिस्थितियों का

2.विधि-वाद का खेद कौन व्यक्त करते हैं ?

(क) भाग्यवादी लोग (ख) विधिवक्ता लोग

(ग) परिश्रमी लोग (घ) भाग्यशाली लोग

3.इस काव्यांश से क्या प्रेरणा मिलती है ?

(क) नर हैं, अतः निराश न हों (ख) आशा के साथ जगदीश्वर पर भरोसा रखें

(ग) लक्ष्य है, अतः पाने का प्रयास करें (घ) नियति निश्चित है, अतः प्रतीक्षा करें

4.इस काव्यांश से कवि के कौन से विचारों का परिचय मिलता है ?

(क) कवि अलभ्य धन अर्जित कर गौरव प्राप्ति के लिये प्रेरणा दे रहे हैं

(ख) कवि बता रहे हैं भगवान जी के लिये सभी जन एक समान हैं

(ग) कवि कर्मण्येवाधिकारस्ते का मार्ग अपना कर्म करने को कह रहे हैं

(घ) कवि कह रहे हैं निराशा त्याग कर नियति स्वीकार करनी चाहिये

5.कवि आस्तिक है, इसका पता कौन सी पंक्ति से चलता है ?

(क) समझो न अलभ्य किसी धन को, नर हो न निराश करो मन को।

(ख) करके विधि वाद न खेद करो, निज लक्ष्य निरंतर भेद करो।

(ग) जन हो तुम भी जगदीश्वर के,सब है जिसके अपने घर के ।

(घ) बनता बस उद्यम ही विधि है, मिलती जिससे सुख की निधि है।

1	2	3	4	5
क	क	ग	ग	ग

पद्यांश-3

जिसके चरणों पर धरती
और बाँहों में गंगा-जमुना जल है,
जिसके नयनों का काजल ही
उड़कर बनता बादल-दल है,
पर्वत कैसे कह दूँ इसको-
यह तो मेरा तीर्थ स्थल है।
इस तीर्थ के दर्शन से ही
मानस बन जाता है दर्पण।
यों तो इसने सबकी उन्नति
अपनी ही जैसी चाही है
सबके संग सच्चाई और,

सुंदरता की नीति निबाही है;
पर कभी किसी से झुका नहीं
इसका इतिहास गवाही है,
ऐसे गर्वोन्मत्त प्रहरी पर
न्योछावर मेरा तन-मन-धन

1.प्रस्तुत पद्यांश में कवि किसकी चर्चा कर रहा है?

(क) अपनी जन्म भूमि की (ख) हिमालय पर्वत की

(ग) प्रकृति चित्रण की (घ) काव्य रचना की

2.कवि ने अपना तीर्थ स्थल किसे माना है?

(क) मंदिर को (ख) मस्जिद को

(ग) हिमालय पर्वत को (घ)) मातृभूमि को

3.तीर्थ स्थल का दर्शन करने का क्या परिणाम होता है?

(क) मन दर्पण के समान स्वच्छ बन जाता है।

(ख) मन में संन्यास लेने की प्रवृत्ति जागृत हो जाती है

(ग) मन शंकाओं से घिर जाता है।

(घ) मन का अधूरापन भर जाता है |

4.पद्यांश के अनुसार इतिहास किस बात का गवाह है?

(क) कवि का सिर कहीं झुका नहीं है

(ख) बादल धरती पर बरसे हैं

(ग) हिमालय का सिर किसी से नहीं झुका है

(घ) सुंदरता किसी के आगे नहीं झुकती है

5.किसने सबकी उन्नति अपनी जैसी चाही है?

(क) गंगा ने (ख) हिमालय ने

(ग) मातृभूमि ने (घ) बादल ने

1	2	3	4	5
ख	ग	क	ग	ख

पद्यांश-4

जी हाँ हज़ूर, मैं गीत बेचता हूँ,
मैं तरह-तरह के गीत बेचता हूँ,
मैं किस्म-किस्म के गीत बेचता हूँ,
जी, माल देखिए, दाम बताऊँगा,
बेकाम नहीं है, काम बताऊँगा,
कुछ गीत लिखे हैं मस्ती में मैंने,
कुछ गीत लिखे हैं पस्ती में मैंने,
यह गीत सख्त दर्द भुलाएगा,
यह गीत पिया को पास बुलाएगा,
जी, पहले कुछ शर्म लगी मुझको !
पर बाद बाद में अक्ल जगी मुझको,
जी, लोगों ने तो बेच दिए ईमान,
जी, आप न हो सुनकर ज़्यादा हैरान।

1.कवि गीत बेचने को मजबूर क्यों हुआ?

(क) कवि को कोई अन्य कार्य नहीं आता
(ख) वर्तमान व्यवस्था नैतिक मूल्यों की कद्र नहीं करती
(ग) समाज में सब कुछ बिकाऊ है
(घ) कवि के पास भिन्न-भिन्न प्रकार के गीत हैं

2.कवि ने अपने गीतों की क्या विशेषता बताई है?

(क) मस्ती भरे गीत (ख) दर्द भुलाने वाले गीत
(ग) पिया को पास बुलाने वाले गीत (घ) उपरोक्त सभी

3.प्रस्तुत पद्यांश में किस पर व्यंग्य किया गया है?

(क) कवि की गीत बेचने की प्रवृत्ति पर
(ख) औद्योगिक पूँजीवादी व्यवस्था पर जहाँ सब कुछ बिकाऊ है
(ग) गीतों के विभिन्न प्रकारों पर (घ) दाम लगाने वाले कवियों पर

4.प्रस्तुत पद्यांश का मूल भाव क्या है?

(क) गीतों को बेचने का कार्य करना
(ख) वर्तमान भौतिकवादी व्यवस्था का विरोध करना
(ग) गीतकार के दुःख की अभिव्यक्ति करना
(घ) गीत के प्रकार का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन करना

5.प्रस्तुत पद्यांश में कवि किस समस्या से व्यथित है?

(क) काव्य-विषय की समस्या से (ख) विषय-वस्तु के चुनाव की समस्या से

(ग) बाजारवाद की समस्या से (घ) गीत बेचने की समस्या से

1	2	3	4	5
ख	घ	ख	ख	ग

पद्यांश-5

इतने ऊँचे उठो कि जितना उठा गगन है
देखो इस सारी दुनिया को एक दृष्टि से
संचित करो धरा, समता की भाव वृष्टि से
जाति भेद की, धर्म वेश की
काले गोरे, रंग द्वेष की
ज्वालाओं से जलते जग में
इतने शीतल बहो कि जितना मलय पवन है।
लो अतीत में उतना ही जितना पोषक है।
जीर्ण शीर्ण का मोह मृत्यु का ही द्योतक है।
तोड़ो बंधन, रुके न चिंतन
गति जीवन का सत्य चिरंतन
धारा के शाश्वत प्रवाह में इतने गतिमय बनो
कि जितना परिवर्तन है।

1.'ज्वालाओं से जलते जग में पंक्ति में कौन-सा अलंकार है?

(क) अतिश्योक्ति (ख) अन्योक्ति

(ग) अनुप्रास (घ) उपमा

2.नए समाज के निर्माण में नई सोच क्या होगी?

(क) सभी को समानता की दृष्टि से देखना (ख) स्वयं को ऊँचा उठाना

(ग) दूसरों से भेदभाव करना (घ) धर्म को प्रधानता देना

3.कवि ने समानता का भाव दर्शाने के लिए किसका उदाहरण दिया है?

(क) अतीत (ख) वर्षा का

(ग) मृत्यु का (घ) पवन का

4.हमें अतीत से क्या ग्रहण करना चाहिए?

(क) अच्छी बातें (ख) बुरी बातें

(ग) गति (घ) ये सभी

5.हमें किसके समान जीवन में आगे बढ़ते रहना चाहिए?

(क) सूरज के (ख)धरती के

(ग) परिवर्तन के (घ) बंधन के

1	2	3	4	5
ग	क	ख	क	ग

****

पाठ 3. विभिन्न प्रकार के माध्यम के लिए लेखन

1) निम्नलिखित में से कौन सी बातें रेडियों के लिए समाचार लेखन की बुनियादी बातें हैं -

क) साफ-सुधरी और टाइप्ड कॉपी

ख) डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग

ग) क और ख दोनों

घ) कोई भी नहीं

उत्तर: ग) क और ख दोनों

2) प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार कॉपी को कंप्यूटर पर कितने स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए?

क) सिंगल स्पेस ख) डबल स्पेस

ग) ट्रिपल स्पेस घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: ग) ट्रिपल स्पेस

3) उल्टा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को कहां लिखा जाता है?

क) सबसे पहले ख) बीच में

ग) आखिर में घ) कहीं भी

उत्तर: क) सबसे पहले

4) लेखन में हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है?

क) भाषा ख) व्याकरण

ग) वर्तनी घ) उपयुक्त सभी

उत्तर: घ) उपर्युक्त सभी

5) प्रमुख जनसंचार माध्यम कौन-कौन से होते हैं?

क) टी.वी. ख) रेडियो

ग) इंटरनेट घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: घ) उपर्युक्त सभी

6) इंटरनेट क्या है?

क) लोकल एरिया नेटवर्क का एक इंटरकनेक्शन

ख) एक सिंगल नेटवर्क

ग) विभिन्न नेटवर्क का एक विशाल कनेक्शन

घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: ग) विभिन्न नेटवर्क का एक विशाल कनेक्शन

7) इनमें से कौन सा एक इंटरनेट नेटवर्क है?

क) मैन ख) लेन

ग) वैन घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: घ) उपर्युक्त सभी

8) पहली वेबसाइट अस्तित्व _____ आई थी ?

क) 1992 में ख) 1991में

ग) 1994 में घ) 1990 में

उत्तर: ख) 1991में

9) गूगल क्रोम एक _____ है।

क) सर्च इंजन ख) ईमेल

ग) वेबसाइट घ) ब्राउज़र

उत्तर: घ) ब्राउज़र

10) ड्राई एंकर कैसा चरण है?

क) कम से कम समय और शब्दों में सूचना दी जाती है

ख) एंकर, रिपोर्टर से मिली जानकारी के आधार पर सूचनाएं पहुंचाता है

ग) घटनास्थल से सीधा प्रसारण

घ) एंकर, रिपोर्टर से फोन पर बात करता है

उत्तर: घ) एंकर, रिपोर्टर से फोन पर बात करता है

11) 'एंकर बाइट' में बाइट का क्या अर्थ है?

क) मेघा बाइट ख) कीड़े का काटना

ग) एंकर की आवाज घ) बाइट यानी कथन

उत्तर: घ) बाइट यानी कथन

12) किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुंचाना क्या कहलाता है?

क) सीधी रिपोर्ट ख) ब्रेकिंग न्यूज़

ग) लाइव या सीधा प्रसारण घ) एंकर विजुअल

उत्तर: ग) लाइव या सीधा प्रसारण

13) निम्नलिखित में से कौन-सा टी.वी. का सूचना चरण नहीं होता ?

क) फोन-इन

ख) एंकर पैकेज

ग) ड्राई ऐंकर

घ) स्क्रिप्ट

उत्तर: घ) स्क्रिप्ट

14) भारत में टेलीविजन का आरंभ कब हुआ था?

क) 20 अगस्त 1949 ख) 15 सितंबर 1959

ग) 26 जनवरी 1975 घ) 4 मार्च 1942

उत्तर: ख) 15 सितंबर 1959

15) टेलीविजन में 'लाइव' का क्या अर्थ है?

क) ब्रेकिंग न्यूज़ ख) एंकर विजुअल

ग) घटनास्थल से खबर प्रस्तुत करना घ) फोन-इन

उत्तर: ग) घटनास्थल से खबर प्रस्तुत करना

16) हिंदी में नेट पत्रकारिता किसके साथ शुरू हुई थी?

क) वेब दुनिया ख) इंटरनेट

ग) घटनास्थल से खबर प्रस्तुत करना घ) बी.बी.सी. साइट

उत्तर: क) वेब दुनिया

17) निम्नलिखित में से कौन सा अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ इंटरनेट पर उपलब्ध है?

क) अमर उजाला ख) हिंदुस्तान

ग) भास्कर घ) प्रभासाक्षी

उत्तर: घ) प्रभासाक्षी

18) पत्रकारिता की सबसे सर्वश्रेष्ठ साइट कौन सी है?

क) बी.बी.सी. साइट ख) आई.आई.एम.सी. साइट

ग) एच हिंदी साइट घ) हिंदी भाषण साइट

उत्तर: क) बी.बी.सी. साइट

19) टेलीविजन लेखन में इनमें से किसकी अहमियत सबसे ज्यादा होती है ?

क) स्क्रिप्ट ख) दृश्य

ग) प्रिंट घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: ख) दृश्य

20) टेलीविजन के लिए खबर लिखने की मौलिक शर्त क्या है-

क) शब्दों के साथ लेखन

ख) श्रोता के लिए लेखन

ग) चित्रों के साथ लेकन

घ) दृश्य के साथ लेखन

उत्तर: घ) दृश्य के साथ लेखन

21) टेलीविजन लेखन में कौनसी कला का इस्तेमाल होता है?

क) कम शब्दों में कम खबर ख) ज्यादा शब्दों में कम खबर

ग) कम शब्दों में ज्यादा खबर घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: ग) कम शब्दों में ज्यादा खबर

22) टेलीविजन पर प्रसारित खबरों में सबसे महत्वपूर्ण है-

क) विजूअल ख) बाइट

ग) नेट घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर: घ) उपर्युक्त सभी

23) टेलीविजन पर खबर पेश करने के तरीकों को हम किस प्रकार समझ सकते हैं-

क) खबरों के प्रचलित ढांचे या फॉर्मेट को समझकर

ख) खबरों के प्रचलित ढांचे को समझकर

ग) सिर्फ फॉर्मेट को समझकर

घ) टीवी पर दिखाई खबरों को समझकर

उत्तर: क) खबरों के प्रचलित ढांचे या फॉर्मेट को समझकर

24) टी.वी. में दृश्य और शब्दों के बीच और क्या मिल जाता है?

क) वीडियो ख) नाटक

ग) ध्वनियां घ) इनमें से कोई भी नहीं

उत्तर: ग) ध्वनियां

25) टी.वी. के लिए अच्छी खबर कैसे खिलकर आती है ?

क) छोटे वाक्यों एवं बेहतरीन संपादन से ख) अच्छे चित्रों के रंग से

ग) विजुअल इफेक्ट्स से घ) अच्छे कार्यक्रमों से

उत्तर: क) छोटे वाक्यों एवं बेहतरीन संपादन से

26) आम आदमी को समाचारों से जोड़े रखने के लिए क्या माध्यम है?

क) ट्रेन और बस

ख) रेडियो और टी.वी.

ग) कागज और कलम

घ) कोई भी नहीं

उत्तर:ख) रेडियो और टी.वी.

27) रेडियो और टी.वी. पर किस तरह की भाषा का उपयोग होना चाहिए?

क) सरल ख) जटिल

ग) क एवं ख दोनों घ) कोई भी नहीं

उत्तर: क) सरल

28) सरल भाषा लिखने का सबसे बेहतर उपाय कौन-सा है?

क) छोटे, सीधे और स्पष्ट ख) बड़े, सीधे और जटिल

ग) छोटे एवं जटिल घ) कोई भी नहीं

उत्तर: क) छोटे, सीधे और स्पष्ट

29) रेडियो..... माध्यम है।

क) दृश्य ख) श्रव्य

ग) दृश्य और श्रव्य दोनों घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर: ख) श्रव्य

30) पहला छापाखाना सन् 1556 में कहां खुला?

क) केरल ख) दिल्ली

ग) गोवा घ) महाराष्ट्र

उत्तर: ग) गोवा

निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक शब्दों में दें -

प्रश्न-1. इन्टरनेट पत्रकारिता को किस अन्य नाम से जाना जाता है - साइबर पत्रकारिता

प्रश्न-2. लोगों को आज कल लत लगती जा रही है - अपडेट रहने की

प्रश्न-3. वर्तमान समय में सर्वाधिक सुलभ माध्यम है - टेलीविज़न

प्रश्न-4. दृश्यों का सबसे अधिक महत्व किस माध्यम में होता है ? - टेलीविज़न

प्रश्न-5. टीवी की खबर को कितने प्रकार से पेश किया जाता है ? - दो

प्रश्न-6. रेडियो समाचार में मुख्यतः किसका ध्यान रखा जाता है ? - श्रोता

प्रश्न-7. रेडियो समाचार में किसपर विशेष जोर नहीं दिया जाता है? - दृश्य

प्रश्न-8. अखबार की विशेषता नहीं है - सुनना

प्रश्न-9. रेडियो समाचार प्रसारण के लिए श्रोताओं को प्रतीक्षा करनी पड़ती है ?- समाचार वाचक

प्रश्न-10. किसी विशेष क्षेत्र;जैसे-खेल,फिल्म-जगत आदि के लिए लिखने वाले पत्रकार कहलाते हैं -बीट पत्रकार

प्रिंट माध्यम

प्रश्न 1. प्रिंट माध्यम की प्रमुख खूबियां और दोष (कमियां) बताइए | (केवल प्रिंट माध्यम की लिखनी है।)

अथवा

सभी मध्यमों की पांच - पांच विशेषताएँ और पांच - पांच कमियाँ बताइए |

(किसी भी एक माध्यम की या तुलनात्मक जानकारी पूछी जा सकती है।) **जनसंचार मुद्रित माध्यमों की विशेषताएँ या खूबियां** i) लिखे हुए शब्द स्थाई होते हैं। ii) इन लिखे हुए शब्दों को हम एक बार ही नहीं अनेकों बार पढ़ सकते हैं। iii) अपनी रुचि और समझ के अनुसार उस स्तर के शब्दों से परिचित हो सकते हैं। iv) लिखी हुई सामग्री का अध्ययन तथा चिंतन - मनन किया जा सकता है। v) इसके अतिरिक्त भी खबर को अपनी रूचि के अनुसार पहले तथा बाद में पढ़ा जा सकता है।	**रेडियो माध्यम की विशेषताएँ या खूबियां** i)रेडियो माध्यम जनसंचार द्रुतगामी और सर्वसुलभ माध्यम है । ii) इससे श्रवण या वाचन क्षमता का विकास होता है । iii) यह दूसरे दृश्य-श्रव्य साधनों की अपेक्षा अल्पव्ययी होता है. इसमें बहुत कम धन खर्च होता है । iv) घर बैठे देश - विदेश की समाचार मालूम हो जाता है । v) यह मनोरंजन का सुलभ साधन है। नयी-पुरानी फिल्मी गाने, शास्त्रीय संगीत और मानसून, फसलों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । vi) मुद्रित माध्यमों का लाभ केवल साक्षर लोग ही उठा पाते हैं परन्तु श्रव्य माध्यमों का लाभ	**टेलीविजन या दृश्य श्रव्य माध्यमों की विशेषताएं या खूबियां** i) टेलीविजन दृश्य-श्रव्य माध्यम है। इसके कार्यक्रम रेडियो की अपेक्षा अधिक रोचक होते हैं क्योंकि इस पर चित्र भी प्रसारित होते है। ii) चौबीसों घंटे इसका प्रसारण होने के कारण समाज के विविध पक्षों को दिखाने, हर पल की घटनाओं को प्रसारित करने में इससे आसानी होती है। iii)इस माध्यम के द्वारा घटना स्थल से भी सीधे आंखों देखा हाल प्रसारित किया जा सकता है। iv) टेलीविजन द्वारा ज्ञानदर्शन जैसे चैनल द्वारा पाठ्य-सामग्री या पाठ्यक्रम सहायक सामग्री का प्रसारण भी किया जाता है जो बहुत ही लाभप्रद होता है। v) टेलीविजन पर घटनाओं के दृश्यों को	**इंटरनेट या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की विशेषताएँ या खूबियां** i) इंटरनेट सूचनाओं का विशाल भंडार है एक क्लिक में मनचाही सूचना उपलब्ध हो जाती है जो अन्य किसी माध्यम में संभव नहीं। ii) इंटरनेट ताजा समाचारों का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है इसमें पल पल पर घटित होने वाली सूचनाओं को अद्यतन (अपडेट) किया जाता है। iii) इंटरनेट अन्य सभी माध्यमों का मिलाजुला रूप है इसमें एक साथ समाचार पढे, सुने या देखे जा सकते हैं जो इसे अन्य सभी माध्यमों से अलग और विशिष्ट बनाता है । iv) यह सूचना भेजने का या प्राप्त करने का सबसे द्रुतगामी माध्यम है इसमें 1 सेकंड में 56 किलोबाइट या लगभग 70 हजार शब्द भेजे जा सकते हैं। v) आज बहुत कम खर्चे में हम इस माध्यम द्वारा कोई भी पुस्तक या पत्रिका पढ़ सकते हैं या ऑनलाइन मनोरंजन प्राप्त कर सकते हैं । आज सब कुछ इस माध्यम पर उपलब्ध है। vi) कोरोना जैसी विश्व आपदा में इंटरनेट ही मात्र शिक्षा का

vi) चाहे तो किसी भी सामग्री को लंबे समय तक सुरक्षित रखा भी जा सकता है। **जनसंचार मुद्रित माध्यमों की कमियां -** i) मुद्रित माध्यम की खामियां भी है जैसे अशिक्षित लोगों के लिए अनुपयोगी। ii) टेलीविजन तथा रेडियो की भांति मुद्रित माध्यम तुरंत घटी घटना की जानकारी नहीं दे पाता। iii) समाचार पत्र निश्चित अवधि अर्थात 24 घंटे में एक बार , सप्ताहिक सप्ताह में एक बार तथा मासिक में माह में एक बार प्रकाशित किया जाता है । iv) किसी भी खबर के प्रकाशन के लिए	कम पढ़े लिखे या निरक्षर उठा सकते है। **रेडियो माध्यम की कमियां या दोष** i) रेडियों मे प्रसारित होने वाले समाचारों को यदि ठीक से सुना न जाए तो वे छूट जाते है । ii) मुद्रित माध्यमों को हम बार बार पढ़ सकते हैं किंतु रेडियो माध्यम में बार-बार-बार सुनने को नहीं मिलता। अखबार की तरह हम रेडियो बुलेटिन को कभी भी कहीं भी नहीं सुन सकते। उसे बुलेटिन के प्रसारण का इंतजार करना होगा। iii) दृश्य माध्यमों की तरह इसमें आवाज और ध्वनि तो होती है किंतु चित्र नहीं होने के कारण उतना आनंद नहीं देता। v) रेडियो माध्यम से प्रसारित होने वाले समाचारों या	देखकर उसकी जीवंतता का एहसास होता है। **टेलीविजन या दृश्य श्रव्य माध्यमों की कमियां या दोष** i) मुद्रित माध्यमों को हम बार बार पढ़ सकते हैं किंतु टेलिविजन माध्यम में बार-बार-बार सुनने या देखने का अवसर नहीं मिलता। अखबार की तरह हम टेलिविजन बुलेटिन को कभी भी कहीं भी देख - सुन नहीं सकते। हमें बुलेटिन के प्रसारण का इंतजार करना होता है। ii) इसमें इंटरनेट की भांति सूचनाओं का विशाल भंडार उपलब्ध नहीं है । इसमें एक क्लिक में मनचाही सूचना उपलब्ध नहीं होती है। iii) इसे केवल घर में रह करके ही देखा जा सकता है। iv) आज यह बहुत खर्चीला माध्यम है क्योंकि डीडी नेशनल के अलावा यदि हमें कोई	माध्यम बना रहा, अतः इसकी उपादेयता संदेह रहित है। **इंटरनेट या इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की कमियां या दोष** i) यह माध्यम विद्यार्थियों के मन को भटकाने के कारण दोष युक्त है। क्योंकि इसमें विद्यार्थी अपने उपयोगी संदर्भ को ढूंढते समय अन्य किसी स्रोत (विडियो इत्यादि) पर जाकर व्यस्त हो जाता है। ii) अत्यधिक उपयोग करने के कारण इससे सर्वाइकल जैसी अनेक शारीरिक बीमारियां उत्पन्न हो रही है। iii) इस माध्यम के कारण आज कई प्रकार के ऑनलाइन अपराध बढ़ते जा रहे हैं। iv) इस माध्यम के कारण ही आज मनुष्य संवेदनहीन होता जा रहा है । परस्पर रिश्तो की अहमियत नष्ट हो रही है । विशेष रूप से बच्चे और बुजुर्गों का जीवन नर्क होता जा रहा है। v) इस माध्यम के कारण अश्लीलता एवं दुराचारों का भी प्रचार-प्रसार हो रहा है।

एक डेड लाइन (समय सीमा) होती है। v) स्पेस (स्थान) सीमा भी होती है , जबकि रेडियो, टेलीविजन ,इंटरनेट माध्यम पर ऐसा प्रतिबंध नहीं होता।	सूचनाओं में गूढ़ शब्दों या वाक्यांश आने पर शब्दकोश का सहारा लेने का समय नहीं होता।	भी चैनल देखना है तो बहुत अधिक मात्रा में मासिक धनराशि खर्च करनी पड़ेगी। v) आज इंटरनेट माध्यम ने इसकी लोकप्रियता को कम किया है।	

प्रश्न 2. मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य ज़रूरी बातें कौन कौन सी है ?

उत्तर : मुद्रित माध्यमों में लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य ज़रूरी बातें है -

i). लेखन में भाषा, व्याकरण, वर्तनी और शैली का ध्यान रखना है प्रचलित भाषा के प्रयोग पर ध्यान देना जरूरी होता है।

ii) समय-सीमा और आवंटित जगह के अनुशासन का ज़रूरी है।

iii) लेखन और प्रकाशन के बीच गलतियों और अशुद्धियों को ठीक करना ज़रूरी होता है।

iv) लेखन में सहज प्रवाह के लिए तारतम्यता जरूरी है।

प्रश्न-3. छः ककार से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- समाचार लेखन में कब, कहाँ, कैसे, क्या, कौन क्यों इन्हीं छः प्रश्नों को छः ककार कहते हैं। इन्हीं ककारों के आधार पर किसी घटना, समस्या तथा विचार आदि से संबंधित खबर लिखी जाती है। यह ककार ही समाचार लेखन का मूल आधार होते हैं जो इस प्रकार हैं -

1- कब- यह समाचार लेखन का आधार होता है। इस ककार के माध्यम से किसी घटना तथा समस्या के समय का बोध होता है जैसे बस दुर्घटना कब हुई?

2- कहाँ- किसी स्थान को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है। इसके माध्यम से किसी घटना और समस्या के स्थान का चित्रण किया जाता है। जैसे-बस दुर्घटना कहाँ हुई?

3- कौन- इस ककार को आधार बनाकर समाचार लिखा जाता है।

4- क्या- यह ककार भी समाचार लेखन का आधार माना जाता है। इसके द्वारा समाचार की रूपरेखा तैयार की जाती है |

5- क्यों- इस ककार के द्वारा समाचार के विवरणात्मक, व्याख्यात्मक तथा विश्लेषणात्मक पहलुओं पर प्रकाश डाला जाता है।

6- कैसे- इस ककार के द्वारा समाचार का विश्लेषण, विवरण तथा व्याख्या की जाती है।

प्रश्न-4.जनमानस द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जनसंचार के प्रमुख माध्यम का वर्णन कीजिए?

उत्तर - जनमानस द्वारा प्रयोग में लाए जाने वाले जनसंचार के अनेक माध्यम है जैसे मुद्रित (प्रिंट), रेडियो, टेलीविजन एवं इंटरनेट मुद्रित अर्थात समाचार पत्र-पत्रिकाएं पढ़ने के लिए, रेडियो सुनने के लिए, टीवी देखने और सुनने के लिए तथा इंटरनेट पढ़ने, सुनने और देखने के लिए प्रयुक्त होते हैं।

प्रश्न-5. डेडलाइन से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- समाचार माध्यमों के लिए समाचारों को कवर करने के लिए निर्धारित समय-सीमा डेड-लाइन कहलाती है | अर्थात एक समय सीमाके बाद समाचार बासी या पुराना हो जाता है । वह प्रकाशन के योग्य नहीं होता ।

प्रश्न-6. न्यूज़ पेग किसे कहते हैं?

उत्तर- न्यूज़ पेग का अर्थ- समाचार का आधार क्या है। समाचार का आधार जैसे त्योहार, कोई घटना, कोई कार्यक्रम आदि दो दलों के नेताओं के लिए चली बैठक में चर्चा को न्यूज़ पेग कहा जा सकता है क्योंकि उस बैठक में न्यूज का विषय हो सकता है। न्यूज़ का हुक और ऐंगल न्यूज पेग कहलाता है।

प्रश्न-7. पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं?

उत्तर- अखबार या अन्य समाचार माध्यमों में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठको, दर्शकों और श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

रेडियो

प्रश्न 1. रेडियो के लिए समाचार-लेखन संबंधी बुनियादी बातें कौन-कौन सी है?

उत्तर : रेडियो के लिए समाचार-कॉपी तैयार करते हुए निम्नालिखित बुनियादी बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है -

(क) साफ़-सुथरी और टाइप्ड कॉपी- रेडियो समाचार कानों के लिए यानी सुनने के लिए होते हैं अतः समाचारों को शुद्ध पढ़ने के लिए निम्नलिखित बातों को अपनाना चाहिए-

i) प्रसारण के लिए तैयार की जा रही समाचार-कॉपी को कंप्यूटर पर **ट्रिपल स्पेस में** टाइप किया जाना चाहिए।

ii) कॉपी के दोनों ओर पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।

iii) एक लाइन में अधिकतम 12-13 शब्द होने चाहिए।

iv) पंक्ति के आखिर में कोई शब्द विभाजित नहीं होना चाहिए।

v) पृष्ठ के आखिर में कोई लाइन अधूरी नहीं होनी चाहिए।

vi) समाचार-कॉपी में ऐसे जटिल और उच्चारण में कठिन शब्द, संक्षिप्ताक्षर (एब्रीवियेशन्स), अंक आदि नहीं लिखने चाहिए, जिन्हें पढ़ने में जबान लड़खड़ाने लगे।

vii) रेडियो समाचार लेखन में अंकों को लिखने निर्धारित सभी सावधानियां रखनी चाहिए ।

(ख) **डेडलाइन, संदर्भ और संक्षिप्ताक्षर का प्रयोग**-रेडियो में अखबारों की तरह डेडलाइन अलग से नहीं, बल्कि समाचार से ही गुंथी होती है। अखबार दिन में एक बार और वह भी सुबह (और कहीं शाम) छपकर आता है जबकि रेडियो पर चौबीसो घंटे समाचार चलते रहते हैं। श्रोता के लिए समय का फ्रेम हमेशा 'आज' होता है। इसलिए समाचार में आज, आज सुबह, आज दोपहर, आज शाम, आज तड़के आदि का इस्तेमाल किया जाता है।

प्रश्न 2. रेडियो समाचार लेखन में अंकों को लिखते समय क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए ?

उत्तर : रेडियो समाचार लेखन में अंकों को लिखने में निम्नलिखित सावधानी रखनी चाहिए; जैसे-

i) एक से दस तक के अंकों को शब्दों में और 11 से 999 तक अंकों में लिखा जाना चाहिए।

ii) 2837550 लिखने की बजाय 'अट्ठाइस लाख सैंतीस हजार पाँच सौ पचास' लिखा जाना चाहिए अन्यथा वाचक/वाचिका को पढ़ने में बहुत मुश्किल होगी।

iii) अखबारों में % और $ जैसे संकेत-चिहनों से काम चल जाता है, लेकिन रेडियो में यह पूरी तरह वर्जित है। अत: इन्हें 'प्रतिशत' और 'डॉलर' लिखा जाना चाहिए। जहाँ भी संभव और उपयुक्त हो, दशमलव को उसके नजदीकी पूर्णांक में लिखना बेहतर होता है।

iv) वित्तीय संख्याओं को उनके नजदीकी पूर्णांक में लिखना चाहिए।

v) खेलों के स्कोर को उसी तरह लिखना चाहिए। सचिन तेंदुलकर ने अगर 98 रन बनाए हैं तो उसे 'लगभग सौ रन" नहीं लिख सकते।

vi) मुद्रा-स्फीति के आँकड़े नजदीकी पूर्णांक में नहीं, बल्कि दशमलव में ही लिखे जाने चाहिए।

vii) वैसे रेडियो समाचार में आँकड़ों और संख्याओं का अत्यधिक इस्तेमाल नहीं करना चाहिए क्योंकि श्रोताओं के लिए उन्हें समझ पाना काफ़ी कठिन होता है।

viii) रेडियो समाचार कभी भी संख्या से नहीं शुरू होना चाहिए। इसी तरह तिथियों को उसी तरह लिखना चाहिए जैसे हम बोलचाल में इस्तेमाल करते हैं-' 15 अगस्त उन्नीस सौ पचासी' न कि 'अगस्त 15, 1985'।

प्रश्न 3 रेडियो समाचार , प्रिंट माध्यम (अखबार) या टेलीविजन समाचार की संरचना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

समाचार लेखन की उल्टा पिरामिड शैली पर प्रकाश डालिए।

अथवा

समाचार कैसे लिखा जाता है?

उत्तर : समाचार-लेखन की सबसे प्रचलित, प्रभावी और लोकप्रिय शैली उलटा पिरामिड़ शैली ही है। सभी तरह के जनसंचार माध्यमों में सबसे अधिक यानी 90 प्रतिशत खबरें या स्टोरीज़ इसी शैली में लिखी जाती हैं-

समाचार-लेखन की उलटा पिरामिड-शैली

उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम की बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। तात्पर्य यह है कि इस शैली में कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता।

इस शैली में समाचार को तीन भागों में बाँट दिया जाता है-

इंट्रो-समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में 'मुखड़ा' भी कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अह हिस्सा होता है।

बॉडी-इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।

समापन-इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं।

प्रश्न-3. रेडियो के लिए समाचार कॉपी तैयार करते हुए क्या ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर - साफ-सुथरी और टाइप्ड कॉपी होनी चाहिए एक लाइन में अधिकतम बारह से तेरह शब्द लिखें जाएँ, संक्षिप्त अक्षर का प्रयोग नहीं करना चाहिए |

टेलीविजन

प्रश्न 1: टी.वी. खबरों के विभिन्न चरणों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : किसी भी टी.वी. चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है यानी सबसे पहले सूचना देना। टी.वी. में भी यह सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं -

i) **फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज**-सबसे पहले कोई बड़ी खबर फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज के रूप में तत्काल दर्शकों तक पहुँचाई जाती है। इसमें कम-से-कम शब्दों में महज सूचना दी जाती है।

ii) ड्राई एंकर-इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है कि कहाँ, क्या, कब और कैसे हुआ। जब तक खबर के दृश्य नहीं आते तब तक एंकर दर्शकों को रिपोर्टर से मिली जानकारियों के आधार पर सूचनाएँ पहुँचाता है।

iii) फोन-इन-इसके बाद खबर का विस्तार होता है और एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है। इसमें रिपोर्टर घटना वाली जगह पर मौजूद होता है और वहाँ से उसे जितनी ज्यादा-से-ज्यादा जानकारियाँ मिलती हैं, वह दर्शकों को बताता है।

iv) एंकर-विजुअल-जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है। इस खबर की शुरुआत भी प्रारंभिक सूचना से होती है और बाद में कुछ वाक्यों पर प्राप्त दृश्य दिखाए जाते हैं।

v) एंकर-बाइट-बाइट यानी कथन। टेलीविजन पत्रकारिता में बाइट का काफ़ी महत्व है। टेलीविजन में किसी भी खबर को पुष्ट करने के लिए इससे संबंधित बाइट दिखाई जाती है। किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखा और सुनाकर खबर को प्रामाणिकता प्रदान की जाती है।

vi) लाइव-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण। सभी टी०वी० चैनल कोशिश करते हैं कि किसी बड़ी घटना के दृश्य तत्काल दर्शकों तक सीधे पहुँचाए जा सकें। इसके लिए मौके पर मौजूद रिपोर्टर और कैमरामैन ओ०बी० वैन के जरिये घटना के बारे में सीधे दर्शकों को दिखाते और बताते हैं।

vii) एंकर-पैकेज-एंकर-पैकेज किसी भी खबर को संपूर्णता के साथ पेश करने का एक जरिया है। इसमें संबंधित घटना के दृश्य, उससे जुड़े लोगों की बाइट, ग्राफ़िक के जरिये जरूरी सूचनाएँ आदि होती हैं।

(**ध्यान दें** :- इनमें से किसी एक चरण पर भी अलग से प्रश्न पूछा जा सकता है।)

प्रश्न 2. टेलीविजन के लिए समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय किन किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

उत्तर : टेलीविजन में दृश्यों की महत्ता होने के कारण समाचार या आलेख (स्क्रिप्ट) लिखते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए -

i) हमारे शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों।

ii) टेलीविजन लेखन प्रिंट और रेडियो दोनों ही माध्यमों से काफ़ी अलग है। इसमें कम-से-कम शब्दों में ज्यादा-से-ज्यादा खबर बताने की कला का इस्तेमाल करना चाहिए ।

iii) टी०वी० के लिए खबर लिखने की बुनियादी शर्त दृश्य के साथ लेखन है। दृश्य यानी कैमरे से लिए गए शॉट्स, जिनके आधार पर खबर बुनी जाती है। अगर शॉट्स आसमान के हैं तो हम आसमान की ही बात लिखेंगे, समंदर की नहीं।

प्रश्न-3. टेलीविजन खबरों की खूबियाँ एवं कमियां बताइए |

उत्तर - **टेलीविजन खबरों की खूबियाँ निम्नलिखित हैं** -देखने और सुनने की सुविधा, जीवंत घटनाओं का प्रसारण,प्रभावशाली खबर से परिचित होना, समाचारों का लगातार प्रसारण देख पाना।

टेलीविजन खबरों की कमियां -भाषा शैली के स्तर पर अत्यंत सावधानी, बाइट का ध्यान रखना आवश्यक है, कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कभी-कभी सामाजिक उत्तेजना को जन्म दे सकता है | अपरिपक्व बुद्धि पर सीधा प्रभाव डालता है |

प्रश्न 4. रेडियो और टेलीविज़न समाचार की भाषा और शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : रेडियो और टी.वी. के समाचार लिखते समय भाषा और शैली प्रयोग में निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए-

i) भाषा ऐसी होनी चाहिए कि वह सभी को आसानी से समझ में आ सके लेकिन साथ ही भाषा के स्तर और गरिमा के साथ कोई समझौता भी न करना पड़े।

ii) सरल भाषा लिखने का सबसे बेहतर उपाय यह है कि वाक्य छोटे सीधे और स्पष्ट लिखे जाएँ। वाक्यों में तारतम्य हो,शब्द प्रचलित हों और उनका उच्चारण सहजता से किया जा सके।

iii) प्रमुख बातों को ठीक से समझकर फिर खबर लिखनी चाहिए ।

iv) रेडियो और टी.वी. में आप कितनी सरल, संप्रेषणीय और प्रभावी भाषा लिखने का बेहतर तरीका यह है कि आप समाचार लिखने के बाद उसे बोल बोलकर पढ़ ले ।

v) साफ़-सुथरी और सरल भाषा लिखने के लिए गैरजरूरी विशेषणों, सामासिक और तत्सम शब्दों, अतिरंजित उपमाओं आदि से बचना चाहिए।

vi) मुहावरों के इस्तेमाल से भाषा आकर्षक और प्रभावी बनती है। लेकिन मुहावरों का इस्तेमाल स्वाभाविक और जहाँ ज़रूरी हो, वही करना चाहिए।

vii) टेलीविजन के लिए लिखे गए समाचारों के शब्द परदे पर दिखाए गए दृश्य के अनुकूल होने चाहिए। टीवी पर खबर लिखते समय पहला वाक्य दृश्य के वर्णन के साथ शुरू होना चाहिए।

vii) रेडियो के लिए लिखे गए समाचारों के शब्द ध्वनि के अनुकूल होने चाहिए।

इंटरनेट

प्रश्न 1. भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : भारत में इंटरनेट पत्रकारिता का अभी दूसरा दौर चल रहा है। भारत के लिए पहला दौर 1993 से शुरू माना जा सकता है जबकि दूसरा दौर सन् 2003 से शुरू हुआ है। डॉटकॉम का तूफ़ान आया और बुलबुले की तरह फूट गया। अंततः वही टिके रह पाए जो मीडिया उद्योग में पहले से ही टिके हुए थे। आज पत्रकारिता की दृष्टि से 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'हिंदुस्तान टाइम्स', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'हिंदू', 'ट्रिब्यून', 'स्टेट्समैन', 'पॉयनियर', 'एनडीटी.वी.', 'आईबीएन', 'जी न्यूज़', 'आजतक' और 'आउटलुक' की साइटें ही बेहतर हैं। 'इंडिया टुडे' जैसी कुछ साइटें भुगतान के बाद ही देखी जा सकती हैं। जो साइटें नियमित अपडेट होती हैं, उनमें 'हिंदू', 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया', 'आउटलुक', 'इंडियन एक्सप्रेस', 'एनडीटी.वी.', 'आजतक' और 'जी न्यूज़' प्रमुख हैं।

लेकिन भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडियाइंफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

प्रश्न 2. भारत में सबसे अर्थों में कौन-कौन से साइटें पत्रकारिता कर रही है ?

उत्तर : भारत में सच्चे अर्थों में यदि कोई वेब पत्रकारिता कर रहा है तो वह 'रीडिफ़ डॉटकॉम', 'इंडियाइंफोलाइन' व 'सीफी' जैसी कुछ ही साइटें हैं। रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जा सकता है जो कुछ गंभीरता के साथ इंटरनेट पत्रकारिता कर रही है। वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉटकॉम' को जाता है।

प्रश्न 3. इंटरनेट पत्रकारिता सूचनाओं को तत्काल उपलब्ध कराता है, परंतु इसके साथ ही उसके कुछ दुष्परिणाम भी हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

अथवा

इंटरनेट का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर : इंटरनेट सिर्फ़ एक टूल यानी औज़ार है, जिसे आप सूचना, मनोरंजन, ज्ञान और व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संवादों के आदान-प्रदान के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

इंटरनेट पर पत्रकारिता के भी दो रूप हैं। पहला तो इंटरनेट का एक माध्यम या औज़ार के तौर पर इस्तेमाल, यानी खबरों के संप्रेषण के लिए इंटरनेट का उपयोग। दूसरा, रिपोर्टर अपनी खबर को एक जगह से दूसरी जगह तक ईमेल के ज़रिये भेजने और समाचारों के संकलन, खबरों के सत्यापन और पुष्टिकरण में भी इसका इस्तेमाल करता है। रिसर्च या शोध का काम तो इंटरनेट ने बेहद आसान कर दिया है। इंटरनेट से एक सेकेंड में 56 किलोबाइट यानी लगभग 70 हज़ार शब्द भेजे जा सकते हैं।लेकिन इंटरनेट जहाँ सूचनाओं के आदान-प्रदान का बेहतरीन औज़ार है, वहीं वह अश्लीलता, दुष्प्रचार और गंदगी फैलाने का भी ज़रिया है।

प्रश्न 4. हिंदी में ऑनलाइन पत्रकारिता का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

अथवा

हिंदी नेट संसार या वेब पत्रकारिता के इतिहास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : हिंदी में नेट पत्रकारिता 'वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। इंदौर के नयी दुनिया समूह से शुरू हुआ यह पोर्टल हिंदी का संपूर्ण पोर्टल है। इसके साथ ही हिंदी के अखबारों ने भी विश्वजाल में अपनी उपस्थिति दर्ज करानी शुरू की। 'जागरण', 'अमर उजाला', 'नयी दुनिया', 'हिन्दुस्तान', 'भास्कर', 'राजस्थान पत्रिका', 'नवभारत टाइम्स', 'प्रभात खबर' व 'राष्ट्रीय सहारा' के वेब संस्करण शुरू हुए । 'प्रभासाक्षी' नाम से शुरू हुआ अखबार, प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ इंटरनेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज़ से हिंदी की सर्वश्रेष्ठ साइट बीबीसी की है।

बेव जगत का एक अच्छा पहलू यह भी है कि इसमें कई साहित्यिक पत्रिकाएँ चल रही । अनुभूति, अभिव्यक्ति, हिंदी नेस्ट, सराय आदि अच्छा काम कर रहे हैं। यही नहीं, सरकार के तमाम मंत्रालय, विभाग, सार्वजनिक उपक्रम और बैंकों ने भी अपने हिंदी अनुभाग शुरू किए हैं |

प्रश्न 5. हिंदी ऑनलाइन पत्रकारिता के दोष बताइए।

उत्तर : हिंदी की वेब पत्रकारिता अभी अपने शैशव काल में ही है। इसकी सबसे बड़ी समस्या हिंदी के फ़ौंट की है। अभी भी हमारे पास कोई एक 'की-बोर्ड' नहीं है। डायनमिक फ़ौंट की अनुपलब्धता के कारण हिंदी की ज्यादातर साइटें खुलती ही नहीं हैं। अब माइक्रोसॉफ्ट और वेबदुनिया ने यूनिकाड फ़ौंट बनाए हैं। लेकिन ये भी खास लोकप्रिय नहीं हो पा रहे हैं। हिंदी जगत जब तक हिंदी के बेलगाम फ़ौंट संसार पर नियंत्रण नहीं लगाएगा और 'की-बोर्ड' का मानकीकरण नहीं करेगा तब तक यह समस्या बनी रहेगी।

प्रश्न 6. विश्व स्तर पर इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर : विश्व स्तर पर इस समय इंटरनेट पत्रकारिता का तीसरा दौर चल रहा है। पहला दौर था 1982 से 1992 तक जबकि दूसरा दौर चला 1993 से 2001 तक। तीसरे दौर की इंटरनेट पत्रकारिता 2002 से अब तक की है। पहले चरण में इंटरनेट खुद प्रयोग के धरातल पर था, इसलिए बड़े प्रकाशन समूह यह देख रहे थे कि कैसे अखबारों की उपस्थिति सुपर इंफॉर्मेशन - हाईवे पर दर्ज हो । तब एओएल यानी अमेरिका ऑनलाइन जैसी कुछ चर्चित कंपनियाँ सामने आईं।

सच्चे अर्थों में इंटरनेट पत्रकारिता की शुरुआत 1983 से 2002 के बीच हुई। इस दौर में तकनीक के स्तर पर भी इंटरनेट का ज़बरदस्त विकास हुआ। नयी वेब भाषा एच टी एम एल (हाइपर टेक्स्ट मार्डअप लैंग्वेज) आई, इंटरनेट ईमेल आया, इंटरनेटआया, इंटरनेट एक्सप्लोरर और नेटस्केप नाम के ब्राउजर (वह औज़ार जिसके ज़रिये विश्वव्यापी जाल में गोते लगाए जा सकते हैं) आए। इन्होंने इंटरनेट को और भी सुविधासंपन्न और तेज़ रफ़्तार बना दिया। इस दौर में लगभग सभी बड़े अखबार और टेलीविज़न समूह विश्व जाल में आए । 'न्यूयॉर्क टाइम्स', 'वाशिंगटन पोस्ट', 'सीएनएन', 'बीबीसी' सहित तमाम बड़े घरानों ने अपने प्रकाशनों, प्रसारणों के इंटरनेट संस्करण निकाले । दुनियाभर में इस बीच इंटरनेट का काफ़ी विस्तार हुआ। न्यू मीडिया के नाम पर डॉटकॉम कंपनियों का उफ़ान आयाऔर चला गया।

चाहे जो हो, सूचनाओं के आदान-प्रदान के माध्यम के तौर पर इंटरनेट का कोई जवाब नहीं। इसलिए इसकी प्रासंगिकता हमेशा बनी रहेगी। इसलिए कहा जा रहा है कि इंटरनेट पत्रकारिता का 2002 से शुरू हुआ तीसरा दौर सच्चे अर्थों में टिकाऊ हो सकता है।

****

पाठ 4. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया

1) समाचार लेखन में किस शैली का प्रयोग किया जाता है?

(अ) पिरामिड शैली (ब) उलटा पिरामिड शैली। (स)सामान्य शैली (द)उपर्युक्त सभी

उत्तर (ब) उलटा पिरामिड शैली

2) पत्रकारिता का मूल तत्व क्या है ?

(अ) लेखन लेखन (ब) सक्षमता (स) जिज्ञासा (द) दूरदर्शिता

उत्तर (स) जिज्ञासा

प्रश्न 3. समाचार लिखते समय कितने ककारो को ध्यान में रखा जाता है ?

(अ) चार (ब) सात (स) छः (द) पांच

उत्तर (स) छः

प्रश्न 4. पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?

(अ) चार (ब) सात (स) तीन (द) पांच

उत्तर (स) तीन **(पूर्णकालिक पत्रकार,**ii) **अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर),iii) फ़्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार**

प्रश्न 5. निम्नलिखित में से किसके द्वारा कोई भी समाचार संगठन पाठकों का विश्वास जीत सकता है?

(अ) अप्रामाणिकता (ब) विश्वसनीयता (स) आकर्षक विज्ञापन द्वारा (द) आकर्षक लेख

उत्तर : (ब) विश्वसनीयता

प्रश्न 6 . पत्रकारिता लेखन का संबंध किससे होता है?

(अ) काल्पनिक घटनाओं से (ब) अतीत की घटनाओं से

(स) भविष्य की घटनाओं से (द) वास्तविक एवं समसामयिक घटनाओं से

उत्तर (द) वास्तविक एवं समसामयिक घटनाओं से

प्रश्न 7. निम्न में से किसे समाचार का प्रवेश द्वार माना जाता है?

(अ) पृष्ठ (ब) स्तंभ (स) शीर्षक (द) सूचनाएं

उत्तर : (स) शीर्षक

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किस पृष्ठ पर संपादक के नाम पत्र प्रकाशित किए जाते हैं ?

(अ) संपादकीय (ब) शैक्षिक (स) राजनीतिक (द) सामाजिक

उत्तर (अ) संपादकीय

प्रश्न 9. किसके अंतर्गत लेखक को विषय चुनाव की स्वतंत्र प्रदान की जाती हैं?

(अ) लेख (ब) स्तंभ (स) साक्षात्कार (द) विशेष लेखन

उत्तर (ब) स्तंभ

प्रश्न 10. निम्नलिखित में से कौन सा स्तंभ जनमत को प्रतिबिंबित करता है ?

(अ) संपादकीय (ब) फीचर (स) स्तंभ लेखन (द) संपादक के नाम पत्र

उत्तर (द) संपादक के नाम पत्र

प्रश्न 11. निम्नलिखित में से किसमें लेखक के विचारों को प्रमुखता दी जाती है ?

(अ) लेख (ब) सम्पादकीय (स) समाचार लेखन (द) उपर्युक्त सभी में

उत्तर। (अ) लेख (लेखक के विचारों को प्रमुखता लेख में दी जाती है यह विचार तथ्यों और सूचनाओं पर आधारित होते हैं जिनका विश्लेषण करते समय लेखक अपनी राय प्रस्तुत कर सकता है)

प्रश्न 12. साक्षात्कार लिखने के कितने तरीके होते हैं?

(अ) चार (ब) दो (स) तीन (द) पांच

उत्तर (ब) दो (सवाल- जवाब और आलेख के रूप में लिखा जा सकता है।)

प्रश्न 13. विशेष रिपोर्ट किस आधार पर प्रकाशित होती हैं?

(अ) विश्लेषण (ब) व्याख्या (स) गहरी छानबीन (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर (द) उपर्युक्त सभी (विशेष रिपोर्ट गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर तैयार कर प्रकाशित की जाती है)

प्रश्न 14. आमतौर पर भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को उजागर करने के लिए किस रिपोर्ट का उपयोग किया जाता है?

(अ) विवरणात्मक रिपोर्ट (ब) इन डेप्थ रिपोर्ट (स) विश्लेषणात्मक रिपोर्ट (द) खोजी रिपोर्ट

उत्तर (द) खोजी रिपोर्ट

प्रश्न 15. निम्नलिखित में से कौन-सा गुण फीचर का नहीं है?

(अ) फीचर लेखन में हिंदी समाचार की भांति उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग होता है

(ब) फीचर में लेखक अपनी राय तथा भावनाएं अभिव्यक्त कर सकता है।

(स) फीचर की भाषा सरल, आकर्षक एवं रूपात्मक होती हैं ।

(द) फीचर के साथ फोटो, रेखांकन, ग्राफिक्स आदि का होना आवश्यक होता है।

उत्तर (अ) फीचर लेखन में हिंदी समाचार की भांति उल्टा पिरामिड शैली का प्रयोग होता है।

प्रश्न 16. निम्नलिखित में फीचर लेखन के गुण कौन से हैं ?

(अ) प्रासंगिकता एवं विश्वसनीयता (ब) रोचकता, संक्षिप्तता,सहजता एवं सरसता

(स) प्रचलित शब्दावली का प्रयोग (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 17. फीचर शब्द लैटिन भाषा के किस शब्द से निर्मित हैं ?

(अ) फैक्ट्रा (ब) फैक्ट्रर्स (स) फैक्ट्ररी (द) ये सभी

उत्तर (अ) फैक्ट्रा

प्रश्न 18. समाचार पत्र के कितने अंग होते हैं?

(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पाँच

उत्तर (स) चार(समाचार, फीचर, लेख एवं चित्र - ये चार अंग समाचार पत्र के होते है।)

प्रश्न 19. फीचर का आकार शैलीगत विशेषताओं के कारण होता है -

(अ) विस्तृत (ब) संक्षिप्त (स) अत्यंत लघु (द) असीमित

उत्तर (अ) विस्तृत

प्रश्न 20. निम्न विकल्पों की सहायता से फीचर लेखन का क्रम निर्धारित कीजिए -

(i) आमुख या भूमिका (ii) विषय का विस्तार (iii) शीर्षक (iv) निष्कर्ष या समापन

(अ) i,ii,iii,iv (ब) ii,iii,iv,i (स) iii,iv,ii,i (द) iii,i,ii,iv

उत्तर (द) iii,i,ii,iv (शीर्षक, आमुख या भूमिका, विषय का विस्तार, निष्कर्ष या समापन - इस क्रम में फीचर लिखे जाते हैं।)

प्रश्न 21. निम्नलिखित में से कौन सा उद्देश्य अखबार या समाचार पत्र का उद्देश्य है ?

(अ) सूचना देना, जागरूक बनाना एवं शिक्षित करना (ब) मनोरंजन करना

(स) लोकतांत्रिक समाज में एक पहरेदार शिक्षक एवं जनमत निर्माता की भूमिका अदा करना

(द) उपर्युक्त सभी

उत्तर (द) उपर्युक्त सभी

प्रश्न 22. निम्नलिखित में से कौन सा पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए नियमित वेतन भोगी कर्मचारी होता है ?

(अ) पूर्ण कालिक पत्रकार (ब) अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर)

(स) फ़्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर (अ) पूर्ण कालिक पत्रकार

प्रश्न 23. समाचार की बॉडी और समापन के पहले मुख्यत: किन ककारों को रखा जाता है ?

(अ) क्या और कब (ब) कौन और कहाँ

(स) कैसे और क्यों (द) कब और कैसे

उत्तर (स) कैसे और क्यों

प्रश्न 24. समाचार के मुखडे (इंट्रो) यानी शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर कितने ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है ?

(अ) दो या तीन

(ब) तीन या चार

(स) चार या पांच

(द) पांच या पांच

उत्तर (ब) तीन या चार

प्रश्न 25. सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य या सूचना को सबसे ऊपर रखना और उसके बाद घटते हुए महत्त्व के क्रम में सूचनाएं देना कहलाता है ?

(अ) उलटा और सीधा पिरामिड – शैली (ब) उलटा पिरामिड – शैली

(स) सीधा पिरामिड – शैली (द) विश्लेषणात्मक – शैली

उत्तर (ब) उलटा पिरामिड – शैली

प्रश्न 26. समाचार के तत्वों में जो शामिल नहीं है उसकी पहचान कीजिए-

(अ) नवीनता (ब) जनरुचि

(स) संवाददाता (द) महत्त्वपूर्ण लोग

उत्तर (स) संवाददाता

प्रश्न 27. ' लोगों की रुचि युद्ध, संघर्ष, चुनावी हार-जीत, खेल के परिणाम आदि में होती है ।' समाचार-लेखन की दृष्टि से यह समाचार के किस तत्त्व को अभिव्यक्त करता है ?

(अ) टकराव या संघर्ष (ब) उपयोगी जानकारियां

(स) अनोखापन (द) प्रभाव-क्षेत्र

उत्तर (अ) टकराव या संघर्ष

प्रश्न 28. समाचार-लेखन में किन-किन की भूमिका मुख्य होती है ?

(अ) संवाददाता (ब) संपादक-मंडल

(स) संवाददाता और संपादक-मंडल (द) पाठक-वर्ग

उत्तर (स) संवाददाता और संपादक-मंडल

प्रश्न 29. पत्रकारीय लेखन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है ?

(अ) अलंकारिक भाषा (ब) संस्कृतनिष्ठ भाषा

(स) गूढ भाषा (द) आम बोलचाल की भाषा

उत्तर (द) आम बोलचाल की भाषा ।

प्रश्न 30. फ़ीचर से क्या अभिप्राय है ?

(अ) फ़ीचर एक अव्यवस्थित, मौलिक और आत्मनिष्ठ लेखन है

(ब) फ़ीचर केवल आंकड़ों पर आधारित होता है

(स) फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है

(द) फ़ीचर एक अव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है

उत्तर (स) फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है

प्रश्न 31. अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में छपने वाले फ़ीचर की शब्द-सीमा लगभग कितनी होती है ?

(अ) 200 से 1000 शब्द (ब) 250 से 2000 शब्द

(स) 300 से 1000 शब्द (द) 350 से 2000 शब्द

उत्तर (ब) 250 से 2000 शब्द

प्रश्न 32. पत्रकारीय लेखन के लिए कच्चा माल किससे प्राप्त होता है ?

(अ) संपादकीय से (ब) साक्षात्कार से

(स) संपादक के नाम पत्र से (द)फ़ीचर से

उत्तर (ब) साक्षात्कार से

प्रश्न 33. संपादकीय लेखन में संपादक का नाम न लिखने का क्या कारण है ?

(अ) संपादकीय व्यक्ति विशेष की आवाज होती है

(ब) संपादकीय में व्यक्ति विशेष के विचार न होकर पूरे समाचार-पत्र समूह की आवाज होती है

(स) संपादकीय लिखने का कार्य केवल संपादक करते हैं

(द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर(ब)संपादकीय में व्यक्ति विशेष के विचार न होकर पूरे समाचार-पत्र समूह की आवाज होतीहै

प्रश्न 34. स्तंभ लेखन किस प्रकार का लेखन है ?

(अ) विचारपरक लेखन (ब) विश्लेषणात्मक लेखन

(स) विवेचनात्मक लेखन (द) वस्तुपरक लेखन

उत्तर (अ) विचारपरक लेखन

प्रश्न 35. एक सफल साक्षात्कार के लिए इनमें से किन गुणों का होना आवश्यक नहीं है ?

(अ) विषय की अनभिज्ञता (ब) संवेदनशीलता

(स) धीरज (द) साहस

उत्तर (अ) विषय की अनभिज्ञता

प्रश्न 36. लोकप्रिय लेखकों के लेखों की नियमित श्रृंखला को किस नाम से जाना जाता है ?

(अ) पत्रकार (ब) संपादकीय

(स) स्तंभ-लेखन (द) संपादन

उत्तर (स) स्तंभ-लेखन

प्रश्न37. आमतौर पर समाचार पत्रों में या अखबारों में समाचार पूर्णकालिक या अंशकालिक पत्रकारों के द्वारा लिखे जाते हैं, जो कहलाते हैं -

अ) संवाददाता या रिपोर्टर (ब) संपादकीय

(स) स्तंभ लेखक (द) संपादक

उत्तर (अ) संवाददाता या रिपोर्टर

प्रश्न 38. समाचार के मुखडे (इंट्रो) यानी शुरुआती दो-तीन पंक्तियों में आमतौर पर चार ककारों को आधार बनाकर खबर लिखी जाती है ? ये ककार है -

(अ)क्या, कौन,कब, कहां (ब)कैसे, कौन कब, कहां

(स)क्या, कौन क्यों, कहां (द)क्या, कैसे, कब, कहां

उत्तर (अ) क्या, कौन,कब, कहां

प्रश्न 39. क्या, कौन कब, कहां - इन चार ककारों के विषय में सत्य कथन है -

(अ) ये ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं

(ब) ये ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं।

(स) ये ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित नहीं होते हैं ।

(द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (अ) ये ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं

प्रश्न 40. कैसे और क्यों - इन दो ककारों के विषय में सत्य कथन है -

(अ) ये ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं

(ब) ये ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं।

(स) ये ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित नहीं होते हैं ।

(द) इनमें से कोई नहीं

उत्तर (ब) ये ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं।

लघूत्तरात्मक तथा निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1. पत्रकारीय लेखन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : अखबार देश के नागरिकों को सूचना देने, जागरूक और शिक्षित बनाने एवं मनोरंजन करने का कार्य करते है । अतः समाचार माध्यमों मे काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों तथा श्रोताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे ही पत्रकारीय लेखन कहते हैं। पत्रकरिता या पत्रकारीय लेखन के अन्तर्गत सम्पादकीय, समाचार,आलेख, रिपोर्ट, फ़ीचर, स्तम्भ तथा कार्टून आदि आते हैं।

प्रश्न 2.पत्रकारीय लेखन का प्रमुख उद्देश्य बताइए –

उत्तर : पत्रकार या लेखन के निम्नलिखित उद्देश्य है-

i) सूचना देना,शिक्षित करना तथा मनोरंजन आदि करना।

ii.) पत्रकार या लेखन एक पहरेदार, एक शिक्षक और एक जनमत संग्रह निर्माता के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

iii) पत्रकारीय लेखन का संबंध समसामयिक विषयों, विचारों व घटनाओं से है।

iv) पत्रकारीय लेखन की भाषा सरल व रोचक होनी चाहिए। वाक्य छोटे व सहज हों। कठिन भाषा का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए। भाषा को प्रभावी बनाने के लिए अनावश्यक विशेषणों, अप्रचलित शब्दावली और दोहराव का प्रयोग नहीं होना चहिए।

v) पत्रकारीय लेखन देश विदेश की संस्कृति, आचार विचार एवं वैज्ञानिक उपलब्धि इत्यादि के बारे में भी जानकारी देता है।

प्रश्न 3. पत्रकार के प्रकार कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर--- पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं ।

i) पूर्ण कालिक पत्रकार : किसी समाचार पत्र या संगठन के नियमित वेतनभोगी कर्मचारी।
ii) **अंशकालिक पत्रकार (स्ट्रिंगर)**: निश्चित मानदेय पर कार्य करने वाले पत्रकार ।
iii) फ़्रीलांसर या स्वतंत्र पत्रकार : ये किसी संस्था से जुड़े नहीं होते । जब ये लिखते है तो इनका लेख कोई भी छाप सकता है और बदले में एक निश्चित राशि इन्हें भेज दी जाती है ।

प्रश्न 4. **समाचर लेखन की शैली पर प्रकाश डालिए ?**

अथवा

उलटा पिरामिड शैली पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर-- समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं, यह समाचार लेखन की सबसे उपयोगी और लोकप्रिय शैली है। इस शैली का विकास अमेरिका में गृह यद्ध के दौरान हुआ। इसमें महत्त्वपूर्ण घटना का वर्णन पहले प्रस्तुत किया जाता है, उसके बाद महत्त्व की दृष्टि से घटते क्रम में घटनाओं को प्रस्तुत कर समाचार का अंत किया जाता है। समाचार में इंट्रो, बॉडी और समापन के क्रम में घटनाएँ प्रस्तुत की जाती हैं । इंट्रा में आने वाले क्या, कौन कब, कहां - ये चार ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बॉडी और समापन में आने वाले कैसे और क्यों - ये दो ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं।

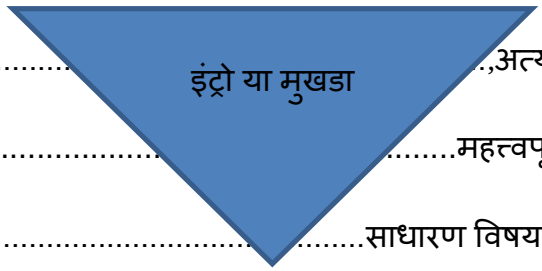

इंट्रो या मुखडा .....,अत्यधिक महत्त्वपूर्ण विषय

बॉडी .....महत्त्वपूर्ण

समापन .....साधारण विषय

प्रश्न 5. **समाचार के कितने ककार होते है ? स्पष्ट कीजिए।**

<u>उत्तर-</u> समाचार लिखते समय मुख्य रूप से छः प्रश्नों- **क्या, कौन, कहाँ, कब , क्यों और कैसे** का उत्तर देने की कोशिश की जाती है। इन्हें समाचार के **छः ककार** कहा जाता है। प्रथम चार प्रश्नों के उत्तर इंट्रो में तथा अन्य दो के उत्तर समापन से पूर्व बॉडी वाले भाग में दिए जाते हैं । । इंट्रा में आने वाले क्या, कौन कब, कहां - ये चार ककार सूचनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं जबकि बॉडी और समापन में आने वाले कैसे और क्यों - ये दो ककार विवरणात्मक, व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक पहलू पर जोर देते हैं।

प्रश्न 6 फ़ीचर लेखन की प्रमुख विशेषताएं बताइए

उत्तर : फीचर लेखन की प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं-

i) फ़ीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है। फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।

ii) फीचर लेखन में उल्टा पिरामिड शैली की बजाय लेखन की शुरुआत कहीं से भी हो सकती है।

iii) फीचर लेखन की शैली कथात्मक होती है ।

iv) फीचर लेखन की भाषा सरल, सरस , बिंबात्मक, आकर्षक और मन को छू लेने वाली होती है।

v) फीचर लेखन में शब्दों की कोई अधिकतम सीमा नहीं होती । फीचर लेखन में सामान्यतः ढाई सौ से ढाई हजार के बीच में शब्द होते हैं।

प्रश्न 7 फ़ीचर लेखन के प्रमुख उद्देश्य बताइए ।

उत्तर : फीचर लेखन की प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित है

i) फ़ीचर का उद्देश्य मुख्य रूप से पाठकों को सूचना देना, शिक्षित करना तथा उनका मनोरंजन करना होता है।

ii) फीचर लेखक घटना या विषय की जानकारी के अतिरिक्त अपनी प्रतिक्रिया एवं विचारों से भी पाठक को अवगत कराता है।

iii) फीचर लेखन में किसी घटना का सजीव चित्रण होता है अतः इसमें पात्र की भूमिका अहम होती है। सारी घटना इस पात्र के इर्द-गिर्द ही घूमती हैं।

प्रश्न 8. फ़ीचर और समाचार में प्रमुख अंतर बताइए ।

उत्तर : फीचर और समाचार में प्रमुख अंतर निम्नलिखित हैं -

i) समाचार में रिपोर्टर को अपने विचरों को डालने की स्वतंत्रता नहीं होती, जबकि फ़ीचर में लेखक को अपनी राय , दृष्टिकोण और भवनाओं को जाहिर करने का अवसर होता है ।

ii) समाचार उल्टा पिरामिड शैली में में लिखे जाते हैं, जबकि फ़ीचर लेखन की कोई सुनिश्चित शैली नहीं होती ।

iii) फ़ीचर में समाचारों की तरह शब्दों की सीमा नहीं होती। आमतौर पर फ़ीचर, समाचार रिपोर्ट से बडे होते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्राय: 250 से 2000 शब्दों तक के फ़ीचर छपते हैं।

प्रश्न 9.फीचर लेखन की प्रमुख प्रकार बताइए।

उत्तर : फीचर लेखन की प्रमुख प्रकार निम्नलिखित है -

i) रेडियो फीचर - जहां पत्र पत्रिकाओं मे प्रकाशित फीचर केवल पढ़ने के लिए होते हैं वहां रेडियो फीचर केवल प्रसारण माध्यमो से सुनने के लिए होते हैं इनमें संगीत और ध्वनि पक्ष काफी

प्रबल होता है। इनमें संगीत और ध्वनि के माध्यम से किसी गतिविधि का नाटकीय प्रस्तुतीकरण है।

ii) समाचार फीचर- ऐसे फीचर का मूलभाव समाचार होते हैं। किसी घटना का पूर्ण विवेचन विश्लेषण इसके अंतर्गत किया जाता है।

iii) यात्रा फीचर- यात्राएं ज्ञानवर्धक और मनोरंजक साथ साथ होते हैं। इन यात्राओं का प्रभावपूर्ण एवं मनोहारी संस्मरणात्मक चित्रण इन फीचरो में होता है।

iv) व्यक्तिगत फीचर - इसमें साहित्य, संगीत, चित्रकला, नाटâ, खेल जगत, राजनीतिक, विज्ञान, धर्म आदि क्षेत्रों में समाज का नेतृत्व करनेवाले व्यक्तियो- विशिष्ट व्यक्तियों पर फीचर लिखे जाते हैं।

V) ऐतिहासिक फीचर - अतीत की घटनाओं के प्रति मनुष्य की उत्सुकता स्वाभाविक है। ऐतिहासिक व्यक्तियों, घटनाओं और स्मारकों अथवा नई ऐतिहासिक खोजो पर भी भावपूर्ण ऐतिहासिक फीचर लिखे जा सकते हैं।

vi) चित्रात्मक फीचर- ऐसे फीचर जो केवल बोलते चित्रों के माध्यम से अपना संदेश पाठकों को दे जाते हैं। इसे फोटो फीचर कहते हैं।

vii) व्यंग्य फीचर- सामाजिक, राजनीतिक परिदृश्य की ताजा घटनाओं पर व्यंग्य करते हुए सरस और चुटीली भाषा में हास्य का पुट देकर लिखे गए फीचर इस कोटी में आते हैं।

viii) त्योहार पर्व संबंधी फीचर- इसमें त्यौहारों पर्वों की मूल संवेदना उनके स्रोतों तथा पौराणिक संदर्भों के उल्लेख के साथ साथ उन्हे आधुनिक सदंर्भों में भी व्याख्यायित किया जाता है।

ix) विज्ञान फीचर- नवीनतम वैज्ञानिक उपलब्धियों से पाठकों को परिचित कराने अथवा विज्ञान के ध्वंसकारी प्रभावों की जानकारी देने का यह एक सशक्त और महत्वपूर्ण माध्यम है।

इसके अतिरिक्त खोजपरक फीचर, साक्षात्कार फीचर, जीवनशैली परक फीचर इत्यादि अनेक प्रकार के फीचर होते है।

प्रश्न 9. विशेष रिपोर्ट से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर : सामान्य समाचारों से अलग वे विशेष समाचार जो गहरी छान-बीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर प्रकाशित किये जाते हैं, विशेष रिपोर्ट कहलाते हैं ।

प्रश्न 10. **विशेष रिपोर्ट के कितने प्रकार होते हैं ?**

उत्तर विशेष रिपोर्ट के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित है -

i) **खोजी रिपोर्ट** : इसमें अनुपलब्ध तथ्यों को गहरी छान-बीन कर सार्वजनिक किया जाता है।

ii) **इन्डेप्थ रिपोर्ट**: सार्वजानिक रूप से प्राप्त तथ्यों की गहरी छान-बीन कर उसके महत्त्वपूर्ण पक्षों को पाठकों के सामने लाया जाता है ।

iii) **<u>विश्लेषणात्मक रिपोर्ट</u>**: इसमें किसी घटना या समस्या का विवरण सूक्ष्मता के साथ विस्तार से दिया जाता है । रिपोर्ट अधिक विस्तृत होने पर कई दिनों तक किस्तों में प्रकाशित की जाती है ।

iv) **<u>विवरणात्मक रिपोर्ट</u>**: इसमें किसी घटना या समस्या को विस्तार एवं बारीकी के साथ प्रस्तुत किया जाता है।

प्रश्न 11. विचारपरक लेखन से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : समाचार-पत्रों में समाचार एवं फ़ीचर के अतिरिक्त संपादकीय, लेख, पत्र, टिप्पणी, वरिष्ठ पत्रकारों व विशेषज्ञों के स्तम्भ छपते हैं । ये सभी विचारपरक लेखन के अन्तर्गत आते हैं ।

प्रश्न 12. 'संपादकीय' पर टिप्पणी लिखिए ।

उत्तर : संपादक द्वारा किसी प्रमुख घटना या समस्या पर लिखे गए विचारत्मक लेख को, जिसे संबंधित समाचार पत्र की राय या उसकी आवाज़ भी कहा जाता है,संपादकीय कहते हैं । संपादकीय किसी एक व्यक्ति का विचार या राय न होकर समग्र पत्र-समूह की राय होता है, इसलिए संपादकीय में संपादक अथवा लेखक का नाम नहीं लिखा जाता।

प्रश्न 13 स्तम्भ लेखन पर प्रकाश डालिए l

उत्तर : स्तंभ लेखन एक प्रकार का विचारत्मक लेखन है । कुछ महत्त्वपूर्ण लेखक अपने खास वैचारिक रुझान एवं लेखन शैली के लिए जाने जाते हैं । ऐसे लेखकों की लोकप्रियता को देखकर समाचरपत्र उन्हें अपने पत्र में नियमित स्तम्भ - लेखन की जिम्मेदारी प्रदान करते हैं । इस प्रकार किसी समाचार-पत्र में किसी ऐसे लेखक द्वारा किया गया विशिष्ट तथा नियमित लेखन जो अपनी विशिष्ट शैली एव वैचारिक रुझान के कारण समाज में ख्याति प्राप्त हो, स्तम्भ लेखन कहा जाता है ।

प्रश्न 14. संपादक के नाम पत्र कहां प्रकाशित किए जाते है ?

उत्तर : समाचार पत्रों में संपादकीय पृष्ठ पर तथा पत्रिकाओं की शुरुआत में संपादक के नाम आए पत्र प्रकाशित किए जाते हैं । यह प्रत्येक समाचारपत्र का नियमित स्तम्भ होता है । इसके माध्यम से समाचार-पत्र अपने पाठकों को जनसमस्याओं तथा मुद्दों पर अपने विचार एवं राय व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है ।

प्रश्न 15. साक्षात्कार/इंटरव्यू किसे कहते है ? :

उत्तर : किसी पत्रकार के द्वारा अपने समाचार पत्र में प्रकाशित करने के लिए, किसी व्यक्ति विशेष से उसके विषय में अथवा किसी विषय या मुद्दे पर किया गया प्रश्नोत्तरात्मक संवाद साक्षात्कार कहलाता है । साक्षात्कार लिखने के दो तरीके होते हैं । पहले तरीके में साक्षात्कार को सवाल और जवाब के रूप में लिखा जा सकता है और दूसरे तरीके में साक्षात्कार को आलेख की तरह भी लिखा जा सकता है।

प्रश्न 16 फीचर लेखन को आत्मनिष्ठ लेखन क्यों कहा जाता है ?

उत्तर : फीचर लेखन को आत्मनिष्ठ लेखन इसलिए कहा जाता है क्योंकि -

i) फीचर लेखन में लेखक फीचर लिखते समय अपनी व्यक्तिगत विचार, भावनाएं एवं अनुभूतियों को फीचर में स्थान देता है।

ii) फीचर लेखन में लेखक की व्यक्तिगतगत राय और दृष्टिकोण महत्त्वपूर्ण होता है।

iii) फीचर लेखक केंद्रित होता है।

पाठ 5. विशेष लेखन:- स्वरूप एवं प्रकार

<u>बहुविकल्पीय प्रश्न-</u>

1. विशेष लेखन कहलाता है?

अ. सामान्य लेखन से हटकर किसी विशेष विषय पर किया गया लेखन
ब. किसी विषय पर लिखा गया रचनात्मक लेखन
स. किसी विषय पर किया गया क्रियात्मक लेखन
द. किसी भी विषय पर किया गया गतिशील लेखन।
उत्तर (अ) सामान्य लेखन से हटकर किसी विशेष विषय पर किया गया लेखन

2. संवाददाताओं की रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखकर उनके काम के विभाजन को क्या कहते हैं?

अ. सीट ब. नीट
स. बीट द. रपीट
उत्तर (स) बीट

3. विशेष लेखन के कितने क्षेत्र हैं?

अ. एक ब. दो

स. चार द. अनेक

उत्तर (द) अनेक

4. विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा शैली अपेक्षित है?

अ. साहित्यिक भाषा ब. सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा

स. बाजारू भाषा द. हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा

उत्तर (ब) सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा

5. इनमें से विशेष लेखन का कौन-सा क्षेत्र नहीं है?

अ. सिनेमा ब. मनोरंजन

स. स्वास्थ्य द. समाचार

उत्तर (द) . समाचार

6. कारोबार और व्यापार से संबंधित खबर का सम्बन्ध किससे है?

अ. खेल क्षेत्र से ब. कृषि क्षेत्र से

स. आर्थिक क्षेत्र द. राजनीतिक क्षेत्र

उत्तर (स) . आर्थिक क्षेत्र

7. इनमें से कौन-सा शब्द क्रिकेट जगत का नहीं है?

अ. हिट विकेट ब. स्पिन

स. रन द. तेजड़िए

उत्तर (द) तेजड़िए

8. इनमें से कौन-सा शब्द आर्थिक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?

अ. तेजड़िए ब. बिकवाली

स. मंदड़िए द. रन आउट।

उत्तर (द) रन आउट।

9. भारत में कौन-सा खेल अधिक लोकप्रिय है?

अ. फुटबाल ब. क्रिकेट

स. वॉलीबाल द. टेनिस

उत्तर (ब) क्रिकेट

10. विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु क्या आवश्यक है:-

अ. स्वयं को अपडेट रखना ब. पुस्तकें पढ़ना
स. निरंतर दिलचस्पी द. उपर्युक्त सभी
उत्तर (द) उपर्युक्त सभी

11. विशेष लेखन क्यों किया जाता है-

अ. समाचार पत्रों में विविधता आती है
ब. पत्रों का कलेवर बढ़ता है
स. संपादक का महत्व बढ़ता है
द. केवल 1 एवं 2
उत्तर (द) . केवल 1 एवं 2

12. विशेष संवाददाता किन्हें कहा जाता है-

अ. केवल रिपोर्टिंग करनेवालों को
ब. विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वालो को
स. उपर्युक्त दोनों
द. उपर्युक्त में से कोई नहीं
उत्तर (ब) विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वालो को

13.बीट कहते हैं-

अ. विभिन्न प्रकार के समाचारों को ब.विभिन्न प्रकार के रिपोर्टर
स. विभिन्न प्रकार की आवाज़ द. उपर्युक्त में से कोई नहीं।
उत्तर (अ) विभिन्न प्रकार के समाचारों को

14.कारोबार तथा अर्थजगत से जुड़ी खबरें किस शैली में लिखी जाती हैं-

अ.रोचक शैली में ब. प्रश्न शैली में
स. उल्टा पिरामिड शैली में द. उपर्युक्त सभी में
उत्तर (स) उल्टा पिरामिड शैली में

15. बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को क्या कहा जाता है-

अ. विशेष संवाददाता ब. संवाददाता
स.उपर्युक्त दोनों द. उपर्युक्त में से कोई नहीं
उत्तर (ब) उपर्युक्त दोनों

पूर्व परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्न:-

1. विशेष लेखन किसे कहते हैं ?

उत्तर : विशेष लेखन किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हट कर किया गया लेखन है; जिसमें विषय से संबंधित विस्तृत सूचनाएँ प्रदान की जाती हैं।

2. डेस्क क्या है ?

उत्तर : समाचारपत्र, पत्रिकाओं, टीवी और रेडियो चैनलों में अलग-अलग विषयों पर विशेष लेखन के लिए निर्धारित स्थल को डेस्क कहते हैं और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का भी अलग समूह होता है। यथा-व्यापार तथा कारोबार के लिए अलग तथा खेल की खबरों के लिए अलग डेस्क निर्धारित होता है।

3. बीट से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर : विभिन्न विषयों से जुड़े समाचारों के लिए संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।

4. बीट रिपोर्टिंग तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अन्तर है ?

उत्तर : बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र के बारे में जानकारी व दिलचस्पी का होना पर्याप्त है, साथ ही उसे आम तौर पर अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं। किन्तु विशेषीकृत रिपोर्टिंग में सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर संबंधित विशेष क्षेत्र या विषय से जुड़ी घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों का बारीकी से विश्लेषण कर प्रस्तुतीकरण किया जाता है। बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता तथा विशेषीकृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहा जाता है।

5. विशेष लेखन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : विशेष लेखन की भाषा-शैली सामान्य लेखन से अलग होती है। इसमें संवाददाता को संबंधित विषय की तकनीकी शब्दावली का जान होना आवश्यक होता है, साथ ही यह भी आवश्यक होता है कि वह पाठकों को उस शब्दावली से परिचित कराए जिससे पाठक रिपोर्ट को समझ सकें। विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती।

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न:-

प्रश्न 1:समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेखन किन विषयों पर किया जाता है?

उत्तर –समाचार-पत्र-पत्रिकाओं में विशेष लेखन खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विषयों पर किया जाता है।

प्रश्न 2:विशेष लेखन क्यों किया जाता है?

उत्तर –विशेष लेखन इसलिए किया जाता है, क्योंकि इससे समाचार-पत्रों में विविधता आती है और उनका कलेवर बढ़ता है। पाठकों की व्यापक रुचियों को ध्यान में रखते हुए उनकी जिज्ञासा शांत करते हुए मनोरंजन करने के लिए विशेष लेखन किया जाता है।

प्रश्न 3:विशेष संवाददाता किन्हें कहते हैं?

उत्तर –जिन रिपोर्टरों द्वारा विशेषीकृत रिपोर्टिंग की जाती है, उन्हें विशेष संवाददाता कहते हैं।

प्रश्न 4:फ्री-लांस पत्रकार किन्हें कहते हैं?

उत्तर –एक निश्चित भुगतान लेकर अलग-अलग समाचार-पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार-लेखन करने वाले पत्रकारों को फ्री-लांस पत्रकार कहते हैं।

प्रश्न 5:क्रिकेट की कमेंट्री करने वाले दो प्रसिदध व्यक्तियों के नाम लिखिए।

उत्तर –नरोत्तम पुरी, जसदेव सिंह, हर्ष भोगले

प्रश्न 6:कारोबार एवं व्यापार क्षेत्र से जुड़ी पाँच शब्दावली लिखिए।

उत्तर –मुद्रा-स्फीति, तेजड़िए, बिकवाली, निवेशक, व्यापार घाटा

प्रश्न 7:विशेष लेखन के किन्हीं पाँच क्षेत्रों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर –खेल, अर्थ-व्यापार, विज्ञान प्रौद्योगिकी, कृषि, पर्यावरण

प्रश्न 8: विशेषीकृत पत्रकारिता से आप क्या समझते हैं?

उत्तर –वह पत्रकारिता, जो किसी घटना की तह में जाकर उसका अर्थ स्पष्ट करे और पाठकों को उसका महत्त्व बताए, विशेषीकृत पत्रकारिता कहलाती है।

प्रश्न 9: डेस्क से आप क्या समझते हैं? अथवा डेस्क किसे कहते हैं?

उत्तर –समाचार-पत्रों, टीवी, रेडियो चैनलों में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है, जिन पर समाचारों का संपादन करके छपने योग्य बनाया जाता है।

प्रश्न 10: पत्रकारिता में 'बीट' शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर –समाचार कई प्रकार के होते हैं; जैसे-राजनीति, अपराध, खेल, आर्थिक, फ़िल्म तथा कृषि संबंधी समाचार आदि। संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा उनके ज्ञान एवं रुचि के आधार पर किया जाता है। मीडिया की भाषा में इसे ही बीट कहते हैं।

प्रश्न 11: बीट रिपोर्टर की रिपोर्ट कब विश्वसनीय मानी जाती है?

उत्तर –बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा उसकी पुष्टि करके विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।

प्रश्न 12: विशेष लेखन क्या है?

उत्तर –अखबारों के लिए समाचारों के अलावा खेल, अर्थ-व्यापार, सिनेमा या मनोरंजन आदि विभिन्न क्षेत्रों और विषयों संबंधित घटनाएँ, समस्याएँ आदि से संबंधित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इस प्रकार के

लेखन की भाषा और शैली समाचारों की भाषा-शैली से अलग होती है।

प्रश्न 13: विशेष लेखन की भाषा-शैली संबंधी विशेषता का वर्णन कीजिए।

उत्तर –विशेष लेखन किसी विशेष विषय पर या जटिल एवं तकनीकी क्षेत्र से जुड़े विषयों पर किया जाता है, जिसकी अपनी विशेष शब्दावली होती है। इस शब्दावली से संवाददाता को अवश्य परिचित होना चाहिए। उसे इस तरह लेखन करना चाहिए कि रिपोर्ट को समझने में परेशानी न हो।

प्रश्न 14: आज विशेष लेखन के कौन-कौन से क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं?

उत्तर –आज खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा, जीवनशैली, रहन-सहन जैसे क्षेत्र विशेष लेखन हेतु महत्वपूर्ण हैं।

<u>निबंधात्मक प्रश्न:-</u>

1- बीट रिपोर्टिंग को विस्तार से समझाइए।

उत्तर-संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं।एक संवाददाता की बीट अगर अपराध है तो इसका अर्थ है कि वह अपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग के लिए जिम्मेदार होगा।विशेष लेखन केवल रिपोर्टिंग नहीं है।अब बीट रिपोर्टिंग के आगे एक तरह की विशेषीकृत रिपोर्टिंग है , जिसमें ना सिर्फ उस विषय की गहरी जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसके रिपोर्टिंग से संबंधित भाषा और शैली पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए।

2- बीट रिपोर्टिंग एवं विशेषीकृत रिपोर्टिंग में क्या अंतर है?

उत्तर-

बीट रिपोर्टिंग	विशेषीकृत रिपोर्टिंग
1.बीट रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता में उस क्षेत्र की जानकारी होना पर्याप्त है उसे सामान्य तौर पर खबरें ही लिखनी होती है। 2.बीट कवर करने वाले रिपोर्टर को संवाददाता कहते हैं	1. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए संवाददाता को सामान्य खबरों से आगे बढ़कर उस क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का बारीकी से विश्लेषण कर पाठकों के लिए उसका अर्थ स्पष्ट करना होता है। 2.विशेष कृत रिपोर्टिंग करने वाले रिपोर्टर को विशेष संवाददाता कहते हैं।

विशेष लेखन के अंतर्गत रिपोर्टिंग के अलावा विशेष विषय पर फीचर , टिप्पणी , साक्षात्कार , लेख , समीक्षा और स्तंभ भी आते हैं।

3- विशेष लेखन की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

उत्तर-विशेष लेखन में हर क्षेत्र की विशेष तकनीकी शब्दावलियों का प्रयोग किया जाता है। जैसे –
1.कारोबार और व्यापार में तेजडिए, सोना उचला , चांदी लुढ़की आदि।
2.पर्यावरण संबंधी लेख में आद्रता , टैक्सेस कचरा , ग्लोबल वार्मिंग आदि।
विशेष लेखन की कोई निश्चित शैली नहीं होती। विषय अनुसार उल्टा पिरामिड या फीचर शैली का प्रयोग हो सकता है। पत्रकार चाहे कोई भी शैली अपनाएं लेकिन उसे यह ध्यान में रखना होता है कि खास विषय में लिखा गया आलेख सामान्य से अलग होना चाहिए।

4-विशेषज्ञता से क्या अभिप्राय है ? विशेषज्ञता प्राप्त करने हेतु क्या किया जा सकता है?

उत्तर-व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित ना होने के बावजूद उस विषय में जानकारी और अनुभव के आधार पर अपनी समझ को इस हद तक विकसित करना कि सूचनाओं की सहजता से व्याख्या कर पाठकों को उसके मायने समझा सके।
विशेषज्ञता प्राप्त करने के लिए स्वयं को अपडेट रखना चाहिए। पुस्तकें पढ़ना ,शब्दकोश आदि का सहारा लेना ,सरकारी-गैरसरकारी संगठनों से संपर्क रखना ,निरंतर दिलचस्पी और सक्रियता आवश्यक है।
कुछ वर्षों में सबसे अधिक महत्व पूर्ण रूप से उभरने वाली पत्रकारिता आर्थिक पत्रकारिता है। क्योंकि देश की राजनीति और अर्थव्यवस्था के बीच रिश्ता गहरा हुआ है।आर्थिक मामलों की पत्रकारिता सामान्य पत्रकारिता की तुलना में काफी जटिल होती है।

5-विशेष लेखन में बीट तथा डेस्क का का अर्थ तथा महत्व बताइए।

उत्तर-बीट समाचार पत्रों तथा रेडियो , टेलीविजन में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क का होता है और उस विशेष डेस्क पर काम करने वाले पत्रकारों का समूह भी अलग होता है।जिनसे यह अपेक्षा की जाती है कि उन्हें अपने विषय की पूरी जानकारी हो। इन्हीं डेस्को पर काम करने वाले संवाददाता के बीच काम का विभाजन आम तौर पर उनकी दिलचस्पी और ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है।मीडिया की भाषा में इसे बीट कहते हैं। यदि एक संवाददाता की बीट खेल है तो उसे उस क्षेत्र की सभी खेल संबंधी रिपोर्टिंग की जिम्मेदारी उठानी पड़ती है।

पाठ 11 कहानी का नाट्यरूपांतरण

प्रश्न 1. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

उत्तर-कहानी अथवा कथानक का नाट्य रूपांतरण करते समय निम्नलिखित आवश्यक बातों का ध्यान रखना चाहिए-

i) कथानक के अनुसार ही दृश्य दिखाए जाने चाहिए।

ii) नाटक के दृश्य बनाने से पहले उसका खाका तैयार करना चाहिए।

iii) नाटकीय संवादों का कहानी के मूल संवादों के साथ मेल होना चाहिए।

iv) कहानी के संवादों को नाट्य रूपांतरण में एक निश्चित स्थान मिलना चाहिए।

v) संवाद सहज, सरल, संक्षिप्त, सटीक, प्रभाभी शैली और बोलचाल की भाषा में होने चाहिए।

vi) संवाद अधिक लंबे और ऊबाऊ नहीं होने चाहिए।

प्रश्न 2. कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ?

उत्तर-कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार करते हैं-

i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते हैं।

ii) प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।

iii) एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।

iv) दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।

v) दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

प्रश्न 3. नाटक और कहानी में क्या क्या समानताएं होती है?

उत्तर नाटक और कहानी में निम्नलिखित समानता होती है

i) नाटक और कहानी में कथावस्तु अनिवार्य रूप से होती है जो दोनों का ही प्राण तत्त्व है।

ii) दोनों में कहानी का क्रमिक विकास होता है ।

iii) दोनों में पात्र होते हैं और पात्रों का संवाद पाया जाता है।

iv)दोनों में द्वंद्व होता है और चरमोत्कर्ष दिखाया जाता है।

v) दोनों की रचना देशकाल, वातावरण एवं उद्देश्य को ध्यान में रखकर की जाती है।

vi) इस प्रकार मूलभूत तत्त्व दोनों में एक समान से होते हैं किंतु नाटक दृश्य विधा होने के कारण कुछ विशेष महत्त्व रखता है।

प्रश्न 4. कहानी और नाटक में क्या-क्या असमानताएँ हैं ?

अथवा

कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-कहानी और नाटक दोनों गद्य विधाएँ हैं। इनमें जहाँ कुछ समानताएँ हैं, वहाँ कुछ

असमानताएँ या अंतर भी हैं जो इस प्रकार है-

कहानी- i) कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है।

ii) कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।

iii) कहानी कहीं अथवा पढ़ी जाती है।

iv) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बांटा जाता है।

v) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्व नहीं है।

नाटक- i) नाटक गद्य काव्य की दृश्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है। दृश्य विधा होने के कारण नाटक को लंबे समय तक याद रखा जाता है।

ii) नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

iii) नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

iv) नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

v) नाटक में मंच सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

प्रश्न 5.कहानी के पात्रों का नाट्य रूपांतरण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

अथवा

कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार परिवर्तित किये जा सकते हैं ?

उत्तर-कहानी के पात्र नाट्य रूपांतरण में निम्न प्रकार से परिवर्तित किये जा सकते हैं-

i) नाट्य रूपांतरण करते समय कहानी के पात्रों की दृश्यात्मकता का नाटक के पात्रों से मेल होना चाहिए।

ii) पात्रों की भावभंगिमाओं तथा उनके व्यवहार का भी उचित ध्यान रखना चाहिए।

iii) पात्र घटनाओं के अनुरूप मनोभावों को प्रस्तुत करने वाले होने चाहिए।

iv) पात्र अभिनय के अनुरूप होने चाहिए।

v) पात्रों का मंच के साथ मेल होना चाहिए।

vi) पात्रों के संवाद छोटे, प्रभावशाली, बोलचाल की भाषा में हो ।

प्रश्न 6. कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता है ?

अथवा

कहानी के नाट्य-रूपांतरण में किन किन महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

उत्तर-कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है-

i) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है।

ii) कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है।

iii) जानकारी, सूचना और घटनाओं को दोहराना नहीं चाहिए।
iv) कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है।
v) ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
vi) कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है।
vij) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है।
viii) संवाद छोटे, प्रभावशाली, बोलचाल की भाषा में हो ।
ix) कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाना चाहिए ।

प्रश्न 7 नाट्य रूपांतरण में किस प्रकार की मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है ?

अथवा

नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं ?

उत्तर-नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है-
i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है।
ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है।
iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने समस्या आती है।
iv) संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है।
v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है।

पाठ 12. कैसे बनता है रेडियो नाटक

1.रेडियो नाटक की कहानी में किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में कहानी संवादों तथा ध्वनि प्रभावों पर ही आधारित होती है। इसमें कहानी का चयन करते समय अनेक बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं-

(i). **कहानी एक घटना प्रधान न हो**-रेडियो नाटक की कहानी केवल एक ही घटना पर आधारित नहीं होनी चाहिए क्योंकि ऐसी कहानी श्रोताओं को थोड़ी देर में ही ऊबाऊ बना देती है जिसे श्रोता कुछ देर पश्चात् सुनना पसंद नहीं करते इसलिए रेडियो नाटक की कहानी में अनेक घटनाएँ होनी चाहिए।

(ii). **अवधि सीमा -** सामान्य रूप से रेडियो नाटक की अवधि पंद्रह से तीस मिनट तक हो सकती है। रेडियो नाटक की अवधि इससे अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि रेडियो नाटक को सुनने के लिए मनुष्य की एकाग्रता की अवधि 15 से 30 मिनट तक की होती है, इससे ज्यादा नहीं।

(iii) **पात्रों की संख्या सीमित हो** - रेडियो नाटक में अधिकतम 5 पात्र हो सकते है क्योंकि रेडियो नाटक में श्रोता पात्रों की पहचान उनकी आवाज के द्वारा ही करता है ऐसे में सीमित पात्रों को तो आवाज के द्वारा पहचाना जा सकता है किंतु अगर पात्रों की संख्या ज्यादा है तो श्रोता बहुत

सारी आवाजों के बीच पात्र की पहचान नहीं कर पायेगा और विचलित होकर रह जायेगा।

2. रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं -

(i). रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।

(ii). पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।

(iii). नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।

(iv). इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है।

(v). संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है

(vi). संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

3. रेडियो पर रेडियो नाटक का आरंभ किस प्रकार हुआ ?

उत्तर- आज से कुछ दशक पहले रेडियो ही मनोरंजन का प्रमुख साधन था। उस समय टेलीविज़न, सिनेमा, कम्प्यूटर आदि मनोरंजन साधन उपलब्ध नहीं थे। ऐसे समय में घर बैठे ही रेडियो ही मनोरंजन का सबसे सस्ता और सुलभ साधन था। रेडियो पर खबरें आती इसके साथ-साथ अनेक ज्ञानवर्धक कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते थे। रेडियो पर संगीत और खेलों का आँखों देखा हाल प्रसारित कि जाता था। हिंदी के अनेक नाटक जो बाद में मंच पर बहुत प्रसिद्ध रहे वे मूलतः रेडियो के लिए ही लिखे गए थे। धर्मवीर भारतीय द्वारा रचित 'अंधा युग' और मोहन राकेश द्वारा रचित 'आषाढ़ का एक दिन इसका एक श्रेष्ठ उदाहरण है।

4. रेडियो नाटक के तत्वों का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।

उत्तर- रेडियो नाटक का मूल आधार ध्वनि मानी जाती है। यह मानवीय भावों को सरलता सहजता से व्यक्त कर देने की क्षमता रखती है। रेडियो तत्वों के तीन तत्व माने जाते हैं। उनके तत्व हैं-(1) भाषा (2) ध्वनि प्रभाव (3) संगीत।

(i) **भाषा**-भाषा ही रेडियो नाटक की मूल आधार होती है। यही सुनने और बोलने का कार्य करती है। इसी से कठिन एवं जटिल रेडियो नाटक और संवाद जटिल हो जाते हैं।

(ii) **ध्वनि प्रभाव**-ध्वनि तरह-तरह की वातावरणों को बनाने में सहायक बनाती है। तूफान, बादल, बाज़ार आदि इन्हीं से प्रसारण के माध्यम से इधर-उधर प्रसारित करती है।

(iii) **संगीत-** यह रेडियो नाटक को संजीवता प्रदान करने का कार्य करता है जिससे प्रभावित की सृष्टि होती है। संगीत से प्रभाविता की क्षमता बढ़ती है।

5. दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाएं हैं? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है?

उत्तर- (i) दृश्य श्रव्य माध्यम में हम नाटक को अपनी आंखों से देख भी सकते हैं और पात्रों के संवादों को सुन भी सकते हैं किंतु श्रव्य माध्यम में हम केवल सुन सकते हैं उसे देख नहीं

सकते।

(ii)दृश्य श्रव्य माध्यम में हम पत्रों के हाव भाव देखकर उनकी दशा का अनुमान लगा सकते हैं किंतु श्रव्य माध्यम में हम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते।

सीमित अवधि व सीमित पात्रों आदि द्वारा इन्हें पूरा किया जा सकता है |

6. रेडियो नाटक और नाटक में क्या समानताएं है?

उत्तर- रेडियो नाटक और नाटक दोनों में पात्र होते है | दोनों में संवाद होता है | दोनों में एक कथावस्तु होती है। दोनों में वातावरण का निर्माण होता है। दोनों की एक समय सीमा होती है।

7. रेडियो नाटक और नाटक में क्या अंतर है?

उत्तर- (i) नाटक मंच पर प्रस्तुत किया जाता है जबकि रेडियो नाटक रेडियो पर

(ii) रेडियो नाटक में पात्रो का परिचय वेशभूषा से भी हो सकता है जबकि नाटक में संवाद द्वारा ही परिचय दिया जा सकता है।

(iii) नाटक में वातावरण दिखाया जा सकता है जबकि रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभाव द्वारा वातावरण निर्माण

(iv) नाटक में कथा ऐक्शन प्रधान हो सकती है जबकि रेडियो नाटक में नही।

(v) नाटक में पात्र अधिक हो सकते है जबकि रेडियो नाटक में अधिकतम 5

8. रेडियो नाटक के लिए पात्रों की संख्या सीमित क्यों रखनी चाहिए|(CBSE 2022)

उत्तर - क्योंकि रेडियो नाटक में श्रोता पात्रों की पहचान उनकी आवाज के द्वारा ही करता है ऐसे में सीमित पात्रों को तो आवाज के द्वारा पहचाना जा सकता है किंतु अगर पात्रों की संख्या ज्यादा है तो श्रोता बहुत सारी आवाजों के बीच पात्र की पहचान नहीं कर पायेगा ।

9. रेडियो नाटक की अवधि 15-20 मिनिट के बीच क्यों होनी चाहिए| (CBSE 2022)

उत्तर-रेडियो एक श्रव्य माध्यम है और नाटक का आनंद श्रोता आवाज और ध्वनि प्रभाव के जरिये ही करता है ऐसे कम समय में तो श्रोता नाटक में एकतान बना रहता है परंतु लंबे समय तक श्रोता एकाग्र नहीं बना रह सकता और फिर रेडियो में नाटक थोड़ा लम्बा या उबाऊ होने पर श्रोता दूसरे चैनल पर उंगली घुमा सकता है अतः नाटक की अवधि 15-20 मिनिट होनी चाहिए|

अतिरिक्त प्रश्न

1.हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के नाटक आन्दोलन के विकास में किसकी अहम भूमिका थी ?

उत्तर- हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं के नाटक आन्दोलन के विकास में रेडियो नाटक की भूमिका बहुत ही अहम थी |

2. हिंदी के कई नाटक जो बेहद कामयाब हुए , वो किस में लिखे गए थें ?

उत्तर- हिंदी के कई नाटक जो बेहद कामयाब हुए, वो रेडियो के लिए लिखे गए थे | ये सभी नाटक बहुत ज्यादा कामयाब हुए थें |

3. हिंदी साहित्य का प्रसिद्ध नाटक "आषाढ़ का एक दिन " के लेखक कौन हैं ?

उत्तर- हिंदी के प्रसिद्ध नाटक "आषाढ़ का एक दिन " के लेखक मोहन राकेश हैं |

4. सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में भी क्या महत्वपूर्ण होता है ?

उत्तर- सिनेमा और रंगमंच की तरह रेडियो नाटक में चरित्र बहुत ही महत्वपूर्ण होतें है |

5. रेडियो नाटक में कहानी आगे कैसे बढ़ती है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में कहानी संवादों से आगे बढ़ती हैं |

6 .रेडियो नाटक में फिल्म की तरह क्या नहीं होतें है ?

उत्तर- रेडियो नाटक में फिल्म की तरह दृश्य नहीं होते है |

7 .रेडियो पूरी तरह कैसा माध्यम है ?

उत्तर- रेडियो पूरी तरह श्रव्य माध्यम है |

8. रेडियो नाटक में पात्रों संबंधी तमाम जानकारी किससे मिलती है ?

उत्तर- रेडियो नाटक संबंधी तमाम जानकारी हमें संवादों के माध्यम से ही मिलती है | उनके नाम, आपसी सम्बन्ध, चारित्रिक विशेषताएँ , ये सभी हमें संवादों द्वारा ही उजागर करना पड़ता है |

9. रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

उत्तर- रेडियो नाटक के लिए कहानी का चुनाव करते समय मुख्य बातों का ध्यान रखना चाहिए -

(i) कहानी सिर्फ घटना प्रधान न हो |

(ii) उसकी अवधि बहुत ज्यादा न हो |

(iii) पात्रों की संख्या सीमित हो |

पाठ 13. नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन

प्रश्न नए एवं अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के विषय में सामान्य जानकारी दीजिए।

प्रश्न : जैसा कि आप जानते हैं कि आप प्रतिदिन कुछ ना कुछ कार्य करते ही हो । कभी फिल्म देखने जाते हो, कभी अखबार पढ़ते हो, कभी अपने दोस्तों के साथ पिकनिक मनाने जाते हो, कभी मॉल में जाते हो, कभी सड़क पर चलते हो, कभी बगीचे में घूमते हो, कभी अपने विद्यालय के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेते हो, अभी योग और व्यायाम करते हो, कभी सुबह की सैर पर जाते हैं हो, या कभी देश विदेश की घटनाओं या सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक मुद्दे पर परस्पर बातचीत करते हो तो

निश्चित रूप से उस कार्य का अनुभव अपने माता पिता से या अपने साथियों से या अपने शिक्षकों से या अन्य किसी न किसी व्यक्ति के साथ साझा करते ही हो । जब आप इसी अनुभव को सुसंबद्ध और सुसंगत तरीके से लिखते हो तो यही लेखन नए और अप्रत्याशित विषयों पर

लेखन कहलाता है। अतः ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो और उस विषय को आप अपने दैनिक जीवन में अनुभव करते हो,उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

अप्रत्याशित लेखन का कोई निश्चित रूप नहीं होता है । दैनिक जीवन से जुड़े हुए किसी भी विषय पर अप्रत्याशित लेखन लिखा जा सकता है । जब आप अपने विचारों को अपने अनुभव, तर्क, सिद्धांत, समाज, स्थान, काल और पात्र के आधार पर शब्दांकित करते हैं तो वो कभी संस्मरण, कभी निबंध, कभी रेखाचित्र, कभी कहानी, कभी यात्रा वृतांत कभी रिपोतार्ज आदि साहित्यिक विधा का रूप ले सकता है। अप्रत्याशित विषयों पर लेखन बहुत ही आसान होता है बस उसे क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करना अभ्यास पर निर्भर करता है ।

प्रश्न 1 अप्रत्याशित शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर अ+प्रति+आशा+इत=अप्रत्याशित अर्थात् जिसकी आशा न की गई हो। अतः ऐसे विषय जिसकी आपने कभी आशा भी न की हो उस पर लेखन कार्य करना ही अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कहलाता है।

प्रश्न 2. पारंपरिक और अप्रत्याशित विषयों में अंतर बताइए |

उत्तर : पारंपरिक विषय वो विषय होते हैं जो किसी मुद्दे, विचार, घटना आदि से जुड़े होते हैं और अधिकतर सामाजिक और राजनीतिक विषय होते हैं। इसमें आप अपनी व्यक्तिगत राय को उतनी तवज्जह न देकर सामूहिक विचार पर ज़ोर देते हैं, जबकि अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में आपके अपने निजी विचार होते हैं।

प्रश्न3.अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के लाभ बताइए ।

अथवा

अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता क्यों दी जाती है ?

उत्तर : अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता देने के लाभ इस प्रकार है -

i) अप्रत्याशित लेखन के माध्यम से हर किसी को रचनात्मक एवं मौलिक लेख लिखने का अवसर मिलता है। ii) इसमें लेखक विचारों को किसी तर्क एवं चिंतन मनन के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करता है तो उसके चिंतन मनन, विचार विश्लेषण एवं तार्किक क्षमता का विकास होता है।

iii) इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होता है।

iv) इससे भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ बनती है।

v) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है।

प्रश्न 4. क्या अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कोई निश्चित रूप लेती है?

उत्तर : जी नहीं, ऐसा बिलकुल नहीं है । अप्रत्याशित लेखन का कोई निश्चित रूप नहीं होता है । दैनिक जीवन से जुड़े हुए किसी भी विषय पर अप्रत्याशित लेखन लिखा जा सकता है । जब आप अपने विचारों को अपने अनुभव, तर्क, सिद्धांत, समाज, स्थान, काल और पात्र के आधार पर शब्दांकित करते हैं तो वो कभी संस्मरण, कभी निबंध, कभी रेखाचित्र, कभी कहानी, कभी यात्रा वृतांत कभी रिपोतार्ज आदि साहित्यिक विधा का रूप ले सकता है।

प्रश्न 5. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के विषय क्या हो सकते हैं?

उत्तर : दैनिक जीवन से जुड़े हुए किसी भी विषय पर अप्रत्याशित लेखन लिखा जा सकता है । ये विषय कुछ भी हो सकते हैं, जैसे मेरे घर का बगीचा, एकशाम पहाड़ी जीवन के नाम, दीवाल घड़ी, बारिश में बिन छतरी, तीन घंटे का अकेलापन, दिव्य शक्तियाँ और मैं, फर्ज कीजिए आप तिलचट्टा हैं, धारावाहिकों में स्त्री, समुद्र किनारे आप और आपकी यादें वगैरह-वगैरह।

प्रश्न 6. अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के क्या क्या नियम हो सकते है ?

उत्तर :अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के निम्नालिखित नियम हो सकते है -

i) आप इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग कर सकते हैं।

ii) विविध दृष्टिकोणों से विषय पर विचार करके लिखने की शुरुआत करनी चाहिए।

iii) लेखन का विवरण और विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत होना चाहिए।

iv) भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

V) जीवन के प्रत्येक कार्य एवं परिवेश का निरीक्षण तथा चिंतन मनन भली-भांति करना चाहिए।

प्रश्न 7. 'रटंत' का आशय स्पष्ट करते हुए इसके हानि और लाभ पर प्रकाश डालिए।

उत्तर : किसी भी विषय को बिना सोचे समझे, बिना विश्लेषण किए, बिना चिंतन मनन किए केवल 'रट्टा मारकर' याद कर लेने को 'रटंत' कहते हैं।

अधिकतर विद्वानों का मानना है कि 'रटंत' विद्या के लाभ के बजाए हानियां ही अधिक है इससे बच्चे के चिंतन मनन करने की क्षमता, विचार विश्लेषण करने की क्षमता तथा मौलिक ढंग से रचनात्मक लेखन या सृजन की क्षमता नष्ट हो जाती हैं अतः 'रटंत' विद्या लाभकारी नहीं है। अप्रत्याशित लेखन में तो 'रटंत' विद्या कोई काम आती ही नहीं।

किंतु कुछ विद्वान 'रटंत' विद्या को विद्यार्थी की प्रतिभा से जोड़ते हैं और उनका मानना है कि किसी भी वस्तु को रटकर याद कर लेना यह विद्यार्थी विशेष का आंतरिक गुण है इसके लिए वह पुरानी शिक्षा पद्धति का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि उस समय वेद मंत्रों को, ऋचाओं को मौखिक रटकर याद कर लेना किसी प्रतिभा से कम नहीं माना जाता था। मध्यम मार्ग अपनाते

हुए हम कह सकते हैं कि 'रटंत' के लाभ और हानि दोनों ही होते हैं अतः हमें रटने वाली विषय वस्तु को रटकर याद कर लेना चाहिए और समझने एवं विचार विश्लेषण करने योग्य विषय वस्तु को कभी भी नहीं रटना चाहिए।

अप्रत्याशित लेखन के कुछ उदाहरण यहां पर दिए जा रहे हैं उनके आधार पर आप किसी भी विषय पर पूछे गए अप्रत्याशित लेखन के किसी भी विषय पर लिख सकते हो।

1.कर्म का महत्त्व / अभ्यास का फल / करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान

"कुछ काम करो, कुछ काम करो, जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो, समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।"

मानव-जीवन में कर्म की प्रधानता है। कर्म अभ्यास के साथ जुड़ा है। अभ्यास का अर्थ है-किसी काम को करने का निरंतर प्रयत्न। किसी काम को करने से वांछित सफलता नहीं मिलती तो उसे निरंतर प्रयत्न करते रहना चाहिए। किसान जो बीज खेत में बोता है, उसे ही फसल के रूप में वह बाद में काटता है।

निरंतर अभ्यास करने से मूर्ख भी ज्ञानी हो जाता है जैसे पत्थर पर रस्सी के बार-बार आने-जाने से पत्थर पर निशान पड़ जाते हैं। यह कार्य-कुशलता का मूलमंत्र है। शरीर को सुडौल बनाने के लिए निरंतर व्यायाम आवश्यक है। विद्यार्थी को कोई चीज बार-बार याद करनी पड़ती है। कवि भी तभी प्रखर बनता है जब वह अभ्यास करता है। भगवान श्री कृष्ण ने कहा भी है कि -

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भुर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि ॥"

सभी को निरंतर कर्म का अभ्यास करते रहना चाहिए।अभ्यास से कई लाभ होते हैं। इससे मानव की कार्य-कुशलता बढ़ती है। इससे ज्ञान में वृद्धि होती है। अभ्यास के प्रसंग में यह भी विचारणीय है कि अभ्यास व्यक्ति स्वयं करता है या उसके लिए किसी के निर्देश की आवश्यकता होती है।

अभ्यास के द्वारा व्यक्ति ज्ञान की विभिन्न धाराओं का परिचय प्राप्त करता है। यह विशेष प्रकार की आदत का निर्माण कर देता है। यह आदत कई रूपों में काम देती है। अभ्यास के कारण ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ग्लैडस्टोन मंच पर बोल सके। कालिदास की कहानी के बारे में सभी जानते हैं।

अभ्यास मानव-जीवन के लिए वह पारस पत्थर है जिसका स्पर्श पाकर लोहा भी सोना हो जाता

है। यह बिल्कुल सही है कि जड़ बुद्ध वाला व्यक्ति भी अभ्यास से सीख सकता है। सफलता के लिए अभ्यास नितांत आवश्यक है। ठीक ही कहा गया है कि -

"करत-करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रह भरोसे भाग्य के दुख भोग पछताते नहीं।।"

2. जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि / कवि की कल्पना शक्ति

"कहते हैं कि सूर्य की किरण हर अंधेरे को चीर कर उजाला करती हैं।
कवि की लेखनी निराशा को खत्म कर आशा-संचार करती है।"

मनुष्य अपनी कल्पना शक्ति का प्रयोग करके ऐसे स्थानों पर पहुँच जाता है जहाँ मनुष्य का पहुँचना असंभव है। असीमित संभावनाओं से परिपूर्ण कविता मनुष्य के हृदय तक पहुँचती है
हम अपने शरीर के द्वारा जहाँ नहीं पहुँच पाते हैं वहाँ पल भर में ही कल्पना के पंख लगा कर पहुँच जाते हैं परंतु कल्पना वही कर सकता है जिसमें जिजीविषा हो,जो दृढ़निश्चयी है और जो सदैव क्रियाशील रहता है। एक कवि की कलम में इतनी शक्ति होती है कि वह समाज में परिवर्तन एवम् क्रांति दोनों ला सकता है।

प्राचीन समय में महाकवि कालिदास ने मेघों को दूत बनाकर अपनी प्रिय के पास भेजा था, आधुनिक कवियों में कवि निराला का प्रिय विषय बादल ही रहा है ,कवि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने तो मेघों को अतिथि मानकर 'मेघ आए' कविता की रचना कर डाली। आकाश में विद्यमान सूर्य की किरणें समस्त संसार को प्रकाशित एवम् आलोकित करती हैं पर कवि की कल्पना सूर्य की किरणों को पार करके आकाश की उस अंतिम सीमा को स्पर्श करती हैं जहाँ सूर्य का पहुँचना असंभव है | वास्तव में कवि जब विचारों को शब्दों में बाँधकर रचना लिखता है तो उसकी रचना समय, स्थान की सीमा को पार कर जाती है | असीमित संभावनाओं से परिपूर्ण कविता मनुष्य के हृदय तक पहुँचती है |

आजादी के आंदोलन में कवियों और लेखकों की रचनाओं ने ही करोड़ों भारतीयों के हृदय में स्वतंत्रता की चेतना उत्पन्न की थी | आज से हजारों साल पहले लिखे वेद हमें आज भी जीवन की राह दिखाते हैं | कविता के बहाने' कविता के कवि कुंवर नारायण जी कविता की यात्रा के बारे में बताते है -

"कविता एक उड़ान हैं चिड़िया के बहाने
कविता की उडान भला चिडिया क्या जाने?"

कवि के द्वारा लिखी गई रचना युगो युगो तक सीख देती है जैसे रामचरितमानस ,रामायण

आदि रचनाएं आज भी संदेश दे रही है -

"कविता एक खिलना हैं फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने"

3. प्रातःकाल योग करते लोग

योग रखे निरोग, योग भगाए रोग

प्रातःकाल का समय बहुत सुहावना होता है। उगते हुए सूर्य की लालिमा के साथ-साथ चिड़ियों की चहचहाहट और धीमी-धीमी बहती हवा शरीर को एक अद्भुत आनंद से भर देती है। उस समय चारों ओर का वातावरण शांत होता है। प्रकृति अपने सुंदरतम रूप में होती है। ऐसा समय योग करने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। एक दिन मैं प्रातःकाल के समय पार्क में घूमने गया। मैंने वहाँ देखा कि बहुत से लोग घास के मैदान में अपना आसन बिछाकर योग कर रहे थे। योग करते समय वे बहुत प्रसन्न नजर आ रहे थे। उनमें केवल वृद्ध व्यक्ति ही नहीं, बल्कि सभी आयु वर्ग के लोग थे। जब उनका योग पूरा हो गया तब मैंने एक व्यक्ति से योग के विषय में पूछा कि प्रातःकाल योग करने से क्या लाभ होता है तो उस व्यक्ति ने बताया कि योग हमारे जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। योग हमारे शरीर, मन एवं आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है। यह मन को शांत एवं स्थिर रखता है, तनाव दूर कर सोचने की क्षमता तथा आत्मविश्वास और एकाग्रता को बढ़ाता है। नियमित रूप से योग करने से हमारा शरीर तो स्वस्थ रहता ही है साथ ही यदि कोई रोग है तो इसके द्वारा उसका उपचार भी किया जा सकता है। वर्तमान परिवेश में योग न केवल हमारे लिए लाभकारी है, बल्कि विश्व में बढ़ते प्रदूषण एवं मानवीय व्यस्तताओं से उपजी समस्याओं के निवारण में इसकी सार्थकता और भी बढ़ गई है। इस प्रकार प्रातःकाल योग करते लोगों को देखकर तथा योग से होने वाले लाभों के विषय में जानकर मुझे भी योग करने की प्रेरणा मिली। हम सभी लोगों को प्रातः काल योग करना चाहिए।

प्रतिदिन करें नियम से योग |
अपने शरीर व मन को रखें निरोग ||

4. अति सर्वत्र वर्जयेत / अति किसी चीज की अच्छी नहीं

"अति दानात बलिर्वधो ह्यति मानात सुयोधन।
अति लौल्यात रावणो हन्त: अति सर्वत्र वर्जयेत।।"

भारतीय संस्कृति में अति का त्याग करने की बात हमेशा कही गई है। क्योंकि किसी भी चीज की अति अंतत: नुकसानदायक साबित होती है, चाहे कार्य कितना भी अच्छा क्यों ना हो | राजा बलि ने तो दान ही दिया था ये दान उन्होंने अपनी क्षमता से बढ़ कर दिया इसलिए बावन भगवान द्वारा साढ़े तीन पग भूमि मांगने पर उन्हें अपने प्राणों की कुर्बानी देनी पड़ी।
इस प्रकार किसी भी क्षेत्र में अति हानिकारक परिणाम ही देती है चाहे वह क्षेत्र सकारात्मक हो या नकारात्मक हो । यदि किसी व्यक्ति ने यदि ज्यादा भोजन खा लिया हो तो उसे ज्यादा भोजन खाने के परिणाम स्वरूप; अपचन, उल्टी या दस्त आदि हो जाती है -

"भोजन, आहार, निद्रा, खेल, व्यसन, और अर्थ संचय ।
विज्ञान प्रगति अस्त्र शस्त्र निर्माण अति सर्वत्र वर्जय ।।"

धन की अति- दुर्व्यसनों को जन्म देती है । ज्यादा धन, गलत काम करवाता है जिसके दुष्परिणामस्वरूप ज्यादा धन व्यक्ति का अहित ही करता है क्योंकि ज्यादा धन, आदमी का मस्तिष्क विकृत कर देता है ।
विद्वानों का तो यहां तक कहना है कि प्रत्येक रिश्ते में परस्पर प्रेम भी संतुलित मात्रा में करना चाहिए। चाहे वह रिश्ता भाई - बहन का प्रेम हो या दोस्तों का प्रेम हो या कोई भी रिश्ता हो यदि उसमें प्रेम संतुलित मात्रा में न होकर अति की सीमा को पार कर जाएगा तो उस प्रेम और मोहब्बत के टूटने की बहुत अधिक संभावना है ।
आज विज्ञान की प्रगति के कारण हम पर्यावरण के क्षेत्र में अति करते जा रहे हैं निश्चित रूप से इस अति का दुष्परिणाम इस सृष्टि का पुनः विनाश के रूप में सामने आ सकता है 'कामायनी' में जयशंकर प्रसाद ने इसी बात को समझाते हुए कहा कि -

"प्रकृति रही दुर्जेय, पराजित ,हम सब थे भूले मद में;
भोले थे, हाँ तिरते केवल, ,सब विलासिता के नद में। "

5. स्वच्छता की जीवन में अनिवार्यता

स्वच्छता एक अनिवार्य कदम स्वच्छता प्रत्येक व्यक्ति का प्राथमिक उत्तरदायित्व होना चाहिए। सभी को यह समझना चाहिए कि खाने और पानी की भाँति ही स्वच्छता भी बहुत आवश्यक है, बल्कि हमें स्वच्छता को खाने और पानी से भी अधिक प्राथमिकता देनी चाहिए। हम केवल तभी स्वस्थ रह सकते हैं जब हम सफाई और स्वास्थ्यकर तरीके अपनाएँगे। बचपन सभी के जीवन का सबसे अच्छा समय होता है, जिस दौरान हम स्वच्छता की आदत में कुशल हो सकते हैं, जैसे- रोज नहाना, स्वच्छ कपड़े पहनना, अपने आस-पास साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना, स्वच्छ भोजन करना आदि अभिभावक की नियमित निगरानी और सतर्कता में होना चाहिए, ताकि

बचपन से ही अच्छी आदतों का विकास बच्चों में हो सके

स्कूल और कॉलेजों में स्वच्छता के विभिन्न प्रकारों के विषय पर विद्यार्थियों को बहुत सारे होमवर्क दिए जाते हैं। आज के समय में ये बहुत ही महत्त्वपूर्ण विषय है, क्योंकि एक बहुत बड़ी जनसंख्या स्वच्छता के अभाव में बीमारी के कारण प्रतिदिन मृत्यु को प्राप्त हो रही है। इसलिए जीवन में स्वच्छता के महत्त्व और आवश्यकता के बारे में जागरूक होना बहुत आवश्यक है। जीवन को बचाने और स्वस्थ जीवन जीने के लिए हम सभी को मिलकर स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। हमारे प्रधानमंत्री 'नरेंद्र मोदी ने एक अभियान चलाया, जिसे 'स्वच्छ भारत' कहा गया। भारतीय नागरिक के रूप में हम सभी को इस अभियान के उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा करने में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए।

ध्यान दें- अप्रत्याशित विषयों पर रचनात्मक लेखन के विषय किसी भी विषय पर हो सकते हैं जो आपके दैनिक जीवन से जुड़े हुए हैं। रचनात्मक लेखन वाले प्रश्नों पढ़े हुए अंश से आना एक संयोग ही हो सकता है क्योंकि रचनात्मक लेखन में विद्यार्थी के लिखने की सृजन क्षमता मूल्यांकन किया जाता है अतः रचनात्मक लेखन की प्रश्न हर बार नवीन विषयों पर ही आधारित होते हैं। रचनात्मक लेखन में केवल अभ्यास ही आपका सहारा हो सकता है अतः रचनात्मक लेखन के लिए निरंतर अभ्यास करते रहे। आपके अभ्यास हेतु कुछ विषय दिए जा रहे हैं

1. दुर्घटना से देर भली
2. हिंदी में रोजगार के अवसर
3.आसमान में इन्द्रधनुष
4. घटती धरती बढ़ते लोग
5.मेरे अध्ययन कक्ष की घड़ी
6. बरसात में नदी किनारे घिर जाना
7.अचानक जब हमारी मैट्रो रुक गई
8.काश ! मैं उड़ पाता
9. मेरा प्यारा भारत
10. परीक्षा के दिन
11.नई शिक्षा नीति
12.बदलता बचपन
13.भारत में उभरती हुई सौर ऊर्जा
14.मेरा गांव मेरा देश
15. जंगल में एक दिन
16. भारतीय किसान

****

आरोह भाग-2 काव्य खंड

पाठ-1 आत्म-परिचय व एक गीत- हरिवंश राय बच्चन

आत्मपरिचय-

मूलभाव- कवि हरिवंश राय बच्चन ने 'आत्मपरिचय' में प्रेम और मस्ती का संदेश दिया है। कवि अपनी सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक है परंतु प्रेम के बिना उसे ये संसार अधूरा लगता है। प्रेम के कारण ही वह जीवन के सुख-दुख सहन करता है और मस्त रहता है । कवि सांसारिक लोभ-लालच व मोह-माया के ज्ञान को भुलाना चाहता है और धन-दौलत को ठोकर मारता है। प्रेम रहित संसार के लिए कवि के मन में विरोध व विद्रोह है जिसे उन्होंने कोमल शब्दों और शीतल स्वर में अभिव्यक्त किया है।

कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज्यादा कठिन है। कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्रविधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। कवि कहता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है- उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग | किसी असंभव आदर्श की तलाश में सारी दुनियादारी ठुकराकर उस भाव से कि जैसे दुनिया से इन्हें कोई वास्ता ही नहीं है।

एक गीत-

मूलभाव- निशा-निमंत्रण से उद्धृत इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचल तेजी भर सकता है-अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने के अभिशिप्त हो जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुजरते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुजरने का जज्बा भी लिए हुए है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संसार के लोग पृथ्वी पर क्या जोड़ते हैं?

(क) धर्म (ख) मोक्ष (ग) अर्थ (घ) काम

2. कवि कैसे संसार को ठुकराता है?

(क) ईमानदार (ख) सत्यनिष्ठ (ग) कर्मशील (घ) वैभवशाली

3. कवि उन्माद में क्या लिए फिरता है?

(क) अवसाद (ख) अहसास (ग) अहसान (घ) अवसर

4. 'एक गीत' कविता में कवि ने समय को कैसा माना है?

(क) स्थिर (ख) परिवर्तनशील (ग) तीव्र (घ) उग्र

5. "दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में कवि हताश और दुखी क्यों है?

(क) पत्नी से तलाक होने के कारण (ख) प्रियतमा की निष्ठुरता के कारण

(ग) संतान सुख से वंचित होने के कारण (घ) परिवार से बिछुड़ने के कारण

6. कवि के हृदय में कैसे भाव भरे हुए हैं?

(क) प्रसन्नता (ख) उत्साह (ग) विह्वलता (घ) घृणा

7. कवि के फूट पड़ने को समाज ने क्या कहा?

(क) छंद बनाना (ख) बहाने बनाना

(ग) अभिनय करना (घ) आँसू बहाना

8.आत्म परिचय कविता में कवि का संदेश क्या है?

(क) मस्ती (ख) हँसी (ग) सुधारवाद (घ) निष्क्रियता

9.'मंजिल भी तो है दूर नहीं'- यह विचार किस के मन में आ रहा है?

(क) पंथी के (ख) पर्वतारोही के (ग) सैनिक के (घ) खिलाड़ी के

10.बच्चों की याद आते ही चिड़िया क्या करती है?

(क) चीं-चीं करती है (ख) तेज़ी से उड़ती है

(ग)दाना चुगती है (घ) पंख फैलाती है

11. किसके बच्चे प्रत्याशा में हैं?

(क) बुलबुल के (ख) चिड़िया के (ग) कोयल के (घ) मैना के

12. कवि सीखे हुए ज्ञान को -

(क) निरंतर स्मरण कर रहा है (ख) जीवन में उतार रहा है

(ग) भुलाने की चेष्टा कर रहा है (घ) औरों को सिखा रहा है

13. कवि चाहता है कि संसार उसे अपनाए -

(क) एक महान कवि के रूप में (ख) मार्गदर्शक के रूप में

(ग) एक नए दीवाने के रूप में (घ) एक दार्शनिक के रूप में

14. संसार को कवि संदेश देना चाहता है -

(क) मस्त रहने का (ख) देश प्रेम का (ग) सत्य की खोज का (घ) त्यागमय जीवन का

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
ग	घ	क	ख	घ	ग	क	क	क	ख	ख	ग	ग	क

काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न-

काव्यांश-1

मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ,
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ।
मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ

1.काव्यांश में कवि किसका भार लिए फिरता है?

(क) घर तथा परिवार का (ख) संसार का
(ग) अपने कार्यालय का (घ) आस-पड़ोस का

2.काव्यांश के अनुसार कवि सबको क्या बाँट रहा है?

(क) खुशियाँ (ख) दुःख (ग) आशा (घ) प्रेम

3.कवि अपने जीवन में किस सुरा का पान करता है?

(क) ईर्ष्या-द्वेष (ख) उत्साह उमंग (ग) स्नेह (घ) ये सभी

4.कवि ने किसका ध्यान नहीं करने की बात की है?

(क) संसार की समर्थता की (ख) संसार के बंधनों की
(ग) संसार की भाव प्रधानता की (घ) संसार के स्वरूप की

5.कवि के अनुसार संसार में किन लोगों को प्रतिष्ठा प्राप्त होती है?

(क) संसार के हित में कार्य करने वालों को
(ख) संसार के लिए उच्च साहित्य रखने वालों को
(ग) संसार की झूठी प्रशंसा न करने वालों को
(घ) संसार का झूठा गुणगान करने वालों को

1	2	3	4	5
ख	घ	ग	ख	घ

काव्यांश-2

मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।
मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुःख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव मौजों पर मस्त बहा करता हूँ।

1.'निज उर के उद्‌गार' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(क) अपने हृदय की वाणी की अभिव्यक्ति (ख) अपने हृदय से भिन्न मनोभाव
(ग) अपने हृदय से निकाल दी गई स्मृतियाँ (घ) अपने हृदय के केवल दुःख

2.कवि को संसार प्रिय क्यों नहीं है?

(क) संसार के बदलाव के कारण (ख) संसार की अपूर्णता के कारण
(ग) संसार की समान स्थिति के कारण (घ) उपरोक्त सभी

3.कवि के हृदय में कैसी अग्नि दहक रही है?

(क) ईर्ष्या-द्वेष से पूर्ण अग्नि (ख) सभी कुछ नष्ट कर देने वाली अग्नि
(ग) स्वयं को जलाने वाली विरहाग्नि (घ) स्नेहरूपी अग्नि

4.'मैं भव- मौजों पर मस्त बहा करता हूँ' पंक्ति में 'भव-मौजों' से क्या अभिप्राय है?

(क) संसार की लहरें (ख) भावों की लहरें
(ग) विचारों की मस्ती (घ) संसार की संकीर्णता

5.कवि किसकी अपेक्षा नहीं करता है?

(क) विचारों की (ख) साधनों की
(ग) प्रेम की (घ) घृणा की

1	2	3	4	5
क	घ	ग	क	ख

काव्यांश-3

हो जाए न पथ में रात कहीं ,मंज़िल भी तो है दूर नहीं
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
बच्चे प्रत्याशा में होंगे, नीड़ों से झाँक रहे होंगे
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।
मुझसे मिलने को कौन विकल? मैं होऊं किसके हित चंचल ?
यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विह्वलता है
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है।

1.कवि के मन में किस चीज की आशंका है?

(क) घर पहुंच पाने की (ख) घर न पहुंच पाने की
(ग) घर पहुंचने से पहले ही रात हो जाने की (घ) यात्रा बिना रुकावट पूरी हो जाने की

2.कवि किस आशा से प्रेरित हो उठता है?

(क) मंजिल पास ही आने वाली है
(ख) कोई उसकी प्रतीक्षा नहीं कर रहा है
(ग) मंजिल तक पहुंचने में बहुत समय शेष है
(घ) मंजिल तक पहुँचकर वह कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाएगा

3.थका हुआ पथिक किसे पाने के कारण जल्दी-जल्दी चलता है?

(क) अपने साथी को (ख) अपने भोजन को
(ग) अपने लक्ष्य को (घ) अपने स्वार्थ को

4.बच्चे नीड़ से किसलिए झाँक रहे होंगे?

(क) भूखा होने के कारण (ख) प्रकृति का आनंद लेने के कारण
(ग) माता-पिता की प्रतीक्षा के कारण (घ) बाहर घूमने के कारण

5.कवि के पैरों की गति को कौन-सा भाव शिथिल कर देता है?

(क) चिड़िया की तीव्र उड़ान (ख) बच्चों की व्याकुलता
(ग) समय का तीव्रगति से व्यतीत होना (घ) कवि से मिलने को किसी का व्याकुल न होना

1	2	3	4	5
ग	क	ग	ग	घ

<u>वस्तुपरक प्रश्न</u>-

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्र.(1) स्नेह-सुरा क्या है ?

उत्तर प्रेम रूपी नशा, जिसे पीकर कवि समस्त संसार में प्रेम फैलाना चाहता है|

प्र.(2) संसार किसको पूछता है ?

उत्तर जो संसार की झूठी प्रशंसा करता है |

प्र.(3) उद्‌गार व उपहार क्या है ?

उत्तर उद्‌गार- कवि के कोमल और प्रेम से भरे विचार
उपहार- कवि की कोमल व प्रेम भावनाएँ जो वह संसार को देना चाहता है

प्र.(4) कवि को संसार अधूरा क्यों लगता है ?

उत्तर कवि को संसार अधूरा लगता है क्योंकि इस संसार में प्रेम की कमी है|

प्र.(5) कवि के सपनों का संसार कैसा है ?

उत्तर कवि के सपनों का संसार प्रेम से भरा-पूरा है|

प्र.(6) कवि सुख-दुःख दोनों में मग्न क्यों रहता है ?

उत्तर प्रेमिका की यादों और उसके प्रति प्रेम के कारण कवि सुख-दुःख दोनों में मग्न रहता है |

प्र.(7) उन्मादों में अवसाद का क्या आशय है ?

उत्तर कवि में युवाओं का जोश, उत्साह है परन्तु संसार में प्रेम की कमी के कारण वे दुखी है और कवि को अपनी प्रेमिका से भी प्रेम प्राप्त नहीं हुआ है |

प्र.(8) कवि कौनसा सीखा हुआ ज्ञान भुलाना चाहता है ?

उत्तर कवि सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया का ज्ञान भुलाना चाहता है |

प्र.(9) कवि खुद को संसार से अलग क्यों मानता है ?

उत्तर कवि खुद को संसार से अलग मानता है क्योंकि कवि प्रेम में खोया है और संसार सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया में डूबा है |

प्र.(10) कवि स्वयं को दीवाना क्यों कहता है ?

उत्तर कवि प्रेम की दीवानगी में मस्त है और वह संसार में प्रेम फैलाना चाहता है | इसके लिए उसे अपने लाभ-हानि की परवाह नहीं है |

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्र.(1) कविता एक ओर **जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात** करती है और दूसरी ओर **मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ**- विपरीत से लगने वाले इन कथनों का

आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर
- **जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात-** सामाजिक दायित्वों के प्रति सचेत और संसार में प्रेम बढ़ाने की कोशिश करना | संसार के प्रति मेरी जिम्मेदारियाँ निभा रहा हूँ |
- **मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ-** प्रेम बढ़ाने के लिए संसार की निंदा की परवाह नहीं करता हूँ |

प्र.(2) **जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं-** कवी ने ऐसा क्यों कहा है ?

उत्तर
- **दाना-** सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया
- **नादान-** सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया में डूबे मूर्ख लोग

तात्पर्य यह है कि जहाँ सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया है वहीं उसमें डूबने वाले मूर्ख लोग भी हैं जो प्रेम को महत्त्व नहीं देते हैं |

प्र.(3) मैं **और**, **और** जग **और** कहाँ का नाता- पंक्ति में और शब्द की विशेषता बताते हुए पंक्ति के अर्थ को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर और शब्द की विशेषता- प्रथम व तृतीय **और** का अर्थ है- अलग/भिन्न
द्वितीय **और** का अर्थ है- तथा

इस प्रकार इसमें यमक अलंकार है |

पंक्ति का अर्थ- कवि कहता है कि मैं अलग हूँ तथा संसार अलग है क्योंकि मैं प्रेम को महत्त्व देता हूँ और संसार के लोग सांसारिकता को महत्त्व देते हैं |

प्र.(4) **शीतल वाणी में आग-** के होने का क्या अभिप्राय है ?

उत्तर **शीतल वाणी-** कोमल शब्दों व शीतल स्वरों का प्रयोग

आग- प्रेम रहित संसार के प्रति क्रोध

संसार में प्रेम की कमी देखकर कवि को क्रोध आता है परंतु इस क्रोध को वह कोमल शब्दों और शीतल स्वरों के माध्यम से अपनी कविता में प्रकट करता है |

प्र.(5) आत्मपरिचय कविता के आधार पर कवि के व्यक्तित्व को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर आत्मपरिचय कविता के आधार पर कवि का व्यक्तित्व-
- प्रेम व मस्ती का संदेश देने वाला
- सांसारिकता से दूर रहने वाला
- सपनों के संसार में जीने वाला
- प्रेम के लिए संसार की परवाह न करने वाला (प्रेमी दीवाना)

प्र.(6) निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार छाँटकर उनका सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

(i) मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ

(ii) उन्मादों में अवसाद

(iii) जग भव-सागर तरने को नाव बनाए

उत्तर (i) मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ- स्नेह-सुरा (स्नेह रूपी शराब/नशा, रूपक)

(ii) उन्मादों में अवसाद- युवा उत्साह में भी उदासी, विरोधाभास

(iii) जग भव-सागर तरने को नाव बनाए- भव-सागर (संसार रूपी सागर/समुद्र, रूपक)

प्र.(7) आत्मपरिचय की भाषागत विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर आत्मपरिचय कविता की भाषा की विशेषताएँ-

- खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग |
- तत्सम शब्दों का अधिक प्रयोग, जैसे झंकृत, स्नेह-सुरा, अपूर्ण, स्वप्नों आदि|

प्र.(8) 'आत्मपरिचय' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए |

उत्तर इस कविता में कवि ने निम्नलिखित बातों को प्रकट किया है-

- कवि ने स्वयं की अस्मिता को दुनिया के सामने प्रकट किया है |
- कवि ने अपने कोमल भाव व प्रेम भरे विचार प्रकट किए हैं |
- कवि ने अपने स्वप्नों के संसार को प्रकट किया है |
- कवि ने अपने निजी प्रेम और हृदय में प्रेम की आग को सबके सामने प्रकट किया है |

इस प्रकार कविता की एक-एक पंक्ति कवि का परिचय दे रही है | अतः यह शीर्षक सार्थक है |

****

पाठ-2 पतंग - आलोक धन्वा

मूलभाव- पतंग कविता में भादो के बाद हुए प्राकृतिक परिवर्तनों और बाल क्रियाकलापों को चित्रित करने के लिए सुंदर बिम्बों का प्रयोग किया गया है |

- भादो को अँधेरे का और शरद को उजाले का प्रतीक बताया गया है |
- इस कविता में भादों के महीने के बाद शरद ऋतु के सवेरे की तुलना खरगोश की लाल आँखों से की गई है |
- शरद ऋतु में आसमान साफ़ होने,सूर्य के लाल व चमकदार होने का चित्रण है |
- शरद की तुलना साइकिल चलाते बच्चे से की गई है | साइकिल चलाते बच्चे के समान शरद ऋतु बच्चों को अपनी ओर आकर्षित करती है |
- शरद ऋतु में शीतल मंद हवा चल रही है और पतंग उड़ाने के लिए अनुकूल वातावरण है|

- शरद ऋतु में बच्चे पतंग उड़ाते हैं और उनके लिए पतंग दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज़ है , साथ ही पतंग का कागज़ सबसे पतला कागज़ है तथा उसकी कमानी सबसे पतली कमानी है |
- कवि ने शरद ऋतु में बच्चों द्वारा रंग-बिरंगी पतंगें उड़ाने के साथ-साथ खुश होकर चिल्लाने व सीटी बजाने को नाज़ुक दुनिया कहकर वर्णित किया है |
- कवि आलोक धन्वा के अनुसार बच्चे कपास के समान कोमल, लचीले व पवित्र होते हैं |
- बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर तेज़ गति से दौड़ते हैं |
- पतंग के लिए दौड़ते बच्चों के पैरों की गूँज सभी दिशाओं में गूँजती है |
- बच्चों में झूले व पेड़ की डाली की तरह लचीलापन होता है |
- बच्चों में उत्साह, जोश व लचीलेपन के कारण वे छतों के खतरनाक किनारों से गिरने से बच जाते हैं |
- पतंग के साथ बच्चा केवल एक धागे से जुड़ा होता है परन्तु ऊँची उड़ती पतंग के साथ उसके दिल की धड़कन भी जुड़ जाती है |
- बच्चा पतंग को अपनी आँखों से आसमान में उड़ती देखता है तो वह पतंग के साथ खुद को भी उड़ता हुआ महसूस करता है |
- छतों के खतरनाक किनारों से गिरकर बचने पर बच्चे निडर हो जाते हैं और वह चमकदार धूप में भी पतंग उड़ाते हैं तथा तेज़ी से दौड़ते हैं |

पठित पद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न -

<u>पद्यांश-1</u>

सबसे तेज बौछारे गयीं भादो गया
सवेरा हुआ
खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा
शरद आया पुलों को पार करते हुए
अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज चलाते हुए
घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से
चमकीले इशारों से बुलाते हुए
पतंग उड़ाने वाले बच्चों के झुंड को
चमकीले इशारों से बुलाते हुए और
आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए
कि पतंग ऊपर उठ सके-

दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज उड़ सके
दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-
बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-
कि शुरू हो सके सीटियों, किलकारियों और
तितलियों की इतनी नाजुक दुनिया

प्र.(1) पतंग कविता में किस ऋतु के समाप्त होने का उल्लेख है -

(क) सर्दी (ख) बसंत (ग) गर्मी (घ) वर्षा

प्र.(2) शरद की तुलना किससे की गई है -

(क) साइकिल चलाने वाले बच्चे से (ख) पतंग से
(ग) खरगोश की आँखों से (घ) तितलियों से

प्र.(3) निम्नलिखित में से कौन-सा परिवर्तन पतंग कविता में चित्रित नहीं है ?-

(क) कई ऋतुओं के बाद शरद का आगमन (ख) सुबह का सूरज लाल व चमकदार
(ग) शीतल मंद हवा चलना (घ) आँधी व लू का चलना

प्र.(4) आकाश को मुलायम बनाने का अर्थ है -

(क) आकाश से बर्फ गिरना (ख) आँधी व लू का चलना
(ग) वर्षा होना (घ) शीतल मंद हवा चलना

प्र.(5) चमकीले इशारों का अर्थ है -

(क) चमकदार सूर्य द्वारा आकर्षित करना (ख) चमकदार चाँदनी द्वारा आकर्षित करना
(ग) बिजली चमकना (घ) पतंगों का चमकना

प्र.(6) तितलियों की नाज़ुक दुनिया का अर्थ है -

(क) तितलियों का दिखाई देना (ख) रंग-बिरंगे फूल दिखाई देना
(ग) उत्साहित बच्चों द्वारा पतंग उड़ाना (घ) पक्षियों का उड़ना

प्र.(7) 'खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा' पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास (ख) उपमा
(ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

प्र.(8) पतंग कविता की विशेषता है-

(क) भाषा की जटिलता (ख) बिम्बों की प्रधानता
(ग) पतंगों की सुंदरता (घ) अलंकारों की अधिकता

प्र.(9) निम्नलिखित में से श्रव्य-बिंब है-

(क) खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा (ख) आकाश को मुलायम बनाते हुए
(ग) चमकीले इशारों से बुलाते हुए (घ) घंटी बजाते हुए जोर-जोर से

प्र.(10) 'दुनिया की <u>सबसे हलकी</u> और <u>रंगीन</u> चीज़ उड़ सके' में रेखांकित शब्द है-

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम

(ग) विशेषण (घ) प्रत्यय

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
घ	क	घ	घ	क	घ	ख	ख	घ	ग

<u>पद्यांश-2</u>

जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास
पृथ्वी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास
जब वे दौड़ते हैं बेसुध
छतों को भी नरम बनाते हुए
दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
जब वे पेंग भरते हुए चले आते हैं डाल की तरह लचीले वेग अकसर
छतों के खतरनाक किनारों तक
उस समय गिरने से बचाता है उन्हें
सिर्फ़ उनके ही रोमांचित शरीर का संगीत
पतंगों की धड़कती ऊँचाइयाँ उन्हें थाम लेती हैं महज़ एक धागे के सहारे
पतंगों के साथ-साथ भी उड़ रहे हैं
अपने रंधों के सहारे
अगर वे कभी गिरते हैं छतों के खतरनाक किनारों से और बच जाते हैं तब तो
और भी निडर होकर सुनहले सूरज के सामने आते हैं
पृथ्वी और भी तेज़ घूमती हुई आती है
उनके बेचैन पैरों के पास ।

प्र.(1) बच्चे से कपास की क्या समानता का गुण नहीं है -

(क) कोमलता (ख) लचीलापन (ग) पवित्रता (घ) कठोरता

प्र.(2) 'छतों को नरम बनाते हुए' पंक्ति का अर्थ है -

(क) बच्चों के कोमल पैरों से छत मुलायम महसूस होना (ख) छतों पर रूई फैलाना

(ग) छत पर पतंगें रख देना (घ) आसमान में बादलों का आना

प्र.(3) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का अर्थ है-

(क) ढोल-नगाड़ों की आवाज़ गूँजना (ख) तबलों की आवाज़ गूँजना

(ग) पैरों की आवाज़ गूँजना (घ) हवाओं की आवाज़ गूँजना

प्र.(4) 'रोमांचित शरीर का संगीत' का अर्थ है-

(क) उत्साह व लचीलापन (ख) डर कर चिल्लाना

(ग) झूले झूलने की आवाज़ (घ) पेड़ों की आवाज़

प्र.(5) 'पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं' पंक्ति में 'वे' किसके लिए प्रयुक्त हुआ है -

(क) पक्षी (ख) बच्चे व उनके मन

(ग) बादल (घ) अन्य पतंगें

प्र.(6) 'पृथ्वी और भी घूमती हुई आती है उनके बेचैन पैरों के पास' का अर्थ है -

(क) पृथ्वी का तेज़ घूमना (ख) तेज़ी से झूले झूलना

(ग) आँधी आना (घ) बच्चों का तेज़ दौड़ना

प्र.(7) 'डाल की तरह लचीले वेग से अकसर' पंक्ति में अलंकार है-

(क) अनुप्रास (ख) उपमा (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

प्र.(8) निम्नलिखित में से उर्दू शब्द नहीं है-

(क) महज़ (ख) पृथ्वी (ग) खतरनाक (घ) बेचैन

प्र.(9)'छतों को नरम बनाते हुए' पंक्ति में बिम्ब है -

(क) दृश्य बिम्ब (ख) श्रव्य बिम्ब

(ग) स्पर्श बिम्ब (घ) दृश्य व श्रव्य बिम्ब दोनों

प्र.(10) 'रोमांचित शरीर, धड़कती ऊँचाइयाँ, सुनहले सूरज' में रेखांकित शब्द है-

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम (ग) प्रत्यय (घ) विशेषण

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
घ	क	ग	क	ख	घ	ख	ख	ग	घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र.(1) शरद के सवेरे की तुलना किससे की गई है और क्यों ?

उत्तर शरद के सवेरे की तुलना खरगोश की आँखों की गई है, क्योंकि शरद के सवेरे का सूर्य खरगोश की आँखों की तरह लाल और चमकदार होता है |

प्र.(2) शरद की तुलना किससे की गई है और क्यों ?

उत्तर शरद की तुलना साइकिल चलाते बच्चे से की गई है, क्योंकि साइकिल चलाते बच्चे के

समान शरद ऋतु उत्साह व उमंग से भरी होती है |

प्र.(3) आकाश को मुलायम बनाने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर आकाश को मुलायम बनाने से तात्पर्य है- आसमान साफ़ होना और शीतलमंद हवा का चलना |

प्र.(4) चमकीले इशारों से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर चमकीले इशारों से तात्पर्य है - शरद के सवेरे के सूर्य का चमकदार होना और आसमान साफ़ होना |

प्र.(5) तितलियों की नाज़ुक दुनिया से क्या आशय है ?

उत्तर तितलियों की नाज़ुक दुनिया से आशय है - बच्चों द्वारा आसमान में उड़ाई गई रंग-बिरंगी पतंगें और बच्चों की उत्साह व उमंग से भरपूर नाज़ुक दुनिया |

प्र.(6) पतंग के विषय में कवि ने क्या कहा है ?

उत्तर पतंग के विषय में कवि ने कहा है कि पतंग दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज है जो सबसे पतले कागज़ और सबसे पतली कमानी से बनी हुई है |

प्र.(7) बच्चों को गिरने से कौन बचाता है ?

उत्तर बच्चों को गिरने से उनके रोमांचित शरीर का संगीत बचाता है, जिसमें उत्साह,उमंग व रोमांच है |

प्र.(8) छतों को नरम बनाने से क्या तात्पर्य है ?

उत्तर पतंग के लिए खुरदरी छतों पर दौड़ते बच्चों के कोमल पैरों में चुभन का अहसास नहीं होता, तो ऐसा महसूस होता है कि उनके पैरों ने छतों को नरम बना दिया है |

प्र.(9) गिरकर बचने पर बच्चे कैसे हो जाते हैं ?

उत्तर गिरकर बचने पर बच्चे और भी निडर हो जाते हैं व आत्मविश्वास से भर जाते हैं |

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र.(1) 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए |

उत्तर 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, वह इस प्रकार है -

(i) शरद ऋतु का आगमन कई ऋतुओं के बाद हुआ है |

(ii) शरद ऋतु में सुबह का सूर्य लाल व चमकदार है |

(iii) शरद ऋतु में आसमान साफ़ है |

(iv) शरद ऋतु में शीतल मंद हवा चल रही है और आकाश मुलायम हो गया है |

प्र.(2) जन्म से ही वे अपने साथ लाते हैं कपास - कपास से बच्चों की तुलना क्यों की गई है ?

उत्तर कपास - कोमल, मुलायम, लचीली व साफ़

बच्चे - कोमल, मुलायम, सहनशील व पवित्र मन

जिस प्रकार कपास कोमल, मुलायम, लचीली व साफ़ होती है उसी प्रकार बच्चे कोमल व मुलायम होते हैं | साथ ही वे सहनशील होते हैं और उनका मन पवित्र होता है |

प्र.(3) पतंगों के साथ-साथ वे भी उड़ रहे हैं - बच्चों का उड़ान से कैसा सम्बन्ध है ?

उत्तर जब बच्चे पतंग उड़ाते हैं तो पतंग के साथ-साथ बच्चों के मन भी उड़ते हैं | जिस बच्चे की पतंग जितनी ऊँची उड़ती है, वह बच्चा भी अपने-आप को उतना ही ऊँचा उड़ता हुआ महसूस करता है | इस प्रकार जब बच्चे अपनी आँखों से पतंग को उड़ती हुई देखते हैं तो वह खुद उड़ता हुआ महसूस करते हैं

प्र.(4) दिशाओं को मृदंग की तरह बजाने का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर जब बच्चे पतंग के लिए बेसुध होकर खुरदरी छतों पर दौड़ते हैं तो उनके पैरों की आवाज़ चारों दिशाओं में गूँजती है | यह आवाज़ इस प्रकार लगाती है मानो चारों दिशाओं में ढोल-नगाड़े और मृदंग बज रहे हैं |

प्र.(5) खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद आप दुनिया की चुनौतियों के सामने स्वयं को कैसा महसूस करते हैं ?

उत्तर खतरनाक परिस्थितियों का सामना करने के बाद हम अपने-आप को निडर और आत्मविश्वास से भरा महसूस करते हैं | हम अपने-आप को चुनौतियों का मुकाबला करने में अधिक सक्षम पाते हैं |

प्र.(6) कविता में आए बिम्बों को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर

1. **<u>दृश्य बिम्ब (आँखों के सामने उभरने वाले)</u> -** सबसे तेज़ बौछारें गयीं भादो गया, खरगोश की आँखों जैसा लाल सवेरा, शरद आया पुलों को पार करते हुए, अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए, चमकीली इशारों से बुलाते हुए, सुनहले सूरज के सामने आते हैं
2. **<u>श्रव्य बिम्ब (सुनाई देने वाले)</u> -** घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से, दिशाओं को मृदंग की तरह बजाते हुए
3. **<u>स्पर्श बिम्ब (महसूस करने वाले)</u> -** आकाश को इतना मुलायम बनाते हुए, छतों को नरम बनाते हुए

प्र.(7) पतंग कविता में आए अलंकारों को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर 1.उपमा - खरगोश की आँखों <u>जैसा</u> लाल सवेरा, मृदंग की तरह, डाल की तरह

2.मानवीकरण - शरद आया पुलों को पार करते हुए,

अपनी नयी चमकीली साइकिल तेज़ चलाते हुए

3.पुनरुक्तिप्रकाश - घंटी बजाते हुए ज़ोर-ज़ोर से

4.अतिशयोक्ति - दुनिया की सबसे हलकी और रंगीन चीज़ उड़ सके

दुनिया का सबसे पतला कागज उड़ सके-

बाँस की सबसे पतली कमानी उड़ सके-

प्र.(8) **पतंग कविता के विशेषण-प्रयोग को स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर पतंग कविता में विशेषणों का प्रयोग किया गया है, जैसे-

सबसे हलकी और सबसे रंगीन चीज़ , सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी

रोमांचित शरीर, धड़कती ऊँचाइयाँ, सुनहले सूरज

****

पाठ-3 कविता के बहाने, बात सीधी थी पर - कुँवर नारायण

कविता के बहाने

मूलभाव- आज के समय में कविता के अस्तित्व के बारे में संशय हो रहा है। ऐसे में यह कविता-कविता की अपार संभावनाओं को टटोलने का एक अवसर देती है। यह कविता एक यात्रा है जो चिड़िया, फूल से लेकर बच्चे तक की है। एक ओर प्रकृति है दूसरी ओर भविष्य की ओर कदम बढ़ाता बच्चा। कवि कहता है कि चिड़िया की उड़ान की सीमा है, फूल के खिलने के साथ उसकी परिणति निश्चित है, लेकिन बच्चे के सपने असीम हैं। बच्चों के खेल में किसी प्रकार की सीमा का कोई स्थान नहीं होता। कविता भी शब्दों का खेल है और शब्दों के इस खेल में जड़, चेतन, अतीत, वर्तमान और भविष्य-सभी उपकरण मात्र हैं। इसीलिए जहाँ कहीं रचनात्मक ऊर्जा होगी, वहाँ सीमाओं के बंधन खुद-ब-खुद टूट जाते हैं। वह सीमा चाहे घर की हो, भाषा की हो या समय की ही क्यों न हो।

बात सीधी थी पर

मूलभाव- इसमें कथ्य के द्वंद्व उकेरते हुए भाषा की सहजता की बात की गई है। हर बात के लिए कुछ खास शब्द नियत होते हैं, ठीक वैसे ही जैसे हर पेंच के लिए एक निश्चित खाँचा होता है। अच्छी बात या अच्छी कविता का बनना सही बात का सही शब्द से जुड़ना होता है और जब ऐसा होता है तो किसी दबाव या अतिरिक्त मेहनत की जरूरत नहीं होती, वह सहूलियत के साथ हो जाता है। सही बात को सही शब्दों के माध्यम से कहने से ही रचना प्रभावशाली बनती है। मनुष्य अपनी भाषा को टेढ़ी तब बना देता है जब वह आडंबरपूर्ण तथा चमत्कारपूर्ण शब्दों के माध्यम से कथ्य को प्रस्तुत करने का प्रयास करता है। अंतत: शब्दों के चक्कर में पड़कर वे कथ्य अपना अर्थ खो बैठते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न:-

1. 'बात की पेंच खोलना' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(क) बात का उलझना (ख) बात का प्रभावहीन होना

(ग) बात का स्पष्ट होना (घ) बात का तर्कपूर्ण होना

2. कवि से शरारती बच्चे के समान कौन खेल रही थी?

(क) बात (ख) भाषा (ग) कविता (घ) पतंग

3. भाषा के साथ-साथ बात कैसी होती गई थी?

(क) सरल (ख) दुष्कर (ग) पेचीदा (घ) बोधगम्य

4. बात कवि के साथ किसके समान खेल रही थी?

(क) खिलौने (ख) पेंच (ग) बच्चे (घ) भाषा

5. 'सब घर एक कर देने' का आशय है-

(क) भेदभाव नहीं रखना (ख) तोड़-फोड़ करना

(ग) सीमा में रहना (घ) शोर मचाना

6. कवि क्या करतब कर रहा था?

(क) मेज़ पर पेंच ठोक रहा था (ख) बात सुलझाने की कोशिश कर रहा था

(ग) नाटक कर रहा था (घ) लोगों को बात समझा रहा था

7. 'बात की चूड़ी मर जाना' से कवि का तात्पर्य है-

(क) स्पष्ट होना (ख) तर्कपूर्ण होना

(ग) प्रभावपूर्ण होना (घ) प्रभावहीन होना

8. 'कविता के बहाने' कविता की विशेषता है-

(क) चिड़िया के बारे में बताना (ख) कविता बच्चों के समान होती है

(ग) कविता सर्वव्यापक है ये समझाना (घ) इनमें से कोई नहीं

9. 'बच्चों के बहाने ' में कौनसा अलंकार है?

(क) श्लेष (ख) उपमा (ग) रूपक (घ) अनुप्रास

10. कविता पंख लगाकर मानव के आतंरिक और वाह्य रूप में उड़ान भरती है -

(क) सत्य (ख) असत्य

(ग) आंशिक सत्य (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग	क	ग	ग	क	ख	घ	ग	घ	क

पठित पद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न -

पद्यांश-1

कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने
कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने
बाहर-भीतर
इस घर उस घर
कविता के पंख लगा उड़ने के माने
चिड़िया क्या जाने?
कविता एक खिलना है फूलों के बहाने
कविता का खिलना भला फूल क्या जाने!
बाहर भीतर, इस घर उस घर
बिना मुरझाए महकने के माने
फूल क्या जाने ?

1.कवि ने कविता को किसकी उड़ान माना है?

(क) प्रश्नों की (ख) शब्द की
(ग) सीमाओं की (घ) कल्पना की

2."कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने" पंक्ति का आशय क्या है?

(क) कविता की उड़ान चिड़िया की उड़ान से कम होती है
(ख) कविता की उड़ान असीमित है, इसे चिड़िया नहीं समझ पाती है
(ग) कविता और चिड़िया दोनों की उड़ान अनन्त है
(घ) कविता की उड़ान से चिड़िया भली-भाँति परिचित है

3.कवि ने फूल और कविता के खिलने में क्या अंतर बताया है?

(क) फूल क्षणिक होता है जबकि कविता अमर होती है
(ख) फूल में सुगंध होती है जबकि कविता में नहीं होती
(ग) फूल में सौंदर्य होता है जबकि कविता में क्षणिक सौंदर्य होता है।
(घ) फूल और कविता दोनों में कोई समानता नहीं है

4.कवि के अनुसार फूल कविता की समता क्यों नहीं कर सकते हैं?

(क) क्योंकि कविता अनंत जीवन एवं आनंद से युक्त होती है
(ख) क्योंकि कविता से फूल अधिक समर्थवान है
(ग) क्योंकि फूल का सानी कोई नहीं है
(घ) क्योंकि फूल प्रकृति का अनुपम उपहार है

5.कविता को फूल के बहाने से किससे जोड़ा गया है?

(क) जड़ हो जाने की प्रक्रिया से (ख) मुरझाने की प्रक्रिया से

(ग) खिलने की प्रक्रिया से (घ) संवेदनशील हो जाने की प्रकिया से

1	2	3	4	5
घ	ख	क	क	ग

पद्यांश-2

बात सीधी थी पर एक बार
भाषा के चक्कर में
जरा टेढ़ी फँस गई।
उसे पाने की कोशिश में
भाषा को उलटा-पलटा
तोड़ा मरोड़ा
घुमाया फिराया
कि बात या तो बने
या फिर भाषा से बाहर आए
लेकिन इससे भाषा के साथ-साथ
बात और भी पेचीदा होती चली गई।

1.भाषा के चक्कर में पड़कर बात कैसी हो गई?

(क) सीधी (ख) उल्टी (ग) टेढ़ी (घ) ये सभी

2.उसे पाने की कोशिश में पंक्ति में 'उसे' शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(क) कवि (ख) प्रियसी (ग) बात (घ) कलम

3.बात सीधी थी पर' में कवि ने किस पर बल दिया है?

(क) भावों की सरलता (ख) भाषा की जटिलता

(ग) भावों की गंभीरता (घ) भाषा की सहजता

4.भाषा के साथ तोड़-मरोड़ करने का क्या परिणाम होता है?

(क) भावों की अभिव्यक्ति ठीक से स्पष्ट नहीं हो सकेगी।

(ख) भाषा अपने भावों को स्पष्ट कर पाएगी

(ग) भाषा में सरलता तथा सहजता का गुण विकसित हो सकेगा

(घ) भावों और अभिव्यक्ति में एकता आएगी

5.प्रस्तुत काव्यांश का केंद्रीय भाव क्या है?

(क) भाषा की सहजता पर जोर देना (ख) भावों को प्रमुखता प्रदान करना

(ग) बात कहने का ढंग सीखाना (घ) बातचीत के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन करना

1	2	3	4	5
ग	ग	घ	क	क

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र.(1) **कवि ने चिड़िया और कविता की तुलना किस प्रकार की है ?**

उत्तर चिड़िया की उड़ान सीमित होती है जबकि कविता की उड़ान असीमित होती है और वह दिल की गहराइयों से आसमान की ऊँचाइयों तक उड़ सकती है |

प्र.(2) **कवि ने फूल और कविता की तुलना किस प्रकार की है ?**

उत्तर फूल थोड़े समय के लिए खुशबू फैलाता और फिर मुरझा जाता है जबकि कविता का प्रभाव कभी खत्म नहीं होता और अनंतकाल तक पाठकों को आनन्द देती है |

प्र.(3) **बात टेढ़ी क्यों फँस गई ?**

उत्तर भाषा को सुंदर, जटिल व प्रभावी बनाने के कारण बात टेढ़ी फँस गई |

प्र.(4) **बात और भी पेचीदा क्यों होती चली गई ?**

उत्तर कवि ने भाषा को उलटा-पलटा, तोड़ा-मरोड़ा और घुमाया-फिराया, इस कारण बात और भी पेचीदा होती चली गई |

प्र.(5) **कवि बात के पेंच को बेतरह क्यों कस रहा था ?**

उत्तर कवि बात को धैर्य से समझने के बजाय हड़बड़ी कर रहा था और उसे इस कार्य पर दर्शकों की शाबाशी भी मिल रही थी | इसलिए बात के पेंच को कस रहा था |

प्र.(6) **बात की पेंच खोलना - का क्या आशय है ?**

उत्तर बात की पेंच खोलने का आशय है - बात को सरल ढंग से कहना तथा बात को सहज और स्पष्ट करना अर्थात बात के उलझाव को सुलझाना |

प्र.(7) **कवि को क्या डर था ?**

उत्तर कवि को डर था कि भाषा को सुंदर व जटिल बनाने की कोशिश में उसकी बात कहीं प्रभावहीन न हो जाए |

प्र.(8) **बात की चूड़ी कब मरती है ? उसका क्या परिणाम होता है ?**

उत्तर जब भाषा के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती की जाती है, तब बात की चूड़ी मरती है | इसका परिणाम यह हुआ कि उसकी बात प्रभावहीन हो गई |

प्र.(9) **बात का भाषा में बेकार घूमने का क्या आशय है ?**

उत्तर बात का भाषा में बेकार घूमने का आशय है - सरल बात का जटिल शब्दों में उलझकर रह जाना |

प्र.(10) **बात की तुलना शरारती बच्चे से क्यों की गई है ?**

उत्तर जिस प्रकार शरारती बच्चा हमें चिढ़ाकर भाग जाता है और पकड़ में नहीं आता उसी प्रकार बात भी भाषा में उलझने पर पकड़ में नहीं आती |

प्र.(11) **बात सीधी थी पर कविता में रचनाकार के सामने कथ्य और माध्यम की क्या समस्या थी ?**

उत्तर कविता में कथ्य (बात) सरल था परन्तु उसे व्यक्त करने के लिए माध्यम (भाषा) जटिल था जिसके कारण सरल कथ्य लोगों तक नहीं पहुँच पाया |

प्र.(12) **कोई रचना ढीले पेंच की तरह कब प्रभावहीन हो जाती है ?**

उत्तर जब भाषा के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती की जाए और जटिल भाषा का प्रयोग किया जाए तब रचना ढीले पेंच की तरह प्रभावहीन हो जाती है |

प्र.(13) **'बात का बन जाना' का आशय स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर 'बात का बन जाना' - कथ्य और भाषा का सही सामंजस्य बनना |

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र.(1) **इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने' क्या है ?**

उत्तर 'सब घर एक कर देने के माने' है- आपसी भेदभाव समाप्त कर अपनत्व की भावना का विकास करना | कवि के अनुसार बच्चे आपसी भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना का विकास करते हैं | बच्चे खेलते हुए एक घर से दूसरे घर में बिना भेदभाव के चले जाते हैं और भाईचारा बढ़ाते हैं |

प्र.(2) **'उड़ने' व 'खिलने' का कविता से क्या सम्बन्ध बनता है ? तथा**
कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं ?

अथवा

कविता, फूल और बच्चे से कविता की तुलना कवि ने किस प्रकार की है ?

उत्तर

चिड़िया, फूल, बच्चा	कविता
चिड़िया- उड़ान सीमित होती है और आसमान में एक निश्चित ऊँचाई तक ही उड़ सकती है	कविता की उड़ान असीमित होती है और वह दिल की गहराइयों से आसमान की ऊँचाइयों तक उड़ सकती है	
फूल- फूल का खिलने के साथ ही मुरझाना भी निश्चित हो जाता है और वह थोड़े समय के लिए ही खुशबू देता है	कविता बिना मुरझाए महकती रहती है	इसका प्रभाव कभी खत्म नहीं होता और यह हमेशा पाठकों को आनंद देती रहती है	

बच्चा = कविता

- दोनों में ही रचनात्मक ऊर्जा होती है |
- दोनों ही हमें आनंद देते हैं |
- दोनों ही भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं |

प्र.(3) **'भाषा को सहूलियत' से बरतने का क्या अभिप्राय है ?**

उत्तर 'भाषा को सहूलियत' से बरतने का अभिप्राय है - भाषा को सरलता और सहजता से प्रयोग में लाना | बात को सीधे और सरल शब्दों में कहना, जिससे कथ्य और भाषा में सामंजस्य स्थापित हो सके और बात लोगों तक सरलता से पहुँच सके | भाषा को सुविधाजनक एवं सहज ढंग से प्रयोग में लाना |

प्र.(4) **'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है |' कैसे ?**

उत्तर कवि सीधी सरल बात को प्रभावी बनाने की कोशिश करता है | इसके लिए वह सुंदर, अलंकृत, प्रभावी व जटिल भाषा का प्रयोग करता है | भाषा के इस प्रदर्शन के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी व पेचीदा हो जाती है |

प्र.(5) **निम्नलिखित मुहावरों/ बिम्बों के आशय को स्पष्ट कीजिए-**

(i) बात की चूड़ी मर जाना

(ii) पेंच को कील की तरह ठोंक देना

उत्तर **(i) बात की चूड़ी मर जाना -** बात का प्रभावहीन होना | जब भाषा के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती की जाए तो बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है | इसे कवि ने बात की चूड़ी मरना कहा है |

(ii)पेंच को कील की तरह ठोंक देना - बात में कसावट न होना | जब कवि से बात बन नहीं पा रही थी तब वह उसे जैसे-तैसे पूरी कर देता है | यह बात उस कील की तरह महसूस होती है जो बाहर से तो पूरी लगती है परन्तु अंदर से उसमें कसावट नहीं होती |

प्र.(6) **'बात सीधी थी पर' कविता का सन्देश / कथ्य / प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए |**

उत्तर कविता में कथ्य व माध्यम के द्वंद्व को बताते हुए कहा गया है कि हमें बात बात को सीधे-सरल शब्दों में कहना चाहिए | भाषा को सुन्दर, अलंकृत और जटिल बनाने के चक्कर में बात उलझने लगती है और मूल बात का प्रभाव समाप्त हो जाता है | इसलिए हमें सही बात के लिए सही शब्दों का प्रयोग करना चाहिए | साथ ही भाषा की सरलता पर ध्यान देना चाहिए |

****

पाठ-4.कैमरे में बंद अपाहिज- रघुवीर सहाय

मूलभाव- कवि रघुवीर सहाय द्वारा कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में दूरदर्शन-कर्मियों की संवेदनहीनता और क्रूरता पर प्रकाश डाला गया है। प्राय: मीडिया में कार्यक्रम को आकर्षक और बिकाऊ बनाने के लिए मानवीय दुख-दर्द को खोलकर दिखाया जाता है । अपाहिजों को कैमरे के सामने लाकर उनसे बड़े क्रूर प्रश्न पूछे जाते हैं। उनके सोए हुए दर्द को जानबूझकर ताजा किया जाता है। मीडिया की कोशिश होती है कि अपाहिज व्यक्ति अपने दर्द से और दर्शक करुणा से रो पड़े। इस प्रकार उनका कार्यक्रम रोचक बन जाता है। कवि ने मीडिया की इस व्यावसायिक क्रूरता पर गहरा कटाक्ष किया है।

मीडिया का संवेदनहीन व्यवहार प्रस्तुत कविता का कथ्य है | कवि रघुवीर सहाय ने शारीरिक चुनौती झेल रहे लोगों की पीड़ा, यातना और वेदना को दूरदर्शन कार्यक्रम के माध्यम से समाज के समक्ष लाने की कोशिश की है पर कार्यक्रम संचालकों की व्यावसायिक सोच से इसका उद्देश्य पूर्णतया बदला दिखाई देता है | लाभ कमाना उनकी प्राथमिकता है, परदे पर वक्त की कीमत वो अच्छे से जानते हैं पर इंसान की भावनाएँ उनके लिए कोई मायने नहीं रखती | टेलीविजन के परदे पर किसी कार्यक्रम को दिखाना काफी महंगा पड़ता है इसलिए समय महत्त्वपूर्ण होता है | कविता में प्रश्नकर्ता कार्यक्रम संचालक के प्रश्नों से यह बात स्पष्ट होती है कि अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना तथा अधिकाधिक पैसा कमाना उनकी प्राथमिकता है |

बहुविकल्पीय प्रश्न -

प्र.(1) कैमरे में बंद अपाहिज कविता के कवि हैं-

(क) हरिवंश राय बच्चन (ख) आलोक धन्वा

(ग) कुँवर नारायण (घ) रघुवीर सहाय

प्र.(2) कैमरे में बंद अपाहिज किस काव्य संग्रह से ली गई है ?

(क) सीढ़ियों पर धूप में (ख) लोग भूल गए हैं

(ग) आत्महत्या के विरुद्ध (घ) इन दिनों

प्र.(3) कैमरे में बंद अपाहिज कविता मीडिया का कैसा चेहरा सामने लाती है ?

(क) शांत व सौम्य चेहरा (ख) करुणापूर्ण

(ग) विशुद्ध व्यावसायिक चेहरा (घ) सामाजिक जिम्मेदारी से परिपूर्ण

प्र.(4) 'हम समर्थ शक्तिवान' पंक्ति में समर्थ का प्रयोग किया गया है -

(क) दूरदर्शन एंकर के लिए (ख) नेता के लिए

(ग) कैमरामैन के लिए (घ) अमीरों के लिए

प्र.(5) 'हम एक दुर्बल को लाएँगे' पंक्ति में दुर्बल का प्रयोग किया गया है -

(क) गरीब के लिए (ख) अपाहिज के लिए

(ग) आम आदमी के लिए (घ) कैमरामैन के लिए

प्र.(6) एक बंद कमरे में - पंक्ति में बंद कमरे का तात्पर्य है -

(क) सिनेमा का स्टूडियो (ख) टेलीविज़न स्टूडियो

(ग) घर का कमरा (घ) पूछताछ के लिए बनाया कमरा

प्र.(7) कविता में अपाहिज से पूछे गए प्रश्न किस प्रकार के थे ?

(क) बेतुके (ख) संवेदनहीन

(ग) उक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(8) कैमरे में बंद अपाहिज कविता में अपाहिज का साक्षात्कार लेते समय मीडियाकर्मी का दृष्टिकोण कैसा था ?

(क) व्यावसायिक व संवेदनशील (ख) सहानुभूतिपूर्ण व व्यावसायिक

(ग) संवेदनशील व सहानुभूतिपूर्ण (घ) व्यावसायिक व संवेदनहीन

प्र.(9) दूरदर्शन कैसा माध्यम है ?

(क) दृश्य (ख) श्रव्य (ग) दृश्य-श्रव्य (घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(10) (कैमरा दिखाओ इसे बड़ा बड़ा) - ऐसा क्यों कहा गया है ?

(क) दर्शकों से सहानुभूति लेने के लिए (ख) कार्यक्रम को लोकप्रिय बनाने के लिए

(ग) अधिक धन कमाने के लिए (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(11) 'हम समर्थ शक्तिवान' पंक्ति में भाव है -

(क) विनम्रता का (ख) अहंकार का

(ग) खुशहाली का (घ) संवेदनशीलता का

प्र.(12) 'फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर' पंक्ति में बिम्ब है -

(क) घ्राण (ख) स्पर्श (ग) श्रव्य (घ) दृश्य

प्र.(13) अपाहिज को रुलाने का प्रयास क्यों किया गया ?

(क) अपाहिजपन की पीड़ा को प्रकट करने के लिए

(ख) दर्शकों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए

(ग) अपाहिज के दुःख को कम करने के लिए

(घ) अपाहिज के प्रति संचालक की संवेदनशीलता के कारण

प्र.(14) 'हमें दोनों एक संग रुलाने हैं' इसके पीछे प्रश्नकर्ता का कौनसा उद्देश्य है ?

(क) अधिक धन कमाना (ख) करुणा को प्रकट कर स्वार्थ सिद्ध करना

(ग) कार्यक्रम लोकप्रिय बनाना (घ) उपरोक्त सभी

प्र.(15) कैमरा बस करो, नहीं हुआ रहने दो- इस पंक्ति से क्या पता चलता है ?

(क) कैमरामैन के काम न करने का

(ख) कार्यक्रम संचालक का व्यावसायिक उद्देश्य पूर्णतः पूरा न होने का

(ग) अपाहिज की पीड़ा न बता पाना

(घ) संवेदनशीलता का

प्र.(16) परदे पर वक्त की कीमत है-पंक्ति से साक्षात्कारकर्त्ता के किस नजरिए का पता चलता है?

(क) व्यावसायिक नजरिए (ख) सहानुभूतिपूर्ण नजरिए

(ग) संवेदनशील नजरिए (घ) सकारात्मक नज़रिए

प्र.(17) हम पूछ-पूछकर उसको रुला देंगे - पंक्ति में कार्यक्रम संचालक का भाव है -

(क) संवेदनशीलता का (ख) सहानुभूतिपूर्ण

(ग) क्रूरता (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(18) बस थोड़ी ही कसर रह गई - पंक्ति में किस कसर या कमी की ओर संकेत है ?

(क) अपाहिज की पीड़ा को व्यक्त करने की

(ख) अपाहिज व दर्शकों को एक साथ रुलाने की

(ग) केवल अपाहिज को रुलाने की

(घ) अपाहिज को खुश करने की

प्र.(19) कैमरे में बंद अपाहिज कविता के सन्दर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा कथन गलत है ?

(क) कविता शारीरिक चुनौती झेलते लोगों के प्रति संवेदनशील नज़रिया अपनाने के लिए प्रेरित करती है

(ख) इस कविता में मीडियाकर्मियों के संवेदनशील व्यवहार को उजागर किया गया है

(ग) यह कविता बताती है कि करुणा जगाने के मकसद से शुरू हुआ कार्यक्रम किस प्रकार क्रूर बन जाता है

(घ) मीडियाकर्मियों का रवैया कारोबारी दबाव के तहत संवेदनहीन हो जाता है

प्र.(20) कैमरे में बंद अपाहिज कविता के सन्दर्भ में सही कथन है -

(क) इस कविता में करुण रस है |

(ख) इसमें प्रश्न शैली का प्रयोग है |

(ग) यह कविता मुक्त छंद में रची गई है |

(घ) सभी कथन सही है |

प्र.(21) कोष्ठक में लिखी पंक्तियाँ किस कारण से कविता में रखी गई है - इसके सम्बन्ध में गलत कथन है ?

(क) कविता को प्रभावी बनाने के लिए |

(ख) सम्बंधित व्यक्तियों के लिए संकेत के लिए |

(ग) कविता को अधिक लंबी करने के लिए |

(घ) पाठकों को सरलता से स्पष्ट व व्यंग्य करने के लिए |

प्र.(22) 'अपंगता की पीड़ा' दर्शाने के लिए दूरदर्शन वाले क्या करते हैं ?

(क) दूरदर्शन के परदे पर अपाहिज की फूली हुई आँख की एक बड़ी तसवीर दिखाते हैं

(ख) अपाहिज के होठों की कसमसाहट दिखाते हैं

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(23) 'सामाजिक उद्देश्य से युक्त कार्यक्रम' कहकर प्रस्तुतकर्ता क्या साबित करना चाहता है ?

(क) अपाहिज के प्रति अपनी संवेदनशीलता दिखाना चाहता है

(ख) दर्शकों को यह बताना चाहता है कि उसने एक बेहद मानवीय व सामाजिक कार्य किया है

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(24) अपाहिज व्यक्ति अपना दुःख क्यों नहीं बता पाता है ?

(क) समय की कमी के कारण

(ख) मीडियाकर्मी के बेहूदे प्रश्नों से दुखी होने के कारण

(ग) रिश्तेदारों द्वारा मना करने के कारण

(घ) इच्छा न होने के कारण

1	घ	7	ग	13	ख	19	ख
2	ख	8	घ	14	घ	20	घ
3	ग	9	ग	15	ख	21	ग
4	क	10	घ	16	क	22	ग
5	ख	11	ख	17	ग	23	ग
6	ख	12	घ	18	ख	24	ख

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

1.अपाहिज तथा दर्शकों में एक अपाहिज तथा दर्शकों के एक साथ रोने पर कार्यक्रम प्रस्तुतकर्ता की क्या प्रतिक्रिया होती है ?

उत्तर- अपाहिज तथा दर्शकों के एक साथ रोने पर कार्यक्रम का प्रस्तुतकर्ता खुश होता है तथा अपने कार्यक्रम को सफल मानता है |

2.अपाहिज से पूछे गए प्रश्न बेतुके शब्द अपाहिज पर क्या प्रभाव डालते हैं ?

उत्तर - अपाहिज से पूछे गए बेतुके प्रश्न उसके वजूद पर सवाल उठाते है अपाहिज का स्वाभिमान टूटने लगता है | प्रश्नों से अपाहिज इतना ज्यादा भावुक हो जाता है कि वह रोने लगता है तथा चुप हो जाता है |

3.कार्यक्रम कैसे लोकप्रिय होता है ?

उत्तर- संपादक कैमरामैन से विकलांग व्यक्ति की तस्वीर बड़ा करके दिखाने को कहता है तस्वीर बड़ा करके दिखाने पर विकलांग व्यक्ति की भावनाएं दर्शकों को दिखाई देती हैं | दर्शक और विकलांग व्यक्ति दोनों एक साथ रो जाते हैं तो कार्यक्रम सफल हो जाता हैं |

4.फिर हम पर्दे पर दिखलाएंगे हमें दोनों को एक साथ रुलाना हैं- पंक्तियों का आशय लिखिए |

उत्तर - कवि कहता है कि मीडिया वाले अपाहिज को मानसिक शोषण करते हैं | वह रोते हुए अपाहिज की आँखें कैमरे पर बड़ी करके दिखाएंगे | कांपते होंठ जो कुछ न बोल पाने की बेबसी दिखाते हैं |उनसे इस प्रकार प्रश्न कर्ता है कि लोग भावुक हो जाए |जब विकलांग भावुक हो जाता है तो दर्शक भी भावुक हो जाते हैं |

5.कैमरे में बंद अपाहिज करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है - विचार कीजिए |

उत्तर- दूरदर्शन पर एक अपाहिज का साक्षात्कार, उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिखाया जाता है। दूरदर्शन पर एक अपाहिज व्यक्ति को प्रदर्शन की वस्तु मान कर उसके मन की पीड़ा को कुरेदा जाता है | साक्षात्कारकर्ता को उसके निजी सुख-दुःख से कुछ लेना देना नहीं होता है |

6.हम समर्थ शक्तिवान और हम एक दुर्बल को लाएंगे पंक्ति के माध्यम से कवि ने क्या व्यंग किया हैं ?

उत्तर- 'हम समर्थ शक्तिमान' के माध्यम से कवि ने मीडियाकर्मियों पर व्यंग्य किया है जो स्वयं को पूर्ण मानकर एक अपाहिज व्यक्ति को दुर्बल समझने का अहंकार पाले हुए हैं |

'हम एक दुर्बल को लाएंगे ' के माध्यम से लाचारी का भाव प्रकट होता है | साक्षात्कारकर्ता किसी भी बेबस और लाचार व्यक्ति को लाकर उससे तरह-तरह के सवाल पूछकर उसका तमाशा बना सकता है |

7.पर्दे पर वक्त की कीमत है कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ?

उत्तर- प्रसारण समय में रोचक सामग्री परोस पाना ही मीडिया कर्मियों का एकमात्र उद्देश्य होता है | प्रसारण के समय में वे कार्यक्रम को अधिक से अधिक लोकप्रिय बनाने के लिए सभी हथकंडे आजमा लेते हैं | उन्हें किसी की पीड़ा से कम नहीं बल्कि बढ़ा- चढ़ाकर दिखने की आदत होती हैं। मीडियाकर्मी को व्यावसायिक उद्देश्य पूरा करने से सरोकार रहता हैं |

8.कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता क्या सोचता है ?

उत्तर- प्रश्नकर्ता सोचता है कि यदि अपंग व्यक्ति के साथ-साथ दर्शक भी रो देंगे तो उनकी सहानभूति हमारे चैनल को मिल जाएगी | तब हम इसी प्रकार के ओर कार्यक्रम दिखाया करेंगे ,जिस कारण हमें खूब फायदा मिलेगा और हमारा चैनल दिन दुगुनी रात चौगुनी तरक्की करता जाएगा | लोग हर समय हमारा चैनल देखेंगे |

9.कविता में आए शब्द 'सामाजिक उद्देश्य' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- प्रश्नकर्ता अपने कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए उसे रुलाने की कोशिश करता है ताकि दर्शकों में करुणा का भाव जाग सके। इसी से उसका उद्देश्य पूरा होगा। वह इसे सामाजिक उद्देश्य कहता है, परंतु 'परदे पर वक्त की कीमत है' वाक्य से उसके व्यापार की पोल खुल जाती है।

10.'हम दूरदर्शन पर बोलेंगे' में आए हम शब्द का अभिप्राय स्पष्ट कीजिए?

उत्तर-दूरदर्शन के कार्यक्रम के संचालक स्वयं को समर्थ और शक्तिमान मानकर चलते हैं | उनमें अहं का भाव होता है| वे दूसरे को अत्यंत कमजोर मानकर चलते हैं |

11.प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास क्यों दिलाना चाहता है ?

उत्तर-प्रश्नकर्ता चाहता है कि वह रो दे ताकि उसका रोना देखकर लोगों की करुणा जाग उठे। यदि ऐसा हो गया तो कार्यक्रम निश्चित रूप से सफल हो जाएगा। इसीलिए वह अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास दिलाता है।

लघूत्तरात्मक/निबंधात्मक प्रश्न-

1.कैमरे में बंद अपाहिज कविता के व्यंग्य पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने मीडिया की ताकत के बारे में बताया है। मीडिया अपने कार्यक्रम के प्रचार व धन कमाने के लिए किसी की करुणा को भी बेच सकता है। वह ऐसे कार्यक्रमों का निर्माण समाज-सेवा के नाम पर करता है परंतु उसे इस कार्यव्यापार में न तो अपाहिजों से सहानुभूति होती है और न ही उनके मान-सम्मान की चिंता। वह सिर्फ़ अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना जानता है। रोचक बनाने के लिए वह ऊटपटांग प्रश्न पूछता है और पीड़ित की पीड़ा को बढ़ा-चढ़ाकर बताता है।

2. 'कैमरे में बद अपाहिज' कविता को आप करुणा की कविता मानते हैं या क्रूरता की? तर्कसम्मत उत्तर दीजिए।

उत्तर- इस कविता को हम क्रूरता की कविता मानते हैं। यह कविता मीडिया के व्यापार व कार्यशैली पर व्यंग्य करती है। दूरदर्शन कमजोर व अशक्त वर्ग के दुख को बढ़ा-चढ़ाकर समाज के सामने प्रस्तुत करता है। वह कमजोर वर्ग की सहायता नहीं करता, अपितु अपने कार्यक्रम के जरिये वह स्वयं को समाज हितेषी सिद्ध करना चाहता है। अत: यह कविता पूर्णत: मीडिया की क्रूर मानसिकता को दर्शाती है।

3.कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता की मानसिकता कैसी होती हैं?

उत्तर- कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रश्नकर्ता की मानसिकता अपाहिज को रुलाने की होती है। वह सोचता है कि अपंग के साथ-साथ यदि दर्शक भी रोने लगेंगे तो उनकी सहानुभूति चैनल को मिल जाएगी। इससे उसे धन व प्रसिद्ध का लाभ मिलेगा।

4.अपाहिज अपने दुख के बारे में क्यों नहीं बता पाता?

उत्तर- प्रश्नकर्ता अपाहिज से उसके विकलांगपन व उससे संबंधित कष्टों के बारे में बार-बार पूछता है, परंतु अपाहिज उनके उत्तर नहीं दे पाता। वास्तविकता यह है कि उसे अपाहिजपन से उतना कष्ट नहीं है जितना उसके कष्ट को बढ़ाचढ़ाकर बताया जाता है। प्रश्नकर्ता के प्रश्न भी अस्पष्ट होते हैं तथा जितनी शीघ्रता से प्रश्नकर्ता जवाब चाहता है, उतनी तीव्र मानसिकता अपाहिज की नहीं है। उसने इस कमी को स्वीकार कर लिया है लेकिन वह अपना प्रदर्शन नहीं करना चाहता।

5.'कैमरे में बंद अपाहिज' शीर्षक की उपयुक्तता सिद्ध कीजिए।

उत्तर- यह शीर्षक कैमरे में बंद यानी कैमरे के सामने लाचार व बेबस अपाहिज की मनोदशा का सार्थक प्रतिनिधित्व करता है। वस्तुत: यह दूरदर्शन के कार्यक्रम-संचालकों की मानसिकता पर व्यंग्य है। कार्यक्रम बनाने वाले अपने लाभ के लिए अपाहिज को भी प्रदर्शन की वस्तु बना देते हैं। वे दूसरे की पीड़ा बेचकर धन कमाते हैं। अत: यह शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है।

6.कैमरे में बद अपाहिज' कविता के प्रतिपाद्य के विषय में अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में शारीरिक अक्षमता की पीड़ा झेल रहे व्यक्ति की पीड़ा को जिस अमानवीय ढंग से दर्शकों तक पहुँचाया जाता है वह कार्यक्रम के निर्माता और प्रस्तोता की संवदेनहीनता की पराकाष्ठा है। वे पीड़ित व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुँचाते हुए उसे बेचने का प्रयास करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ भी उनकी पैसा कमाने की सोच दिखती है, जो उनकी मानवता के ऊपर हावी हो चुकी है।

7.प्रश्नकर्ता अपाहिज की फूली हुई आँखों की तसवीर बड़ी क्यों दिखाना चाहता हैं?

उत्तर- प्रश्नकर्ता अपाहिज की फूली हुई आँखों की तस्वीर इसलिए दिखाना चाहता है ताकि दर्शक उसके दुख से दुखी हों। दर्शकों के मन में उसके प्रति सहानुभूति उत्पन्न हो सके। ऐसे में शायद दर्शकों की आँखों में आँसू भी आ जाएँ जिससे उसका कार्यक्रम लोकप्रिय हो जाए। अत: वह दिव्यांग के दुख को बढ़ा चढ़ाकर दिखाना चाहता है।

योग्यता आधारित प्रश्न-

1.क्या मीडियाकर्मी सफल होता है, यदि नहीं तो क्यों?

उत्तर- मीडियाकर्मी सफल नहीं होता क्योंकि प्रसारण समय समाप्त हो जाता है और प्रसारण समय के बाद यदि अपाहिज व्यक्ति रो भी देता तो उससे मीडियाकर्मी का व्यावसायिक उद्देश्य पूरा नहीं हो सकता था इसलिए अब उसे अपाहिज व्यक्ति के आंसुओं में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

2.कविता में कुछ पंक्तियाँ कोष्ठकों में रखी गई हैं आपकी समझ से इसका क्या औचित्य है?

उत्तर- हमारी समझ से इनका औचित्य यह है कि ये कथन टेलीविजन कार्यक्रम के संचालक के

छद्म रूप को उजागर करते हैं। ये सामने वाले व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार बुलवाने का प्रयास करते हैं।

3.कैमरे में बंद अपाहिज कविता कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती हैं कैसे?

उत्तर- 'रघुवीर सहाय' द्वारा रचित कविता "कैमरे में बंद अपाहिज" कुछ लोगों की संवेदनहीनता प्रकट करती है, क्योंकि इस कविता के माध्यम से कवि ने यह कहने का प्रयास किया है कि दूरदर्शन पर किसी अपाहिज व्यक्ति के जो साक्षात्कार लिए जाते हैं, उनका उद्देश्य केवल संवेदनशीलता का दिखावा करना है |

4.बस थोड़ी सी कसर रह गई क्या कसर रही स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- "बस थोड़ी ही कसर रह गई। यदि इन पंक्तियों को कवि नहीं लिखता तो कविता का मूलभाव स्पष्ट नहीं हो पाता। इसलिए कोष्ठक में दी गई इन पंक्तियों के कारण शारीरिक और मानसिक अपंगता का पता चलता है। अपाहिज के रोने का दृश्य नहीं आने के कारण दूरदर्शन संचालक यह बात कहता है कि थोड़ी सी कसर रह गई |

****

पाठ-6 उषा - शमशेर बहादुर सिंह

मूलभाव- प्रयोगवादी कविता 'उषा' में कवि ने शब्दों के माध्यम से उषा-काल (रात्रि समाप्ति और सूर्योदय के बीच का समय) का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है। उषा के दृश्य को बिंब के रूप में प्रस्तुत करने के लिए कवि ने नए प्रतीक और उपमान प्रयुक्त किए हैं। यहां भोर के आसमान में पल प्रति पल बदलते रंगों को गांव की सुबह से जोड़ते हुए रंगों और चित्रों का सुंदर समन्वय है। मुख्य बिंदु: 'उषा' कविता मुक्त छंद में लिखी गई नई कविता है। भाषा- बड़ी बोली हिंदी कविता में नए विंब, उपमान और प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

शमशेर जी ने उषा कविता में सूर्योदय के समय का अत्यंत सजीव और सरस चित्रण किया है जिससे कविता में प्रातःकालीन दृश्य आँखों के सामने उपस्थित हो उठता है। आकाश मंडल में उभरे हुए रंगों के जादू का अत्यंत मनोहारी वर्णन किया गया है। सूर्योदय के पूर्व प्रातःकालीन आकाश नीले शंख की तरह बहुत नीला होता है । प्रातः कालीन नभ की तुलना काली सिल से की गयी है जिसे अभी-अभी केसर पीसकर धो दिया गया है। कभी कवि को वह राख से लीपे चौके के समान लगता है, जो अभी गीला पड़ा है। नीले गगन में सूर्य की पहली किरण ऐसी दिखाई देती है मानो कोई सुंदरी नीले जल में नहा रही हो और उसका गोरा शरीर जल की लहरों के साथ झिलमिला रहा हो। प्रात:कालीन, परिवर्तनशील सौंदर्य का दृश्य बिंब ,प्राकृतिक परिवर्तनों को मानवीय क्रियाकलापों के माध्यम से व्यक्त किया गया है। यथार्थ जीवन से चुने गए उपमानों जैसे:- राख से लीपा चौका ,काली सिल,नीला शंख, स्लेट,लाल खड़िया चाक आदि ।

बहुविकल्पीय प्रश्न :

1. उषा का जादू टूटने से अभिप्राय है-

(क) उषा का सारा सौंदर्य समाप्त हो जाता है।

(ख) चारों ओर मलिनता छा जाती है।

(ग) सूर्योदय होने पर गर्मी बढ़ जाती है।

(घ) इनमें से कोई नहीं।

2. उषा कविता काल से सम्बंधित है-

(क) छायावादी (ख) प्रयोगवादी (ग) रहस्यवादी (घ) इनमें से कोई नहीं

3. उषा' कविता की भाषा है-

(क) ब्रज (ख) चित्रात्मक खड़ी बोली (ग) कश्मीरी (घ) इनमें से कोई नहीं

4. प्रातःकालीन आकाश की तुलना किससे की गई है?

(क) सरोवर (ख) शंख (ग) केसर (घ) नारंगी

5. कवि ने राख से लिपा हुआ चोका किसे बताया है?

(क) उषा कालीन सौंदर्य को (ख) भोरकालीन नभ को (ग) सुबह के वातावरण को (घ) कोई नहीं

6. काली सिल किससे धुली हुई प्रतीत होती है ?

(क) जल से (ख) लाल रंग से (ग) सिंदूर से (घ) केसर से

7.उषा कविता के माध्यम से कवि क्या चाहता है?

(क) पारंपरिक उपमानों द्वारा प्रकृति प्रेम को जीवित रखना।

(ख) परंपरा से हटकर नये उपमानों द्वारा प्रकृति के प्रति रूचि जगाना ।

(ग) प्रकृति प्रेम के प्रति लोगों में अरूचि भाव पैदा करना।

(घ) प्रकृति को छोड़ अन्य विषयों के प्रति ध्यानाकृष्ट करना।

8. आकाश की लालिमा किसके समान प्रतीत होता है?

(क) सफेदी (ख) लाल खड़िया चॉक (ग) केसर (घ) ख और ग दोनों

9. उषा का जादू कब टूट जाता है ?

(क) सुबह होने पर (ख) सूर्योदय होने पर (ग) अँधेरा होने पर (घ) रात होने पर

10. उषा कविता का वर्ण्य विषय क्या है?

(क) रात्रि कालीन प्रकृति सौंदर्य का वर्णन।

(ख) सूर्योदय पश्चात पल-पल परिवर्तित प्रकृति परिवेश का वर्णन।

(ग) सूर्योदय के पहले क्षण-क्षण परिवर्तित प्रकृति सौंदर्य का वर्णन।

(घ) प्रातःकाल के उजाले का वर्णन।

उत्तरमाला

1. (क) उषा का सारा सौंदर्य समाप्त हो जाता है। 2. (ख) प्रयोगवादी 3. (ख) चित्रात्मक खड़ी

बोली 4. (ख) शंख 5. (ख) भोरकालीन नभ को 6. (घ) केसर से 7. (ख) परंपरा से हटकर नये उपमानों द्वारा प्रकृति के प्रति रूचि जगाना । 8. (घ) ख और ग दोनों 9. (ख) सूर्योदय होने पर 10. (ग) सूर्योदय के पहले क्षण-क्षण परिवर्तित प्रकृति सौंदर्य का वर्णन।

पठित पद्यांश

नील जल में या किसी की
गौर झिलमिल देह
जैसे हिल रही हो।
जादू टूटता है उषा का अब
सूर्योदय हो रहा है।

प्रश्न.1. नीले जल में झिलमिलाने वाला गौर देह किसका है?

(क) युवती का (ख) नायिका का (ग) सूरज का (घ) कवि का

प्रश्न.2. सूर्योदय के ठीक पहले प्रकृति में किसका जादू छाया हुआ है?

(क) निशा का (ख) रात्रि का (ग) उषा का (घ) तारों का

प्रश्न.3. नील जल में या किसी की गौर झिलमिल देह जैसे हिल रही हो' इस पंक्ति में अलंकार है-

(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा मानवीकरण (ग) रूपक (घ) यमक

प्रश्न.4. सूर्य के उदित होने पर क्या प्रभाव पड़ता है?

(क) उषा के सौंदर्य का जादू समाप्त हो जाता है । (ख) चारों ओर अंधकार छा जाता है | (ग) पेड़-पौधे मुरझाने लगते हैं। घ- पूरब में कालिमा छा जाती है।

प्रश्न.5. सूर्योदय से पूर्व का काल कहलाता है -

(क) निशा काल (ख) उषा काल (ग) तमकाल (घ) रात्रिकाल

उत्तर - 1. (ग) सूरज का 2. (ग) उषा का 3. (ख) उत्प्रेक्षा - मानवीकरण 4. (क) उषा के सौंदर्य का जादू समाप्त हो जाता है । 5 (ख) उषाकाल

निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए और विकल्प 'सत्य' या असत्य' का चुनाव कीजिए -

1. प्रातःकालीन वातावरण में ओस की नमी नहीं होती है। -असत्य
2. ऊषा' कविता के रचयिता शमशेर बहादुर सिंह हैं। - सत्य
3. भोरकालीन आकाश की तुलना नीले शंख से की गई है - सत्य
4. शंख की स्वच्छता, पवित्रता और निर्मलता जैसे गुण भोरकालीन आकाश में भी दिखाई देते हैं। - सत्य
5. सूर्योदय से पहले आकाश में नये-नये रंगों के अद्भुत मेल से आकाश में जादू जैसा वातावरण

बन जाता है। - असत्य

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए एक शब्द में उत्तर दीजिये -

प्रात नभ था नीला शंख जैसे इस पंक्ति में अलंकार है - उपमा

. काली सिल और स्लेट के माध्यम से कवि ने किस उजाले का चित्रण किया है - भोरकालीन

'उषा' एक प्रकार की कविता है। - कल्पना प्रधान

उषा पाठ में परिवेश सजीव हो उठता है। - ग्रामीण

उषा पाठ में नए का प्रयोग हुआ है - उपमानों का

उषा पाठ में छंद का प्रयोग हुआ है - कवित्त

सरल सहज बोली में सुन्दर अभिव्यक्ति है। - खड़ी

कवि ने उषा के किस सुन्दर दृश्य को प्रस्तुत किया है। - बिम्ब

नीला शंख..... के लिए प्रयुक्त हुआ है - सुबह के आकाश

10 .गोरी देह के झिलमिलाने की तुलना किससे की गई है? -प्रात नभ से

निम्नलिखित अभिकथनों के लिए उचित तथा तर्कयुक्त विकल्प में से उत्तर दीजिए -

1.अभिकथन (A) उषा कविता ग्रामीण परिवेश की ओर इंगित करती है।

कारण (R) लीपा हुआ चौका या आँगन, सिल और स्लेट गाँवों में घर-घर दिखाई देते हैं।

(क) A और R दोनों सत्य हैं और R. A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं और R. A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सच है, लेकिन R झूठा है।

(घ) A झूठा है, लेकिन R सच है।

2. अभिकथन (A) कवि ने भोरकालीन नभ को राख से लीपा हुआ गीला चौका कहा है।

कारण (R) चौके की लिपाई के बाद उसमें आर्द्रता या नमी आ जाती है।

(क) Aऔर R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सच है, लेकिन R झूठा है।

(घ) A झूठा है, लेकिन R सच है।

3. अभिकथन (A) काली सिल और स्लेट के माध्यम से भोरकालीन अँधेरे का सटीक चित्रण है।

कारण (R) भोरकाल में आकाश में सुरमई अँधेरा होता है।

(क) Aऔर R दोनों सत्य हैं और R. A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य है और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सच है, लेकिन R झूठा है।

(घ) A झूठा है, लेकिन R सच है।

4. अभिकथन (A) सुबह का खिलता सूरज अपनी किरणों को काफ़ी कोमल बनाए हुए है।

कारण (R) सूर्यास्त का सूरज थका-हारा, मलिन अब विश्राम करना चाहता है।

(क) Aऔर R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सच है लेकिन R झूठा है।

(घ) A झूठा है, लेकिन R सच है।

5. अभिकथन (A) प्रातःकालीन आकाश नीला शंख के समान था।

कारण (R) प्रातः कालीन आकाश स्वच्छ, निर्मल और पवित्र होता है।

(क) Aऔर R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

(ख) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) A सच है, लेकिन R झूठा है।

(घ) A झूठा है, लेकिन R सच है।

उत्तरमाला :

1. (क) A और R दोनों सत्य हैं और R. A की सही व्याख्या करता है।

स्पष्टीकरण- सुबह अपने कार्यों में लगे ग्रामीण वर्ग को स्पष्ट करने वाले प्रतिमान है।

2. (क) A और R दोनों सत्य है और R, A की सही व्याख्या करता है।

स्पष्टीकरण- लीपे हुए चौके में नमी होती है ठीक उसी प्रकार भोरकालीन आकाश में भी आद्रता होती है।

3. (क) A और R दोनों सत्य है और R, A की सही व्याख्या करता है।

स्पष्टीकरण- भोर में आकाश सिल और स्लेट की तरह काला नज़र आता है।

4. (ख) A और R दोनों सत्य है और R. A की सही व्याख्या नहीं करता है

स्पष्टीकरण- सुबह सूरज की किरणें कोमलता और सतेज होती जाती है। शाम को निस्तेज होती है।

.(क) Aऔर R दोनों सत्य है और R. A की सही व्याख्या करता है।

स्पष्टीकरण- क्योंकि नीला शंख स्वच्छ, निर्मल और पवित्रता का प्रतीक है।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्र.(1) 'अभी गीला पड़ा है' से कवि का क्या आशय है ?

उत्तर 'अभी गीला पड़ा है' से कवि का आशय है कि भोर के आसमान में नमी व ताजगी है |

प्र.(2) उषा कविता में प्रयुक्त उपमान लिखिए |

उत्तर उषा कविता में प्रयुक्त उपमान हैं - नीला शंख, राख से लीपा चौका, लाल केसर से धुली काली

सिल, काली स्लेट जिस पर लाल चाक मली हो, झिलमिल देह |

प्र.(3) उषा कविता की भाषागत विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर 1.खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया गया है |

2.देशज व ग्रामीण शब्दों का प्रयोग किया गया है, जैसे- राख, चौका, खड़िया आदि |

3.नए उपमानों का प्रयोग किया गया है, जैसे- नीला शंख, राख से लीपा चौका आदि

4.उषाकाल के बिम्बों का प्रयोग किया गया है, जैसे- पानी में सूर्य किरणें झिलमिल देह के समान |

प्र.(4) उषा का जादू क्या है ?

उत्तर उषाकाल में (भोर से सूर्योदय तक) आसमान में कई रंग जैसे नीला, राख जैसा, लालिमा लिए काला रंग आदि आसमान में दिखाई देते हैं, यही उषा का जादू है |

प्र.(5) उषा का जादू कब टूटता है ?

उत्तर सूर्योदय होने और सूर्य की चमक के कारण उषा का जादू टूटता है |

लघु उत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न 1. 'उषा' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- कवि शमशेर बहादुर सिंह ने उपा कविता में सूर्योदय से ठीक पहले के पल-पल परिवर्तित होते आकाश का शब्द चित्र उकेरा है। कवि भोर के आकाश और धरती के हलचल भरे जीवन से तुलना कर रहा है। यहां नीला शंख, सिल, राख से लीपा हुआ चौका और स्लेट की कालिमा पर चाक से रंग मलते अदृश्य बच्चों के नन्हें हाथ है।

प्रश्न2. कवि शमशेर बहादुर सिंह प्रातःकालीन आकाश की तुलना किससे की और क्यों?

उत्तर -कवि ने प्रातःकालीन आकाश की तुलना नीले शंख, राख लीपे चौके, काली सिल और स्लेट आदि से की है। शंख पवित्र माना है और काली सिल स्लेट गांव का जीवन और बच्चों की अदृश्य उपस्थिति यहां कवि पहले उषा काल में आसमान बदलते रंगों जादू प्रस्तुत कर रहा है|

प्रश्न 3. 'उषा' कविता प्रातःकालीन नभ लिए प्रयुक्त किन्हीं तीन उपमानों के विषय में अपनी राय लिखें कि वे कितने सरल है?

शमशेर बहादुर सिंह प्रातःकालीन नभ लिए निम्न उपमानों का प्रयोग किया है-

नीला शंख (2) राख चौका (3) काली सिल (4) स्लेट ये उपमान सर्वथा नवीन हैं इनके माध्यम से कवि ने उषा काल में पल प्रतिपल बदलते रंगों को चित्र के रूप दिखाने का सफल प्रयास किया है जो उचित है।

प्रश्न4. कवि काली सिल लाल केसर के माध्यम से क्या कहना चाहते हैं?

कविता में कवि अंधेरे को काली सिल के रूप में वर्णित किया है। सुबह की किरण लालिमायुक्त होती है। ऐसी सूर्योदय जब होता है तब ऐसा लगता मानो किसी काली सिल को लाल प्रस्तुत हुए

कवि उषा का जादू देखने का आह्वान कर रहे हैं |

प्रश्न 5. 'उषा' कविता में प्रातःकालीन सौंदर्य का चित्रण किस प्रकार किया गया है?

शमशेर बहादुर सिंह जी प्रातः कालीन सौंदर्य को काली स्लेट, लाल केसर, लाल खड़िया चाक के उपमान के रूप में चित्रित किया है। कविता में प्रातः कालीन ओस नमी के माध्यम से काली सिल को लाल केसर से धुलना बताया गया है |इसी तरह स्लेट ओर चाक के रंगों से आसमान के रंगों का समय प्रस्तुत किया गया है |

प्रश्न 6 .कविता में उषा का जादू टूटने का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

उषा कविता की अंतिम पंक्ति है- "जादू टूटता है" इस का अब सूर्योदय हो रहा है। कविता में उपाकाल के प्राकृतिक शीघ्र अतिशीघ्र बदलने को विभिन्न रंगों द्वारा प्रस्तुत किया गया है। सूर्य के आकाश में आते ही उषा का सौन्दर्य समाप्त हो गया है।शमशेर जी महसूस करते हैं मानो उषा जादू पूर्णरूप से समाप्त हो जाता है |

प्रश्न 7. 'उषा' कविता में कौन-कौन-से उपमानों का उल्लेख हुआ है?

उत्तर- 'उषा' कविता में प्रयुक्त उपमान इस प्रकार हैं -

1. नीला शंख- सुबह के आकाश के लिए।
2 राख से लीपा हुवा चौका- भोर के नभ के लिए।
3. काली सिल अंधेरे से युक्त आसमान।
4. स्लेट पर लाल खड़िया चाक- भोर से नमी युक्त वातावरण में उगते सूरज की लालिमा के लिए।
5. नीले जल में झिलमिलाती गोरी देह- नीले आकाश में आता सूरज

प्रश्न 8. कवि ने प्रातःकालीन आकाश की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर - प्रात:कालीन आकाश की तुलना नीले शंख से की गई है, क्योंकि उसको शंख के समान पवित्र माना गया है। 2. कवि ने भोर के नभ को राख से लीपा हुआ चौका इसलिए कहा है,क्योंकि भोर का नभ सफेद नीले रंग से मिश्रित दिखाई देता है। 3. इसका अर्थ यह है कि प्रात:काल में ओस की नमी होती है। गीले चौके में भी नमी होती है। अत: नीले नभ को गीला बताया गया है। 4. प्रात:कालीन नभ के लिए कवि ने दो उपमानों का प्रयोग किया है-(।) नीला शंख, (।।) राख से लीपा चौका।ये उपमान सर्वथा मौलिक एवं नवीन हैं।

प्रश्न-9. कवि के अनुसार राख से तुरंत लीपा हुआ चौका अभी कैसा लग रहा है?

उत्तर- कवि ग्रामीण संस्कृति का परिचय देते हुए कहता है कि गाँव में कच्चे मकानों में रसोई घर ओर चूल्हा मिटटी का बना होता है तो उसको साफ़ करने के लिए एक विशेष प्रकार की मिट्टी प्रयोग में लाई जाती है उसमें राख का मिश्रण मिलाकर (चूँकि राखी कीटाणु मुक्त होता है) पुताई की जाती है जो थोड़ी देर तक गीला ही बना रहता है,अतः कवि के अनुसार चौका अभी भी गीला लग रहा है|

प्रश्न 10. कवि के अनुसार लाल चॉक खड़िया किस पर मल दिया गया है ?

उत्तर - कवि के अनुसार सुबह का दृश्य जब अँधेरे से उजाले में धीरे धीरे परिवर्तित होता है तो उस समय हलकी रोशनी और अँधेरे का मिश्रण होता है |वो रंग हलकी लालिमा लिए हुए रहती है तो कवि ऐसे समय की तुलना काली स्लेट पर खड़िया मलने से करता है जिससे वर्णन जीवंत हो जाता है |

निबंधात्मक प्रश्न -

प्रश्न. 1- कविता के किन उपमानों को देखकर कहा जा सकता है कि उषा गाँव की सुबह का गतिशील शब्द चित्र है ?

उत्तर :-कविता में नीले नभ को राख से लिपे गीले चौके के समान बताया गया है | दूसरे बिंब में उसकी तुलना काली सिल से की गई है| तीसरे में स्लेट पर लाल खड़िया चाक का उपमान है|लीपा हुआ आँगन ,काली सिल या स्लेट गाँव के परिवेश से ही लिए गए हैं |प्रात: कालीन सौंदर्य क्रमश: विकसित होता है | सर्वप्रथम राख से लीपा चौका जो गीली राख के कारण गहरे स्लेटी रंग का अहसास देता है और पौ फटने के समय आकाश के गहरे स्लेटी रंग से मेल खाता है |उसके पश्चात तनिक लालिमा के मिश्रण से काली सिल का जरा से लाल केसर से धुलना सटीक उपमान है तथा सूर्य की लालिमा के रात की काली स्याही में घुल जाने का सुंदर बिंब प्रस्तुत करता है | धीरे -धीरे लालिमा भी समाप्त हो जाती है और सुबह का नीला आकाश नील जल का आभास देता है व सूर्य की स्वर्णिम आभा गौरवर्णी देह के नील जल में नहाकर निकलने की उपमा को सार्थक सिद्ध करती है |

प्रश्न. 2 - भोर का नभ

राख से लीपा चौका

(अभी गीला पड़ा है)

नयी कविता में कोष्ठक ,विराम चिह्नों और पंक्तियों के बीच का स्थान भी कविता को अर्थ देता है |उपर्युक्त पंक्तियों में कोष्ठक से कविता में क्या विशेष अर्थ पैदा हुआ है ?समझाइए | उत्तर :- नई कविता प्रयोगधर्मी है |इसमें भाषा- शिल्प के स्तर पर हर नए प्रयोग से अर्थ की अभिव्यक्ति की जाती है|प्राय: कोष्ठक अतिरिक्त ज्ञान की सूचना देता है|यहाँ अभी गीला पड़ा है के माध्यम से कवि गीलेपन की ताजगी को स्पष्ट कर रहा है |ताजा गीलापन स्लेटी रंग को अधिक गहरा बना देता है जबकि सूखने के बाद राख हल्के स्लेटी रंग की हो जाती है|

प्रश्न. 3- कविता में प्रयुक्त उपमानों को स्पष्ट कीजिए।

भोर का नभ , राख से लीपा चौका दोनों ही गहरे सलेटी रंग के हैं ,पवित्र हैं,नमी से युक्त हैं।काली सिल भोर का नभ और लाल केसर से धुली काली सिल दोनों ही लालिमा से युक्त हैं। काली स्लेट जो लाल खड़िया चाक से मल दी गई हो और भोर का नभ दोनों ही

लालिमा से युक्त हैं।प्रातः काल के स्वच्छ निर्मल आकाश में सूर्य ऐसा प्रतीत होता है मानो नीलजल में कोई स्वर्णिम देह नहा रही हो।

प्रश्न. 4- कविता उषा की भाषा शैली एवं अभिव्यक्ति संबंधी विशेषताएं लिखिए।

उत्तर - कविता उषा कवि शमशेर बहादुर सिंह द्वारा रचित ग्रामीण परिक्षेत्र की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी एक अनुपम कृति है जिसमें कवि ने नगरीय शोर शराबे एवं धूल भरे जीवन से भिन्न शांत ग्रामीण जीवन का सजीव चित्रण किया है,कवि शहर की अलसाई सुबह के स्थान पर गतिशील ग्रामीण सुबह का चित्रण करने में स्वयं को ज्यादा सहज महसूस करता है कवि की भाषा संस्कृत निष्ठ हिंदी है जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में प्रयोग किये जाने वाले वस्तुओं का यथार्थ चित्रण है |यथार्थ जीवन से चुने गए उपमान -राख से लीपा चौका का वर्णन प्रभावशाली है,दृश्यबिंब इतने सजीव है कि सभी क्रियाएं आँखों के सामने उपस्थित हो जाती हैं

****

पाठ-7 बादल राग - सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

मूलभाव- कवि बादलों को देखकर कल्पना करता है कि बादल हवारूपी समुद्र में तैरते हुए क्षणिक सुखों पर दुख की छाया है जो संसार या धरती की जलती हुई छाती पर मानी छाया करके उसे शांति प्रदान करने के लिए आए हैं। बाढ़ की विनाश-लीला रूपी युद्ध-भूमि में वे नौका के समान लगते हैं। बादल की गर्जना को सुनकर धरती के अंदर सोए हुए बीज या अंकुर नए जीवन की आशा से अपना सिर ऊँचा उठाकर देखने लगते हैं। उनमें भी धरती से बाहर आने की आशा जागती है। बादलों की भयंकर गर्जना से संसार हृदय थाम लेता है। आकाश में तैरते बादल ऐसे लगते हैं मानो वज्रपात से सैंकड़ों वीर धराशायी हो गए हो और उनके शरीर क्षत-विक्षत है। कवि कहता है कि छोटे व हलके पौधे हिल-डुलकर हाथ हिलाते हुए बादलों को बुलाते प्रतीत होते हैं। कवि बादलों को क्रांति दूत की संज्ञा देता है। बादलों का गर्जन किसानों व मजदूरों को नवनिर्माण की प्रेरणा देता है। क्रांति से सदा आम आदमी को ही फ़ायदा होता है। बादल आतंक के भवन जैसे हैं जो कीचड़ पर कहर बरसाते हैं। बुराईरूपी कीचड़ के सफ़ाए के लिए बादल प्रलयकारी होते हैं। छोटे से तालाब में उगने वाले कमल सदैव उसके पानी को स्वच्छ व निर्मल बनाते हैं। आम व्यक्ति हर स्थिति में प्रसन्न व सुखी रहते हैं। अमीर अत्यधिक संपत्ति इकट्ठी करके भी असंतुष्ट रहते हैं और अपनी प्रियतमाओं से निपटने के बावजूद क्रांति की आशंका से कांपते है। कवि कहता है कि कमजोर शरीर वाले कृषक बादलों को अधीर होकर बुलाते हैं क्योंकि पूंजीपति वर्ग ने उनका अत्यधिक शोषण किया है। वे सिर्फ जिंदा है बादल ही क्रांति करके शोषण को समाप्त कर सकता है।

पद्यांश-1

तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया
जग के दग्ध हृदय पर
निर्दय विप्लव की प्लावित माया
यह तेरी रण-तरी
भरी आकांक्षाओं से,
घन, भेरी-गर्जन से सजग सुप्त अंकुर
उर में पृथ्वी के, आशाओं से
नवजीवन की, ऊँचा कर सिर,
ताक रहे हैं, ऐ विप्लव के बादल!

(क) कवि किस का आवाहन करता है?

(i) बिजली (ii) बादल (iii) सूरज (iv) प्रकृति

(ख) क्रांति का दूत किसे कहा गया है?

(i) समीर (ii) आसमान (iii) बादल (iv) नौका

(ग) पृथ्वी में सोए हुए अंकुर के ऊपर किसका प्रभाव पड़ता है?

(i) कवि की पुकार का (ii) कवि के गीतों का
(iii) बादल की गर्जना का (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) विप्लव के बादल में कौन सा अलंकार है?

(i) उपमा (ii)अनुप्रास (iii) रूपक (iv) उत्प्रेक्षा

(ड.) अंकुर किसकी आशा में सिर उठाकर ताक रहे हैं?

(i) नवजीवन (ii) क्रांति (iii) पानी (iv) बादल

उत्तरमाला-

(क)(ii) (ख)(iii) (ग)(iii) (घ)(iii) (ड.)(i)

पद्यांश-2

फिर-फिर
बार-बार गर्जन
वर्षण है मूसलधार,
हृदय थाम लेता संसार,
सुन-सुन घोर वज्र हुंकार
अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर,

क्षत-विक्षत हत अचल-शरीर,
गगन-स्पर्शी स्पर्द्धा धीर ।
हँसते हैं छोटे पौधे लघुभार
शस्य अपार,
हिल-हिल
खिल-खिल,
हाथ हिलाते.
तुझे बुलाते,
विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।

(क) कवि ने बादलों को किसका प्रतीक माना है?

(i) क्रांति का (ii) विद्रोह का (iii) (i) और (ii) दोनों (iv) अग्नि का

(ख) बादल किसके समान गर्जना करते हैं?

(i) आग के समान (ii) वज्र के समान
(iii) तूफ़ान के समान (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) क्रांति की गर्जना पर कौन हंसता है?

(i) उच्च वर्ग के लोग (ii) मध्यम वर्ग के लोग
(iii) निम्न एवं गरीब लोग (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) गगन स्पर्शी स्पर्धा धीर कौन है?

(i)मजदूर वर्ग (ii) पूंजीपति वर्ग (iii) मध्यम वर्ग (iv) राजनीतिज्ञ लोग

(ड.)लघु भार शस्य अपार किन के प्रतीक हैं?

(i) धनिक वर्ग (ii) अमीर वर्ग (iii)साहित्यकार (iv) किसान एवं मजदूर वर्ग के लोग

उत्तरमाला-

(क)(iii) (ख)(ii) (ग)(iii) (घ)(ii) (ड.)(iv)

पद्यांश-3

अट्टालिका नहीं है रे आतंक-भवन
सदा पंक पर ही होता
जल-विप्लव-प्लावन,
क्षुद्र प्रफुल्ल जलज से सदा छलकता नीर,
रोग-शोक में भी हँसता है
शैशव का सुकुमार शरीर ।
रुद्ध कोष है, क्षुब्ध तोष

अंगना-अंग से लिपटे भी
आतंक अंक पर काँप रहे हैं।
धनी, वज्र-गर्जन से बादल!
त्रस्त नयन-मुख ढाँप रहे हैं।
है जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर,
ऐ विप्लव के वीर!
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार!

(क) पंक किसका प्रतीक है?

(i) आम आदमी (ii) विशेष वर्ग में लोग (iii) अमीर वर्ग (iv)पूंजीपति वर्ग

(ख) अट्टालिका किसका प्रतीक है?

(i) शोषक एवं पूंजीपति वर्ग (ii)मजदूर वर्ग (iii) किसान (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) धनिक वर्ग किस से भयभीत हैं?

(i) बादलों से (ii) चेतना से (iii) क्रांति से (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) कवि ने किसकी दुर्दशा का वर्णन किया है?

(i) पूंजीपति की (ii) किसान एवं मज़दूर वर्ग (iii) धनिक वर्ग (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ड.) जीवन के पारावार किसे कहा गया है?

(i) किसान (ii) मजदूर (iii) बादल (iv) क्रांति

उत्तरमाला-

(क)(i) (ख)(i) (ग)(iii) (घ)(ii) (ड.)((iii)

पाठ पर आधारित प्रश्न-

1. 'बादल राग' कविता के आधार पर भाव स्पष्ट कीजिए-'विप्लव-रव से छोटे ही हैं शोभा पाते।'

उत्तर- 'विप्लव-रव' से तात्पर्य है-क्रांति का स्वर क्रांति का सर्वाधिक लाभ शोषित वर्ग को ही मिलता है क्योंकि उसके अधिकार छिने गए हैं। शोषक वर्ग के विशेषाधिकार खत्म होते हैं। आम व्यक्ति को जीने के अधिकार मिलते हैं। उनको दरिद्रता दूर होती है। अतः क्रांति की गर्जना से शोषित वर्ग प्रसन्न होता है।

2. क्रांति की गर्जना का शोषक वर्ग पर क्या प्रभाव पड़ता है? उनका मुख ढापना किस मानसिकता का घोतक है? 'बादल राग' कविता के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- शोषक वर्ग ने आर्थिक साधनों पर एकाधिकार जमा लिया है, परंतु क्रांति की गर्जना सुनकर वह अपनी सत्ता को खत्म होते देखता है। वह बुरी तरह भयभीत हो जाता है। उसकी

शांति समाप्त हो जाती है। शोषक वर्ग का मुख ढाँपना उनकी कमजोर स्थिति को दर्शाता है। क्रांति के परिणामों से वे भयभीत हैं।

3. 'बादल राग जीवन निर्माण के नए राग का सूचक है।' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस कविता में कवि ने लघु-मानव की खुशहाली का राग गाया है। वह आम व्यक्ति के लिए बादल का आहवान क्रांति के रूप में करता है। किसान मजदूर को आकांक्षाएँ बादल को नवनिर्माण के राग के रूप में पुकार रही है। क्रांति हमेशा वंचितों का प्रतिनिधित्व करती है। बादलों के अंग-अंग में बिजलियाँ सोई हैं, वज्रपात से शरीर आहत होने पर भी वे हिम्मत नहीं हारते। गरमी से हर तरफ सब कुछ रूखा-सूखा और मुरझाया-सा है। धरती के भीतर सोए अंकुर नवजीवन की आशा में सिर ऊँचा करके बादल की उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। क्रांति जो हरियाली लाएगी, उससे सबसे उत्फुल्ल नए पौधे, छोटे बच्चे ही होंगे।

4. 'बादल राग' कविता में 'ऐ विप्लव के वीर' किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- इस कविता में 'ऐ विप्लव के वीर!' बादल को कहा गया है। बादल घनघोर वर्षा करता है तथा बिजलियाँ गिराता है। इससे सारा जनजीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। बादल क्रांति का प्रतीक है। क्रांति आने से बुराई रूपी कीचड समाप्त हो जाता है तथा आम व्यक्ति को जीने योग्य स्थिति मिलती हैं।

5. 'बादल राग' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

उत्तर-'बादल राग' क्रांति की आवाज का परिचायक है। यह कविता जनक्रांति की प्रेरणा देती है। कविता में बादलों के आने से नए पौधे हर्षित होते हैं, उसी प्रकार क्रांति होने से आम आदमी को विकास के नए अवसर मिलते हैं। कवि बादलों को बारिश करने या क्रांति करने के लिए आहवान करता है। यह शीर्षक उद्देश्य के अनुरूप है। अत: यह शीर्षक सर्वथा उचित है।

6. विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की कौन-कौन-सी विशेषताएँ बताई गई हैं?

उत्तर-कवि ने विप्लवी बादल की युद्ध-नौका की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं-

(i) यह समीर-सागर में तैरती है।

(ii) यह भेरी-गर्जन से सजग है।

(iii) इसमें ऊँची आकांक्षाएँ भरी हुई हैं।

7.अस्थिर सुख पर दुख की छाया पंक्ति में दुख की छाया किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर- कवि ने दुख की छाया' मानव जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सुख कभी स्थायी नहीं होता। उसके साथ-साथ दुख का प्रभाव रहता है। धनी शोषण करके अकूत संपति जमा करता है परंतु उसे सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सब कुछ छिनने के डर से भयभीत रहता है।

8.अशनि-पात से शापित उन्नत शत-शत वीर पंक्ति में किसकी ओर संकेत किया गया है?

उत्तर- इस पंक्ति में कवि ने पूँजीपति या शोषण या धनिक वर्ग की ओर संकेत किया है। बिजली गिरना' का तात्पर्य-क्रांति से है। क्रांति से जो विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग है, उसकी प्रभुसत्ता समाप्त हो जाती है और वे उन्नति के शिखर से गिर जाते हैं। उनका गर्व चूर-चूर हो जाता है।

9. पृथ्वी में सोए हुए अंकुरों पर किसका क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- पृथ्वी में सोए हुए अंकुरो पर बादलों की गर्जना का प्रभाव पड़ता है। गर्जना सुनकर वे नया जीवन पाने की आशा से सिर ऊंचा करके प्रसन्न होने लगते हैं।

****

पाठ-8. कवितावली, लक्ष्मण-मूर्च्छा और राम का विलाप- गोस्वामी तुलसीदास

मूलभाव- इस शीर्षक के अंतर्गत दो कवित्त और एक सवैया संकलित हैं। 'कवितावली' से अवतरित इन कवित्तों में कवि तुलसी का विविध विषमताओं से ग्रस्त कलिकाल तुलसी का युगीन यथार्थ है, जिसमें वे कृपालु प्रभु राम व रामराज्य का स्वप्न रचते हैं। युग और उसमें अपने जीवन का न सिर्फ उन्हें गहरा बोध है, बल्कि उसकी अभिव्यक्ति में भी वे अपने समकालीन कवियों से आगे हैं। यहाँ पाठ में प्रस्तुत 'कवितावली' के छंद इसके प्रमाण-स्वरूप हैं। पहले छंद "किसबी, किसान ...." में उन्होंने दिखलाया है कि संसार के अच्छे-बुरे समस्त लीला-प्रपंचों का आधार 'पेट की आग' का गहन यथार्थ है; जिसका समाधान वे राम की भक्ति में देखते हैं। दरिद्रजन की व्यथा दूर करने के लिए राम रूपी घनश्याम का आह्वान किया गया है। पेट की आग बुझाने के लिए राम रूपी वर्षा का जल अनिवार्य है।इसके लिए अनैतिक कार्य करने की आवश्यकता नहीं है।' इस प्रकार, उनकी राम भक्ति पेट की आग बुझाने वाली यानी जीवन के यथार्थ संकटों का समाधान करने वाली है; न कि केवल आध्यात्मिक मुक्ति देने वाली| गरीबी की पीड़ा रावण के समान दुखदायी हो गई है।

दूसरे छंद में कवि अकाल की स्थिति का चित्रण करता है। इस समय किसान खेती नहीं कर सकता, भिखारों को भीख नहीं मिलती, व्यापारी व्यापार नहीं कर पाता तथा नौकरी की चाह रखने वालों को नौकरी नहीं मिलती। लोगों के पास आजीविका का कोई साधन नहीं है। वे विवश हैं। वेद-पुराणों में कही और दुनिया की देखी बातों से अब यही प्रतीत होता है कि अब तो भगवान राम की कृपा से ही कुशल होगी। वह राम से प्रार्थना करते हैं कि अब आप ही इस दरिद्रता रूपी रावण का विनाश कर सकते हैं।

तीसरे छंद ("धूत कहौ...") में भक्ति की गहनता और सघनता में उपजे भक्तहृदय के आत्मविश्वास का सजीव चित्रण है, जिससे समाज में व्याप्त जातिवाद - और दुराग्रहों के

तिरस्कार का साहस पैदा है। इस प्रकार भक्ति की रचनात्मक भूमिका का संकेत यहाँ है, जो आज के भेदभाव मूलक युग में अधिक प्रासंगिक है |

लक्ष्मण- मूर्छा और राम का विलाप

सार

श्रीरामजी को समर्पित ग्रन्थ श्रीरामचरितमानस उत्तर भारत मे बड़े भक्तिभाव से पढ़ा जाता है। रावण पुत्र मेघनाद द्वारा शक्ति बाण से मूर्छित हुए लक्ष्मण को देखकर राम व्याकुल हो जाते हैं।सुषेण वैद्य ने संजीवनी बूटी लाने के लिए हनुमान को हिमालय पर्वत पर भेजा। आधी रात व्यतीत होने पर जब हनुमान नहीं आए,तब राम ने अपने छोटे भाई लक्ष्मण को उठाकर हृदय से लगा लिया और साधारण मनुष्य की भाँति विलाप करने लगे।राम बोले .....हे भाई !तुम मुझे कभी दुखी नहीं देख सकते थे।तुम्हारा स्वभाव सदा से ही कोमल था । तुमने मेरे लिए माता पिता को भी छोड़ दिया और मेरे साथ वन में सर्दी,गर्मी और विभिन्न प्रकार की विपरीत परिस्थितियों को भी सहा | जैसे पंख बिना पक्षी,मणि बिना सर्प और सूँड बिना श्रेष्ठ हाथी अत्यंत दीन हो जाते हैं,हे भाई! यदि मैं जीवित रहता हूँ तो मेरी दशा भी वैसी ही हो जाएगी। मैं अपनी पत्नी के लिए अपने प्रिय भाई को खोकर कौन सा मुँह लेकर अयोध्या जाऊँगा।इस बदनामी को भले ही सह लेता कि राम कायर है और अपनी पत्नी को खो बैठा। स्त्री की हानि विशेष क्षति नहीं है,परन्तु भाई को खोना अपूरणीय क्षति है।

'रामचरितमानस' के 'लंका कांड' से गृहीत लक्ष्मण को शक्ति बाण लगने का प्रसंग कवि की मार्मिक स्थलों की पहचान का एक श्रेष्ठ नमूना है। भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे-धीरे प्रलाप में बदल जाता है, जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसा अनावृत हो जाते हैं।यह प्रसंग ईश्वर राम में मानव सुलभ गुणों का समन्वय कर देता है | हनुमान का संजीवनी लेकर आ जाना करुण रस में वीर रस का उदय हो जाने के समान है| हनुमान का संजीवनी ले कर आना करुण रस में वीर रस का उदय हो जाने के समान है ।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

पद्यांश-1

किसबी, किसान-कुल, बनिक, भिखारी, भाट,
चाकर, चपल नट, चोर, चार, चेटकी।
पेटको पढ़त, गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन-गन अहन अखेटकी ।।
ऊँचे-नीचे करम, धरम-अधरम करि,
पेट ही को पचत, बेचत बेटा-बेटकी।।

'तुलसी' बुझाइ एक राम घनस्याम ही तें,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी।।

(i) काव्यांश के अनुसार विद्या प्राप्त करने में लगे लोगों का उद्देश्य इनमें से क्या है?

(क) ज्ञानवान बनना (ख) समाज में शिक्षा का बढ़ावा देना

(ग) जीवन यापन का साधन बनाना (घ) सामाजिक बुराइयाँ दूर करने में सक्षम बनना

(ii) 'चढ़तगिरि' के माध्यम से कवि क्या बताना चाहता है?

(क) लोग योग-साधना के लिए पहाड़ पर चढ़ते हैं।

(ख) लोग औषधियाँ खोजने के लिए पहाड़ पर जाते हैं।

(ग) लोग प्राकृतिक दृश्य का आनंद लेने पहाड़ पर जाते हैं।

(घ) लोग पहाड़ों पर भी आजीविका खोजने के लिए विवश हैं।

(iii) संसार के सभी लोग काम क्यों करते हैं?

(क) पेट भरने के लिए (ख) आनंद के लिए

(ग) खेल के लिए (घ) ईश्वर को प्रसन्न करने के लिए

(iv) पेट की आग को किस आग से भी भयानक बताया गया है?

(क) चूल्हे की आग से (ख) दावानल से

(ग) समुद्र में लगने वाली आग से (घ) कोयले में लगने वाली आग से

(v) तुलसीदास के राम किसके समान कृपालु है?

(क) बादलों के समान (ख) समुद्र के समान

(ग) जंगलों के समान (घ) नदी के समान

उत्तरमाला- (i) (ग), (ii) (घ), (iii) (क), (iv) (ग), (v) (क)

पद्यांश-2

खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि,
बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी।
जीविका बिहीन लोग सीद्यमान सोच बस,
कहँ एक एकन सों 'कहाँ जाई, का करी ?'
बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत,
साँकरे सबैं पै, राम! रावरें कृपा करी ।
दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु !
दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।

(i) समाज में चारों ओर किसका बोल-बाला है?

(क) प्रेम और भाईचारे का (ख) गरीबी और बेकारी

(ग) घृणा और लड़ाई का (घ) समाज सुधार का

(ii) दुखी लोग आपस में क्या बातें कर रहे हैं?

(क) श्रीराम ही कल्याण कर सकते हैं।

(ख) समाज में किसान भी भूखों मरने के लिए विवश हैं।

(ग) अब व्यवसाय बदल देना चाहिए।

(घ) समझ में नहीं आता कि ऐसे में हम कहाँ जाए और क्या करें।

(iii) वेद और पुराणों में क्या लिखा है?

(क) किसान को खेती का साधन मिलना चाहिए।

(ख) आजीविका के अभाव में लोग दुखी होते हैं।

(ग) बुरे समय में दान की महिमा बढ़ जाती है।

(घ) बुरे समय में ही भगवान की कृपा से संकट टल जाता है।

(iv) तत्कालीन समाज को इनमें से किसने अपने चंगुल में फँसा लिया था ?

(क) दरिद्रता रूपी रावण ने (ख) अशिक्षा ने

(ग) बेरोजगारी ने (घ) आडंबर ने

(v) समाज में चारों ओर पाप की ज्वाला जलने का क्या प्रभाव पड़ा?

(क) लोग जलने लगे थे।

(ख) चारों ओर लोग हाय-हाय कर रहे थे।

(ग) लोग एक-दूसरे का साथ दे रहे थे।

(घ) लोग मदद के लिए ईश्वर को पुकार रहे थे।

उत्तरमाला- (i) (ख), (ii) (घ), (iii) (घ), (iv)(क), (v) (ख)

पद्यांश-3

धूत कहौ, अवधूत कहौ, रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटीसों बेटा न ब्याहब, काहूकी जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो, लैबोको एक न दैबको दोऊ।।

(i) 'धूत कहौ, अवधूत कहौ.....' के माध्यम से कवि किन पर व्यंग्य करता है ?

(क) धर्म के ठेकेदारों पर।

(ख) जातीय आधार पर भेदभाव करने वालों पर।
(ग) संप्रदाय के आधार पर भेदभाव करने वालों पर।
(घ) उपर्युक्त सभी पर।

(ii) तुलसी का मानना था कि उन्हें किसी जाति का कहो, कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि-

(क) वे जाति विहीन व्यवस्था में विश्वास रखते थे।
(ख) उन्हें अपनी जाति ऊँची होने का विश्वास था।
(ग) उस समय समाज में जाति प्रथा प्रचलन में नहीं थी।
(घ) उन्हें किसी की बेटी से विवाह करके उसकी जाति का बिगाड़ नहीं करना है।

(iii) तुलसी अपने राम से अपना क्या संबंध बताते हैं?

(क) भगवान और भक्त का (ख) मालिक और नौकर का
(ग) राजा और प्रजा का (घ) इनमें से कोई नहीं

(iv) तुलसीदास जी अपना जीवन कैसे यापन कर सकते हैं ?

(क) मांग कर खाकर। (ख) मस्जिद में सोकर।
(ग) किसी से कोई लेन-देन न रखकर। (घ) उपर्युक्त सभी।

(v) 'लैबोको एकु न दैबको दोऊ' इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार। (ख) यमक अलंकार।
(ग) उपमा अलंकार। (घ) रूपक अलंकार।

उत्तरमाला- (i) (घ), (ii) (घ), (iii) (ख), (iv) (घ), (v) (क)

पद्यांश-4

उहाँ राम लछिमनहि निहारी। बोले बचन मनुज अनुसारी।।
अर्ध राति गई कपि नहिं आयउ। राम उठाइ अनुज उर लायउ।।
सकहु न दुखित देखि मोहि काऊ। बंधु सदा तव मृदुल सुभाऊ।।
मम हित लागि तजेहु पितु माता। सहेहु बिपिन हिम आतप बाता।।
सो अनुराग कहाँ अब भाई। उठहु न सुनि मम बच बिकलाई ।।
जौं जनतेउँ बन बंधु बिछोहू। पिता बचन मनतेउँ नहिं ओहू ।।

(i) प्रस्तुत पंक्तियों में किस भाषा का प्रयोग हुआ है?

(क) ब्रज (ख) हिंदी (ग) अवधी (घ) संस्कृत

(ii) शोकाकुल राम साधारण मनुष्य की तरह क्या करने लगे ?

(क) जोर जोर से पुकारने लगे (ख) दुश्मन को कोसने लगे

(ग) लक्ष्मण को गले से लगा लिया (घ) सीता-सीता पुकारने लगे

(iii) आधी रात्रि बीत जाने पर भी कौन नहीं आया ?

(क) भालू (ख) वानर (ग) हनुमान जी (घ) सुग्रीव जी

(iv) राम द्वारा लक्ष्मण का स्वभाव कैसा बताया जा रहा है?

(क) उग्र (ख) कठोर (ग) शांत एवं धैर्यवान (घ) कोमल एवं मृदु

(v) लक्ष्मण ने राम के लिए क्या किया?

(क) माता-पिता का त्याग

(ख) वन में नाना प्रकार के कष्टों का सहन

(ग) सदैव हनुमान का साथ देते रहे

(घ) 'क' एवं 'ख' दोनों

उत्तरमाला- (i) (ग), (ii) (ग), (iii) (ग), (iv) (घ), (v)(घ)

पद्यांश-5

सुत बिन नारि भवन परिवारा। होहिं जाहिं जग बारहिं बारा।।
अस बिचारि जिय जागहु ताता। मिलइ न जगत सहोदर भ्राता ।।
जथा पंख बिनु खग अति दीना। मनि बिनु फनि करिबर कर हीना।।
अस मम जिवन बंधु बिनु तोही। जौं जड़ दैव जिआवै मोही।।
जैहउँ अवध कवन मुहुँ लाई। नारि हेतु प्रिय भाइ गँवाई ।।
बरु अपजस सहतेउँ जग माहीं। नारि हानि बिसेष छति नाहीं।।

(i) इनमें से संसार में क्या बार-बार मिल सकता है?

(क) पुत्र-पुत्रियाँ (ख) धन-दौलत

(ग) कुटुम्ब परिवार (घ) 'क', 'ख' और 'ग' सभी

(ii) राम, लक्ष्मण से क्या सोचकर जागने के लिए कह रहे हैं?

(क) लक्ष्मण के बिना वे अयोध्या कैसे जाएँगे।

(ख) लक्ष्मण के बिना वे रावण को जीत नहीं पाएँगे।

(ग) संसार में सगा भाई दुबारा नहीं मिलता है।

(घ) अयोध्यावासी मेरे बारे में तरह-तरह की बातें करेंगे।

(iii) लक्ष्मण के बिना राम का जीवन कैसा हो गया है ?

(क) पंखविहीन पक्षी की भाँति (ख) मणि रहित सर्प के समान

(ग) बिना सूँड़ के हाथी के समान (घ) 'क', 'ख' और 'ग' तीनो

(iv) 'मनि बिनु फनि करिबर कर हीना' यहाँ 'करिबर' का अर्थ है?

(क) हाथी (ख) सूर्य की किरण

(ग) कलंक (घ) हाथ

(v) राम के लिए किसको हानि विशेष हानि नहीं है?

(क) धन-दौलत की

(ख) भ्राता लक्ष्मण की

(ग) पत्नी की

(घ) अपनी वानर सेना की

उत्तरमाला -(i) (घ), (ii) (ग), (iii) (घ), (iv) (क), (v) (ग)

पद्यांश-6

अब अपलोकु सोकु सुत तोरा। सहहि निठुर कठोर उर मोरा ।।
निज जननी के एक कुमारा। तात तासु तुम्ह प्रान अधारा।।
सौंपेसि मोहि तुम्हहि गहि पानी। सब बिधि सुखद परम हित जानी।।
उतरु काह दैहउँ तेहि जाई। उठि किन मोहि सिखावहु भाई ।।
बहु बिधि सोचत सोच बिमोचन। स्रवत सलिल राजिव दल लोचन ।।
उमा एक अखंड रघुराई। नर गति भगत कृपालु देखाई।।

सोरठा

प्रभु प्रलाप सुनि कान, बिकल भए बानर निकर।
आइ गयउ हनुमान, जिमि करुना महँ बीर रस।।

(1) लक्ष्मण के जीवित न होने पर राम के हृदय को क्या सहना पड़ता?

(क) अपयश (ख) लक्ष्मण के वियोग का शोक

(ग) लंका विजय की अधूरी खुशी (घ) 'क' एवं 'ख' दोनों

(II) राम के अनुसार लक्ष्मण किसके प्राणों के आधार थे ?

(क) खुद राम के (ख) माता सुमित्रा के

(ग) माता कौशल्या के (घ) राजा दशरथ के

(III)' राजीव दल लोचन' में कौन सा अलंकार है ?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) यमक अलंकार

(ग) रूपक अलंकार (घ) उपमा अलंकार

(IV) प्रभु का प्रलाप सुनकर कौन व्याकुल हो गया?

(क) वानरों का समूह (ख) फूलों का समूह

(ग) पक्षियों का समूह (घ) गायों का समूह

(v) किसके आने पर करुण रस में वीर रस का संचार हो गया ?

(क) जामवंत के (ख) हनुमान के

(ग) वैद्य सुषेण के (घ) सीता के

उत्तरमाला- (1) (घ), (ii) (ख), (iii) (ग), (iv) (क), (v) (ख)

विषय-वस्तु पर आधारित प्रश्नोत्तर-

1. पेट की भूख शांत करने के लिए लोग क्या क्या करते हैं?

उत्तर :-पेट की आग बुझाने के लिए लोग अनैतिक कार्य करते हैं।

2. तुलसीदास की दृष्टि में सांसारिक दुखों से निवृत्ति का सर्वोत्तम उपाय क्या है?

उत्तर :- पेट की आग बुझाने के लिए राम कृपा रूपी वर्षा का जल अनिवार्य है।इसके लिए अनैतिक कार्य करने की आवश्यकता नहीं है।

3. तुलसी के युग की समस्याओं का चित्रण कीजिए।

उत्तर :- तुलसी के युग में प्राकृतिक और प्रशासनिक वैषम्य के चलते उत्पन्न पीडा. दरिद्रजन के लिए रावण के समान दुखदायी हो गई है।

4. तुलसीदास की भक्ति का कौन सा स्वरूप प्रस्तुत कवित्तों में अभिव्यक्त हुआ है?

उत्तर :- तुलसीदास की भक्ति का दास्य भाव स्वरूप प्रस्तुत कवित्तों में अभिव्यक्त हुआ है।

5. तुलसीदास स्वयं को किसका गुलाम मानते हैं ?

उत्तर :- तुलसीदास स्वयं को अपने आराध्य राम का गुलाम मानते हैं । वे उन्हीं को अपना स्वामी मानते हैं ।

6. तुलसीदास अपना जीवन निर्वाह कैसे करते हैं ?

उत्तर :- तुलसीदास लिखते हैं 'मांगिकै खैबो, मसीत को सोईबो' । स्पष्ट है कि तुलसीदास ने भिक्षा मांगकर भोजन करने और मस्जिद में सोकर अपना जीवन-निर्वाह करने की बात कही है।

7. 'तव प्रताप उर राखि प्रभु में किसके प्रताप का उल्लेख किया गया है?'और क्यों ?

उत्तर :-इनमें भरत के प्रताप का उल्लेख किया गया है। हनुमानजी उनके प्रताप का स्मरण करते हुए अयोध्या के ऊपर से उड़ते हुए संजीवनी ले कर लंका की ओर चले जा रहे हैं।

8. राम विलाप में लक्ष्मण की कौन सी विशेषताएँ उद्घटित हुई हैं ?

उत्तर :- लक्ष्मण का भ्रातृ प्रेम. त्यागमय जीवन इन पँक्तियों के माध्यम से उदघाटित हुआ है।

9. लक्ष्मण के बिना राम की अवस्था का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया गया है?

उत्तर :-पंख बिना पक्षी, मणि बिना साँप, सूँड के बिना हाथी, इनके जैसा भाई के बिना राम की अवस्था है।

10. शोकग्रस्थ वातावरण मैं हनुमान के आगमन को किस प्रकार चित्रित किया गया है?

उत्तर :-करुण रस पर वीर रस का आविर्भाव हो, ठीक जैसे जब हनुमान जड़ी बूटी लेकर आ गए तो सभी प्रसन्न हो उठे।

11. नींद से जागकर कुंभकर्ण ने क्या पूछा?

उत्तर :-कुंभकर्ण ने पूछा -ऐसी कौन सी विपत्ती आई है कि आपको मुझे जगाना पडा? आपका मूँह इतना उदास क्यों है

12. 'बहुविधि सोचत सोचविमोचन' का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :-दीनजन को शोक से मुक्त करने वाले भगवान राम स्वयं बहुत प्रकार से सोच में पड़कर दुखी हो रहे हैं।

13. हनुमान का आगमन करुणा में वीर रस का आना किस प्रकार कहा जा सकता है?

उत्तर :-रुदन करते वानर समाज में हनुमान उत्साह का संचार करने वाले वीर रस के रूप में आ गए। करुणा की नदी हनुमान द्वारा संजीवनी ले आने पर मंगलमयी हो उठती है।

सौंदर्य-बोध-संबंधी प्रश्न-

"किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,
चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|
पेटको पढ़त,गुन गढ़त, चढ़त गिरि,
अटत गहन -गन अहन अखेट्की|
ऊंचे -नीचे करम ,धरम -अधरम करि,
पेट ही को पचत, बचत बेटा -बेटकी |
'तुलसी' बुझाई एक राम घनस्याम ही तें ,
आगि बड़वागितें बड़ी है आगि पेटकी|"

प्रश्न1:- कवितावली किस भाषा में लिखी गई है?

उत्तर :- ब्रज भाषा

प्रश्न2:- कवितावली में प्रयुक्त छंद एवं रस को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर :- इस पद में 31. 31 वर्णों का चार चरणों वाला समवर्णिक कवित्त छंद है जिसमें 16 एवं 15 वर्णों पर विराम होता है।

प्रश्न3:- कवित्त में प्रयुक्त अलंकारों को छांट कर लिखिए

1. अनुप्रास अंलकार-

किसबी, किसान-कुल ,बनिक, भिखारी ,भाट,

चाकर ,चपल नट ,चोर, चार ,चेटकी|

2. रूपक अलंकार- राम- घनश्याम

3. अतिशयोक्ति अलंकार- आगि बड़वागितें बड़ि है आग पेट की।

लघु उत्तरात्मक प्रश्न-

1. तुलसी के समय की आर्थिक दशा कैसी थी?

उत्तर :-आर्थिक दशा बहुत खराब थी। किसान व्यापारी, नट, सभी बेरोज़गार थे। अकाल, अतिवृष्टि, अनावृष्टि इन सबसे समाज ग्रस्त था, व्यापार बन्द था। अत: गरीबी से लोग पीड़ित थे। तथा वह रावण की तरह लोगों को कष्ट देती थी।

2. पेट की आगि से क्या तात्पर्य है? उसकी तुलना बड़वागि से क्यों की गई है?

उत्तर :-पेट की आगि से तात्पर्य भूख से है। इसकी तुलना समुद्र की आग से की गई है क्योंकि यह उसी की तरह भयानक एवं विनाशकारी होती है।

3. पेट की आग व्यक्ति को कौन कौन से कठिन और बुरे काम करने को विवश कर देती है?

उत्तर :- पेट की आग व्यक्ति को कठिन से कठिन काम जैसे पहाड़ों पर चढ़ने, वनों में फिरने, शिकार करने आदि काम करने को विवश कर देती है। पेट की आग ही व्यक्ति को ऊंचे-नीचे काम करने, अधर्म करने तथा बेटा-बेटी को बेचने जैसे बुरे काम करने को विवश कर देती है।

4. बड़वाग्नि क्या होती है ? पेट की आग को उससे भी भयानक क्यों बताया गया है ?

उत्तर :- 'बड़वाग्नि' समुद्र की आग को कहते हैं। पेट की आग को उससे भी अधिक भयानक इसलिए बताया गया है क्योंकि इसे बुझाना कोई सरल काम नहीं है। इसे तो प्रभु की कृपा दृष्टि से ही बुझाया जा सकता है, सामान्य जल से नहीं।

5. "धूत कहौ अवधूत कहो" छंद के आधार पर तुलसी की भक्ति भावना को स्पष्ट कीजिए ।

इस छंद में कवि की अटूट राम भक्ति का पता चलता है। उनका कहना है कि समाज उसे धूर्त, पाखण्डी, राजपूत, सन्यासी कुछ भी कहे, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसे जाति या नाम की चिंता नहीं है। वह राम का गुलाम है तथा उनके प्रति पूर्णत: समर्पित है।बिम्बात्मकता एवं चित्रात्मकता कविता की निजी विशेषता है।

6. क्या-क्या बोलकर राम ने लक्ष्मण को जगाने की कोशिश की?

अथवा

राम ने किस प्रकार विलाप किया?

उत्तर :-दुनिया में बाकी सारी चीजें एक नहीं तो दूसरी मिलती है, पर सहोदार नहीं मिलता। अपनी पत्नी के लिए भाई को दुविधा मैं डालने का अपवाद मैं सह नहीं सकता । मेरी इस विरह-वेदना देखकर तुम उठत क्यों नहीं ?

7. राम ने लक्ष्मण के किन गुणों का वर्णन किया है?

उत्तर :-राम ने लक्ष्मण के इन गुणों का वर्णन किया है-

लक्ष्मण राम से बहुत स्नेह करते हैं |

उन्होंने भाई के लिए अपने माता -पिता का भी त्याग कर दिया |

वे वन में वर्षा ,हिम, धूप आदि कष्टों को सहन कर रहे हैं |

उनका स्वभाव बहुत मृदुल है |वे भाई के दुःख को नहीं देख सकते |

8. राम के अनुसार कौन सी वस्तुओं की हानि बड़ी हानि नहीं है और क्यों ?

उत्तर :-राम के अनुसार धन ,पुत्र एवं नारी की हानि बड़ी हानि नहीं है क्योंकि ये सब खो जाने पर पुन: प्राप्त किये जा सकते हैं पर एक बार सगे भाई के खो जाने पर उसे पुन: प्राप्त नहीं किया जा सकता |

9. पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी की क्या दशा होती है काव्य प्रसंग में इनका उल्लेख क्यों किया गया है ?

उत्तर :- राम विलाप करते हुए अपनी भावी स्थिति का वर्णन कर रहे हैं कि जैसे पंख के बिना पक्षी और सूंड के बिना हाथी पीड़ित हो जाता है ,उनका अस्तित्व नगण्य हो जाता है वैसा ही असहनीय कष्ट राम को लक्ष्मण के न होने से होगा |

10. 'बोले बचन मनुज अनुसारी'- का तात्पर्य क्या है ?

उत्तर :- भाई के शोक में विगलित राम का विलाप धीरे- -धीरे प्रलाप में बदल जाता है, जिसमें लक्ष्मण के प्रति राम के अंतर में छिपे प्रेम के कई कोण सहसा अनावृत हो जाते हैं। यह प्रसंग ईश्वर राम में मानव सुलभ गुणों का समन्वय कर देता है| वे मनुष्य की भांति विचलित हो कर ऐसे वचन कहते हैं जो मानवीय प्रकृति को ही शोभा देते हैं |

दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न -

1. कवि नें लोगों की जीविका विहीनता का चित्रण कैसे किया है ?

उत्तर :- कवि ने लोगों की जीविका विहीनता का चित्रण करते हुए लिखा है कि ऐसा भयानक समय आया है, जिसमें किसान के पास खेती करने के साधन नहीं है। भिक्षुक (भिखारी) को न तो भिक्षा मिलती है और न ही दान दक्षिणा, व्यापारियों का व्यापार नहीं चलता और नौकरी करने वालों को कोई नौकरी नहीं मिलती। कहने का आशय यह है की समाज में किसान, मजदूर, व्यापारी, भिखारी, नौकर आदि सभी जीविका विहीन होने के कारण भुखमरी के शिकार हो रहे हैं ।

2. कवि ने रावण की तुलना किससे की है और क्यों ?

उत्तर :- कवि ने 'दारिद-दसानन दबाई दुनी' के माध्यम से रावण की तुलना दारिद्रय यानि दरिद्रता से की है। कवि का कहना है कि दरिद्रता रूपी रावण ने पूरी दुनिया को बुरी तरह दबा दिया है। उसने समूची दुनिया को अपने पंजों में दबोच लिया है। जिस तरह रावण ने अच्छाई, सुकर्म, सुंदरता, कोमलता आदि की प्रतीक सीता को अपने पंजों में दबोच लिया था, उसी प्रकार अच्छाई, परोपकार, कर्तव्यनिष्ठा, ईमानदारी, कोमलता आदि गुणों को दरिद्रता ने अपने पंजों में दबोच लिया है। इसी कारण बुरे कर्मों के प्रतीक रावण की तुलना दरिद्रता से की गई है।

3. आपके विचार से तुलसी को हाहाकार करने की नौबत क्यों आई ?

उत्तर :- जब दरिद्रता रूपी रावण ने समूचे विश्व को बुरी तरह जकड़ लिया है, तब उसके पापों की बढ़ती ज्वाला को देखकर लोगों के साथ साथ तुलसीदास भी हाहाकार करने लगे। हाहाकार करने की नौबत इसलिए आई, क्योंकि भुखमरी के कारण चारों तरफ त्राहि-त्राहि मची हुई है। चारों तरफ फैली पापों की ज्वाला देखकर ही तुलसी हाय-हाय करते हैं और अत्यंत कातर स्वर में भगवान श्रीराम से सहायता की प्रार्थना करते हैं।

4. तुलसीदास ने समाज पर अपना क्षोभ किन शब्दों में व्यक्त किया है ?

उत्तर :- तुलसीदास ने समाज के प्रति अपना क्षोभ व्यक्त करते हुए कहा है कि चाहे कोई मुझे धूर्त कहे, अवधूत / योगी कहे, राजपूत या जुलाहा कहे अर्थात किसी भी वर्ग या जाति से जोड़कर देखे, मुझे उसकी कोई फिक्र नहीं है, क्योंकि न तो मुझे किसी की बेटी से अपने बेटे का विवाह करना है और न ही उसकी जाति-बिरादरी में शामिल होकर उसे बिगाड़ना है। वास्तव में, तुलसीदास यहाँ जाति-पाँति पर आधारित सामाजिक व्यवस्था के पोषकों पर गहरा व्यंग्य करते हैं।

5. कवितावली में उदधृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है ।

उत्तर :- तुलसीदास मानवीय-संवेदना के कवि हैं। उन्होने युगीन चेतना का सुंदर समावेश काव्य में किया है। कवितावली में उद्धृत पदों के अंतर्गत यह सपष्ट हो जाता है कि तुलसी को अपने युग की समस्याओं की अच्छी समझ थी। वे संत होते हुए भी जनता की पीड़ा से वाकिफ थे । उन्हें समाज में व्याप्त गरीबी, बेकारी तथा भुखमरी का ज्ञान था। किसान, मजदूर, बनिक इत्यादि वर्गों की जीविका के ह्रास को कवि ने देखा था। भयंकर बेकारी तथा भूख का चित्र सामने आया है। 'पेट की आग' का असर सब प्रकार के लोगों पर था। काम न मिलने की विवशता में लोग ऊंच - नीच कर्म कर रहे थे तथा धर्म-अधर्म पर विशेष ध्यान नहीं दे रहे थे । इस प्रकार, तुलसीदास ने अपने युग की आर्थिक विषमता को ठीक से समझा था।

6. पेट की आग का शमन ईश्वर (राम) भक्ति का मेघ ही कर सकता है - तुलसी का यह काव्य सत्य का इस समय का भी युग-सत्य है? तर्क संगत उत्तर दीजिए ।

उत्तर :- तुलसीदास ने 'कवितावली' के एक पद में माना है कि 'पेट की आग' रामभक्ति रूपी मेघ ही बुझा सकते हैं। कवि का मानना है कि कर्म-फल ईश्वर के अधीन है। ईश्वर को 'पेट के आग' का शमन करने वाला बताना सिर्फ आस्था का विषय है। बिना कर्म के किसी फल की प्राप्ति संभव नहीं है। ईश्वर को पेट की आग बुझाने वाला मानना न तो तुलसी का युग-सत्य था और न ही आज का युग सत्य है। जो मनुष्य परिश्रम करता है, वह आगे बढ़ता है। वर्तमान आर्थिक युग में ईश्वर कृपा की जगह श्रम की महता को स्थान दिया जाता है। ईश्वर के भरोसे रह जाने वाला जीवन एवं जगत में पीछे छूट जाता है ।

7. बेकारी की समस्या तुलसी के जमाने में भी थी । उस बेकारी का वर्णन तुलसी के कवित के आधार पर कीजिए |

उत्तर :- तुलसी का युग भी बेकारी से आक्रांत था। अकाल के कारण चारों ओर हाहाकार मचा था। किसान को कृषि की सुविधा न थी, भिकारी को भीख भी नहीं मिलती थी। काम-धंधे सब चौपट हो चुके थे। कर्मचारीगण खाली थे। चारों ओर बेरोज़गारी का आलम था। पेट की खातिर लोग अच्छे-बुरे सारे काम करते थे। लाचारी इतनी बढ़ गई थी कि लोग अपनी संतान तक को बेचने के लिए विवश थे। दरिद्रता रूपी रावण ने सबको अपने वश में किया हुआ था।

8. तुलसी के संकलित कवितों में चित्रित तत्कालीन आर्थिक विषमताओं पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर :- गोस्वामी तुलसीदास भक्त कवि थे। उन्होने अपने युग की आर्थिक विषमता को करीब से देखा ही नहीं, बल्कि उसका अनुभव भी किया है। उस समय अकाल के कारण बेरोज़गारी और भुखमरी फैली थी। लोगों के पास काम नहीं था। लोग संतान तक को बेचने के लिए विवश थे। चारों और लाचारी विवशता ही दिखाई पड़ती थी। पेट की आग अधिक भयंकर थी, जिसके लिए लोग ऊंचे-नीचे कर्म कर रहे थे और धंधे में भी धर्म-अधर्म का ख्याल नहीं रख रहे थे। इस प्रकार तुसली का युग अनेक आर्थिक विषमताओं से घिरा था।

9. भ्रातृशोक में हुई राम की दशा को कवि ने प्रभु की नरलीला को अपेक्षा सच्ची मानवीय अनुभूति के रूप में रचा है । क्या आप इससे सहमत हैं ? तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए ।

उत्तर :- तुलसीदास 'रामचरितमानस' के 'लंका कांड' में भाई लक्ष्मण के मूर्छित होने पर राम को विलाप करते दिखाते हैं। यह विलाप केवल एक नरलीला नहीं रह जाती, जैसा कवि कथावाचक भगवान शंकर के मुख से कहलवाते हैं। शिवजी पार्वती को संबोधित करते हुए कहते हैं की हे पार्वती ! भगवान सृष्टि के निर्माता हैं, उन्हें विधि का ज्ञान है, किंतु उनका मानव की तरह दुखी होना सिर्फ नरलीला का अंग है। भक्त कवि तुलसी की यह प्रवृति भक्ति के लिहाज से सही है, किंतु कवि ने जिस मानवीय संवेदना को कविता में उकेरा है, वह मनुष्य की स्वाभाविक प्रक्रिया का हिस्सा है। राम अपने भाई के प्रेम में विह्वल होकर सभी प्रकार की सामाजिक मर्यादाओं के

बंधन को तोड़ते प्रतीत होते हैं। वे पिता की बात नहीं मानने तथा नारी की हानि को कमतर बताने वाली बातें भी करते हैं। राम द्वारा शोक की स्थिति में कही गई बातें सच्ची मानवीय अनुभूति की अभिव्यक्ति है। यह एक सामान्य मनुष्य की वेदना का प्रस्फुटन है, जिसे नरलीला कहना उचित नहीं है।

10. राम कौशल्या के पुत्र थे और लक्ष्मण सुमित्रा के। इस प्रकार वे परस्पर सहोदर (एक ही माँ के पेट से जन्मे) नहीं थे। फिर राम ने उन्हें लक्ष्य कर ऐसा क्यों कहा- "मिलइ न जगत सहोदर भ्राता? इस पर विचार कीजिए।

उत्तर :- राम मर्यादा पुरूष थे। उनके मानवीय संबंध किसी खास सूत्र से बंधे नहीं थे। वे कौशल्या के पुत्र अवश्य थे, किंतु उनके लिए सुमित्रा और कैकेयी कौशल्या से कम नहीं थीं। राम तथा लक्ष्मण का प्रेम सहोदर भाईयों से भी बढ़कर था। राम के बिना लक्ष्मण तथा लक्ष्मण के बिना राम की कल्पना करना कठिन है। इनका परस्पर प्रेम उन मानवीय सिद्धांतों तथा जैव-प्रक्रियाओं से पूरी तरह भिन्न है। सहोदर भाई कहना लाक्षणिकता है, इसका संदर्भ परस्पर भ्रात्रप्रेम से है। वैसे एक दंतकथा (पौराणिक) के अनुसार, दशरथ की तीन रानियों को पुत्र की कामना में लंबा समय लगा था। एक ऋषि द्वारा प्रदत्त फल के खाने से पुत्र प्राप्ति की कामना पूर्ण हुई थी। माना जाता है कि कौशल्या ने अपने फल का कुछ हिस्सा सुमित्रा को अलग से दिया। इसलिए सुमित्रा के दो पुत्र हुए - लक्ष्मण तथा शत्रुघन। हो सकता है कि तुलसीदास के मस्तिष्क में इस कथा की चेतना भी रही हो।

11. 'लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप' काव्याँश में लक्ष्मण के प्रति राम के प्रेम के कौन-कौन से पहलू अभिव्यक्त हुए हैं?

उत्तर :- 'लक्ष्मण-मूर्छा और राम का विलाप' कविता में लक्ष्मण के प्रति श्रीराम के प्रेम की हृदयस्पर्शी अभिव्यक्ति हुई है। यहाँ श्रीराम का मानवीय रूप दृष्टिगत होता है। वे साधारण मानव की तरह अधीर होते हैं तथा कहते हैं की उन्हें यदि ज्ञात होता की वन में भाई को विछोह होगा, तो वे पिता को दिए गए वचन का भी पालन नहीं करते। वे कहते हैं कि संसार में पुत्र, स्त्री आदि तो एकाधिक बार मिल जाते हैं, परंतु सहोदर भाई पुन: नहीं मिलता। वे कहते हैं कि लक्ष्मण के बिना वे कौन-सा मुंह लेकर अयोध्या जाएँगे? इन पंक्तियों में श्रीराम की आंतरिक व्यथा का मर्मस्पर्शी चित्रण हुआ है।

12. शोकग्रस्त माहोल में हनुमान के अवतरण को करूण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया है?

उत्तर :- मेघनाद के शक्तिशाली शक्तिबाण से मूर्छित लक्ष्मण का उपचार कठिन था। इसके लिए लंका के वैद्य सुषेण ने हिमालय में अवस्थित द्रोण पर्वत से संजीवनी बूटी लाने की बात कही।

राम के निर्देश पर हनुमान संजीवनी बूटी लाने आकाश मार्ग से हिमालय की और चल पड़े। अर्ध-रात्री तक हनुमान के नहीं लौटने से राम अत्यंत दु:खी हुए। उन्हें भाई का बिछोह संतप्त कर रहा था। क्षोक ग्रस्त राम जीवन के अतीत की घटनाओं पर विचार करते हुए, विलाप कर रहे थे। उनका विलाप उनकी सेना को दु:खी कर रहा था। सभी लोग अत्यंत दु:खी तथा शोकमग्न थे। चारों और करूण रस का प्रवाह हो रहा था। उसी समय हनुमान द्रोण पर्वत के साथ लंका पहुँच गए। उनके पहुँचते ही वानर और भालुओं, में हर्ष का संचार हो गया। करुण रस की जगह वीर रस का प्रवाह हुआ। हनुमान के इस कार्य से सेना में उत्साह तथा शक्ति का संचार हुआ। राम ने हनुमान का गले से लगा लिया ।

****

पाठ-9. रुबाइयाँ - फ़िराक गोरखपुरी

मूलभाव- फ़िराक की रुबाइयाँ उनकी रचना गुले नग्मा से उद्धृत है। रुबाई उर्दू और फ़ारसी का एक छद या लेखन शैली है। इसकी पहली दूसरी और चौथी पंक्ति में तुक मिलाया जाता है और तीसरी पंक्ति स्वतंत्र होती है। इन रुबाइयों में हिंदी का एक घरेलू रूप दिखता है।

इस रचना में कवि ने वात्सल्य वर्णन किया है। माँ अपने बच्चे को आँगन में खड़ी होकर अपने हाथों में प्यार से झुला रही है। वह उसे बार-बार हवा में उछाल देती है जिसके कारण बच्चा खिलखिलाकर हँस उठता है। वह उसे साफ पानी से नहलाती है तथा उसके उलझे हुए बालों में कंघी करती है।बच्चा भी उसे प्यार से देखता है जब वह उसे कपड़े पहनाती है। दीवाली के अवसर पर शाम होते ही पुते व सजे हुए घर सुंदर लगते है। चीनी मिट्टी के खिलौने बच्चों को खुश कर देते हैं। वह बच्चों के छोटे घर में दीपक जलाती है जिससे बच्चों के सुंदर चेहरों पर दमका आ जाती है। आसमान में चाँद देखकर बच्चा उसे लेने की जिद पकड़ लेता है। माँ उसे दर्पण में चाँद का प्रतिबिंब दिखाती है और उसे कहती है कि दर्पण में चांद उत्तर आया है। रक्षाबंधन एक मीठा बंधन है। रक्षाबंधन के कच्चे धागों पर बिजली के लच्छे हैं। सावन में रक्षाबंधन आता है। सावन का जो संबंध झीनी घटा से है, घटा का जो संबंध बिजली से है वही संबंध भाई का बहन से है।

बहुविकल्पीय प्रश्न-

पद्यांश-1

आँगन में लिए चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों पे झुलाती है उसे गोद भरी
रह-रह के हवा में जो लोका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।

(क) प्रस्तुत कविता के कवि का क्या नाम है?

(i) शमशेर बहादुर सिंह (iii) फिराक गोरखपुरी

(ii) गोस्वामी तुलसीदास (iv) कुँवर नारायण

(ख)' चांद के टुकडे' उपमान का प्रयोग किसके लिए किया गया है?

(i) माँ (ii) बच्चे (iii) परिवार (iv) उपरोक्त सभी

(ग) प्रस्तुत काव्यांश में किसका वर्णन किया गया है?

(i) माँ के वात्सल्य भाव का (ii) चाँद की सुंदरता का

(iii) मनोहर वातावरण का (iv) स्त्री के रूप का

(घ) शिशु के प्रति माँ का स्नेह कैसा होता है?

(i) असरल (ii) असहज (iii) नैसर्गिक (iv) कृत्रिम

(ड.) बच्चे की खिलखिलाहट भरी हँसी कहाँ गूंज उठती है?

(I)घर में (ii)वातावरण में (iii)आंचल में (iv) स्वप्न में

उत्तरमाला- (क) (iii) फिराक गोरखपुरी (ख) (ii) बच्चे

(ग) (i) मां के वात्सल्य भाव का (घ) (iii) नैसर्गिक (ङ) (ii) वातावरण में

पद्यांश-2

दीवाली की शाम घर पुते और सजे
चीनी के खिलौने जगमगाते लावे
वो रूपवती मुखड़े पै इक नर्म दमक
बच्चे के घरौंदे में जलाती है दीये
आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है।

(क) दीवाली के दिन घर की साज-सज्जा कैसी होती है?

(i) अस्त-व्यस्त (ii) साफ-सुंदर पुते हुए घर

(iii) बच्चों के खिलौने घर में फैले हुए (iv) अस्वच्छ व गंदी

(ख) दिवाली के दिन माता बच्चों को क्या ले कर देती है?

(i) कपड़े (ii) मिठाई

(iii) चीनी मिट्टी के खिलौने (iv) दीया

(ग) दिए जलाते समय बच्चे के लिए माता के चेहरे पर कैसा भाव आता है?

(i) कोमलता का (ii) शिथिलता का

(iii) स्तब्धता का (iv) असमंजस्यता का

(घ) दीवाली के उत्सव को आँखों के सामने साकार कौन कर देता है?

(i) मिट्टी के खिलौने (ii) दीपक जलाना

(iii) घर की साज-सज्जा (iv) ये सभी

(ङ) माँ बच्चे के घरौंदे में दिए किसलिए जलाती है?

(i) मनोरंजन हेतु (ii) परंपरा हेतु

(iii) आत्मीयता हेतु (iv) प्रकाश हेतु

उत्तरमाला- (क) (ii) साफ सुंदर पुते हुए घर (ख) (iii) चीनी मिट्टी के खिलौने

(ग) (i) कोमलता (घ) (iv) ये सभी (ड.) (i) मनोरंजन हेतु

पद्यांश-3

नहला के छलके-छलके निर्मल जल से
उलझे हुए गेसुओं में कंघी करके
किस प्यार से देखता है बच्चा मुँह को
जब घुटनियों में ले के है पिन्हाती कपड़े

(क) मां बच्चे को कैसे जल से नहलाती है?

(i) गर्म जल (ii) गंगाजल

(iii) निर्मल जल (iv) यमुना जल

(ख) बच्चे के बालों में कंघी कौन करता है?

(i) मां (ii) पिता (iii) दादा जी (iv) दादी जी

(ग) बच्चा कब अपनी मां को प्यार से देखता है?

(i) मां जब बच्चे को कपड़े पहनाती है (ii) मां जब नहलाती है

(iii) मां जब बच्चे को कंघी करती है (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(घ) छलके छलके शब्द में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास (ii) उपमा (iii) पुनरुक्ति प्रकाश (iv) यमक

(ड.) उपरोक्त पंक्तियों में किस छंद का प्रयोग किया गया है?

(i) दोहा (ii) चौपाई (iii) रूबाई (iv) कवित्त

उत्तरमाला- (क)(iii), (ख)(i), (ग)(i), (घ)(iii), (ड.)(iii)

पद्यांश-4

आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है
बालक तो हई चाँद पै ललचाया है
दर्पण उसे दे के कह रही है माँ
देख आईने में चाँद उतर आया है।

(क) बालक किस पर ललचाया है?

(i)खिलौने पर (ii) सूरज पर (iii) चांद पर (iv) आसमान पर

(ख) मां बच्चे को चांद कहां दिखाती है?

(i) आसमान में (ii) दर्पण में (iii) पानी में (iv) समुंद्र में

(ग) मां बच्चे को क्या देती है?

(i) खिलौने (ii) पैसे (iii) दर्पण (iv)मिठाई

(घ) उपरोक्त काव्यांश में किस रस का प्रयोग हुआ है?

(i) भक्ति रस (ii) वात्सल्य (iii) हास्य रस (iv) श्रृंगार रस

(ड.) बालक क्या कर रहा है?

(i) खेल रहा है (ii) पढ़ रहा है
(iii) सो रहा है (iv) ज़िद कर रहा है

उत्तरमाला- (क)(iii), (ख)(ii), (ग)(iii), (घ)(ii), (ड.)(iv)

वस्तुपरक प्रश्न उत्तर-

1. 'रूबाइयाँ' के आधार पर बताइए कि माँ द्वारा बच्चे को प्रसन्न करने के लिए क्या-क्या किया जा रहा है?

उत्तर-रुबाइयों के आधार पर माँ अपने बच्चे को प्रसन्न करने के लिए उसे गोद में लेकर आँगन में खड़ी होती है। कभी वह उसे अपने हाथो पर झुलाती है, तो कभी हवा में उछाल-उछाल कर प्रसन्न होती है। बच्चा भी माँ के हाथों के झूले में डोलता हुआ खिलखिलाकर हंस रहा है। माँ वात्सल्य भाव के साथ बच्चे को स्वच्छ जल से नहलाती है, उसके उलझे वालों में कंघी कर उसे सुंदर बनाती है। माँ बच्चे को अपने घुटनों में लेकर कपड़े पहनाती है। बच्चा भी माता की गोद में प्रसन्न रहता है। इस प्रकार माँ बच्चे को प्रसन्न करने के लिए अनेक यत्न करती है।

2. दीवाली की रात माँ के वात्सल्य का चित्रण कवि (शायर) ने किस प्रकार किया है?

उत्तर -दीवाली की रात माँ के वात्सल्य का चित्रण करते हुए शायर कहता है कि दीवाली की शाम

है। सभी घरों को स्वच्छ तथा पवित्र किया गया है और खूब सजा दिया गया है। माँ अपने बच्चे के लिए चीनी मिट्टी के खिलौने तथा जगमगाते लावे लाई है। वह रूपवती माँ जिसके चेहरे पर ममता, वात्सल्य और दुलार की एक कोमल-सी आभा है, अपने बच्चे के घरौंदे (मिट्टी का घर) को सजाती है तथा उसमें एक दीप जलाती है। यह सब देखकर बच्चा प्रसन्न हो जाता है और अपने बच्चे की प्रसन्नता से ही माँ का चेहरा गर्व से खिल उठता है।

3. बालक द्वारा चाँद माँगने की ज़िद पर माँ क्या करती है? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।

उत्तर -बालक द्वारा चाँद मांगने की ज़िद पर माँ उसे अन्य खिलौनों से बहलाने की कोशिश करती है, पर बालक चाँद का खिलौना ही चाहता है। जब वह ज़िद करके अपनी माँ से चाँद के खिलौने की माँग करता है तो घर के अंदर से आइना ले आती है और वह आइने में बच्चे को उसका चेहरा दिखाते हुई कहती है कि लो, अब चाँद धरती पर उतर आया है अर्थात् माँ बच्चे को आइना दिखाकर उसे चाँद के समान सुंदर बता रही है इस प्रकार इस पंक्ति में बच्चे के मुख व चाँदी की तुलना की गई है।

4.शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर क्या भाव व्यंजित करना चाहता है?

उत्तर- शायर राखी के लच्छे को बिजली की चमक की तरह कहकर भाई-बहन के पारस्परिक स्नेह के भाव को व्यक्त करना चाहता है। वह कहता है कि एक नन्हीं सी बच्ची जो बहुत प्यारी है और मीठी-मीठी बातें करती है, अपने भाई के हाथों पर राखी बाँधती है। उस बच्ची की उमंग और चंचलता देखते ही बनती है। उसके हाथ जो राखी है, उसके लच्छे से एक चमक निकल रही है, जो आकाश में चमकती बिजली की भंगिमा दे जाती है। दूसरी ओर कवि रक्षाबंधन के दिन आसमान में काले-काले बादलों की छटा को दर्शाता है। ये बादल उस नन्हीं बच्ची के हाथों में रखी राखी में बिजली की चमक पैदा करते हैं।
हैं।

5. टिप्पणी करें

(क) गोदी के चाँद और गगन के चाँद का रिश्ता।

(ख) 'रूबाइयाँ' कविता के आधार पर सावन की घटनाओं और रक्षाबंधन के पर्व पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर (क) माँ जब अपने बच्चे को गोद में लेती है, तब वह उसे चंद्रमा के समान सुंदर और आकर्षक लगता है। वह अपने बच्चे पर ममता लुटाती रहती है। माँ की गोदी में बच्चा जब चाँद को देखता है, तब वह उसे खिलौना मानकर अपने हाथों में लेने के लिए मचल उठता है। लेकिन एक माँ के लिए तो उसकी संतान ही चाँद है, इसलिए माँ ने बच्चे को आईना दिखाकर कहा कि

ले! देख चांद।

(ख) सावन मास की पूर्णिमा और रक्षाबंधन के त्योहार में अटूट संबंध है। प्रत्येक वर्ष इसी पावन दिवस पर यह पावन त्योहार मनाया जाता है। इस समय आकाश में सब तरफ़ घटाएँ छाई रहती हैं। उधर भाई-बहन के हृदय में भी एक-दूसरे के प्रति प्रेम की घटाएँ उमड़ती हैं। दोनों ही अर्थात् भाई और बहन प्रेम रस से पूर्ण रहते हैं।

7. फ़िराक की रूबाइयों में घरेलू वातावरण के मोहक चित्र हैं, इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

अथवा 'फ़िराक' की रूबाइयों में उभरे घरेलू जीवन के बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर फ़िराक की रूबाइयों में घरेलू जीवन के अत्यंत सुंदर चित्र उपस्थित है। जैसे-माँ अपने प्यारे शिशु को लेकर आँगन में खड़ी है, वह उसे झुलाती है, हँसाती है। इसमें बच्चे के नहलाने के दृश्य का सजीव चित्रांकन हुआ है। इसी प्रकार दीवाली व रक्षाबंधन जैसे पर्व को जिस प्रकार अभिव्यक्त किया गया है, वह आम आदमी से जुड़ा हुआ है। बच्चे का किसी वस्तु के लिए ज़िद करना और माँ द्वारा उसे बहलाना जैसे दृश्य आम परिवारों में भी दिखाई देते हैं।

****

पाठ-10. छोटा मेरा खेत और बगुलों के पंख - उमाशंकर जोशी

छोटा मेरा खेत :-

- छोटा मेरा खेत और बगुलों के पंख के कवि उमाशंकर जोशी है|कवि ने इसे गुजराती भाषा में लिखा है |
- खेती के रूपक द्वारा काव्य रचना प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है |
- काव्य की रचना बीज बोने से लेकर पौधे विकसित होने के विभिन्न चरणों से गुजरती है |
- कवि कर्म की फसल कालजयी और शास्तव होती है |
- कविता का आनंद कभी कम नहीं होता |
- छोटा मेरा खेत का रूपक - खेत- कागज़ का पन्ना, बीज- कल्पना, पल्लव- कल्पना के शब्द

बगुलों के पंख :-

- काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्रण है| यह इतनी सुंदर है कि कवि अपना सबकुछ भूलकर इसमें खो गया है|
- चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने काले बादलों पर उडती बगुलों की श्वेत पंकित का मनोहारी वर्णन किया है |

• बगुलों की श्वेत पंकित का दृश्य कवि के हृदय पर अमिट प्रभाव छोड़ता है |
• कवि आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है |
• कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है | कवि के अनुसार यह दृश्य उसकी आँखें चुराए लिए जा रहा है | वह उसे देखने के लोभ से बच नहीं पा रहा इसलिए उसे रोकने की गुहार लगाता है

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1.छोटा मेरा खेत कविता के कवि है-

(अ) उमाशंकर जोशी (ब) कुंवर नारायण (स) महादेवी वर्मा (द) प्रेमचंद

2.पल्लव पुष्पों से नामित हुआ विशेष पंक्ति में अलंकार है-

(अ) उपमा (ब) अनुप्रास (स) श्लेष (द) रूपक

3."छोटा मेरा खेत चौकोना " में कौनसा अलंकार है-

(अ) अनुप्रास (ब) उपमा (स) रूपक (द) यमक

4."लुटते रहने से जरा कम नहीं होती" पंक्ति में अलंकार है-

(अ) यमक (ब) उपमा (स) विरोधाभास (द) रूपक

5.कवि कागज में किसके बीज बोता है-

(अ) भाव (ब) भाषा (स) कल्पना (द) विचार

6.यहाँ कवि किस खेत की बात करता है-

(अ) मनरूपी खेत (ब) कागजरुपी खेत (स) प्याररूपी खेत (द) हरियालीरूपी

7.कवि अभिव्यक्ति रूपी बीज किस पर बोया था?

(अ) कागज के पृष्ठ पर (ब) खेत में (स) छत पर (द) आँगन में

8.कवि विचारों का बीज बोकर कौनसा रसायन डालता है ?

(अ) यूरिया का (ब) शब्दों का (स) कल्पना का (द) भावों का

9.आकाश में किसकी पंक्ति बंधी है ?

(अ) बतखों की (ब) बगुलों की (स) हंसों की (द) कबूतरों की

10.बगुलों के पंखों का रंग कैसा है ?

(अ) नीले (ब) सफ़ेद (स) मटमैला (द) काले

उत्तरमाला-

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
अ	ब	स	स	अ	ब	अ	स	ब	ब

सत्य/असत्य-

कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है। सत्य

कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है। सत्य

कवि को खेत कागज के पन्ने के समान लगता है। सत्य

कविता में खड़ी बोली का प्रयोग नहीं किया गया है | असत्य

संक्षिप्त उत्तर-

1.छोटा मेरा खेत किसका प्रतीक हैं ?

उत्तर- छोटा मेरा खेत कागज़ के पन्ने का प्रतीक है|

2.कवि खेत में कौन-सा बीज बोता है ?

उत्तर. : कवि खेत में कल्पना का बीज बोता है| वह अपनी कल्पना को अपने छोटे से खेत अर्थात कागज़ के पन्ने पर शब्दों के माध्यम से उतारता है |

3.कवि की कल्पना से कौन-से पल्लव अंकुरित हुए ?

उत्तर- कल्पना के बीज से शब्द के पल्लव अंकुरित हुए| वे शब्द मिलकर कविता की फसल तैयार करते हैं|

4.आँख चुराने का क्या अर्थ है ?

उत्तर- एक टक देखना, मंत्रमुग्ध करना अर्थात अपनी सुन्दरता से अभिभूत कर लेना|

5.कवि के अनुसार माया का अर्थ क्या होगा ?

उत्तर- माया या जादू

6.हौले-हौले में कौनसा अलंकार है ?

उत्तर- पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार|

7.बंधे बगुलों के पंख में अलंकार का नाम बताइए |

उत्तर- अनुप्रास अलंकार |

8.'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' में प्रयुक्त अलंकार का नाम बताइए |

उत्तर- मानवीकरण अलंकार |

अभिकथन -तर्क ;-

1.अभिकथन (A) - कवि के द्वारा खेत में किसी अंधड़ अर्थात भावनात्मक आँधी के प्रभाव से किसी क्षण एक बीज बोया जाता है।

कारण (R) - यह बीज रचना, विचार और अभिव्यक्ति का हो सकता है।

(क). अभिकथन (A) सही है जबकि कारण (R) गलत है ।
(ख). अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है ।
(ग). अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ). अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

2.अभिकथन (A)- कवि काले बादलों में उड़ते बगुलों को रोक कर रखने की गुहार लगाता है|
कारण (R) - उसकी सुंदरता का आनंद लेना चाहता है|
(क). अभिकथन (A) सही है जबकि कारण (R) गलत है ।
(ख). अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है ।
(ग). अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ). अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

3.अभिकथन (A) - कवि को कागज का पन्ना एक चौकोर खेत की तरह लगता है।
कारण (R) - जिसमें वह कविता नहीं लिखता है |
(क). अभिकथन (A) सही है जबकि कारण (R) गलत है ।
(ख). अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है ।
(ग). अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ). अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

4.अभिकथन (A) - यह कविता सुंदर दृश्य बिंबयुक्त कविता है |
कारण (R) - जो प्रकृति के सुंदर दृश्यों को हमारी आँखों के सामने सजीव रूप में प्रस्तुत करती है।
(क). अभिकथन (A) सही है जबकि कारण (R) गलत है ।
(ख). अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है ।
(ग). अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ). अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

5.अभिकथन (A)- कवि काले बादलों से भरे आकाश में पंक्ति बनाकर उड़ते सफेद बगुलों को देखता है।
कारण (R) - वे कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया के समान प्रतीत होते हैं।
(क). अभिकथन (A) सही है जबकि कारण (R) गलत है ।

(ख). अभिकथन (A) गलत है जबकि कारण (R) सही है ।
(ग). अभिकथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R, A की व्याख्या करता है।
(घ). अभिकथन(A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा R,A की व्याख्या नहीं करता है।

उत्तरमाला- 1. (ग), 2. (ग), 3. (क) , 4. (ग) , 5. (ग)

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

1. कवि ने कवि-कर्म की तुलना किससे की है और क्यों ?

उत्तर- कवि ने कवि-कर्म की तुलना खेत से की है। खेत में बीज खाद आदि के प्रयोग से विकसित होकर पौधा बन जाता है। इस तरह कवि भी भावनात्मक क्षण को कल्पना से विकसित करके रचना कर्म करता है।

2. कविता की रचना-प्रक्रिया समझाइए।

उत्तर- कविता की रचना-प्रक्रिया फसल उगाने की तरह होती है। सबसे पहले कवि के मन में भावनात्मक आवेग उमड़ता है। फिर वह भाव क्षण-विशेष में रूप ग्रहण कर लेता है। वह भाव कल्पना के सहारे विकसित होकर रचना बन जाती है तथा अनंत काल तक बनी रहती है।

3.कवि किस दृश्य पर मुग्ध हैं और क्यों?

उत्तर- कवि उस समय के दृश्य पर मुग्ध है जब आकाश में छाए काले बादलों के बीच सफेद बगुले पंक्ति बनाकर उड़ रहे हैं। कवि इसलिए मुग्ध है क्योंकि श्वेत बगुलों की कतारें बादलों के ऊपर तैरती साँझ की श्वेत काया की तरह प्रतीत हो रहे हैं।

4.आशय स्पष्ट कीजिए - रोपाई क्षण की कटाई अनंतता की

उत्तर- जब कभी भावनाओं का ज्वार कवि के मन में आता है तो एक क्षण में कविता की रचना शुरू हो जाती है और उसके रस का आनंद पाठकों को अनंतकाल तक मिलता है |

5.कवि के मन-प्राणों को किसने अपनी आकर्षक माया में बाँध लिया हैं और कैसे?

उत्तर- कवि के मन-प्राणों को आकाश में काले काले बादलों की छाया में उड़ते सफेद बगुलों की पंक्ति ने बाँध लिया है। पंक्तिबद्ध उड़ते श्वेत बगुलों के पंखों में उसकी आँखें अटककर रह गई हैं और वह चाहकर भी आँखें नहीं हटा पा रहा है।

6.'लुटते रहने से कम नहीं होती का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 'लुटते रहने से कम नहीं होती' का भाव यह है कि काव्य-रस का चाहे जितना भी आस्वादन किया जाए या बाँटा जाए, कम नहीं होता।

• लुटते रहने के बाद भी कम न होने के कारण विरोधाभास अलंकार है।

7.“उसे कोई तनिक रोक रक्खो |'- से कवि का क्या अभिप्राय है?

उत्तर- बगुलों की पंक्ति आकाश में दूर तक उड़ती जा रही है कवि की मंत्रमुग्ध आँखें उनका

पीछा कर रही हैं | कवि उन बगुलों को रोक कर रखने की गुहार लगा रहा है कि कहीं वे उसकी आँखें ही अपने साथ न ले जाएँ|

8.'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' से कवि का क्या तात्पर्य है?

उत्तर- चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तथा इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। कवि के अनुसार यह दृश्य उनकी आँखें चुराए लिए जा रहा है |मंत्र मुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है।

9. खेत अगर कागज है तो बीज क्षण का विचार, फिर पल्लव-पुष्प क्या हैं?

उत्तर- खेत अगर कागज है तो बीज क्षण का विचार, फिर पल्लव-पुष्प कविता हैं। यह भावरूपी कविता पत्तों व पुष्पों से लदकर झुक जाती है।

10. मूल विचार को क्षण का बीज' क्यों कहा गया है? उसका रूप-परिवर्तन किन रसायनों से होता है?

उत्तर- मूल विचार को क्षण का बीज' कहा गया है क्योंकि भावनात्मक आवेग के कारण अनेक विचार मन में चलते रहते हैं। उनमें कोई भाव समय के अनुकूल विचार बन जाता है तथा कल्पना के सहारे वह विकसित होता है। कल्पना व चिंतन के रसायनों से उसका रूप परिवर्तन होता है।

11. कविता की भाषा संबंधी दो विशेषताएँ लिखिए|

उत्तर- 1. चित्रात्मक भाषा

2. बोलचाल के शब्दों का प्रयोग - हौले -हौले, पाँती, कजरारे,साँझ

निबंधात्मक प्रश्न-

1.छोटे चौकोने खेत को कागज़ का पन्ना कहने में क्या अर्थ निहित है?

उत्तर:- कवि अपने कवि- कर्म को किसान के कृषि कर्म जैसा ही बताता है। कवि कहते हैं कि मैं भी एक प्रकार का किसान हूँ। किसान के खेत के समान उसके पास चौकोर कागज का पन्ना है। जैसे किसान जमीन पर बीज, खाद, जल डालता है उसी प्रकार मैं कागज़ पर शब्द, भाव बोता हूँ। उसके बाद अनाज, फल-फूल की तरह कविता पुष्पित पल्लवित होती है, इस प्रकार कवि काव्य-रचना रूपी खेती के लिए कागज़ के पन्ने को अपना चौकोना खेत कहते हैं।

2. रचना के संदर्भ में अंधड़ और बीज क्या हैं?

उत्तर:- रचना के संदर्भ में अँधड़ का आशय भावनात्मक आँधी से है जो किसी के मन में अचानक किसी वस्तु, व्यक्ति, भाव, स्थिति को देखकर उत्पन्न होती है जैसे क्रौंच पक्षी के करूण विलाप को सुनकर वाल्मीकि के मन में काव्य उत्पन्न हुआ। बीज का आशय उस रचना, विचार और अभिव्यक्ति से है, जब कोई विषय कवि के मन को कुरेदता है और वह अभिव्यक्ति के लिए व्याकुल हो उठता है।

3. रस का अक्षयपात्र से कवि ने रचनाकर्म की किन विशेषताओं की ओर इंगित किया है?

उत्तर:- कवि ने रचनाकर्म अर्थात् कविता को रस को अक्षयपात्र कहा है। काव्य का आनंद दिव्य व कालजयी होता है। कविता में निहित सौंदर्य, रस और भाव न तो कम होता है, न नष्ट होता है। ये हमेशा मीठे सोते की तरह तृप्ति, सुख एवं आनन्द प्रदान करता है।

4. व्याख्या करें -

शब्द के अंकुर फूटे,

पल्लव-पुष्पों से नमित हुआ विशेष।

उत्तर:- 'छोटा मेरा खेत' में खेती के रूपक द्वारा काव्य-रचना प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। जिस प्रकार धरती में बीज बोया जाता है और वह बीज विभिन्न रसायनों हवा, पानी, आदि को पीकर तथा विभिन्न चरणों से गुजरकर बड़ा होता है उसी प्रकार जब कवि को किसी भाव का बीज मिलता है तब कवि उसे आत्मसात करता है। उसके बाद बीज में से शब्दरुपी अंकुर फूटते है। उसमे विशेष भावों के पत्ते और फूल पनपते हैं तत्पश्चात कविता का जन्म होता है।

रोपाई क्षण की,

कटाई अनंतता की

लुटते रहने से ज़रा भी नहीं कम होती।

उत्तर:- साहित्यिक कृति से जो अलौकिक रस-धारा है, उसमें निहित सौंदर्य, रस और भाव न तो कम होता है, न नष्ट होता है। उसका बीज तो क्षणभर में बोया जाता है किन्तु उस रोपाई परिणाम यह होता है कि यह रस-धारा अनंत काल तक चलने वाली कटाई के रूप में आनंद देता रहता है, जितना लोग उसका सुख उठाते है उतना ही यह बढ़ता है।

5.**'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?**

उत्तर- कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

6. 'छोटा मेरा खेत' कविता का रूपक स्पष्ट कीजिए ?

उत्तर- इस कविता में कवि ने कवि-कर्म को कृषि के कार्य के समान बताया है। जिस तरह कृषक खेत में बीज बोता है, फिर वह बीज अंकुरित, पल्लवित होकर पौधा बनता है तथा फिर वह परिपक्व होकर जनता का पेट भरता है। उसी तरह भावनात्मक आँधी के कारण किसी क्षण एक रचना, विचार तथा अभिव्यक्ति का बीज बोया जाता है। यह विचार कल्पना का सहारा लेकर विकसित होता है तथा रचना का रूप ग्रहण कर लेता है। इस रचना के रस का आस्वादन अनंतकाल तक लिया जा सकता है। साहित्य का रस कभी समाप्त नहीं होता।

7.कविता लुटने पर भी क्यों नहीं मिटती या खत्म होती?

उत्तर- यहाँ लुटने से आशय बाँटने से है। कविता का आस्वादन अनेक पाठक करते हैं। इसके बावजूद यह खत्म नहीं होती क्योंकि कविता जितने अधिक लोगों तक पहुँचती है उतना ही अधिक उस पर चिंतन किया जाता है। वह शाश्वत हो जाती है।

8.'बीज गल गया निःशेष' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर- इसका अर्थ यह है कि जब तक कवि के मन में कविता का मूल भाव पूर्णतया समा नहीं जाता, तब तक वह निजता (अहं) से मुक्त नहीं हो सकता। कविता तभी सफल मानी जाती है, जब वह समग्र मानव जाति की भावना को व्यक्त करती है। कविता को सार्वजनिक बनाने के लिए कवि का अहं नष्ट होना आवश्यक है।

9.'बगुलों के पंख' कविता का प्रतिपाद्य बताइए।

उत्तर- यह सुंदर दृश्य कविता है। कवि आकाश में उड़ते हुए बगुलों की पंक्ति को देखकर तरह-तरह की कल्पनाएँ करता है। ये बगुले कजरारे बादलों के ऊपर तैरती साँझ की सफेद काया के समान लगते हैं। कवि को यह दृश्य अत्यंत सुंदर लगता है। वह इस दृश्य में अटककर रह जाता है। एक तरफ वह इस सौंदर्य से बचना चाहता है तथा दूसरी तरफ वह इसमें बँधकर रहना चाहता है।

****

गद्य खंड

पाठ-11 भक्तिन - महादेवी वर्मा

पाठ का सार- भक्तिन महादेवी जी का प्रसिद्ध संस्मरणात्मक रेखाचित्र है जो स्मृति की रेखाएँ में संकलित है | इसमें लेखिका ने अपनी सेविका भक्तिन के अतीत और वर्तमान का परिचय देते हुए व्यक्तित्व का चित्रण किया है | लेखिका के घर में काम करना शुरू करने से पहले भक्तिन ने संघर्षशील व स्वाभिमानी जीवन जिया और जीवन की राह बदलने का निर्णय लिया | उसके जीवन को महादेवी ने चार परिच्छेद (भागों) में बाँटा है|

प्रथम परिच्छेद में सौतेली माता के कहने पर उसके पिता द्वारा उसका कम उम्र में विवाह करने, विमाता द्वारा जायदाद पाने की लालसा के कारण लक्ष्मी के पिता के गंभीर रूप से बीमार होने पर भी सूचना नहीं देने व पिता की मृत्यु के बाद विमाता द्वारा लक्ष्मी से बुरा व्यवहार करने का वर्णन है |

दूसरे परिच्छेद में लक्ष्मी(भक्तिन) द्वारा तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसकी सास व जेठानियों द्वारा उसकी उपेक्षा करने, उसके पति व बड़े दामाद की मृत्यु का वर्णन है |

तीसरे परिच्छेद में पंचों द्वारा उसकी बेटी की जबरन शादी के बाद जमींदार द्वारा अपमानित

होने पर कमाई के उद्देश्य से उसके शहर आने का वर्णन है |
अंतिम परिच्छेद में गाँव से शहर आकर भक्तिन के महादेवी के घर रहकर काम करने, भक्तिन की सेवा-भावना, उसके गुण-दोषों और महादेवी से अटूट सम्बन्ध का वर्णन है |
भक्तिन लेखिका को ग्रामीण भोजन खिलाती है, परन्तु खुद शहर का रसगुल्ला नहीं खाती और महादेवी को देहाती बना देती है |
लेखिका द्वारा गुणों के साथ-साथ भक्तिन के दुर्गुणों के बारे में वर्णन किया गया है | जैसे - पूरा सच न बोलना, पैसे छिपाना,बात बदलकर कहना, जिद्दी होना आदि |
भक्तिन द्वारा शास्त्र की बातों को अपने अनुसार बदलने के सन्दर्भ में बाल मुँडवाने के उदाहरण का वर्णन |
भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्त्व की तुलना आँगन के अँधेरे-उजाले,गुलाब व आम से करना |
भक्तिन की सहज बुद्धि व कवियों के बारे में राय का वर्णन है |
लेखिका को कारागार भेजने की बात पर भक्तिन द्वारा साथ जाने की जिद्द करना और अधूरा पर मार्मिक अंत होना |

पठित गद्यांशों पर बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश - 1

सेवक-धर्म में हनुमान जी से स्पर्द्धा करने वाली भक्तिन किसी अंजना की पुत्री न होकर एक अनामधन्या गोपालिका की कन्या है-नाम है लछमिन अर्थात लक्ष्मी। पर जैसे मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है, वैसे ही लक्ष्मी की समृद्धि भक्तिन के कपाल की कुंचित रेखाओं में नहीं बँध सकी। वैसे तो जीवन में प्रायः सभी को अपने-अपने नाम का विरोधाभास लेकर जीना पड़ता है; पर भक्तिन बहुत समझदार है, क्योंकि वह अपना समृद्धि-सूचक नाम किसी को बताती नहीं। केवल जब नौकरी की खोज में आई थी, तब ईमानदारी का परिचय देने के लिए उसने शेष इतिवृत्त के साथ यह भी बता दिया; पर इस प्रार्थना के साथ कि मैं कभी नाम का उपयोग न करूँ | उपनाम रखने की प्रतिभा होती, तो मैं सबसे पहले उसका प्रयोग अपने ऊपर करती, इस तथ्य को वह देहातिन क्या जाने, इसी से जब मैंने कंठी माला देखकर उसका नया नामकरण किया तब वह भक्तिन जैसे कवित्वहीन नाम को पाकर भी गद्गद हो उठी।

प्र.(1) भक्तिन को भक्तिन नाम किसने और क्यों दिया ?

(क) माता-पिता ने, कंठी माला देखकर (ख) लेखिका ने, सुख-समृद्धि के लिए
(ग) लेखिका ने, कंठी माला देखकर (घ) माता-पिता ने, सुख-समृद्धि के लिए

प्र.(2) 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है |' - वाक्य किसके लिए कहा गया है ?

(क) महादेवी वर्मा के लिए (ख) भक्तिन के लिए

(ग) भक्तिन की माँ के लिए (घ) भक्तिन की सास के लिए

प्र.(3) इतिवृत्त का अर्थ है-

(क) वंशावली (ख) जीवन समाप्त होना

(ग) दूसरों के बारे में बताना (घ) जीवन का सम्पूर्ण परिचय

प्र.(4) 'कपाल कुंचित रेखाओं' का अर्थ है-

(क) खुशहाली होना (ख) भाग्य खराब होना

(ग) प्रगतिशील होना (घ) ललाट पर तिलक होना

प्र.(5) सेवा-भावना के कारण लेखिका ने भक्तिन की तुलना की है -

(क) कवियों से (ख) स्वयं से

(ग) लक्ष्मण से (घ) हनुमान जी से

उत्तरमाला- 1 क, 2 क, 3 घ, 4 ख, 5 घ

गद्यांश - 2

भक्तिन और मेरे बीच में सेवक- स्वामी का संबंध है, यह कहना कठिन है; क्योंकि ऐसा कोई स्वामी नहीं हो सकता, जो इच्छा होने पर भी सेवक को अपनी सेवा से हटा न सके और ऐसा कोई सेवक भी नहीं सुना गया, जो स्वामी के चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस दे। भक्तिन को नौकर कहना उतना ही असंगत है, जितना अपने घर में बारी-बारी से आने-जाने वाले अँधेरे-उजाले और आँगन में फूलने वाले गुलाब और आम को सेवक मानना। वे जिस प्रकार एक अस्तित्व रखते हैं, जिसे सार्थकता देने के लिए ही हमें सुख-दुख देते हैं, उसी प्रकार भक्तिन का स्वतंत्र व्यक्तित्व अपने विकास के परिचय के लिए ही मेरे जीवन को घेरे हुए हैं।

प्र.(1) भक्तिन व महादेवी के बीच क्या संबंध है ?

(क) सेवक-स्वामी (ख) आत्मीय सम्बन्ध

(ग) मालकिन-नौकरानी (घ) कोई सम्बन्ध नहीं

प्र.(2) महादेवी भक्तिन को अपनी सेविका क्यों नहीं मानती थी ?

(क) दिखावे के कारण (ख) दूसरी सेविका न मिलने के कारण

(ग) आपसी प्रेम व आत्मीय सम्बन्ध के कारण (घ) कम पैसा देने के कारण

प्र.(3) भक्तिन महादेवी द्वारा चले जाने का आदेश पाकर क्या करती ?

(क) अवज्ञा से हँस देती थी (ख) बुरा मानकर नाराज़ हो जाती थी

(ग) छोड़कर चली जाती थी (घ) महादेवी ऐसा आदेश देती ही नहीं थी

प्र.(4) लेखिका ने अँधेरे - उजाले , गुलाब , आम और भक्तिन में क्या समानता बताई है ?

(क) ये सभी अपना अस्तित्व रखते है

(ख) अस्तित्त्व की सार्थकता के लिए सुख-दुःख दोनों देते हैं
(ग) स्वतंत्र व्यक्तित्त्व का होना
(घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(5) भक्तिन के स्वतंत्र व्यक्तित्त्व को बताने के लिए लेखिका ने भक्तिन की निम्नलिखित में से किससे नहीं तुलना की है ?

(क) गुलाब (ख) कमल
(ग) अँधेरे-उजाले (घ) आम

उत्तरमाला- 1 ख, 2 ग, 3 क, 4 घ, 5 ख

गद्यांश - 3

मेरे परिचितों और साहित्यिक बंधुओं से भी भक्तिन विशेष परिचित है; पर उनके प्रति भक्तिन के सम्मान की मात्रा, मेरे प्रति उनके सम्मान की मात्रा पर निर्भर है और सद्भाव उनके प्रति मेरे सद्भाव से निश्चित होता है। इस संबंध में भक्तिन की सहजबुद्धि विस्मित कर देने वाली है।

वह किसी को आकार-प्रकार और वेश-भूषा से स्मरण करती है और किसी को नाम के अपभ्रंश द्वारा | कवि और कविता के संबंध में उसका ज्ञान बढ़ा है; पर आदर-भाव नहीं। किसी के लंबे बाल और अस्त-व्यस्त वेश-भूषा देखकर वह कह उठती है- 'का ओहू कवित्त लिखे जानत हैं और तुरंत ही उसकी अवज्ञा प्रकट हो जाती है - तब ऊ कुच्छौ करिहै-धरिहैं ना-बस गली-गली गाउत-बजाउत फिरिहैं।

प्र.(1) भक्तिन किनसे विशेष परिचित हैं ?

(क) अपने परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से
(ख) लेखिका के परिचितों व साहित्यिक बंधुओं से
(ग) केवल सभी कवियों से
(घ) उपर्युक्त सभी से

प्र.(2) आगंतुकों के प्रति सद्भाव का भक्तिन के लिए आधार था -

(क) आगंतुकों का सद्भाव (ख) भक्तिन का स्वयं का सद्भाव
(ग) लेखिका का सद्भाव (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(3) 'भक्तिन लेखिका के घर आने वाले परिचितों व साहित्यकारों को उतना ही सम्मान देती

थी जितना वे लेखिका को सम्मान देते थे'- इसमें भक्तिन के किस गुण का पता चलता है ?

(क) स्वाभिमानी (ख) सहज बुद्धि

(ग) सेवा-भावना (घ) कार्य-कुशल

प्र.(4) भक्तिन परिचितों व साहित्यिक बंधुओं को कैसे स्मरण करती थी ?

(क) आकार-प्रकार से (ख) वेशभूषा से

(ग) नाम के अपभ्रंश से (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(5) कवियों के संबंध में भक्तिन की मान्यता है कि -

(क) वे कुछ काम नहीं करते (ख) वे लालची होते हैं

(ग) वे पढ़े-लिखे होते हैं (घ) वे समझदार होते हैं

उत्तरमाला- 1 ख , 2 ग, 3 ख, 4 घ, 5 क

अन्य बहुविकल्पीय प्रश्न -

प्र.(1) भक्तिन को दिनभर कड़ी धूप में खड़ा रखने का दंड दिया -

(क) ज़मींदार ने (ख) विमाता ने (ग) सास ने (घ) जेठ ने

प्र.(2) भक्तिन पाठ में 'खोटे सिक्के की टकसाल' पंक्ति द्वारा किस पर व्यंग्य किया गया है?

(क) भक्तिन पर (ख) समाज पर (ग) लेखिका पर (घ) विमाता पर

प्र.(3) जब भक्तिन के पति की मृत्यु हुई, तब उसके पति की उम्र थी -

(क) 29 वर्ष (ख) 30 वर्ष (ग) 35 वर्ष (घ) 36 वर्ष

प्र.(4) भक्तिन लेखिका को निम्नलिखित में से कौन-सा देहाती भोजन नहीं खिलाती थी ?

(क) ज्वार के हरे दानों की खिचड़ी (ख) रसगुल्ला

(ग) सफ़ेद महुए की लपसी (घ) मकई का दलिया

प्र.(5) भक्तिन द्वारा शास्त्र का प्रश्न अपनी सुविधा से सुलझाने के लिए लेखिका ने उदाहरण दिया है-

(क) भक्तिन के पूजा-पाठ का (ख) भक्तिन की सेवा भावना का

(ग) भक्तिन के चूड़ाकर्म का (घ) भक्तिन के पढ़ने का

उत्तरमाला- 1 क, 2 ख, 3 घ, 4 ख, 5 ग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

प्र.(1) भक्तिन कौन थी ?

उत्तर- भक्तिन साधारण ग्वालिन की पुत्री और महादेवी की सेविका थी |

प्र.(2)भक्तिन की माँ को अनामधन्या क्यों कहा गया है ?

उत्तर- उसकी माँ साधारण ग्वालिन थी, जिसके नाम की जानकारी नहीं थी | इसलिए उसकी माँ

को अनामधन्या कहा गया है |

प्र.(3) सेवा धर्म की किस विशेषता के कारण भक्तिन की तुलना हनुमान से की गयी है ?

उत्तर- हनुमान जी के समान सेवा-भावना, त्याग व समर्पण के कारण भक्तिन की तुलना हनुमान से की गयी है |

प्र.(4) 'मेरे नाम की विशालता मेरे लिए दुर्वह है'- वाक्य किस सन्दर्भ में और क्यों कहा गया है ?

उत्तर- यह वाक्य महादेवी वर्मा ने स्वयं के लिए कहा है क्योंकि उनके नाम के अनुसार वे अपने व्यक्तित्व को महान व उदार नहीं मानती थी |

प्र.(5) 'कपाल कुंचित रेखाओं' का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- 'कपाल कुंचित रेखाओं' का आशय है - भाग्य का खराब होना, जीवन में सुख-समृद्धि न होना |

प्र.(6) भक्तिन को समझदार क्यों कहा गया है ?

उत्तर- भक्तिन को समझदार कहा है क्योंकि उसने अपना समृद्धि-सूचक नाम (लक्ष्मी) महादेवी को बताया परन्तु इस प्रार्थना के साथ कि वह उस नाम से उसे न पुकारे |

प्र.(7) भक्तिन नौकरी की खोज में क्यों आई ?

उत्तर- पारिवारिक झगड़े से उत्पन्न गरीबी और लगान न दे पाने के कारण जमींदार से अपमानित होने के कारण वह नौकरी की खोज में आई |

प्र.(8) इतिवृत्त किसे कहते है ? भक्तिन ने अपना इतिवृत्त कब और क्यों बताया ?

उत्तर- व्यक्ति के जीवन का पूर्ण परिचय व ब्यौरा इतिवृत्त कहलाता है | भक्तिन ने अपना इतिवृत्त नौकरी की तलाश में महादेवी के पास आने पर और नौकरी पाने के लिए बताया |

प्र.(9) इतिवृत सुनाने के बाद भक्तिन ने क्या प्रार्थना की ?

उत्तर-इतिवृत सुनाने के बाद भक्तिन ने यह प्रार्थना की कि वह उसे वास्तविक नाम से न पुकारे

प्र.(10) 'खोटे सिक्कों की टकसाल' किसे कहा गया है ? इसमें क्या व्यंग्य है ?

उत्तर-'खोटे सिक्कों की टकसाल' भक्तिन के लिए कहा है परन्तु इसमें समाज पर व्यंग्य किया गया है जो लड़कियों को खोटा सिक्का मानता है और उनकी माता को अपमानित करता है |

प्र.(11) 'सारी चुगली-चबाई की परिणति पत्नी-प्रेम को बढ़ाकर ही होती थी' - इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- इसका आशय है कि भक्तिन की सास व जेठानियाँ भक्तिन के पति से उसकी चुगली करती थीं लेकिन चुगलियों का उलटा प्रभाव होता और उसका पति उससे अधिक प्रेम करता |

प्र.(12) भक्तिन के जेठ अपनी पत्नियों के साथ कैसा व्यवहार करते थे ?

उत्तर- भक्तिन के जेठ अपनी पत्नियों को बात-बात पर धमाधम पीटा-कूटा करते थे |

प्र.(13) भक्तिन का पति उसके किन गुणों के कारण उससे प्रेम करता था ?

उत्तर- भक्तिन का पति भक्तिन के मधुर स्वभाव, संस्कार, परिश्रम और कार्य-कुशलता के कारण उससे अधिक प्रेम करता था |

प्र.(14) 'नरो वा कुंजरो वा' का प्रयोग किसके लिए और क्यों किया गया है ?

उत्तर- 'नरो वा कुंजरो वा' का प्रयोग भक्तिन के लिए किया गया है क्योंकि वह पूरा सच कहने में विश्वास नहीं रखती थी |

प्र.(15) भक्तिन किस बात में अपनी हीनता मानती है ?

उत्तर - भक्तिन उत्तर-पुस्तकों और चित्र बनाने में लेखिका की मदद न कर पाने को अपनी हीनता मानती थी |

प्र.(16) भक्तिन तंग पहाड़ी रास्तों पर महादेवी के आगे क्यों चलती थी ?

उत्तर- भक्तिन पहाड़ों के खतरों का खुद सामना कर महादेवी की रक्षा करने के लिए आगे चलती थी |

प्र.(17) भक्तिन व महादेवी के बीच क्या संबंध है ?

उत्तर- लेखिका ने भक्तिन से अपना आत्मीय सम्बन्ध माना | भक्तिन स्वयं को लेखिका की संरक्षिका मानती थी |

प्र.(18) महादेवी भक्तिन को अपनी सेविका क्यों नहीं मानती थी ?

उत्तर- लेखिका उसे सेविका नहीं मानती थी क्योंकि वह चाहकर उसे हटा नहीं सकती थी और भक्तिन उसे छोड़कर जाने वाली नहीं थी |

प्र.(19) भक्तिन महादेवी द्वारा चले जाने का आदेश पाकर क्या करती ?

उत्तर- भक्तिन महादेवी द्वारा चले जाने का आदेश पाकर अवज्ञा से हँस देती थी (अर्थात हँसकर टाल देती थी) |

प्र.(20) लेखिका ने अँधेरे - उजाले , गुलाब , आम और भक्तिन में क्या समानता बताई है ?

उत्तर- लेखिका ने भक्तिन की तुलना आँगन में आने वाले अँधरे-उजाले,गुलाब व आम से की है क्योंकि इनके समान उसका स्वतंत्र व्यक्तित्त्व है और वह भी सुख-दुःख दोनों देती है |

प्र.(21) लेखिका ने भक्तिन की बुद्धि को विस्मित कर देने वाली क्यों कहा ?

उत्तर- लेखिका ने भक्तिन की बद्धि को विस्मित कर देने वाली इसलिए कहा क्योंकि लेखिका के बिना कहे लेखिका के घर आने वाले परिचितों व साहित्यकारों को वह उतना ही सम्मान देती थी जितना वे लेखिका को देते थे (अर्थात लेखिका को अधिक सम्मान देने वाले को वह भी अधिक सम्मान देती थी और कम सम्मान देने वाले को कम)

प्र.(22) कवियों के सम्बन्ध में भक्तिन की क्या मान्यता है ?

उत्तर- कवियों के सम्बन्ध में भक्तिन की मान्यता है कि उनके पास कोई काम नहीं होता और वे केवल गली-गली गाते बजाते फिरते हैं |

लघूत्तरात्मक प्रश्न /निबंधात्मक प्रश्न-

प्र.(1) भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तर- भक्तिन का वास्तविक नाम लक्ष्मी था जिसका अर्थ है- धन की देवी व सुख-समृद्धि से भरपूर | भक्तिन को यह नाम उसके माता-पिता ने यह सोचकर दिया होगा कि उसका जीवन सुख-समृद्धि से भरा रहे | भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से इसलिए छुपाती थी क्योंकि नाम के अनुसार उसके जीवन में सुख-समृद्धि नहीं थी और उसका जीवन गरीबी व दुखों से भरा था और लोग उसका उपहास न करें |

प्र.(2) तीन कन्या-रत्न पैदा करने पर भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी | ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चलती है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है | क्या इससे आप सहमत हैं ?

उत्तर- इस कहानी में निम्नलिखित घटनाओं से पता चलता है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है-
विमाता (सौतेली माता)- विमाता के कहने पर उसकी जल्दी शादी कर दी गई | विमाता ने उसके पिता की मृत्यु के बाद जाने पर उसे अपमानित किया व बुरा व्यवहार किया
सास- तीन बेटियों को जन्म देने के कारण उसकी सास उसे उचित सम्मान नहीं देती थी |
जिठानियाँ- जिठानियाँ व उनके लड़के कोई काम नहीं करते बल्कि घर और खेत का काम लक्ष्मी और उसकी बेटियाँ करती थीं | फिर भी लक्ष्मी और उसकी बेटियों को पौष्टिक भोजन नहीं मिलता था |

प्र.(3) भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है |कैसे ?

उत्तर- एक दिन भक्तिन को घर में न पाकर उसके जेठ के बड़े लड़के का साला भक्तिन की बेटी की कोठरी में घुस गया, तो भक्तिन की बेटी ने उसे अच्छी तरह पीटा | जेठ के बड़े लड़के व उसके समर्थकों ने पंचों को बुलाया | तब उस युवक ने झूठ बोला कि इस लड़की ने मुझे बुलाया था | पंचायत ने उन्हें पति-पत्नी की तरह रहने का फैसला सुनाया और भक्तिन की बेटी की

बात न सुनी | ऐसा हमारे समाज में सदियों से चला आ रहा है | इससे स्पष्ट है कि सामाजिक परंपरा की आड़ में विवाह के सन्दर्भ में स्त्री के मानवाधिकार व स्वतंत्रता को कुचला जा रहा है|

प्र.(4)"भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं" लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा ?

उत्तर- भक्तिन अच्छी है पर उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं, लेखिका ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि- वह पूरा सच नहीं बोलती थी बल्कि झूठ बोल जाती थी | लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसों को भण्डार घर की मटकी में छिपाकर रखती थी | इस पर संकेत करने पर वह तर्क-वितर्क करती थी | लेखिका के क्रोध से बचने के लिए बातों को बदलकर कह देती थी | वह दूसरों को अपने अनुसार बदल लेती थी परन्तु स्वयं बिलकुल भी नहीं बदलती थी|

प्र.(5) भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है ?

उत्तर- शास्त्र का प्रश्न भक्तिन अपनी सुविधा के अनुसार सुलझा लेती थी | वह प्रत्येक गुरूवार को नाई को बुलाकर उसके उस्तरे पर गंगाजल छिड़ककर अपने बाल मुँडवाती थी | लेखिका द्वारा इस बारे में पूछने पर वह (भक्तिन) कहती थी की शास्त्रों में लिखा है- 'तीरथ गए मुँडाए सिद्ध |' भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का यह उदाहरण लेखिका ने दिया है |

प्र.(6) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई ?

उत्तर- भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती हो गई थी क्योंकि-

भक्तिन लेखिका को ग्रामीण भोजन खिलाती थी जैसे -ज्वार के भुट्टे के हरे दानों की खिचड़ी,सफ़ेद महुए की लपसी आदि | वह उसे रात का बासी भोजन खिला देती थी, यह कहकर कि मकई का रात को बना दलिया सवेरे मट्ठे से अच्छा लगता है और तिल के पुए ठंडे अच्छे लगते हैं | लेखिका की साड़ी को इस तरह तह करती थी कि वह सलवटों से भर जाती थी |

प्र.(7) लेखिका और भक्तिन के नामों में क्या विरोधाभास है ?

उत्तर- दोनों का ही नाम के अनुसार जीवन नहीं था | महादेवी के समान भक्तिन के नाम में भी विरोधाभास था -

लक्ष्मी (अर्थ - सुख,धन से भरपूर) - वास्तव में गरीब व संघर्षपूर्ण जीवन

महादेवी (अर्थ - महान देवी) - वास्तव में वे अपने जीवन और व्यक्तित्व को महान व उदार नहीं मानती थी |

प्र.(8) भक्तिन की विशेषताएँ लिखिए |

उत्तर- भक्तिन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं -

वह मेहनती व स्वाभिमानी महिला थी |

उसमें संघर्षशीलता का गुण था |

उसमें सेवा-भावना, त्याग और समर्पण की भावना थी |

वह अन्याय की विरोधी थी |

अन्य गुण - स्नेह व सहानुभूति वाली, सहज बुद्धि वाली, महादेवी के प्रति आदर भाव ।

****

पाठ-12 बाज़ार दर्शन - जैनेन्द्र कुमार

पाठ का सार- इस निबन्ध में जैनेन्द्र कुमार अपने परिचितों, मित्रों से जुड़े अनुभव बताते हुए समझाते हैं कि बाज़ार की जादुई ताकत कैसे हमें अपना गुलाम बना लेती है | अगर हम अपनी आवश्यकताओं को ठीक-ठीक समझकर बाज़ार का उपयोग करें, तो उसका लाभ उठा सकते हैं | लेकिन अगर बिना ज़रूरत तय किए बाज़ार गए तो उसकी चमक-दमक में फँस जाएँगे और वह असंतोष, तृष्णा और ईर्ष्या से हमें घायल कर सदा के लिए बेकार बना सकता है | इसमें लेखक ने अर्थशास्त्र को अनीतिशास्त्र भी कहा है |

पर्चेज़िंग पावर का अर्थ है बिना आवश्यकता के पैसे के अनुसार सामान खरीदने की ताकत या क्षमता का दिखावा जिसमें मनुष्य गैर-ज़रूरी चीज़ें खरीद लेता है | लेखक के मित्र मानते हैं कि बाज़ार शैतान का जाल है जिसमें चीजें इस प्रकार सजाकर रखी होती हैं कि मनुष्य उसमें खुद फँस जाता है | बाज़ार हमें अपनी ओर आकर्षित कर हमें आमंत्रित करता है कि अधिक से अधिक सामान खरीदो और खरीदो नहीं तो अधिक से अधिक सामान देख लो |

बाज़ार के आमंत्रण में आग्रह नहीं होता और वह चुपचाप हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेता है | ऊँचे बाजार में सजी-धजी चीजें चुपचाप हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं | इससे मनुष्य के मन में एक चाह जगती है जिससे अभाव उत्पन्न होता है और मनुष्य को लगता है कि उसके पास बहुत कम है तथा बाज़ार में अधिक है |

लेखक ने बाज़ार के जादू को रूप का जादू कहा है क्योंकि जब हम बाज़ार में चीज़ों को देखते हैं तो हम उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं और उन्हें खरीद लेते हैं |

जब मन खाली हो और जेब खाली या भरी हो तो बाज़ार का जादू चलता है |

जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो मनुष्य को लगता है कि यह भी ले लूँ, वह भी ले लूँ | वह

उनकी ओर चुम्बक की तरह खिंचा चला जाता है | सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाले मालूम होते हैं | जब बाज़ार का जादू उतरता है तो फैंसी चीज़ों की बहुतायत आराम में खलल (बाधा) डालने वाली महसूस होती है |

बाज़ार के जादू से बचने का सीधा-सा उपाय है कि जब भी बाज़ार जाओ तो मन खाली न हो बल्कि भरा हो | मन लक्ष्य से भरा हो तो बाज़ार का जादू नहीं चलता | आवश्यकता के समय काम आना ही बाज़ार की असली सार्थकता है |

लेखक का मानना है कि मन पर नियंत्रण रखकर उसे मनमानेपन की छूट मत दो पर उसे जबरदस्ती बंद भी मत करो | लेखक ने भगत जी का उदाहरण देकर कहा है कि उनका चूरन प्रसिद्ध है लेकिन जब छः आने (24 पैसे) वो कमा लेते थे तो बाकी चूरन बच्चों को मुफ़्त दे देते थे |

भगत जी की विशेषताएँ - उनका मन पर नियंत्रण था और वे संयमी थे | उनका मन अडिग रहता था | बाज़ार जाने पर उनका मन भरा होता था | पैसे की व्यंग्य-शक्ति का उन पर कोई असर नहीं होता था | उनकी आवश्यकताएँ तय होती थीं | उनकी आँखें खुली और मन भरा था यानी वे बाज़ार में सारी चीजें देखकर खुश होते हैं परन्तु खरीदते वही हैं जो ज़रूरी हो |

भगत जी बाज़ार में सजी सुंदर चीजों को देखकर खुश होते हैं | उनकी आँखें खुली और तुष्ट थीं | भगत जी चूरन बनाने के लिए जीरा और काला नमक लेने के लिए चाँदनी चौक का सारा बाज़ार पार कर एक पंसारी की दुकान तक जाते थे और सहज भाव से वो चीजें खरीद लेते थे लेकिन चाँदनी चौक की चाँदनी का उन पर कोई असर नहीं होता था |

लेखक के अनुसार बाज़ार को सार्थकता और सच्चा लाभ भगत जी जैसे लोग ही दे सकते हैं जिनका मन भरा हो यानी आवश्यकताएँ तय हो और जो ज़रूरत की चीजें ही बाज़ार से खरीदते हों |

जिन मनुष्यों की आवश्यकताएँ तय नहीं होती वे पर्चेज़िंग पावर के गर्व से बाज़ार में पैसे की विनाशक शक्ति, व्यंग्य-शक्ति से होड़ उत्पन्न कर उसका अहित करते हैं | ये लोग बाज़ारुपन को बढ़ाते हैं |

बाज़ारुपन - ग्राहक व दुकानदार के बीच कपट का बढ़ना और सद्भाव का घटना बाज़ारुपन है जिसमें दोनों एक-दूसरे को ठगने की कोशिश करते हैं और एक को दूसरे के नुकसान में अपना लाभ दिखाई देता है |

अंत में लेखक ने अर्थशास्त्र को अनितिशास्त्र और मायावी शास्त्र कहा है क्योंकि अर्थशास्त्र कपट और शोषण को बढ़ावा देता है |

पठित गद्यांशों पर बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश - 1

बाज़ार आमंत्रित करता है कि आओ मुझे लूटो और लूटो | सब भूल जाओ, मुझे देखो। मेरा रूप और किसके लिए है? मैं तुम्हारे लिए हूँ। नहीं कुछ चाहते हो, तो भी देखने में क्या हरज़ है। अजी आओ भी। इस आमंत्रण में यह खूबी है कि आग्रह तिरस्कार जगाता है। लेकिन ऊँचे बाज़ार का आमंत्रण मूक होता है और उससे एकदम चाह जगती है। चाह मतलब अभाव। चौक बाजार में खड़े होकर आदमी को लगने लगता है कि उसके अपने पास काफी नहीं है और चाहिए, और चाहिए। मेरे यहाँ कितना परिमित है. और यहाँ कितना अतुलित है ओह!

प्र.(1) बाज़ार के आमंत्रण का स्वरुप क्या है ?

(क) बाज़ार अपना स्वरुप दिखाना चाहता है

(ख) बाज़ार तिरस्कार करना चाहता है

(ग) बाज़ार नए उत्पादों से हमें अवगत करवाना चाहता है

(घ) बाज़ार अधिक से अधिक चीज़ें खरीदने के लिए आमंत्रित करता है

प्र.(2)' मैं तुम्हारे लिए हूँ' पंक्ति में 'मैं' का प्रयोग हुआ है -

(क) लेखक के लिए (ख) बाज़ार के लिए

(ग) ग्राहक के लिए (घ) एक दुकानदार के लिए

प्र.(3) ऊँचे बाज़ार के आमन्त्रण का मनुष्य पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

(क) वह बाज़ार नहीं जाता (ख) वह तुरंत बाज़ार से लौट आता है

(ग) उसे अधिक चीज़ें खरीदने की इच्छा हो जाती है (घ) उसका मन ख़ुशी से झूम उठता है

प्र.(4) मूक आमंत्रण कौनसा कार्य करता है ?

(क) ग्राहक में चाह जगाने का

(ख) आपसी प्रेम बढ़ाने का

(ग) ग्राहक व दुकानदार में वैमनस्य पैदा करने का

(घ) ग्राहक के मन में ख़ुशी उत्पन्न करने का

प्र.(5) बाज़ार के आमंत्रण की क्या विशेषता है ?

(क) यह हमें अपनी ओर आकर्षित नहीं करता

(ख) यह हमें ज़रूरत की चीज़ें खरीदने के लिए प्रेरित करता है

(ग) यह हमें चुपचाप अपनी ओर आकर्षित कर लेता है

(घ) यह हमें नए उत्पादों से अवगत करवाता है

उत्तरमाला - 1 घ, 2 ख, 3 ग, 4 क, 5 घ

गद्यांश - 2

बाज़ार में एक जादू है। वह जादू आँख की राह काम करता है। वह रूप का जादू है पर जैसे चुंबक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, और मन खाली हो, ऐसी हालत में जादू का असर खूब होता है। जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल जाएगा। मन खाली है तो बाज़ार की अनेकानेक चीज़ों का निमंत्रण उस तक पहुँच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी हो तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है। मालूम होता है यह भी लूँ, वह भी लूँ। सभी सामान ज़रूरी और आराम को बढ़ाने वाला मालूम होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी कि पता चलता है कि फ़ैसी चीज़ों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है |

प्र.(1) बाजार के जादू को रूप का जादू कहा गया है, क्योंकि-

(क) हम बाज़ार की सुंदर चीज़ों को देखकर ज़रूरत होने पर खरीदते हैं

(ख) हम बाज़ार की सुंदर चीज़ों पर आकर्षित होकर उन्हें खरीद लेते हैं

(ग) बाज़ार में जादू दिखाया जाता है

(घ) दुकानदार सुंदर होने के कारण हम चीज़ें खरीद लेते हैं

प्र.(2) बाज़ार के जादू की तुलना किससे की गई है ?

(क) मन के आकर्षण से (ख) धन के आकर्षण से

(ग) चुम्बक के आकर्षण से (घ) उपर्युक्त सभी से

प्र.(3) लेखक के अनुसार किस स्थिति में बाज़ार का जादू सबसे अधिक चलता है ?

(क) जब जेब खाली व मन भरा हो

(ख) जब जेब भरी व मन भरा हो

(ग) जब जेब व मन दोनों खाली हो

(घ) जब जेब भरी व मन खाली हो

प्र.(4) बाज़ार का जादू चढ़ने पर मनुष्य पर क्या असर होता है ?

(क) वह फैंसी व गैर जरूरी चीज़ें अधिक खरीद लेता है

(ख) वह जरूरी चीज़ें ही खरीदता है

(ग) वह फैंसी चीज़ें नहीं खरीदता

(घ) वह कोई चीज़ नहीं खरीदता

प्र.(5) गद्यांश के आधार पर मनुष्य को बाज़ार कब जाना चाहिए ?

(क) जब जेब में अधिक पैसे हों (ख) जब जेब में कम पैसे हों

(ग) जब मन भरा हो (घ) जब मन खाली हो

उत्तरमाला- 1 ख, 2 ग, 3 घ, 4 क, 5 ग

गद्यांश - 3

यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देते हैं। न तो वे बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वे लोग बाजार का बाजारूपन बढ़ाते हैं, जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी। इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं

प्र.(1) बाज़ार को सार्थकता कौन दे सकता है ?

(क) जिसे बाजार आकर्षित करता है (ख) पैसे की पावर रखने वाला

(ग) जो अपनी आवश्यकता जानता है (घ) जो बाज़ारूपन को महत्त्व देते हैं

प्र.(2) पर्चेजिंग पॉवर का तात्पर्य है -

(क) पैसे के अनुसार गैर-जरूरी चीजें खरीदने का दिखावा

(ख) कम पैसे में अधिक चीज़ें खरीदना

(ग) उधार में गैर-जरूरी चीजें खरीदने का दिखावा

(घ) दूसरे को सुंदर चीज़ें उपहार में देकर दिखावा करना

प्र.(3) पर्चेजिंग पावर का गर्व बाजार पर क्या प्रभाव डालता है ?

(क) यह बाज़ार को सार्थकता देता हैं

(ख) यह एक विनाशक शक्ति, शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाजार को देता हैं

(ग) यह बाज़ार को सच्चा लाभ देता है

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(4) 'बाजारूपन' से तात्पर्य है-

(क) ग्राहक व दुकानदार में सद्भाव घटना

(ख) ग्राहक व दुकानदार में कपट बढ़ना

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(5) गद्यांश की मुख्य समस्या है-

(क) पैसे की शक्ति के दुरुपयोग व दुष्प्रभाव (ख) बाजारूपन की समस्या

(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) दुकानदारों की समस्या

उत्तरमाला- 1 ग, 2 क, 3 ख, 4 ग, 5 ग

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न -

प्र.(1) लोगों के मन में धन जोड़ने के प्रति कैसी धारणा होती है? लेखक के अनुसार बताइए |

उत्तर- लेखक के अनुसार, लोगों के मन में धन जोड़ने के प्रति यह धारणा होता है कि इसके लिए स्त्री जिम्मेदार है और वे यह सोचते हैं कि यदि स्त्री माया न जोड़े तो क्या वे जोड़ेंगे ?

प्र.(2) लेखक के अनुसार बाजारवाद का प्रमुख कारण क्या है ?

उत्तर- लेखक के अनुसार बाजारवाद का प्रमुख कारण मनीबैग अर्थात पैसे की गरमी, पावर या एनर्जी है।

प्र.(3) बाज़ार के आमंत्रण के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए |

उत्तर- बाजार अधिक से अधिक चीजें खरीदने, बाजार को लूटने और बाजार की चीजों को अधिक से अधिक देखने के लिए आमंत्रित करता है।

प्र.(4) बाज़ार के आमंत्रण की क्या विशेषता होती है ?

उत्तर- बाजार के आमंत्रण में आग्रह नहीं होता और वह चुपचाप हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।

प्र.(5) ऊँचे बाज़ार के आमंत्रण को मूक क्यों कहा गया है ?

उत्तर- ऊँचे बाजार के आमंत्रण को मूक कहा गया है क्योंकि ऊँचे बाजार में सजी-धजी चीजें हमें अपनी ओर आकर्षित कर लेती हैं।

प्र.(6) मूक आमंत्रण से किस प्रकार की चाह जगती है? इस चाह से आदमी क्या महसूस करता है?

उत्तर- मूक आमंत्रण से आदमी को यह महसूस होता है कि उसके पास बहुत कम है और बाजार में बहुत अधिक चीजें है। उसे अधिक से अधिक चीज़ें लेने की चाह जगती है।

प्र.(7) बाजार के जादू को रूप का जादू क्यों कहा गया है ?

उत्तर- जब हम बाजार में चीजों को देखते हैं तो हम उनकी ओर आकर्षित हो जाते हैं और उन्हें खरीद लेते हैं, इसलिए उसे रूप का जादू कहा गया है।

प्र.(8) यह जादू कब व किन स्थितियों में काम करता है ?

उत्तर- यह जादू मन खाली और जेब भरी या खाली होने की स्थितियों में काम करता है।

प्र.(9) इस जादू से बचने का क्या उपाय है ?

उत्तर- इस जादू से बचने का उपाय है- बिना जरूरत के बाजार न जाएँ और जब जाएँ तो मन भरा हो ।

प्र.(10) लेखक लू के उदाहरण से क्या कहना चाहता है ?

उत्तर- लेखक लू के उदाहरण से यह कहना चाहता है कि जिस प्रकार लू में पानी पीकर निकलने से लू का लूपन महसूस नहीं होता उसी प्रकार यदि बाजार जाने से पहले मन भरा व आवश्यकताएँ तय हो तो बाज़ार हमें घाव नहीं आनंद देगा।

प्र.(11) बाज़ार की असली कृतार्थता किसे माना है ?

उत्तर- बाज़ार की असली कृतार्थता है- आवश्यकता के समय काम आना |

प्र.(12) परमात्मा और मनुष्य की प्रकृति में क्या अंतर बताया गया है ?

उत्तर- परमात्मा सम्पूर्ण है इसलिए उसमें किसी प्रकार की इच्छा शेष नहीं रहती जबकि मनुष्य अपूर्ण है इसलिए उसमें सदैव इच्छाएँ बनी रहती है।

प्र.(13) इस पाठ की मुख्य समस्या क्या है ?

उत्तर- पैसे की शक्ति के दुरुपयोग व दुष्प्रभाव और बाजारूपन की समस्या को इस पाठ में उठाया गया है |

प्र.(14) बाज़ार को सार्थकता कौन दे सकता है और क्यों ?

उत्तर- जो व्यक्ति जानता है कि उसे क्या खरीदना है और जिसकी आवश्यकताएँ तय हो, वह बाजार को सार्थकता दे सकता है। जरूरत की चीजें खरीद कर व बाज़ार को सच्चा लाभ देकर वह बाज़ार को सार्थकता दे सकता है |

प्र.(15) पर्चेजिंग पॉवर का क्या तात्पर्य है ?

उत्तर - पर्चेजिंग पावर का तात्पर्य है - बिना आवश्यकता के पैसे के अनुसार सामान खरीदने की ताकत या क्षमता का दिखावा जिसमें मनुष्य गैर-जरूरी चीजें खरीद लेता है।

प्र.(16) पर्चेजिंग पावर का गर्व बाजार का क्या अहित कर सकता है ?

उत्तर - पर्चेजिंग पावर का गर्व पैसे से बाजार को केवल एक विनाशक-शक्ति, शैतानी-शक्ति और व्यंग्य की शक्ति ही देता है जिससे न तो हम बाजार से लाभ उठा सकते हैं, न ही उस बाजार को सच्चा लाभ दे सकते हैं।

प्र.(17) परस्पर सद्भाव न रहने पर हमारे व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

उत्तर - परस्पर सद्भाव न रहने पर हमारे अंदर कपट की भावना बढ़ जाती है और एक के नुकसान में दूसरे को अपना लाभ नज़र आता है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न /निबंधात्मक प्रश्न

प्र.(1) बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता है ?

उत्तर- जब बाजार का जादू चढ़ता है तो मनुष्य को लगता है कि यह भी ले लूँ, वह भी ले लूँ। वह उनकी ओर चुम्बक की तरह खिंचा चला जाता है। सभी सामान जरूरी और आराम को बढ़ाने वाले मालूम होते हैं। जब बाजार का जादू उतरता है तो फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में खलल डालने वाली महसूस होती है।

प्र.(2) बाजार में भगत जी के व्यक्तित्व का कौनसा सशक्त पहलू उभरकर आता है ? क्या आपकी नज़र में उनका आचरण समाज में शांति स्थापित करने में मददगार हो सकता है ?

उत्तर- बाज़ार में भगत जी के व्यक्तित्व का यह सशक्त पहलू उभरकर आता है कि उनका अपने मन पर नियंत्रण था, वे संयमी थे, उनकी आवश्यकताएँ तय थी और मन भरा था जिसके कारण वे जरूरत की चीजें ही बाजार से खरीदते से थे। | मेरी नज़र में भगत जी के आचरण से समाज में अधिक सामान जोड़ने की होड़ व महँगाई को कम कर सकने में मदद मिल सकती है जिससे समाज में शांति स्थापित हो सकेगी।

प्र.(3)'बाजारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं?

अथवा

बाज़ार की सार्थकता किसमें है?

उत्तर- ग्राहक व दुकानदार के बीच कपट का बढ़ना और सद्भाव का घटना बाजारूपन है जिसमें दोनों एक-दूसरे को ठगने की कोशिश करते हैं और एक को दूसरे के नुकसान में अपना लाभ दिखाई देता है |

लेखक के अनुसार बाजार को सार्थकता और सच्चा लाभ भगत जी जैसे लोग ही दे सकते हैं जिनका मन भरा हो यानी आवश्यकताएँ तय हो और जो ज़रूरत की चीजें ही बाज़ार से खरीदते हो |

****

पाठ-13 काले मेघा पानी दे - धर्मवीर भारती

पाठ का सारांश- काले मेघा पानी दे संस्मरण में लोक प्रचलित विश्वास और विज्ञान के द्वंद्व का चित्रण किया गया है। विज्ञान का अपना तर्क है और विश्वास का अपना सामर्थ्य। इनकी सार्थकता के विषय में शिक्षित वर्ग असमंजस में है। लेखक ने इसी दुविधा को लेकर पानी के संदर्भ में प्रसंग रचा है। आषाढ़ का पहला पखवाड़ा बीत चुका है। ऐसे में खेती व अन्य कार्यों के लिए पानी न हो तो जीवन चुनौतियों का घर बन जाता है। यदि विज्ञान इन चुनौतियों का निराकरण नहीं कर पाता तो उत्सवधर्मी भारतीय समाज किसी-न किसी जुगाड़ में लग जाता है, प्रपंच रचता है और हर कीमत पर जीवित रहने के लिए अशिक्षा तथा बेबसी के भीतर से उपाय और काट की खोज करता है।

लेखक बताता है कि जब वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते लोगों की हालत खराब हो जाती है तब गाँवों में नंग-धडंग किशोर शोर करते हुए कीचड़ में लोटते हुए गलियों में घूमते हैं। ये दस-बारह वर्ष की आयु के होते हैं तथा सिर्फ जाँधिया या लंगोटी पहनकर 'गंगा मैया की जय' बोलकर गलियों में चल पड़ते हैं। जयकारा सुनते ही स्त्रियाँ व लड़कियाँ छज्जे व बारजों से झाँकने लगती

है। इस मंडली को इंदर सेना या मेढक-मंडला कहते हैं। ये पुकार लगाते हैं

काले मेघा पानी द गगरी फूटी बैल पियासा

पानी दे गुड़धानी दे काले मेघा पानी दे

जब यह मंडली किसी घर के सामने रुककर पानी की पुकार लगाती थी तो घरों में सहेजकर रखे पानी से इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते तथा कीचड़ में लथपथ हो जाते। यह वह समय होता था जब हर जगह लोग गरमी में भुनकर त्राहि-त्राहि करने लगते थे कुएँ सूखने लगते थे, नलों में बहुत कम पानी आता था, खेतों की मिट्टी में. पपड़ी पड़कर जमीन फटने लगती थी। लू के कारण व्यक्ति बेहोश होने लगते थे।

पशु पानी की कमी से मरने लगते थे, लेकिन बारिश का कहीं नामोनिशान नहीं होता था। जब पूजा-पाठ आदि विफल हो जाती थी तो इंदर सेना अंतिम उपाय के तौर पर निकलती थी और इंद्र देवता से पानी की मांग करती थी। लेखक को यह समझ में नहीं आता था कि पानी की कमी के बावजूद लोग घरों में कठिनाई से इकट्ठा किए पानी को इन पर क्यों फेंकते थे। इस प्रकार के अंधविश्वासों से देश को बहुत नुकसान होता है। अगर यह सेना इंद्र की है तो वह खुद अपने लिए पानी क्यों नहीं मांग लेती? ऐसे पाखंडों के कारण हम अंग्रेजों से पिछड़ गए तथा उनके गुलाम बन गए।

लेखक स्वयं मेढक-मंडली वालों की उमर का था। वह आर्यसमाजी था तथा कुमार-सुधार सभा का उपमंत्री था। उसमें समाजसुधार का जोश ज्यादा था उसे सबसे ज्यादा मुश्किल अपनी जीजी से थी जो उम्र में उसकी माँ से बड़ी थीं। वे सभी रीति-रिवाजों, तीज त्योहारों, पूजा- अनुष्ठानों को लेखक के हाथों पूरा करवाती थीं जिन अंधविश्वासों को लेखक समाप्त करना चाहता था। वे ये सब कार्य लेखक को पुण्य मिलने के लिए करवाती थी जीजी लेखक से इंदर सेना पर पानी फेंकवाने का काम करवाना चाहती थीं। उसने साफ मना कर दिया। जीजी ने काँपते हाथों व डगमगाते पाँवों से इंदर सेना पर पानी फेंका। लेखक जीजी से मुँह फुलाए रहा। शाम को उसने जीजी की दी हुई लड्डू-मठरी भी नहीं खाई। पहले उन्होंने गुस्सा दिखाया, फिर उसे गोद में लेकर समझाया। उन्होंने कहा कि यह अंधविश्वास नहीं है।

यदि हम पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे। यह पानी की बरबादी नहीं है। यह पानी का अर्ध्य है। दान में देने पर ही इच्छित वस्तु मिलती है। ऋषियों ने दान को महान बताया है। बिना त्याग के दान नहीं होता। करोड़पति दो-चार रुपये दान में दे दे तो वह त्याग नहीं होता त्याग वह है जो अपनी जरूरत की चीज को जनकल्याण के लिए दे। ऐसे ही दान का फल मिलता है। लेखक जीजी के तर्कों के आगे पस्त हो गया। फिर भी वह अपनी जिद पर अड़ा रहा। जीजी ने फिर समझाया कि तू बहुत पढ़ गया है। वह अभी भी अनपढ़ है। किसान भी

तीस-चालीस मन गेहूँ उगाने के लिए पाँच-छह सेर अच्छा गेहू बोता है। इसी तरह हम अपने घर का पानी इन पर फेंककर बुवाई करते हैं। इसी से शहर कस्बा गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघा से पानी माँगते हैं।

ऋषि-मुनियों ने भी यह कहा है कि पहले खुद दो, तभी देवता चौगुना करके तौटाएंगे। यह आदमी का आचरण है जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सच है। गाँधी जी महाराज भी यहाँ कहते हैं। लेखक कहता है कि यह बात पचास सात पुरानी होने के बावजूद आज भी उसके मन पर दर्ज है। अनेक संदर्भ में ये बातें मन को कचोटती है कि हम देश के लिए क्या ये करते हैं? हर क्षेत्र में मांगे बड़ी बड़ी है, पर त्याग का कहीं नाम-निशान नहीं है। आज स्वार्थ एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम भ्रष्टाचार की बातें करते हैं, परंतु खुद अपनी जाँच नहीं करते। काले मेघ उमड़ते हैं, पानी बरसता है, परंतु गगरी फूटी की फूटी रह जाती है।
बैल प्यासे ही रह जाते हैं । यह स्थिति कब बदलेगी, यह कोई नहीं जानता?

गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश-1

उछलते-कूदते, एक दूसरे को धकियाते ये लोग गली में किसी दुमहले मकान के सामने रुक जाते, “पानी दे मैया, इंदर सेना आई है।“ और जिन घरों में आखीर जेठ या शुरू आषाढ़ के उन सूखे दिनों में पानी की कमी भी होती थी, जिन घरो के कुएँ भी सूखे होते थे, उन घरों से भी सहेजकर रखे हुए पानी में से बाल्टी या घड़े भर-भर कर इन बच्चों को सर से पैर तक तर कर दिया जाता था। ये भीगे बदन मिट्टी में लोट लगाते थे, पानी फेंकने से पैदा हुए कीचड़ में लथपथ हो जाते थे। हाथ, पाँव, बदन, मुँह, पेट सब पर गंदा कीचड़ मल कर फिर हाँक लगाते हैं “बोल गंगा मैया की जय” और फिर मंडली बाँधकर उछलते-कूदते अगले घर की ओर चल पड़ते बादलों को टेरते,”काले मेघा पानी दे।“

(क) किसी दुमहले मकान के सामने कौन रुक जाते थे?

(i) मुसाफिर लोग (ii) इंदर सेना
(iii) जल से भीगे लोग (iv) प्यासे लोग

(ख) किन-किन महीनों में पानी माँगा आता था?

(i) सावन भादो (ii) माघ ज्येष्ठ
(iii) जेठ-आषाढ़ (iv) आषाढ़ पौष

(ग) इंदर सेना किसकी जय बोलती थी?

(i) गांव वालों की (ii) माता-पिता को
(iii) संरक्षक की (iv) गंगा मैया की

(घ) इंदर सेना पर कैसा पानी डाला जाता था?

(i) कीचड़ वाला पानी (ii) गंगा नदी का पानी

(iii) घरों में संभालकर रखा हुआ पानी (iv) गंदा व बदबूदार पानी

(ड.) बालकों के हाथ, पैर, बदन तथा मुख सब किस कारण मिट्टी में लिपट जाते हैं?

(i) कीचड़ के कारण (ii)ग्रामीण परिवेश के कारण

(iii)आँधी चलने के कारण (iv)धूप में घूमने के कारण

उत्तरमाला- (क)(ii), (ख)(iii), (ग)(iv), (घ)(iii), (ड.)(i)

गद्यांश-2

कभी-कभी कैसे-कैसे संदर्भों में ये बातें मन को कचोट जाती हैं, हम आज देश के लिए करते क्या हैं? माँगें हर क्षेत्र में बड़ी-बड़ी है पर त्याग का कहीं नामो-निशान नहीं है। अपना स्वार्थ आज एकमात्र लक्ष्य रह गया है। हम चटखारे लेकर इसके या उसके भ्रष्टाचार की बातें कहते हैं पर क्या कभी हमने जाँचा है कि अपने स्तर पर अपने दायरे में हम उसी भ्रष्टाचार के अंग तो नहीं बन रहे हैं? काले मेघा दल-के-दल उमड़ते हैं, पानी झमाझम बरसता है, पर गगरी फूटी की फूटी रह जाती है, बैल पियासे के पियासे रह जाते हैं? आखिर कब बदलेगी यह स्थिति?

(I) लेखक के मन को कौन सी बात कचोटती है?

क) भ्रष्टाचारी होना ख) अपनी बात मनवाने की जिद करना

ग) कर्तव्य बोध का अभाव घ) दान ना देना

ii) हमारे देश में भ्रष्टाचार की क्या स्थिति है?

क) मांगे बड़ी है पर त्याग की भावना नहीं है

ख) स्वार्थ ही एकमात्र लक्ष्य रह गया है

ग) भ्रष्टाचार की बातें करते हैं पर स्वयं भ्रष्ट हैं

घ) उपरोक्त सभी

iii) 'गगरी फूटी की फूटी रह जाती है' से क्या अभिप्राय है?

क) कल्याणकारी योजनाओं का आम जनता को लाभ नहीं मिलता

ख) सरकारी सहायता जरूरतमंदों तक नहीं पहुंच पाती

ग) (I) और (ii) दोनों

घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

iv) लेखक का प्रस्तुत गद्यांश में केंद्र बिंदु क्या है?

क) देश में सूखे की समस्या ख) देश में भ्रष्टाचार की समस्या

ग) देश के लोगों में त्याग की भावना का ना होना घ) उपरोक्त में से कोई नहीं

v) 'आखिर कब बदलेगी स्थिति' कथन में लेखक किस स्थिति की बात कर रहा है?

क) देश में व्याप्त भ्रष्टाचार के बारे में ख) सरकारी योजनाओं के बारे में

ग) देश में सूखे की स्थिति के बारे में घ) देश में अकाल की स्थिति के बारे में

उत्तरमाला- (i) (ग), (ii)(घ), (iii)(ग), (iv)(क), (v)(ख)

गद्यांश-3

लेकिन इस बार मैंने साफ इनकार कर दिया। नहीं फेंकना है मुझे बाल्टी भर-भरकर पानी इस गंदी मेंढक मंडली पर। जब जीजी बाल्टी भरकर पानी ले गई उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे, हाथ काँप रहे थे, तब भी मैं अलग मुँह फुलाए खड़ा रहा। शाम को उन्होंने लड्डू-मठरी खाने को दिए तो मैंने उन्हें हाथ से अलग खिसका दिया, मुँह फेरकर बैठ गया, जीजी से बोला भी नहीं। पहले वे तमतमाईं, लेकिन ज्यादा देर तक उनसे गुस्सा नहीं रह गया। पास आकर मेरा सर अपनी गोद में लेकर बोलीं, "देख भइया, रूठ मत। मेरी बात सुन। यह सब अंधविश्वास नहीं है। हम इन्हें पानी नहीं देंगे तो इंद्र भगवान हमें पानी कैसे देंगे?"

मैं कुछ नहीं बोला। फिर जीजी बोलीं। “तू इसे पानी को बरबादी समझता है पर यह बरबादी नहीं है। पानी का अर्घ्य चढ़ाते हैं, जो चीज मनुष्य पाना चाहता है उसे पहले देगा नहीं तो पाएगा कैसे? इसीलिए ऋषि-मुनियों ने दान को सबसे ऊंचा स्थान दिया है।"

(क) लेखक के द्वारा किस बात से साफ इंकार किया गया?

(i) मेंढक-मंडली पर पानी फेंकने से (ii) मेंढकों पर पानी फेंकने से

(iii) जीजी द्वारा दिए गए लड्डू-मठरी खाने से (iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ख) जब जीजी बाल्टी भरकर पानी लाई तो उनकी दशा कैसी थी?

(i) उनके बूढ़े पाँव डगमगा रहे थे (ii) उनके हाथ कॉप रहे थे

(iii) (i) और (ii) दोनों (iv) उन्हें बुखार हो रहा था

(ग) मेंढक-मंडली को पानी न देने से क्या होगा?

(i) इंद्र भगवान पानी देंगे (ii) इंद्र भगवान पानी नहीं देंगे

(iii) पानी खूब बरसेगा (iv) काले बादल घिर आएँगे

(घ) लेखक की जीजी ने शाम को उसे क्या खाने को दिया?

(i) मालपुए (ii) लड्डू-मठरी (iii) लड्डू-कचौरी (iv) हलवा कचोरी

(ङ) मेंढक-मंडली पर पानी फेंकने को जीजी ने क्या बताया?

(i) पानी की बरबादी (ii) भेंट देना

(iii) पानी की किल्लत दूर करना (iv) अर्घ्य देना

उत्तरमाला- (क)(i), (ख)(iii), (ग)(ii), (घ)(ii), (ङ.)(iv)

गद्यांश-4

फिर जीजी बोलीं, "देख, तू तो अभी से पढ़-लिख गया है। मैंने तो गाँव के मदरसे का भी मुँह नहीं देखा। पर एक बात देखी है कि अगर तीस-चालीस मन गेहूं उगाना है तो किसान पाँच-छः सेर अच्छा गेहूं अपने पास से लेकर जमीन में क्यारियों बनाकर फेंक देता है। उसे बुवाई कहते हैं। यह जो सूखे में हम अपने घर का पानी इन पर फेंकते हैं; वह भी बुवाई है। यह पानी गली में बोएँगे तो सारे शहर, कस्बा, गाँव पर पानीवाले बादलों की फसल आ जाएगी। हम बीज बनाकर पानी देते हैं, फिर काले मेघों से पानी माँगते हैं। सब ऋषि-मुनि कह गए हैं कि पहले खुद दो तब देवता तुम्हें चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे भइया, यह तो हर आदमी का आचरण है, जिससे सबका आचरण बनता है। यथा राजा तथा प्रजा सिर्फ यही सच नहीं है। सच यह भी है कि यथा प्रजा तथा राजा। यही तो गाँधी जी महाराज कहते हैं।"

(क) बुवाई किसे कहते हैं?

(i) जमीन में क्यारियाँ बनाना (ii) हल चलाना

(iii) क्यारियों में बीज बोना (iv) उपरोक्त सभी

(ख) जीजी के अनुसार, मेंढक-मंडली पर पानी फेंकने से क्या होगा?

(i) पानी की बुवाई होगी

(ii) शहर, कस्बा व गाँव पर पानी वाले बादलों की फसल आ जाएगी

(iii) (i) और (ii) दोनों

(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

(ग) गद्यांश के अनुसार त्याग की महत्ता को किसने बताया था?

(i) ऋषि-मुनियों ने (ii) इंदर सेना ने

(iii) मेंढक-मंडली ने (iv) लेखक ने

(घ) गद्यांश के अनुसार हर आदमी का आचरण कैसा है?

(i) पानी माँगना
(ii) दान देना
(iii) मेंढक-मंडली पर पानी फेंकना
(iv) देवताओं से पानी माँगना

(ङ) 'यथा राजा तथा प्रजा' से क्या आशय है?

(i) कर भला तो हो भला
(ii) जैसा राजा वैसी प्रजा
(iii) जैसी करनी वैसी भरनी
(iv) उपरोक्त में से कोई नहीं

उत्तरमाला- (क)(iv), (ख)(iii), (ग)(i), (घ)(i), (ङ)(iii)

पाठ पर आधारित प्रश्न

प्रश्नः 1 लोगों ने लड़कों की टोली की मेढक मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती ?

उत्तर- गाँव के कुछ लोगों की तड़कों के नंगे शरीर, उछल-कूद, शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ से चिढती थी। वे इसे अंधविश्वास मानते थे। इसी कारण वे इन लड़कों की टोली को मेढक मंडली कहते थे। यह टोली स्वयं को इंदर सेना कहकर बुलाती थी। ये बच्चे इकट्ठे होकर भगवान इंद्र से वर्षा करने की गुहार लगाते थे। बच्चों का मानना था कि वे इद्र की सेना के सैनिक है तथा उसी के लिए लोगों से पानी माँगते हैं ताकि इंद्र बादलों के रूप में बरसकर सबको पानी दें।

प्रश्न 2 जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?

उत्तर- यद्यपि लेखक बच्चों की टोली पर पानी फेंके जाने के विरुद्ध था लेकिन उसकी जीजी इस बात को सही मानती है। वह कहती है कि यह अविश्वास नहीं है। यदि हम इस सेना को पानी नहीं देंगे तो इंदर हमे कैसे पानी देगा अर्थात वर्षा करेगा। यदि परमात्मा से कुछ लेना है तो पहले उसे कुछ देना सीखो। तभी परमात्मा खुश होकर मनुष्यों की इच्छाएं पूरी करता है।

प्रश्न 3.'पानी दे गुड़धानी दे' मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग क्यों की जा रही है?

उत्तर- गुड़धानी गुड़ व अनाज के मिश्रण से बने खाद्य पदार्थ को कहते हैं। बच्चे मेघों से पानी के साथ-साथ गुड़धानी की माँग करते हैं। ●पानी से प्यास बुझती है, साथ ही अच्छी वर्षा से ईख व धान भी उत्पन्न होता है, यहाँ गुढ़धानी से अभिप्राय अनाज से है। गाँव की अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित होती है जो वर्षा पर निर्भर है। अच्छी वर्षा से अच्छी फसल होती है जिससे लोगों का पेट भरता है। और चारों तरफ खुशहाली छा जाती है।

प्रश्न 4 'गगरी फूटी बेल पियासा' इंदर सेना के इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात क्यों मुखरित हुई है?

उत्तर- इस खेलगीत में बैलों के प्यासा रहने की बात इसलिए मुखरित हुई है कि एक तो वर्षा नहीं हो रहीं दूसरे जो थोड़ा बहुत पानी गगरी (घड़े) में बचा था। वह भी घड़े के टूटने से गिर गया। अब घड़े में भी कुछ पानी नहीं बचा। इसलिए बैल प्यासे रह गए। बैल तभी जोत सकेंगे जब उनकी प्यास बुझेगी। मेघा इसलिए पानी बरसा ताकि बैलों और धरती दोनों की प्यास बुझकर चारों ओर खुशी छा जाए।

प्रश्न 5 इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय क्यों बोलती है? नदियों का भारतीय सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश में क्या महत्व है ?

उत्तर- वर्षा न होने पर इंदर सेना सबसे पहले गंगा मैया की जय बोलती है। इसका कारण यह है कि भारतीय जनमानस में गंगा नदी को विशेष मान-सम्मान प्राप्त है। हर शुभ कार्य में गंगाजल का प्रयोग होता है। उसे माँ का दर्जा मिला है। भारत के सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश में नदियों का बहुत महत्त्व है। देश के लगभग सभी प्रमुख बड़े नगर नदियों के किनारे बसे हुए हैं। इन्हीं के किनारे सभ्यता का विकास हुआ। अधिकतर धार्मिक व सांस्कृतिक केंद्र भी नदी तट पर ही विकसित हुए हैं। हरिद्वार, ऋषिकेश, काशी, बनारस, आगरा आदि शहर नदियों के तट पर बसे है। धर्म से भी नदियों का प्रत्यक्ष संबंध है। नदियों के किनारों पर मेले लगते हैं। नदियों को मोक्षदायिनी माना जाता है।

प्रश्न 6. रिश्तों में हमारी भावना शक्ति बँट जाना विश्वासों के जंगल में सत्य की राह खोजती हमारी बुद्धि की शक्ति को कमजोर करती है। पाठ में जीजी के प्रति लेखक की भावना के संदर्भ में इस कथन के औचित्य की समीक्षा कीजिए।

उत्तर- लेखक का अपनी जीजी के प्रति गहरा प्यार था। वह अपनी जीजी को बहुत मानता था। दोनों में भावनात्मक संबंध बहुत गहरा लेखक जिस परंपरा को या अंधविश्वास का विरोध करता है जीजी उसी का भरपूर समर्थन करती है। धीरे धीरे लेखक और उसकी जीजी के बीच की भावनात्मक शक्ति बँटती चली जाती है। लेखक का विश्वास डगमगाने लगता है। वह कहता भी है कि मेरे विश्वाश का किला ढहने लगा था। उसकी जीजी लेखक की बुधि शक्ति को भावनात्मक रिश्तों से कमजोर कर देती है। इसलिए वे चाहकर भी किसी बात का विरोध नहीं कर पाता। यद्यपि वह विरोध जताने का प्रयास करता है लेकिन अंत में उसे जीजी के आगे समर्पण करना पड़ता है।

प्रश्न 8 दिन दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए क्या आज का युवा वर्ग काले मेघा पानी दे की इंदर सेना की तर्ज पर कोई सामूहिक आंदोलन प्रारंभ कर सकता है? अपने विचार लिखिए।

उत्तर- दिन दिन गहराते पानी के संकट से निपटने के लिए आज का युवा वर्ग इंदर सेना की तर्ज पर सामूहिक आंदोलन चला सकता है।

युवा वर्ग जागरूकता रैली निकाल सकते हैं। वे नुक्कड़-नाटको, रेल, पोस्टरों, चर्चाओ रेडियों व टीवी के माध्यम से पानी के संरक्षण, उसके सदुपयोग आदि के बारे में जागृति पैदा कर सकता है। वे वृक्षारोपण करके, तालाबों की खुदाई आदि के जरिए पानी के संकट को काफ़ी हद तक दूर कर सकते हैं।

प्रश्न 9 'काले मेघा पानी दे' संस्मरण विज्ञान के सत्य पर सहज प्रेम की विजय का चित्र प्रस्तुत करता है स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लेखक अपनी जीजी से स्नेह करता है। जीजी भी उसे बहुत चाहती है। दोनों का भावनात्मक लगाव है। लेखक जीजी के अंधविश्वासों को निरर्थक मानता है, परंतु जीजी उसे अपने तर्कों से चुप करा देती है। अत्यधिक स्नेह भाव के कारण लेखक की तर्क क्षमता कमजोर हो जाती है। जीजी की भावनाएँ लेखक की बुद्धि पर हावी हो जाती है। वह चाहकर भी जीजी के अंधविश्वासों का विरोध नहीं कर पाता।

प्रश्न 10 धर्मवीर भारती मेंढक मंडली पर पानी डालना क्यों व्यर्थ मानते थे?

उत्तर-लेखक मेंढक मंडली पर पानी डालना व्यर्थ मानते थे क्योंकि इस समय पानी की भारी कमी है। लोगों ने कठिनता से पीने के लिए। बाल्टी भर पानी इकट्ठा कर रखा है। उसे इस मेंढक मंडली पर फेंकना पानी की घोर बरबादी है। इससे देश व समाज की क्षति होती। है। वह पानी को इस तरह फेंकने को अंधविश्वास के सिवाय कुछ नहीं मानता।

****

पाठ-14 पहलवान की ढोलक -फणीश्वरनाथ रेणु

सारांश -

पहलवान की ढोलक रेणु जी द्वारा लिखित एक आंचलिक कहानी है जिसके माध्यम से रेणु जी ने विशुद्ध भारतीय खेलों के महत्त्व को दर्शाते हुए बताया है कि कैसे भारतीय खेल कुश्ती का महत्त्व लगातार कम होता जा रहा है ओर लोग विदेशी खेलों की तरफ लगातार झुकते चले जा रहे हैं| जिसकी वजह से हमारे प्राचीन खेलों के प्रसिद्ध खिलाड़ी भी बेरोजगारी के कारण भुखमरी

के कगार पर खड़े हो चुके हैं रेणु जी ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से इस समस्या का मार्मिक चित्र खीचा है|

आजादी मिलने के बाद भारत में जब सारा विकास शहरों में केंद्रित होता जा रहा था तो ऐसे में रेणु ने ग्रामीण आंचलिक समस्याओं को अपने साहित्य में स्थान दिया। इनकी रचनाएँ इस अवधारणा को भी पुष्ट करती हैं कि भाषा की सार्थकता बोली के साहचर्य में ही है।रेणु जी की भाषा भी अंचल-विशेष से प्रभावित है। इन्होंने आम बोलचाल की भाषा को अपनाया है।

कहानी एक ऐसे गाँव की है जहाँ लुट्टन के माता पिता का देहांत बचपन में ही हो जाता है,चूंकि पहले बचपन में ही विवाह हो जाते थे इसलिए लुट्टन का भी विवाह अनाथ होने से पहले ही हो चुका था। अतः उसका पालन पोषण उसकी विधवा सास ने किया था| वह गाय चराता, ताजा दूध पीता तथा कसरत करता था। गाँव के लोग उसकी सास को अकेले समझकर तंग किया करते थे। लुट्टन इनसे बदला लेना चाहता था। कसरत के कारण वह किशोरावस्था में ही पहलवान बन गया। एक बार लुट्टन श्यामनगर मेला में 'दंगल' देखने गया। पहलवानों की कुश्ती व दाँव-पेंच देखकर उसने 'शेर के बच्चे'चाँद सिंह को चुनौती दे डाली। वह पहलवान बादल सिंह का शिष्य था। तीन दिन में उसने पंजाबी व पठान पहलवानों को हरा दिया था। लुट्टन के समर्थन में सिर्फ़ ढोल की आवाज थी, जबकि चाँद के पक्ष में राजमत व बहुमत था। लुट्टन की आँखें बाहर निकल रही थीं, तभी ढोल की पतली आवाज सुनाई दी'धाक-धिना, तिरकट-तिना, धाक-धिना, तिरकट-तिना।' इसका अर्थ था-दाँव काटो, बाहर हो जाओ। लुट्टन ने दाँव काटी तथा लपक कर चाँद की गर्दन पकड़ ली। ढोल ने आवाज दी-चटाक्-चट्-धा अर्थात उठाकर पटक दे। लुट्टन ने दाँव व जोर लगाकर चाँद को जमीन पर दे मारा। ढोलक ने 'धिना-धिना, धिक-धिना।' कहा और लुट्टन ने चाँद सिंह को चारों खाने चित्त कर दिया। लुट्टन ने सबसे पहले ढोलों को प्रणाम किया और फिर दौड़कर राजा साहब को गोद में उठा लिया। राजा साहब ने उसे दरबार में रख लिया।राजपंडित व मैनेजर ने लुट्टन का विरोध किया कि वह क्षत्रिय नहीं है। राजा साहब ने उनकी एक न सुनी,बोले उसने क्षत्रियों वाला काम किया है| कुछ ही दिन में लुट्टन सिंह की कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। उसने सभी नामी पहलवानों को हराया। उसने 'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवान को भी हरा दिया।लुट्टन सिंह मेलों में घुटने तक लंबा चोंगा पहने, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता। हलवाई के आग्रह पर दो सेर रसगुल्ला खाता तथा मुँह में आठ-दस पान एक साथ दूँस लेता। वह बच्चों जैसे शौक रखता था।

इस तरह पंद्रह वर्ष बीत गए। उसके दो पुत्र हुए। उसकी सास पहले ही मर चुकी थी और पत्नी भी दो पहलवान पैदा करके स्वर्ग सिधार गई। दोनों लड़के पहलवान थे।पहलवान हर रोज सुबह उनसे कसरत ओर व्यायाम के साथ ही दिन में उन्हें सांसारिक ज्ञान भी देता। बताता कि उसका गुरु ढोल है, और कोई नहीं। अचानक राजा साहब स्वर्ग सिधार गए। नए राजकुमार ने विलायत से आकर राजकाज अपने हाथ में लेते ही पहलवानों के आहार इत्यादि को देखकर सबको हमेशा

के लिए दरबार से निकाल दिया। लुट्टन ढोलक कंधे से लटकाकर अपने पुत्रों के साथ गाँव लौट आया। गाँव वालों ने उसकी झोपड़ी बना दी तथा वह गाँव के नौजवानों व चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। खाने-पीने का खर्च गाँव वालों की तरफ से बँधा हुआ था। गरीबी के कारण धीरे-धीरे किसानों व मजदूरों के बच्चे स्कूल में आने बंद हो गए। अब वह अपने लड़कों को ही ढोल बजाकर कुश्ती सिखाता।लड़के दिनभर मजदूरी करके कमाकर लाते थे। गाँव पर अचानक संकट आ गया। सूखे के कारण अन्न की कमी हो गई तथा फिर मलेरिया व हैजा फैल गया। घर के घर खाली हो गए। प्रतिदिन दो-तीन लाशें उठने लगीं। लोग एक-दूसरे को ढाँढ़स देते तथा शाम होते ही घरों में घुस जाते। लोग चुप रहने लगे। ऐसे समय में केवल पहलवान की ढोलक ही बजती थी जो गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में संजीवनी शक्ति भरती थी। एक दिन पहलवान के दोनों बेटे भी चल बसे। पहलवान सारी रात ढोल पीटता रहा। दोनों पेट के बल पड़े हुए थे। उसने लंबी साँस लेकर कहा-दोनों बहादुर गिर पड़े। उस दिन उसने राजा श्यामानंद की दी हुई रेशमी जाँघिया पहनी और सारे शरीर पर मिट्टी मलकर थोड़ी कसरत की फिर दोनों पुत्रों को कंधों पर लादकर नदी में बहा आया। इस घटना के बाद गाँव वालों की हिम्मत टूट गई।रात में फिर पहलवान की ढोलक बजने लगी तो लोगों की हिम्मत दुगुनी बढ़ गई। चार-पाँच दिनों के बाद एक रात ढोलक की आवाज नहीं सुनाई पड़ी। सुबह उसके शिष्यों ने देखा कि पहलवान की लाश 'चित' पड़ी है। शिष्यों ने बताया कि उनके गुरु ने कहा था कि उसके शरीर को चिता पर पेट के बल लिटाया जाए क्योंकि वह अपने जीवन में कभी 'चित' नहीं हुए और चिता सुलगाने के समय ढोल जरूर बजा देना ।

महत्वपूर्ण बिंदु--

1-इसके लेखक फणीश्वर नाथ रेणु है |

2-पहलवान की ढोलक (आंचलिक कहानी) कथाकार रेणु की समस्त विशेषताओं को एक साथ अभिव्यक्त करती है |

3-रेणु की लेखनी में गांव अंचल एवं संस्कृति को सजीव करने की अद्भुत क्षमता है|

4-कहानी का नायक लुट्टन पहलवान बचपन से दांवपेच सीखता हुआ कब पहलवान बन जाता है| वह ढोलक को अपना गुरु मानता है|

5 -उसने नामी गिरामी पहलवान चांद सिंह को मेले के दंगल में पटक राज पहलवान का दर्जा प्राप्त कर लिया|

6 - लुट्टन पंद्रह साल तक अजेय पहलवान रहा |पर विलायत से आए राजा के लड़के ने पहलवानी को राज्य खेल से हटा दिया उसकी जगह पर घुड़सवारी को राज्य खेल बनाया यहीं से लुट्टन पहलवान के दुर्दिन शुरू हो जाते हैं|

7- वह गांव चला जाता है और जीवन संघर्ष करता है |

8-गांव में फैली महामारी के कारण पहलवान के दोनों बेटे एवं वह स्वयं मौत का शिकार हो जाते हैं|

9- लुट्टन पहलवान जीवन के अंत समय तक ढोलक बजाते हुए लोगों मे उत्साह भरते हुए परिस्थितियों से लड़ने की शक्ति देता है|

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1-हिंदी साहित्य में रेणुजी की पहचान किस तरह के कहानीकार के रूप में है?

अ मनोवैज्ञानिक कहानीकार ब हास्य व्यंग्य

स आंचलिक कहानीकार\उपन्यासकार द बाल साहित्यकार

2-पहलवान की ढोलक विषय पर आधारित है-

अ महामारी की विभीषिका का वर्णन करना

ब कुश्ती\दंगल का महत्व बताना

स व्यवस्था के बदलने के साथ लोक कला खेल ओर कलाकार के अप्रासंगिक हो जाने का उल्लेख करना|

द लुट्टन सिंह का चरित्र चित्रण

3. 'डेढ़ हाथ का कलेजा' मुहावरे का अर्थ होगा ?

(अ) कमजोर होना (ब) अत्यधिक प्रसन्न होता

(स) अत्यधिक साहसी होना (द) इनमें से कोई नहीं

4. रुग्ण शब्द का अर्थ क्या है ?

अ साहसी ब स्वार्थी स बीमार द ये सभी

5. चार-पाँच दिनों के बाद एक रात ढोलक क्यों बंद हो गयी?

(अ) पहलवान ने बजाना छोड़ दिया (ब) दोलक फूट गई थी

(स) गाँव से महामारी चली गई थी (द) पहलवान की मृत्यु हो गई थी

6. गुरु जी कहा करते थे कि जब मैं मर जाऊँ तो चिता पर मुझे चित नहीं पेट के बल सुलाना।' यह कथन किसका था ?

(अ) पहलवान के बेटो का (ब) गाँव वालों का

(स) पहलवान के शिष्य का (द) पहलवान की सास का

7. गद्यांश के लेखक हैं-

(अ) धर्मवीर भारती (ब) निराला

(स) महादेवी वर्मा (द) फणीश्वर नाथ रेणु

8. 'बाबा उठा पटक दो वाला ताल बजाओ यह किसने कहा ?

(अ) गाँव वालों ने (ब) दंगल के पहलवानों ने

(स) पहलवान के लड़कों ने (द) ये सभी

9. गद्यांश में गाँव की किस स्थिति का वर्णन है ?

(अ) दंगल का दृश्य (ब) महामारी का दृश्य

(स) स्कूल का दृश्य (द) चुनाव का दृश्य

10. बूढ़े बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य क्यों नाचने लगता ?

(अ) पहलवान को देखकर (ब) पहलवान के बेटों को देखकर

(स) पहलवान की ढोलक की आवाज सुनकर (द)गाँव का भीषण सन्नाटा देखकर

उत्तरमाला -1-स, 2-स, 3-स, 4-स, 5-द, 6-स, 7-द, 8-स, 9-ब,10-स

निम्नलिखित प्रश्नों के लिए एक शब्द में उत्तर दीजिये -

किसके माता पिता का देहांत बचपन में ही हो जाता है -लुट्टन सिंह

लुट्टन किससे बदला लेना चाहता था। - गाँव से

'काला खाँ' जैसे प्रसिद्ध पहलवान को भी किसने हरा दिया। -लुट्टन सिंह

शेर का बच्चा के नाम से विभूषित था - चाँद सिंह

पहलवान लुट्टन सिंह का गुरु कौन था - ढोलक

राजा साहब के लुट्टन सिंह को दरबार में रखने पर किसने विरोध किया? -मैनेजर

मेलों में घुटने तक लंबा चौंगा पहने, अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मतवाले हाथी की तरह झूमता चलता। -पहलवान लुट्टन सिंह

दरबार से निकाल दिये जाने पर लुट्टन ढोलक कंधे से लटकाकर अपने पुत्रों के साथ कहाँ चला गया? -गाँव

कौन गाँव के नौजवानों व चरवाहों को कुश्ती सिखाने लगा। -लुट्टन सिंह

लुट्टन सिंह कितने वर्ष तक राज दरबार का पहलवान बना रहा? -15 वर्ष

अभिकथन-तर्क

1.अभिकथन- गाँव में महामारी फ़ैल चुकी थी उसकी चपेट में आकर लोग मर रहे थे।

कारण- गाँव में मलेरिया और हैजा नामक महामारी फैली थी।

(क)A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

(ख) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) A सही है लेकिन R गलत है।

(घ) A गलत है लेकिन R सही है।

उत्तर: (क) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

2. अभिकथन पहलवान के बेटों का भरण-पोषण राज दरबार से होता था।

कारण- लुट्टन पहलवान श्यामनगर का दरबारी पहलवान था। उसका तथा उसके परिवार का

सारा खर्च राज दरबार उठाता था।

(क) A और R दोनों सही है A.R की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) A और R दोनों सही है A, R की सही व्याख्या है।

(ग) A सही है लेकिन R गलत है।

(घ) A गलत है लेकिन R सही है।

उत्तर : (ख) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

3. अभिकथन- घोड़े का रेस पहले के लोगों और राजाओं का प्रिय शौक नहीं था।

कारण- पहलवानों को राजा एवं लोगों द्वारा विशेष सम्मान दिया जाता था।

(क) A और R दोनों सही है A.R की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) A और R दोनों सही है A, R की सही व्याख्या है।

(ग) A सही है लेकिन R गलत है।

(घ) A गलत है लेकिन R सही है।

उत्तर: (क) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या नहीं है।

4. अभिकथन- राजा साहब ने लुट्टन को अपने राजदरबार में रख लिया।

कारण- काला खां मशहूर पहलवान था। ज्यों ही वह लंगोट लगाकर आली कहता था उसके प्रतिद्वंदी डर जाते थे।

(क) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

(ग) A सही है लेकिन R गलत है।

(घ) A गलत है लेकिन R सही है।

उत्तर: (क) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या नहीं है।

5. अभिकथन- कुत्तों में परिस्थिति को ताड़ने की एक विशेष बुद्धि होती है।

कारण- उन्होंने महसूस कर लिया था कि लोग महामारी की चपेट में आ चुके हैं। अतः वे सिकुड़े पड़े रहते थे और इकट्ठे मिलकर रहते थे।

(क)A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

(ग) A सही है लेकिन R गलत है।

(घ) A गलत है लेकिन R सही है।

उत्तर: (ख) A और R दोनों सही है A,R की सही व्याख्या है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

प्रश्न -1 पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर-पहलवान ने जब श्याम नगर के दंगल में चाँद सिंह को हराया तो राजा साहब ने उसे राज पहलवान घोषित करके दरबार में रख लिया,अब लुट्टन के संघर्ष के दिन समाप्त हो गए थे ,उसे खाने पीने की भी कोई कमी नहीं थी उसकी प्रतिष्ठा भी दूर तक फ़ैल गयी थी|

प्रश्न 2-लुट्टन सिंह राज दरबार का पहलवान बनने के बाद लुट्टन सिंह की जीवन शैली में क्या परिवर्तन हुआ?

उत्तर-राज दरबार का पहलवान बनने के बाद लुट्टन के परिवार के खाने पीने का इंतजाम राजकीय कोष से होने लगा था परिणामस्वरूप लुट्टन अपनी सारी पारिवारिक जिम्मेदारियों से मुक्त होकर सारा ध्यान अपने शरीर को बलिष्ठ बनाने में और दंगल जीतने में लगाता था

प्रश्न 3- सत्ता -परिवर्तन के बाद पहलवान के जीवन में क्या बदलाव आया?

उत्तर-पंद्रह वर्षों बाद अचानक एक दिन राजा साहब की मृत्यु हो गयी और नए राजकुमार के रूप में सत्ता परिवर्तन के सत्ता परिवर्तन के बाद लुट्टन को दरबार से निकाल दिया गया। वह गाँव लौट आया,गाँव वालों की मदद से एक झोपड़ी बनाकर रहने लगा और गुजारे के लिए भी मुश्किल होने लगी|

प्रश्न 4 - ढोलक की आवाज का पूरे गाँव में क्या असर होता था?

उत्तर-पूरा गाँव महामारी के डर से शाम होने से पहले ही दरवाजे बंद करके घरों में दुबक जाते थे,शाम ढलते ही एक अजीब सा डरावना माहौल बन जाता था,ऐसे ही डरावने माहौल को चीरती हुई लुट्टन के ढोल की आवाज मानो मौत को चुनौती देती थी,ओर डरे हुए गाँव वालों के हृदय में उत्साह का संचार करती थी|

प्रश्न-5 प्रतिकूल परिस्थितियां मनुष्य को प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँचा देती है ।इस आलोक में बताइए कि लुट्टन के मन में पहलवान बनने की इच्छा क्यों हुई?

उत्तर-लुट्टन की विधवा सास जो उसकी पालक मां भी थी को असहाय जानकार गाँव वाले उसको परेशान करते थे इसलिए लुट्टन के मन में उनसे बदला लेने की इच्छा उत्पन्न हो गयी इसी इच्छा ने कब उसमें एक पहलवान बनने का शौक उत्पन्न कर दिया पता ही नहीं चला,ओर पहलवानी के बल पर लुट्टन अपने परिवार का पालन ओर उस क्षेत्र में प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता

प्रश्न 6 ढोल में तो जैसे पहलवान की जान बसी है। पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए।

उत्तर-लुट्टन पहलवान की जान उसकी ढोल में ही बसती थी क्योंकि ढोल की आवाज़ मानों उसका उत्साह बढ़ाती थी,ढोल उसको कुश्ती के दौरान अपनी आवाज़ के माध्यम से निर्देश देती थी वह ढोल को अपना गुरु मानता था,इसीलिए ढोल में उसकी जान बसती थी|

प्रश्न 7- गाँव में महामारी फैलने पर भी और अपने बेटों के देहांत के बावजूद लुट्टन पहलवान ढोल क्यों बजाता रहा?

उत्तर-लुट्टन अपने जीवन में कभी हार नहीं मानता था,नहीं किसी से डरता था,गाँव वालों को लगा कि बेटों की मृत्यु के बाद लुट्टन हारकर ढोल बजाना बंद कर देगा लेकिन लुट्टन ने न तो ढोल बजाना बंद किया नाही मौत के आगे हार मानी,मानो वो गाँव वालों को संदेश दे रहा हो की मौत एक प्रक्रिया है इससे डरकर जीवन को झुकना नहीं चाहिए|

प्रश्न 8- लुट्टन के अखाड़े में कूदते ही चारों ओर खलबली क्यों मच गई ?

उत्तर- लुट्टन ने चाँद सिंह को लड़ने की चुनौती दी और अखाड़े में आ गया। चाँद सिंह उसकी चुनौती सुनकर अपेक्षा से मुस्कुराया और बाज की तरह उस पर टूट पड़ा। यह देख दंगल के आसपास जुटे दर्शकों में खलबली मच गई। वे लोग लुट्टन की शक्ति को नहीं जानते थे। अतः उन्हें लगा कि यह नया और कमजोर पहलवान चाँद सिंह के हाथों मारा जाएगा।

प्रश्न 9. शेर का बच्चा दंगल में किस प्रकार सब को चुनौती देता फिरता था ?

उत्तर- शेर का बच्चा अर्थात चाँदसिंह अपने साथ कुश्ती लड़ने के लिए दंगल में हर किसी को खुली चुनौती देता फिरता था।वह स्वयं को शेर का बच्चा सिद्ध करने के लिए कभी किलकारी मारता था। कभी उछल-कूदकर दुलकी मारता था।

प्रश्न 10. पंजाबी पहलवानों की जमायत चांद सिंह की आँखें क्यों पोंछ रही थी ?

उत्तर-चांदसिंह शेर के बच्चे की उपाधि लिए हुए था। उसे लुटन ने सबके सामने चित कर दिया था। इस कारण वह बहुत दुखी था। उसी के साथ उसी के पंजाबी पहलवान साथी भी बहुत दुखी थी। वह सब मिलकर चांदसिंह को सांत्वना दे रहे थे।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 -लुट्टन सिंह के सुख-चैन भरे दिनों का वर्णन अपने शब्दों कीजिए।

उत्तर-पहलवान लुट्टन के सुख-चैन भरे दिन तब शुरू हुए जब वह चाँद सिंह को कुश्ती हराकर पहलवान बना। इससे कीर्ति दूर-दूर तक फैल पौष्टिक भोजन राजा की श्रेह-दृष्टि मिलन वह सभी नामी पहलवानों का चश्मा पहनकर तथा अस्त-व्यस्त पगड़ी बाँधकर मस्त हाथी तरह चलता था।

प्रश्न 2 - महामारी में पहलवान के बेटों मृत्यु पर गाँव वालों की हिम्मत क्यों टूट गई?

उत्तर-महामारी में महामारी व सूखे के कारण चारों तरफ सन्नाटा और निराशा का माहौल था। रात्रि विभीषिका में चारों सन्नाटे को पहलवान की ढोलक ही चुनौती देती रहती थी। ढोल आवाज निराश लोगों के मन उमंग ओर उनके निराश ह्रदय में जीवंतता भरती थी,पहलवान के दोनों बेटों की मृत्यु से गांववालों की हिम्मत जवाब देने लगी उन्हें लगा अब पहलवान भी ढोलक नहीं बजाएगा अब वह भी अन्दर से टूट जाएगा।

प्रश्न -3 कहानी के किस-किस मोड़ लुट्टन के जीवन में क्या-क्या परिवर्तन आए?

उत्तर-ऐसे अनेक मोड हैं जहाँ उसके जीवन में परिवर्तन आए हैं. बचपन में ही नौ वर्ष की अल्पायु में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई और उसका पालन-पोषण उसकी विधवा सास ने किया। सास पर होने वाले अत्याचारों का बदला के लिए वह पहलवानी करने लगा। किशोरावस्था में उसने श्यामनगर दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को हरा 'राज-पहलवान' दर्जा हासिल किया। वह पंद्रह वर्ष तक राजदरबार में रहा।फिर दरबार से हटने पर वो गाँव लौटा और बड़ी कठिनाई से जीवन गुजरने लगा,महामारी आने पर तो लुट्टन का परिवार के साथ चपेट में आ गया ओर मृत्यु हो गयी |

प्रश्न 4 -विपरीत परिस्थितियों के बावजूद लुट्टन राज पहलवान बन गया?

जब नौ साल का था तब माता-पिता का देहांत हो गया था |अनाथ लुट्टन का पालन पोषण विधवा सास ने किया था उसकी सास को गाँव वाले परेशान किया करते थे। गांववालों से बदला लेने के लिए लुट्टन कसरत करके पहलवान बनकर उसने दंगल में चाँद सिंह नामक पहलवान को चित दिया। लुट्टन की हिम्मत तथा वीरता से प्रभावित होकर वहाँ के राजा श्यामानंद ने उसे पहलवान बना दिया।

निबंधात्मक प्रश्न

प्रश्न 1 . पहलवान की ढोलक गाँव के असहाय और मरणासन्न लोगों को बढ़ने का हौसला देती है। इस कथन के सन्दर्भ में तर्क प्रस्तुत कीजिये ।

उत्तर- लुट्टन पहलवान की डोलक बजती है, तो गाँव के मरीज और बेसहारा लोगों को उत्साह मिलता है। उन्हें मौत के मुँह में बैठकर भी हौसला मिलता है। हिम्मत मिलती है कहते हैं लोग शेर के आने की शंका से डरते हैं, मौत का आना आशंका थी। पहलवान की ढोलक की आवाज सुनते ही बड़े बच्चे जवानों की आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था। तब उन लोगों के बेजान अंगों में बिजली दौड़ जाती थी। उनकी तेजविहीन आखों के सामने दंगल का दृश्य उपस्थित हो जाता और वे मौत की आशंका को भूल जाते थे।

प्रश्न 2 . गाँव में महामारी फैलने और अपने बेटों की मृत्यु के बावजूद लुट्टन पहलवान के ढोल बजाते रहने का मर्म स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- लुटुन पहलवान का ढोल की आवाज के साथ गहरा रिश्ता था। यह आवाज उसकी नसों में सनसनी फैला देती थी।ढोल की आवाज उसे उत्तेजित करती थी। उसमें जीवंतता भरती थी। इस प्रकार जीवित रहने के लिए उसे ढोल की आवश्यकता थी| वह भी समझता था कि यह डोल सिर्फ उसका ही नहीं बल्कि औरों का भी उत्साह बढ़ाता है। इस कारण वह महामारी फैलने के दौरान भी ढोल बजाता रहा था कि वह अपनी हिम्मत न टूटने का पता लोगों को दे सके। यह अंतिम समय तक अपनी बहादुरी और दिलेरी का परिचय देना चाहता था अपने बेटों की मृत्यु के बावजूद भी उसने सन्नाटे को तोड़ने के लिए जीवन के उत्साह को बनाए रखने के लिए ढोल बजाना जारी रखा।

प्रश्न 3- यहाँ रात्रि की किस विभीषिका का वर्णन किया गया है? पहलवान की ढोलक पाठ के आधार उत्तर लिखिए।

उत्तर- यहाँ रात की उस विभीषिका का वर्णन किया गया है। जिसमें रोज कितने ही लोग महामारी की चपेट में आकर मर जाते थे। कितने ही लोग हैजा और मलेरिया से ग्रस्त होकर खांसते हुए दम तोड़ देते थे।

प्रश्न 4 . 'पहलवान की ढोलक आज हमारे द्वारा लोककला एवं लोक कलाकारों को अप्रासंगिक बना दिए जाने की करूण कथा भी है। आधुनिकता के दिखावे में हम उन्हें भूलते जा रहे हैं।" तर्कसहित प्रतिपादित कीजिए।

उत्तर-आधुनिकता की चमक-दमक और दिखावे वाली संस्कृति में सीधी-सादी-सरल लोक कलाएँ और कलाकार आधुनिक पीढ़ी को न तो प्रभावित कर पाते हैं और न ही मनोरंजक लगते हैं। आधुनिक परिवेश एवं तकनीक ने लोक कलाओं और खेलों के स्वरूप को बदल दिया है। राजा श्यामानंद लोक कलाओं और कलाकारों को राज्याश्रय तथा मान सम्मान देते थे। राजा साहब के मरते ही विलायत से लौटे राजकुमार द्वारा लुट्टन को निकाल कर पहलवानी जैसी लोककला को समाप्त कर दिया गया।इस तरह लुट्टन बेरोजगार होकर बेटों के साथ गाँव लौट गया|

प्रश्न 5 . लुटुन पहलवान ने ऐसा क्यों कहा होगा कि 'मेरा गुरु कोई पहलवान नहीं यही ढोल है?

उत्तर- लुट्टन पहलवान का कोई गुरु नहीं था। उसने स्वयं ही ढोल की आवाज से ही दांव-पेंच सीखे। ढोल की थाप में उसे एक-एक दाँव-पेच का मार्गदर्शन मिलता था। उसी थाप का अनुसरण करते हुए उसने चाँद सिंह को चित कर दिया। इस जीत में एकमात्र ढोल ही उसके साथ था। अतः जीतकर वह सबसे पहले ढोल के पास दौड़ा और उसे प्रणाम किया। ढोल की थाप ने उसे दंगल लड़ने की प्रेरणा दी। इसीलिए उसने कहा होगा कि उसका गुरु कोई पहलवान नहीं बल्कि यही ढोल है।

प्रश्न 6 . भाव स्पष्ट कीजिए- ढोलक की थाप मृत-गाँव में संजीवनी शक्ति भरती रहती थी।"

उत्तर- लुट्टन के ढोल की थाप मरणासन्न गाँववालों के लिए संजीवनी का काम करती थी। बीमार गाँववालों के मन में जिजीविषा पैदा करती, उनके मन में छाई उदासी भय को दूर करने में एवं मनोबल बढ़ाने में सहायक होती थी। ढोल की हर थाप से उनके मन में चेतना आ जाती थी। यह भय के सन्नाटे को चीरती थी। स्पंदनहीन और शक्तिहीन रंगों में अचानक बिजली की तरह खून दौड़ने लगता। मृत्यु के भय को जीवन पर हावी नहीं होने देती थी, उनमें मृत्यु को हँसकर स्वीकार करने के साहस का संचार करती थी।

प्रश्न 7 . 'पहलवान की ढोलक पाठ के आधार पर लुट्टन पहलवान का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर-लुट्टन पहलवान के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं हैं.

1 लुटुन सिंह लम्बा-चौड़ा, ताकतवर व आकर्षक व्यक्तित्व का स्वामी था।

2.बचपन में माता-पिता गुजर गए।उसकी पत्नी भी युवावस्था में ही चल बसी थी। उसके दोनों लड़के महामारी की भेंट चढ़ गए। इस प्रकार वह सदैव पीड़ित रहा।

3. लुट्टन साहसी था। उसने अपने साहस के बल पर चांद सिंह जैसे पहलवान को चुनौती दी तथा उसे हराया।

उत्तर- लुट्टन में संवेदना थी। वह अपनी सास पर हुए अत्याचारों को सहन नहीं कर सका और पहलवान बन गया। गाँव में महामारी के समय निराशा का माहौल था। ऐसे में वह रात में ढोल बजाकर लोगों में जीने के प्रति उत्साह पैदा करता था।

प्रश्न8. महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?

उत्तर -गाँव में सूर्योदय होते ही लोग खाँसते-फूंखते, कराहते अपने घरों से निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँढस् बंधाते थे। वे बचे हुए लोगों को शोक न करने की बात कहते थे। उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी। पर समय आने पर सूर्यास्त तो होते हैं| सभी लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज ही रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहती थी।

प्रश्न 9 . 'पहलवान की ढोलक कहानी के प्रारंभ में चित्रित प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर-कहानी के प्रारंभ में प्रकृति का स्वरूप कहानी की भयावहता की ओर संकेत करता है। रात के भयावह वर्णन में चारो तरफ सन्नाटा है। गाँव में हैजा और मलेरिया फैला हुआ था। चारों और भय दुख का सन्नाटा छाया हुआ था। अंधेरी रात भी सुपचाप आँसू बहाती सी प्रतीत हो रही थी। प्रकृति भी गाँव वालों के दुख से दुखी थी। सियारों की चीख-पुकार,के साथ ही उल्लुओं तथा बिल्लियों की डरावनी आवाज और कुत्तों का सामूहिक रुदन निस्तब्धता को कभी-कभी भंग कर रहे थे।

1.निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर उत्तर दीजिये -

शेर के बच्चे का असली नाम था चाँद सिंह।वह अपने गुरु पहलवान बादल सिंह के साथ ,पंजाब से पहले श्यामनगर मेले में आया था । सुन्दर जवान ,अंग -प्रत्यंग से सुन्दरता टपक पड़ती थी तीन दिनों में ही पंजाबी और पठान पहलवानों के गिरोह के अपनी जोड़ी और उम्र के सभी पट्ठों को पछाड़कर उसने 'शेर के बच्चे' की टाइटिल प्राप्त कर ली थी। इसलिए वह दंगल के मैदान में लंगोट लगाकर एक अजीब सी किलकारी भरकर छोटी दुलकी लगाया करता था। देशी नौजवान,पहलवान उससे लड़ने की कल्पना से भी घबराते थे। अपनी टाइटिल को सत्य प्रमाणित करने के लिए ही चाँद बीच-बीच में दहाड़ता फिरता था।

प्रश्न अ शेर के बच्चे का असली नाम क्या था?वह कहाँ से आया था?

उत्तर-शेर के बच्चे का असली नाम चाँद सिंह था वह पंजाब से आया था|

प्रश्न ब- चाँद के बच्चे को शेर सिंह की उपाधि कैसे मिली?

उत्तर-उसके चाल और दंगल में दहाड़ के कारण उपाधि मिली |

प्रश्न स- प्रस्तुत गद्यांश में देसी पहलवान से क्या आशय है?

उत्तर-देसी पहलवान से तात्पर्य आस पास के क्षेत्रीय पहलवानों से है |

प्रश्न द- अपनी उपाधि को सही प्रमाणित करने के लिए चाँद सिंह क्या करता था ?

उत्तर-अपनी उपाधि को सही प्रमाणित करने के लिए चाँद सिंह बीच बीच में दहाड़ें मारा करता था

****

पाठ- 17 शिरीष के फूल - हजारी प्रसाद द्विवेदी

सारांश- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी शिरीष को अद्भुत अवधूत मानते हैं, क्योंकि संन्यासी की भाँति वह सुख-दुख की चिंता नहीं करता। गर्मी, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है। शिरीष के फूल के माध्यम से मनुष्य की अजेय जिजीविषा, धैर्यशीलता और कर्तव्यनिष्ठ बने रहने के मानवीय मूल्यों को स्थापित किया गया है। लेखक ने शिरीष के कोमल फूल और कठोर फलों के द्वारा स्पष्ट किया है कि हृदय की कोमलता बचाने के लिए कभी-कभी व्यवहार की कठोरता भी आवश्यक हो जाती है। महान कवि कालिदास और कबीर भी शिरीष की तरह बेपरवाह, अनासक्त और सरस थे तभी उन्होंने इतनी सुन्दर रचनाएँ संसार को दीं। गांधीजी के व्यक्तित्व में भी कोमलता और कठोरता का अद्भुत संगम था। लेखक सोचता है कि हमारे देश

में जो मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर है, क्या वह देश को स्थिर नहीं रहने देगा? गुलामी, अशांति और विरोधी वातावरण के बीच अपने सिद्धांतों की रक्षा करते हुए। गाँधीजी जी स्थिर रह सके थे तो देश भी रह सकता है। जीने की प्रबल अभिलाषा के कारण विषम परिस्थितयों में भी यदि शिरीष खिल सकता है तो हमारा देश भी विषम परिस्थितियों में स्थिर रह कर विकास कर सकता है।

●'शिरीष के फूल' लेखक के 'कल्पलता' संग्रह में संकलित ललित निबंध है | शिरीष का फूल बसंत से लेकर आषाढ़ तक ग्रीष्म-ऋतु के चारों महीनों में भी फूलता रहता है | शिरीष के माध्यम से लेखक मनुष्य को अजेय जिजीविषा (जीने की इच्छा) और कर्तव्यशील रहने का संदेश देता है |

- शिरीष की तरह पलास,कनेर,अमलतास भी गर्मियों में खिलते हैं किन्तु सीमित अवधि के लिए | शिरीष का पेड़ बहुत घना व छायादार होता है |शिरीष इतना कोमल होता है कि वह भौरों के पैरों का दबाव सह सकता है,पक्षियों का नहीं | इसका फल इतना मजबूत होता है कि बहुत समय तक टिके रह सकता है | यह कोमलता व कठोरता का उदाहरण है |

- लेखक ने शिरीष की तुलना अवधूत/संन्यासी से की है | कभी-कभी कोमलता को बचाने हेतु व्यवहार में कठोरता आवश्यक हो जाती है | महान कवि कालिदास,कबीर भी शिरीष की तरह अनासक्त,बेपरवाह व सरस थे | बापू (गांधीजी) के व्यक्तित्व में भी कोमलता व कठोरता का अद्भुत संयोग था |

- लेखक का प्रिय कवि कालिदास थे क्योंकि वे अनासक्त रह सकते थे | उनकी मेघदूत रचना श्रेष्ठतम है | लेखक सोचता है जब शिरीष का फूल प्रतिकूल परिस्थितियों में भी खिल सकता है तो अशांति,आपराधिक घटनाओं व विरोधी वातावरण के बीच भी हमारा देश विकास कर सकता है |

<u>एक शब्द में उत्तर-</u>

प्रश्न 1 -शिरीष के फूल के लेखक का नाम लिखो **-** हजारी प्रसाद द्विवेदी।

प्रश्न 2 - अवधूत का अर्थ बताओ - संन्यासी ।

प्रश्न 3 **-**शिरीष का फल हमें किन लोगो कि याद दिलाता है? **-** राजनेताओं की ।

प्रश्न 4-शिरीष के फूल में आये किन्ही दो कवियों के नाम लिखो**-** कालिदास, तुलसीदास

प्रश्न 5-जो लोग समय के अनुसार नहीं चलते उनका क्या होता है?**-** वो पिछड़ जाते है

लघूतरात्मक-

प्रश्न 1 -**कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि की क्या विशेषता थी ?**

उत्तर-कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि बहुत सूक्ष्म, अंतर्भेदी और संपूर्ण थी| वे केवल बाहरी रूप-रंग और आकार को ही नहीं देखते थे बल्कि अंतर्मन की सुंदरता के भी पारखी थे| कालिदास की सौंदर्य-दृष्टि शारीरिक और मानसिक दोनों विशेषताओं से युक्त थी |

प्रश्न 2-**अनासक्ति का क्या आशय है?**

उत्तर-अनासक्ति का आशय है- व्यक्तिगत सुख-दुःख और राग-द्वेष से परे रहकर सौंदर्य के वास्तविक मर्म को जानना |

प्रश्न 3-**कालिदास, पंत और रवींद्रनाथ टैगोर में कौन सा गुण समान था?**

उत्तर-महाकवि कालिदास, सुमित्रानंदन पंत और गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर तीनों स्थिरप्रज्ञ और अनासक्त कवि थे | वे शिरीष के समान सरस और मस्त अवधूत थे |

प्रश्न 4-**रवींद्रनाथ राजोद्यान के सिंहद्वार के बारे में क्या संदेश देते हैं ?**

उत्तर-राजोद्यान के बारे में रवींद्रनाथ कहते हैं राजोद्यान का सिंहद्वार कितना ही सुंदर और गगनचुम्बी क्यों ना हो, वह अंतिम पड़ाव नहीं है| उसका सौंदर्य किसी और उच्चतम सौंदर्य की ओर किया गया संकेत मात्र है कि असली सौंदर्य इसे पार करने के बाद है। अत: राजोद्यान का सिंहद्वार हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है |

प्रश्न 5-**लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है?**

उत्तर-शिरीष के फूल को लेखक अवधूत मानता है जो हर परिस्थिति में खिला रहता है। सुख-दुःख में समान व्यवहार करता है और मुस्कुराता रहता है ।

प्रश्न 6 -**आरग्वध (अमलतास) की तुलना शिरीष से क्यों नहीं की जा सकती ?**

उत्तर-शिरीष के फूल भयंकर गरमी में खिलते हैं और आषाढ़ तक खिलते रहते हैं जबकि अमलतास का फूल केवल पन्द्रह-बीस दिनों के लिए खिलता है | उसके बाद अमलतास के फूल झड़ जाते हैं और पेड़ फिर से ठूँठ का ठूँठ हो जाता है | अमलतास अल्पजीवी है |

विपरीत परिस्थितियों को झेलता हुआ ऊष्ण वातावरण को हँसकर झेलता हुआ शिरीष दीर्घजीवी रहता है | यही कारण है कि शिरीष की तुलना अमलतास से नहीं की जा सकती |

प्रश्न 7 -**सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है ?**

उत्तर-शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है| जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है|बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है | शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

प्रश्न 8 **- काल देवता की मार से बचने का क्या उपाय बताया गया है?**

उत्तर-काल देवता कि मार से बचने का अर्थ है- मृत्यु से बचना | इसका एकमात्र उपाय यह है कि मनुष्य स्थिर न हो| गतिशील, परिवर्तनशील रहे | लेखक के अनुसार जिनकी चेतना सदा ऊर्ध्वमुखी (आध्यात्म की ओर) रहती है, वे टिक जाते हैं |

प्रश्न 9 -**शिरीष के फलों को राजनेताओं का रूपक क्यों दिया गया है?**

उत्तर-शिरीष के फल उन बूढ़े, ढीठ और पुराने राजनेताओं के प्रतीक हैं जो अपनी कुर्सी नहीं छोड़ना चाहते | अपनी अधिकार-लिप्सा के लिए नए युवा नेताओं को आगे नहीं आने देते | शिरीष के नए फलों को जबरदस्ती पुराने फलों को धकियाना पड़ता है | राजनीति में भी नई युवा पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी को हराकर स्वयं सत्ता सँभाल लेती है |

प्रश्न 10**- गाँधीजी और शिरीष की समानता प्रकट कीजिए |**

उत्तर-जिस प्रकार शिरीष चिलचिलाती धूप, लू, वर्षा और आँधी में भी अविचल खड़ा रहता है, अनासक्त रहकर अपने वातावरण से रस खींचकर सरस, कोमल बना रहता है, उसी प्रकार गाँधी जी ने भी अपनी आँखों के सामने आजादी के संग्राम में अन्याय, भेदभाव और हिंसा को झेला | उनके कोमल मन में एक ओर निरीह जनता के प्रति असीम करुणा जागी वहीं वे अन्यायी शासन के विरोध में डटकर खड़े हो गए |

पठित गद्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

गद्यांश-1

जहाँ बैठ के यह लेख लिख रहा हूँ उसके आगे-पीछे दायें-बायें, शिरीष के अनेक पेड़ हैं। जेठ की जलती धूप में, जबकि धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी, शिरोष नीचे से ऊपर तक फूलों से लद गया था। कम फूल इस प्रकार की गरमी में फूल सकने की हिम्मत करते हैं। कर्णिकार और आरग्वध (अमलतास) की बात मैं भूल नहीं रहा हूँ। वे भी आस-पास बहुत है। लेकिन शिरीष के साथ आरग्वध की तुलना नहीं की जा सकती। यह पंद्रह-बीस दिन के लिए फूलता है, वसंत ऋतु के पलाश की भाँति। कबीरदास को इस तरह पंद्रह दिन के लिए लहक उठना पसंद नहीं था। यह भी क्या कि दस दिन फूले और फिर खंखड़-के-खंखड़- 'दिन दस फूला फूलिके, खंखड़ भया पलास।" ऐसे दुमदारों से तो लँडूरे भले। फूल है शिरोष। वसंत के आगमन के साथ लहक उठता है, आषाढ़ तक जो निश्चित रूप से बना रहता है। मन रम गया तो भादों में भी निर्धात फूलता रहता है।

(i) धरित्री निर्धूम अग्निकुंड बनी हुई थी' का भाव है-

(क) धरती पर अग्निकुंड बनाया गया था।

(ख) गरमी अपनी चरम सीमा पर थी।

(ग) धरती अग्निकुंड के समान जल रही थी।

(घ) धरती पर अग्निकुंड ही अग्निकुंड थे।

(ii) आरग्वध किस पेड़ का नाम है?

(क) आम

(ग) अमलतास

(ख) अमरूद

(घ) शिरीष

(iii) शिरीष के साथ अमलतास की तुलना क्यों नहीं की जा सकती?

(क) अमलतास पर कम फूल खिलने के कारण

(ख) अमलतास के फूल अल्प अवधि तक फूलने के कारण

(ग) अमलतास के फूल सुंदर न होने के कारण

(घ) अमलतास के फूल बहुत छोटे होने के कारण

(iv) कबीर दास को क्या पसंद नहीं था?

(क) शिरीष के फूलों का खिलना

(ख) शिरीष के फूलों का आकार

(ग) शिरीष के फूलों का रंग

(घ) अमलतास के फूलों का 15-20 दिनों के लिए खिलना

(v) शिरीष के फूलों को कब से कब तक खिला हुआ देखा जा सकता है?

(क) वसंत के आगमन से वसंत के प्रस्थान तक

(ख) वसंत के आगमन जेठ माह तक

(ग) वसंत के आगमन से सावन तक

(घ) वसंत के आगमन से आषाढ़ महीने तक

उत्तर- (i) (ख), (ii)(ग), (iii)(ख), (iv)(घ), (v)(घ)

गद्यांश-2

मैं सोचता हूँ कि पुराने की यह अधिकार-लिप्सा क्यों नहीं समय रहते सावधान हो जाती ? जरा और मृत्यु, ये दोनों ही जगत के अंतिपरिचित और अतिप्रामाणिक सत्य हैं। तुलसीदास ने अफसोस के साथ इनकी सच्चाई पर मुहर लगाई थी-'धरा को प्रमान यही तुलसी, जो फरा सो झरा, जो बरा सो बुताना' मैं शिरीष के फूलों को देखकर कहता हूँ कि क्यों नहीं फलते ही समझ लेते बाबा कि झड़ना निश्चित है! सुनता कौन है? महाकालदेवता सपासप कोड़े चला रहे हैं, जीर्ण और दुर्बल झड़ रहे हैं, जिनमें प्राणकण थोड़ा भी ऊर्ध्वमुखी हैं, वे टिक जाते हैं। दुरंत प्राणधारा और सर्वव्यापक कालाग्नि का संघर्ष निरंतर चल रहा है। मूर्ख समझते हैं कि जहाँ बने हैं, वहीं देर तक बने रहें तो कालदेवता की आँख बचा जाएँगे। भोले हैं वे। हिलते-डुलते रहो, स्थान बदलते रहो, आगे की और मुँह किए रहो तो कोड़े की मार से बच भी सकते हो। जमे कि मरे !

(i) गद्यांश में किस अधिकार लिप्सा की ओर संकेत किया गया है?

(क) अपनी जगह पर जमे रहने के अधिकार का लालच

(ख) किसी अन्य के लिए अधिकार त्यागने की इच्छा

(ग) बलपूर्वक अधिकार छीन लेने का लालच

(घ) इनमें से कोई नहीं

(ii) जगत के अतिपरिचित और अतिप्रमाणित सत्य क्या है?

(क) वृद्धावस्था।

(ख) मृत्यु।

(ग) दोनों ही संसार के अतिपरिचित और अति प्रामाणिक सत्य हैं।

(घ) दोनों का ही संसार में स्वागत होता है।

(iii) "जो फरा सो झरा' में जीवन के किस सत्य का उद्घाटन हुआ है?

(क) गिरने के लिए ही फूल, फल बनते हैं।

(ख) जो फलते हैं वे गिरते भी हैं।

(ग) फलना और गिरना देखने के लिए लोग धरती पर आते हैं।

(घ) जो इस दुनिया में आया है वह एक दिन अवश्य नष्ट होता है।

(iv) 'महाकाल देवता सपासप कोड़े चला रहे हैं'- का आशय इनमें से क्या है?

(क) महाकाल लोगों को चेतावनी दे रहे हैं।

(ख) महाकाल लोगों को दंड दे रहे हैं।

(ग) महाकाल के कोड़ों की आवाज आकर्षक है।

(घ) महाकाल देवता अपने कोड़ों की मार से लोगों के प्राण ले रहे हैं।

(v) किस प्रकार काल देवता के कोड़ों की मार से बचा जा सकता है ?

(क) हिलते-डुलते रहने पर। (ख) स्थान बदलते रहने पर।

(ख) आगे की ओर मुँह किए रहने पर। (घ) 'क','ख' और 'ग' तीनों।

उत्तर (i) (क),(ii) (ग), (iii) (घ). (iv) (घ),(v) (घ)

गद्यांश-2

शिरीष तरु सचमुच पक्के अवधूत की भाँति मेरे मन में ऐसी तरंगें जगा देता है जो ऊपर की ओर उठती रहती हैं। इस चिलकती धूप में इतना सरस वह कैसे बना रहता है? क्या ये बाह्य परिवर्तन-धूप, वर्षा, आँधी, लू-अपने आपमें सत्य नहीं है? हमारे देश के ऊपर से जो यह मार-काट, अग्निदाह, लूट-पाट, खून-खच्चर का बवंडर बह गया है, उसके भीतर भी क्या स्थिर रहा जा सकता है ? शिरीष रह सका है। अपने देश का एक बूढ़ा रह सका था। क्यों मेरा मन पूछता है कि ऐसा क्यों संभव हुआ है? क्योंकि शिरीष भी अवधूत है।

(i) शिरीष का वृक्ष किस प्रकार की भावना जगाता है ?

(क) संघर्षशीलता (ख) सरसता

(ग) जुझारूपन (घ) उपर्युक्त सभी

(ii) शिरीष के पेड़ को अवधूत क्यों कहा गया है?

(क) योगियों की तरह कठिन परिस्थितियों में मस्त रहना।

(ख) गरमी तथा उमस में फूल धारण किए रहना।

(ग) विपरीत परिस्थितियों में भी सरस बने रहना।

(घ) 'क', 'ख' और 'ग' तीनों

(iii) देश के ऊपर से कौन-सा बवंडर गुजरने का संकेत नहीं किया गया है?

(क) जगह-जगह हुए अग्निकांड (ख) हिंसा और रक्तपात

(ग) रूढ़िवादी विचारधारा (घ) चोरी, डकैती तथा लूटपाट

(iv) अंत में लेखक ने शिरीष की तुलना किसके साथ की है?

(क) महात्मा गांधी (ख) सुभाष चंद्र बोस

(ग) सरदार पटेल (घ) लाल बहादुर शास्त्री

(v) जेठ माह की कठिन धूप में भी हरा-भरा रहने वाला शिरीष हमें क्या प्रेरणा देता है?

(क) सदैव प्रसन्न रहने की

(ख) हर परिस्थिति से समझौता कर लेने को

(ग) हर परिस्थिति में डटे रहने की

(घ) सरसता के साथ कठोरता बनाए रखने की

उत्तर (i) (घ),(ii) (घ), (iii) (ग),(iv) (क) (v) (ग)

अति महत्वपूर्ण प्रश्न

प्रश्न-1.लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना ? (सी.बी.एस.ई.2012,2014)

उत्तर- शिरीष की तुलना अवधूत से करने के पीछे दोनों के स्वभाव में साम्यता होना है | जिस प्रकार संन्यासी ऋतुओं/मौसमों की परवाह किए बिना अपनी साधना में लीन रहते है,ठीक उसी प्रकार शिरीष वसंत से लेकर आषाढ़-भादों तक खिला रहता है | जब पूरा संसार प्रचंड गर्मी से जल रहा होता है,उस समय भी शिरीष फलता-फूलता रहता है | शिरीष घना व छायादार होता है ,वह मनुष्य को विषय-वासनाओं से ऊपर उठकर अजेयता से जीवन जीने का संदेश देता है|

प्रश्न-2.शिरीष,अवधूत और गांधी एक-दूसरे के समान कैसे हैं ? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए (सी.बी.एस.ई. 2013)

उत्तर- शिरीष व अवधूत दोनों ही कठिन परिस्थितियों में बिना घबराएँ हर बाहरी कठिनाइयों का सामना करते हैं | तपती जेठ की गर्मी में भी शिरीष फलता-फूलता रहता है,ठीक इसी प्रकार अवधूत भी आनंदपूर्वक अपनी साधना में लीन रहकर लोगों को सुख देता है | महात्मा गांधी के व्यक्तित्व में भी कोमलता व कठोरता का गुण था | वह भी देश में फैली अराजकता को देखकर भी विचलित नहीं हुए |

प्रश्न-3.हृदय की कोमलता को बचाने के लिए व्यवहार की कठोरता भी कभी-कभी जरूरी भी हो जाती है-प्रस्तुत पाठ के आधार पर स्पष्ट करें | (सी.बी.एस.ई. 2013)

उत्तर- शिरीष का फूल इतना कोमल होता है वह केवल भौरों के पैरों का दबाव झेल सकता है,पक्षियों का नहीं | इसका फल इतना मजबूत होता है कि नए फूल निकल आने पर भी अपना स्थान नहीं छोड़ता | इसी प्रकार मनुष्य को भी कई बार अपनी कोमलता को बचाने हेतु स्वभाव में कठोरता अपनानी पड़ती है |अर्थात मन में कोमल व कठोर भावों का संयोजन होना अपरिहार्य है |

अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न

1. लेखक ने शिरीष की तुलना किससे की है और क्यों?

उत्तर- लेखक ने शिरीष की तुलना कालजयी अवधूत से की है । क्योंकि अवधूत प्रत्येक स्थिति में सामान्य रहता है । सुख - दुख, संपत्ति-विपत्ति में भी उसका मन कोमल तथा स्थिर रहता है । ठीक उसी तरह शिरीष हर स्थिति - गर्मी-सर्दी-लू में हरा भरा रहाता है । मस्त एवं बेपरवाह रहता है ।

2. एक ही व्यक्ति कोमल और कठोर दोनों कैसे हो सकता है? स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर- क्योंकि कोमलता का संबन्ध मन की दयालुता एवं सहानुभूति जैसे भावें से होता है ।दयालु और कोमल हृमदय वाला व्यक्ति अपने सिद्धान्त और व्यवहार में कठोर हो सकता है ।शिरीष के फूल कोमल अवश्य होते है किन्तु उनके फल अत्यन्त कठोर होते है ।

3. शिरीष की तुलना आज के राजनैतिक नेताओ से क्यों की गई है ?

उत्तर- इसलिए कि आज के राजनैतिक नेता बदले हुए समय को नहीं पहचानते । वे अपनी कुर्सी छोडने के लिए कभी तैयार नहीं होते । ठीक इसी तरह शिरीष के पुराने फल बुरी तरह खटखडाते रहते है तथा जब तक नए फल उन्हें धक्का मारकर निकाल नहीं देता तब तक जमे रहते हैं ।

4. शिरीष के फूल निबंध का सन्देश स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- .यह निबंघ विपरीत और कठिन परिस्थितियों में भी जीवन की प्रेरणा और इच्छा शक्ति का परिचय देता हे । मानव जीवन में सुख -दुख आशा-निराशा राग-द्वेष, प्रेम-विरह आदि परिस्थितियों सें जूझना पड़ता है । लेकिन ऐसी परिस्थितियों में वही व्यक्ति जीता है जो इसके प्रति संघर्ष करता है । महान वही बनता है जो प्रतिकुल पारिस्थितियों से संघर्ष कर उसे अपने अनुकूल बनाने की शक्ति रखना है । परिस्थितियों से हार माननेवाला जीवन राह में ही नष्ट हो जाता है ।

****

पाठ-18 श्रम विभाजन और जाति प्रथा,मेरी कल्पना का आदर्श समाज- डॉ. आम्बेडकर

बहुविकल्पीय प्रश्न-

1.डॉ भीमराव आंबेडकर की दृष्टि में भाईचारे का वास्तविक स्वरूप किसकी तरह होना चाहिए?

अ. दूध-भात के मिश्रण की तरह
ब. दूध-पानी के मिश्रण की तरह।
स. तिल-चावल के मिश्रण की तरह।
द. पानी-नमक के मिश्रण की तरह

2.सभ्य समाज के लिए जरूरी है-.

अ.जाति प्रथा ब. श्रम विभाजन स.तकनीक द.धन

3.आधुनिक सभ्य समाज श्रम विभाजन को आवश्यक क्यों मानता है?

अ. भाईचारे के लिए
ब. रूढ़िवादिता के लिए
स. कार्य-कुशलता के लिए
द. इनमें से कोई नहीं

4. जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है क्योंकि-

अ. क्योंकि यह व्यक्ति के स्वतंत्र रूप से व्यवसाय चयन को बाधित करता है।
ब. क्योंकि यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है।
स. क्योंकि यह व्यक्ति पर जन्म से ही थोपा गया है।
द. उपर्युक्त सभी

5. फ्रांसीसी क्रांति के नारे में कौन-सा शब्द विवाद का विषय रहा था?

अ. उत्तराधिकार ब. समता स. अनेकता द. स्वतंत्रता

6. जाति प्रथा आधारित श्रम का बँटवारा है |

अ. व्यक्ति की रुचि पर
ब. व्यक्ति की कार्यकुशलता पर
स. व्यक्ति की भावना पर
द. जन्म के आधार पर

7. डॉ. भीमराव आंबेडकरभारत में बेरोजगारी के प्रमुख कारणों में से एक मानते है |

अ. जाति प्रथा को
ब. रोजगार की कमी को
स. अप्रशिक्षित आबादी को
द. अशिक्षा को

8. फ्रांसीसी क्रांति के नारे में कौन-सा शब्द विवाद का विषय रहा है?

अ. राजतन्त्र ब. स्वतंत्रता

स. समता द. भाईचारा

9. जाति प्रथा मानव को स्वाभाविक प्रेरणा रूचि व आत्मशक्ति को दबाकर उसे क्या बना देती है?

अ. जलील ब. ईमानदार

स. निष्क्रिय द. कर्मशील

10. वर्तमान समय में विडम्बना का बाद क्या है?

अ. साम्यवाद ब. जातिवाद

स. प्रयोगवाद द. इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला- 1 ब, 2 ब, 3 स, 4 द, 5 ब, 6 द, 7 अ, 8 स, 9 स, 10 ब

(सत्य /असत्य)

1.श्रम विभाजन सभ्य समाज की आवश्यकता है। (सत्य / असत्य)

2.हिन्दू समाज में जाति प्रथा श्रम विभाजन का अनुपम उदाहरण है। (सत्य / असत्य)

3.प्रत्येक व्यक्ति को विकास करने का अवसर मिलना चाहिए। (सत्य / असत्य)

4.भारत में जाति प्रथा के ही कारण समाज ऊंच-नीच में बंटा हुआ है। (सत्य / असत्य)

5.जाति प्रथा में जन्म के आधार पर श्रम का विभाजन होता है। (सत्य / असत्य)

उत्तरमाला- 1. सत्य , 2. असत्य ,3. सत्य ,4. सत्य ,5. सत्य

अभिकथन- तर्क (Assertion and reasoning)

1.अभिकथन- जातिवाद के पोषक जातिवाद का समर्थन करते हैं।

कारण- आधुनिक सभ्य समाज कार्य-कुशलता' के लिए श्रम विभाजन को आवश्यक मानता है।

(क) कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या है।

(ख) कथन और कारण दोनों सही है परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, कारण गलत है।

(घ)कथन गलत है, कारण सही है।

2.अभिकथन- भारत की जाति व्यवस्था विश्व के किसी भी समाज में नहीं पाया जाता।

कारण- यह श्रमिकों का अस्वाभाविक विभाजन ही नहीं करती बल्कि विभाजित वर्गों को एक-दूसरे की अपेक्षा ऊँच-नीच भी करार देती है।

(क) कथन और कारण दोनों सही है और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन और कारण दोनों सही है, परन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, कारण गलत है। (घ)कथन गलत है, कारण सही है।

3.अभिकथन- भारत की जातिप्रथा स्वाभाविक विभाजन नहीं है।

कथन -यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है।

(क) कथन और कारण दोनों सही है और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।

(ख) कथन और कारण दोनों सही हैपरन्तु कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(ग) कथन सही है, कारण गलत है।

(घ) कथन गलत है, कारण सही है।

4.कथन (A) डॉक्टर अंबेडकर जी ने अपने आदर्श समाज के भाईचारा में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है।

कारण (R) समाज स्त्री और पुरुष दोनों से ही बनता है।

क. कथन A और कारण दोनो सही हैं और कारण, कथन A की सही व्याख्या है।

ख. कथन A और कारण दोनों सही हैं और कारण R. कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

ग. कथन A सही है, किंतु कारण 8 गलत है |

घ. कथन A गलत है, किंतु कारण सही है |

5.कथन (A) जाति प्रथा आधारित भारतीय समाज में कोई कमी नहीं है।

कारण (R) भारतीय समाज में जातियों के आधार पर जीवन के अनेक क्षेत्र में भेदभाव पूर्ण व्यवहार होता है जो एक शब्द समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता है।

क. कथन A और कारण दोनो सही हैं और कारण, कथन A की सही व्याख्या है।

ख. कथन A और कारण दोनों सही हैं और कारण R. कथन A की सही व्याख्या नहीं है।

ग. कथन A सही है, किंतु कारण 8 गलत है |

घ. कथन A गलत है, किंतु कारण सही है |

उत्तरमाला- 1. क , 2. क , 3. क , 4. क , 5. घ

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न-

1. बेरोजगारी का प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण क्या है ?

उत्तर- बेरोजगारी का एक प्रमुख व प्रत्यक्ष कारण जाति-प्रथा के कारण पेशा बदलने की अनुमति न होना है |

2.लेखक का आदर्श समाज किस पर आधारित होगा ?

उत्तर- लेखक का आदर्श समाज भ्रातृता, स्वतंत्रता व समानता पर आधारित होगा |

3.लेखक के अनुसार भाईचारे का वास्तविक रूप कैसा होना चाहिए ?

उत्तर- लेखक के अनुसार भाईचारे का वास्तविक रूप दूध पानी के मिश्रण की तरह होना चाहिए|

4.लेखक आदर्श समाज की गतिशीलता पर क्या टिप्पणी करते हैं ?

उत्तर- लेखक यह कहते है कि आदर्श समाज की गतिशीलता इतनी होनी चाहिए कि कोई भी परिवर्तन समाज में तुरंत प्रसारित हो जाए |

5.लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र क्या है ?

उत्तर- लेखक की दृष्टि में लोकतंत्र सामाजिक जीवनचर्या की एक रीति व समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान- प्रदान का नाम है |

लघूत्तरात्मक प्रश्न-

1.दासता की व्यापक परिभाषा दीजिए |

उत्तर- दासता केवल कानूनी पराधीनता नहीं है| सामाजिक दासता की स्थिति में कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा तय किए गए व्यवहार और कर्तव्यों का पालन करने को विवश होना पड़ता है | अपनी इच्छा के विरुद्ध पैतृक पेशे अपनाने पड़ते हैं |

2.मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर रहती है ?

उत्तर- मनुष्य की क्षमता मुख्यत: तीन बातों पर निर्भर रहती है-

i-शारीरिक वंश परंपरा

ii-सामाजिक उत्तराधिकार

iii-मनुष्य के अपने प्रयत्न

3.समता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है ?

उत्तर- जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार ही समता है। राजनेता के पास असंख्य लोग आते हैं, उसके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती सबकी सामाजिक पृष्ठभूमि क्षमताएँ, आवश्यकताएँ जान पाना उसके लिए संभव नहीं होता अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार के प्रयास करने चाहिए ।

निबंधात्मक प्रश्न-

1.जाति प्रथा को श्रम विभाजन का ही एक रूप न मानने के पीछे आंबेडकर के क्या तर्क हैं? जाति प्रथा को श्रम विभाजन का आधार क्यों नहीं माना जा सकता? पाठ से उदाहरण देकर समझाइए।

उत्तर- 1. जाति प्रथा श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिक विभाजन भी कराती है। सभ्य समाज में श्रमिकों का विभिन्न वर्गों में विभाजन अस्वाभाविक है।

2. जाति प्रथा में श्रम विभाजन मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है। इसमें मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा निजी क्षमता का विचार किए बिना किसी दूसरे के द्वारा उसके लिए पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। यह जन्म पर आधारित होता है।

3. भारत में जाति प्रथा मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध देती है, भले ही वह पेशा उसके लिए अनुपयुक्त या अपर्याप्त क्यों न हो। इससे उसके भूखों मरने की नौबत आ जाती है।

2. जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है? क्या यह स्थिति आज भी है?

उत्तर- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण भी बनती रही है। भारत में जाति प्रथा के कारण व्यक्ति को जन्म के आधार पर एक पेशे से बांध दिया जाता था। इस निर्णय में व्यक्ति की रुचि, योग्यता या कुशलता का ध्यान नहीं रखा जाता था। उस पेशे से गुजारा होगा या नहीं. इस पर भी विचार नहीं किया जाता था। इस कारण भुखमरी की स्थिति आ जाती थी। इसके अतिरिक्त संकट के समय भी मनुष्य को अपना पेशा बदलने की अनुमति नहीं दी जाती थी। भारतीय समाज पैतृक पेशा अपनाने पर ही जोर देता या उद्योगधंधों की विकास प्रक्रिया तकनीक मे कारण कुछ व्यवसायी रोजगारहीन हो जाते थे। अतः यदि वह व्यवसाय बदला जाए तो बेरोजगारी बढ़ती है। आज भारत की स्थिति बदल रही है। सरकारी कानून सामाजिक सुधार विश्वव्यापी परिवर्तनों से जाति प्रथा के बंधन से मुक्ति दी गई है । आज अपनी जाति से अलग पेशा अपना रहे है।

3. लेखक के मत से 'दासता' की व्यापक परिभाषा क्या हैं? समझाइए।

उत्तर- लेखक के अनुसार, दासता केवल कानूनी पराधीनता को ही नहीं कहा जा सकता। 'दासता' में वह स्थिति भी सम्मिलित है। जिससे कुछ व्यक्तियों को दूसरे लोगों के द्वारा निर्धारित व्यवहार एवं कर्तव्यों का पालन करने के लिए विवश होना पड़ता है। यह स्थिति कानूनी पराधीनता न होने पर भी पाई जा सकती है।

4.शारीरिक वंश परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद समता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह क्यों करते हैं? इसके पीछे उनके क्या तर्क है?

उत्तर- शारीरिक वंश-परंपरा और सामाजिक उत्तराधिकार की दृष्टि से मनुष्यों में असमानता संभावित रहने के बावजूद असमानता को एक व्यवहार्य सिद्धांत मानने का आग्रह करते है क्योंकि समाज को अपने सभी सदस्यों से अधिकतम उपयोगिता तभी प्राप्त हो सकती है जब उन्हें आरंभ से ही समान अवसर एवं समान व्यवहार उपलब्ध कराए जाएं। व्यक्ति को अपनी क्षमता के विकास के लिए समान अवसर देने चाहिए। अतः सभी व्यक्तियों के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।

5.सही में अबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा है, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर- आंबेडकर ने भावनात्मक समत्व की मानवीय दृष्टि के तहत जातिवाद का उन्मूलन चाहा, जिसकी प्रतिष्ठा के लिए भौतिक स्थितियों और जीवन सुविधाओं का तर्क दिया है। हम उनकी

इस बात से सहमत है। आदमी की भौतिक स्थितियाँ उसके स्तर को निर्धारित करती है। जीवन जीने की सुविधाएँ मनुष्य को सही मायनों में मनुष्य सिद्ध करती है। व्यक्ति का रहन सहन और चाल चलन काफी हद तक उसकी जातीय भावना को खत्म कर देता है।

6.आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है अथवा नहीं? आप इस 'भातृता' शब्द से कहाँ तक सहमत हैं? यदि नहीं, तो आप क्या शब्द उचित समझेंगे / समझेगी?

उत्तर- आदर्श समाज के तीन तत्वों में से एक 'भातृता' को रखकर लेखक ने अपने आदर्श समाज में स्त्रियों को भी सम्मिलित किया है। लेखक समाज की बात कर रहा है और समाज स्त्री-पुरुष दोनों से मिलकर बना है। उसने आदर्श समाज में हर आयुवर्ग को शामिल किया है। 'भ्रातृता' शब्द संस्कृत का शब्द है जिसका अर्थ है-भाईचारा यह सर्वथा उपयुक्त है। समाज में भाईचारे के सहारे ही संबंध बनते है। कोई व्यक्ति एक दूसरे से अलग नहीं रह सकता। समाज में भाईचारे के कारण ही कोई परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे छोर तक पहुंचता है।

7.लेखक ने जाति-प्रथा की किन-किन बुराइयों का वर्णन किया है?

उत्तर-1. यह श्रमिक विभाजन भी करती है।

2. यह श्रमिकों से ऊँच-नीच का स्तर तय करती है।
3. यह जन्म के आधार पर पेशा तय करती है।
4. यह संकट के समय पेशा बदलने की अनुमति नहीं देती, चाहे व्यक्ति भूखा मर जाए।
5. जाति प्रथा के कारण थोपे गए व्यवसाय में व्यक्ति रुचि नहीं लेता।

8. जाति और श्रम-विभाजन में बुनियादी अंतर क्या है? श्रम विभाजन और जाति प्रथा के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- जाति और श्रम विभाजन में बुनियादी अंतर यह है कि -

1. जाति-विभाजन, श्रम विभाजन के साथ-साथ श्रमिकों का भी विभाजन करती है।

2. सभ्य समाज में श्रम विभाजन आवश्यक है परंतु श्रमिकों के वर्गों में विभाजन आवश्यक नहीं

3. जाति विभाजन में श्रम विभाजन या पेशा चुनने की छूट नहीं होती जबकि श्रम विभाजन में ऐसी छूट हो सकती है। जाति-प्रथा विपरीत परिस्थितियों में भी रोजगार बदलने का अवसर नहीं देती, जबकि श्रम विभाजन में व्यक्ति ऐसा कर सकता है।

9. समता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है ?

उत्तर- जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार ही समता है। राजनेता के पास असंख्य लोग आते हैं, उसके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती। सब की सामाजिक पृष्ठभूमि, क्षमताएँ, आवश्यकताएँ जान पाना उसके लिए संभव नहीं होता । अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार के प्रयास करने चाहिए ।

10.जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण कैसे है बनती जा रही है?

उत्तर- जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का कारण बनती जा रही है क्योंकि:
i-मनुष्य के पेशे का पूर्व निर्धारण |
ii-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी पेशा बदलने की अनुमति न देना |
iii-अपने पूर्व निर्धारित पेशे के प्रति व्यक्ति की अरुचि |

11.राजनीतिज्ञ को व्यवहार्य सिद्धांत की आवश्यकता क्यों रहती हैं? यह सिद्धांत क्या हो सकता हैं?

उत्तर- एक राजनीतिज्ञ पुरुष का बहुत बड़ी जनसंख्या से पाला पड़ता है। अपनी जनता से व्यवहार करते समय, राजनीतिज्ञ के पास न तो इतना समय होता है न प्रत्येक के विषय में इतनी जानकारी ही होती है, जिससे वह सबकी अलग-अलग आवश्यकताओं तथा क्षमताओं के आधार पर वांछित व्यवहार अलग-अलग कर सके।

12.अम्बेडकर की कल्पना का समाज कैसा होगा?

उत्तर- अम्बेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता व भाईचारे पर आधारित होगा। सभी को विकास के समान अवसर मिलेंगे तथा जातिगत भेदभाव का नामोनिशान नहीं होगा। समाज में कार्य करने वाले को सम्मान मिलेगा।

13.'आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा हैं |"-स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- आर्थिक पहलू से भी जाति-प्रथा हानिकारक प्रथा है। क्योंकि यह मनुष्य की स्वाभाविक प्रेरणारुचि व आत्म-शक्ति को दबाकर उन्हें अस्वाभाविक नियमों में जकड़कर निष्क्रिय बना देती है। साथ ही जाति-प्रथा से मनुष्य अपने कार्य का निर्धारण नहीं कार पता है |इस कारण यह बहुत ही हानिकारक प्रथा बन गई |

****

वितान भाग-2 पाठ 1 सिल्वर वैडिंग -मनोहर श्याम जोशी

पाठ का सार- सिल्वर वैडिंग कहानी की रचना मनोहर श्याम जोशी ने की है| इस पाठ के माध्यम से पीढ़ी के अंतराल का मार्मिक चित्रण किया गया है| आधुनिकता के दौर में, यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों को हर हाल में जीवित रखना चाहते हैं| उनका उसूलपसंद होना दफ्तर एवम घर के लोगों के लिए सरदर्द बन गया था | यशोधर बाबू को दिल्ली में अपने पाँव जमाने में किशनदा ने मदद की थी, अतः वे उनके आदर्श बन गए| दफ्तर में विवाह की पच्चीसवीं सालगिरह के दिन ,दफ्तर के कर्मचारी, मेनन और चड्ढा उनसे जलपान के लिए पैसे माँगते हैं | जो वे बड़े अनमने ढंग से देते हैं क्योंकि उन्हें फिजूलखर्ची पसंद नहीं |

यशोधर बाबू के तीन बेटे हैं| बड़ा बेटा भूषण, विज्ञापन कम्पनी में काम करता है| दूसरा बेटा आई. ए. एस. की तैयारी कर रहा है और तीसरा छात्रवृति के साथ अमेरिका जा चुका है| बेटी भी डाक्टरी की पढ़ाईं के लिए अमेरिका जाना चाहती है, वह विवाह हेतु किसी भी वर को पसंद नहीं करती|

यशोधर बाबू बच्चों की तरक्की से खुश हैं किंतु परंपरागत संस्कारों के कारण वे दुविधा में हैं| उनकी पत्नी ने स्वयं को बच्चों की सोच के साथ ढाल लिया है| आधुनिक न होते हुए भी, बच्चों के ज़ोर देने पर वे अधिक माडर्न बन गई है|

बच्चे घर पर सिल्वर वेडिंग की पार्टी रखते हैं, जो यशोधर बाबू के उसूलों के खिलाफ था| उनका बेटा उन्हें ड्रेसिंग गाउन भेंट करता है तथा सुबह दूध लेने जाते समय उसे ही पहन कर जाने को कहता है, जो उन्हें अच्छा नहीं लगता| बेटे का ज़रूरत से ज़्यादा तनख्वाह पाना, तनख्वाह की रकम स्वयं खर्च करना, उनसे किसी भी बात पर सलाह न माँगना और दूध लाने का जिम्मा स्वयं न लेकर उन्हें ड्रेसिंग गाउन पहनकर दूध लेने जाने की बात कहना जैसी बातें, यशोधर बाबू को बुरी लगती है| जीवन के इस मोड़ पर वे स्वयं को अपने उसूलों के साथ अकेले पाते हैं |

मुख्य पात्र एवं उनका परिचय-

यशोधर पंत (वाई.डी. पंत) : कहानी के मुख्य पात्र सेक्शन ऑफिसर के पद पर कार्यरत यशोधर बाबू परंपरागत मूल्यों का अनुकरण करने वाले है। अपने बच्चों की प्रगति से खुश होते हैं लेकिन बच्चों का रिश्तेदारों के प्रति उदासीन रवैया उन्हें कष्ट देता है। पारंपरिक मूल्यों से जकड़े होने एवं आधुनिकता को जल्दी स्वीकार न करने के कारण हमेशा अपने आप को अनिर्णय की स्थिति में पाते हैं। यशोधर पंत की पत्नी बच्चों की खुशी के आगे अपने आप को समय के अनुसार बदलने में सक्षम होती है। अधिक फैशन में रहने के कारण यशोधर बाबू उन्हें शानयल बुढ़िया या बूढ़े मुँह मुहासे लोग करे तमाशे कहकर उनका मजाक उड़ाते हैं|

किशन दा - जीवन भर अविवाहित रहे।समाज सेवा एवं पहाड़ से आने वाले लोगों की आजीवन मदद करते

रहे | अंतिम दिनों किस कारण से मृत्यु हुई जो कहानी के बीज वाक्य जो हुआ होगा को चरितार्थ करती है।

चड्ढा - यशोधर बाबू के ऑफिस में असिस्टेंट ग्रेड पर कार्यरत ।

मेनन - यशोधर बाबू के ऑफिस का कर्मचारी जो यशोधर बाबू को सबसे पहले सिल्वर वैडिंग की बधाई देता है।

भगवानदास - यशोधर बाबू के ऑफिस में कार्यरत एक चपरासी।

भूषण - यशोधर बाबू का सबसे बड़ा बेटा जो एक विज्ञापन कंपनी में कार्यरत है।

गिरीश - यशोधर बाबू की पत्नी का चचेरा भाई।

चन्द्रदत्त तिवारी - यशोधर बाबू का भांजा जनार्दन जोशी यशोधर बाबूके जीजा जो अहमदाबाद में रहते हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. 'सिल्वर वैडिंग' कहानी के लेखक कौन हैं ?

क) जैनेन्द्र कुमार (ख) धर्मवीर भारती

(ग) मनोहर श्याम जोशी (घ) ओम थानवी

2 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में किसके विवाह की 25 वीं वर्षगांठ मनाई गई है ?

(क) किशन दा की (ख) यशोधर बाबू की

(ग) चड्ढा की (घ) इनमें से कोई नहीं

3. "सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल सम्वेदना क्या है ?

(क) पीढ़ी अंतराल

(ख) हाशिये पर धकेले गए मानवीय मूल्य

(ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

(घ) इनमें से कोई नहीं

4 यशोधर बाबू 'अपना रोल मॉडल किसे मानते हैं ?

(क) अपनी पत्नी को (ख) किशन दा को

(ग) अपने बड़े बेटे को (घ) इनमें से कोई नहीं

5'सिल्वर वैडिंग' कहानी में यशोधर बाबू की क्या भूमिका है ?

(क) चरित नायक की (ख) नए परिवेश में मिसफिट होते हुए व्यक्ति की

(ग) परंपरावादी की (घ) इनमें से तीनों|

6. यशोधर बाबू की पत्नी मूल संस्कारों से आधुनिक न होते हुए भी आधुनिकता में कैसे ढल गई ?

(क) बच्चों की तरफदारी करने की मातृसुलभ मजबूरी के कारण (ख) वक़्त को देखते हुए

(ग) मन की इच्छा से (घ) उपर्युक्त में से कोई भी नहीं

7. किशन दा का व्यक्तित्व कैसा है ?

(क) सरल हृदयी का (ख) सहयोगी का (ग) मार्गदर्शक का (घ) इनमें से तीनों

8.सिल्वर वैडिंग कहानी का सन्देश क्या है ?

(क) नई पीढ़ी अपने पूर्वजों सम्मान करे (ख) परम्पराओं का आदर करे

(ग) चुनौतियों के अनुसार ढलना सीखे (घ) इनमें से सभी

9 चड्ढा कौन हैं ?

(क) यशोधर बाबू का नौकर (ख) उनके अधीन काम करने वाला कर्मचारी

(ग) पड़ोसी (घ) इनमें से कोई नहीं

10. यशोधर बाबू के जीवन को किसने सबसे अधिक प्रभावित किया ?

(क) पत्नी ने (ख) पुत्री ने (ग) किशन दा ने (घ) समाज ने

11. यशोधर बाबू कैसे जीवन के समर्थक हैं?

(क)आडम्बरपूर्ण (ख) भक्तिपूर्ण (ग) सरल और सादगीपूर्ण (घ) इनमें से कोई नहीं

12. 'समहाउ इम्प्रोपर' वाक्यांश का प्रयोग किन सन्दर्भों में हुआ है ?

(क)अपने से परायेपन का व्यवहार मिलने पर

(ख) वृद्धा पत्नी के आधुनिका स्वरुप को देखकर

(ग) केक काटने की विदेशी परंपरा पर

(घ) इनमें से सभी

13.सिल्वर वैडिंग कहानी में यशोधर पन्त का तकिया कलाम क्या है?

क) एनीवे ख) समथिंग ग) समहाऊ इम्प्रोपर घ) जो हुआ होगा

14.यशोधर दफ्तर से छूटते ही सीधे कहाँ जाते थे ?

क) अपने घर ख) बिडला मंदिर ग) पहाडगंज घ) राशन डिपो

15.यशोधर ने किशन दा की किन परम्पराओं को जारी रखा ?

क) होली गवाना ख) जनेऊ पूजन ग) रामलीला मंडली का सहयोग घ) ये सभी

16.किशन दा की मृत्यु का कारण उनकी बिरदारी ने क्या बताया था?

क)दुर्घटना ख) गंभीर बीमारी ग) जो हुआ होगा घ) आत्महत्या

17. कहानी में "जो हुआ होगा" और "समहाउ इम्प्रापर" ये दो जुमले, जो कहानी के बीजवाक्य हैं, कहानी के किस पात्र में बदलाव को असंभव बना देते हैं ?

(क) यशोधर (ख) किशनदा (ग) यशोधर की पत्नी (घ) उपर्युक्त सभी

18.'नया उन्हें कभी कभी खींचता तो है पर पुराना छोड़ता नहीं ' -यह वाक्य किसके लिए कहा गया है ?

क) यशोधर की पत्नी के लिए ख) उनके बच्चों के लिए

ग) किशन दा के लिए घ) यशोधर के लिए

19.वाई डी को ऊनी ड्रेसिंग गाउन किसने गिफ्ट किया था ?

क) बेटे भूषण ने ख) उनके साले ने ग) पत्नी ने घ) बेटी ने

20. यशोधर पंत को भाऊ कौन कहता था ?
(क) किशन दा (ख) जनार्दन जोशी (ग) भूषण (घ) वाई. डी. पंत
21. यशोधर बाबू ने किस स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी ?
(क) सरस्वती विद्यालय (ख) रेम्जे स्कूल, अल्मोड़ा
(ग) शिष्यगण विद्यालय (घ) अन्य
22. यशोधर बाबू की पत्नी के चचेरे भाई का क्या नाम है ?
(क) भूषण (ख) गिरीश (ग) कृष्ण (घ) चन्द्रदत्त

23. ज़िम्मेदारी सर पर पड़ेगी तब सब अपने ही आप ठीक हो जाएँगे - यह किसने कहा है ?
(क) यशोधर बाबू ने (ख) यशोधर बाबू के पिताजी ने
(ग) किसनदा ने (घ) इनमें से कोई नहीं

24. यशोधर बाबू अपनी पत्नी को क्या कहकर उनका मज़ाक उड़ाते थे ?
(क) शानयल बुढ़िया (ख) चटाई का लँहगा
(ग) बूढी मुँह मुँहासे, लोग करें तमासे (घ) उपर्युक्त सभी
25. . रिटायरमेंट के समय यशोधर बाबू का वेतन कितना था ?
(क) दो हज़ार रुपये (ख) तीन हज़ार रुपये
(ग) डेढ़ हज़ार रुपये (घ) पाँच हज़ार रुपये
26.चूनेदानी कहकर किस का मजाक उड़ाया जाता है ?
(क) घड़ी का (ख) साइकिल का (ग) पोशाक का (घ) चश्मे का
27. चंद्र दत्त तिवारी कौन थे ?
(क) यशोधर पंत का भानजा (ख) यशोधर पंत का मित्र
(ग) यशोधर पंत का ममेरा भाई (घ) यशोधर पंत का अधीनस्थ कर्मचारी.
28. 'जनार्दन' शब्द सुनकर यशोधर पंत को किसकी याद आई ?
(क) किशन दा की (ख) भूषण की
(ग) अपने बहनोई जनार्दन जोशी की (घ) चड्ढा की
29. . यशोधर बाबू अपने बीमार बहनोई को देखने कहाँ जाना चाहते थे ?
(क) राजस्थान (ख) इलाहाबाद (ग) अहमदाबाद (घ) पटना
30. यशोधर बाबू का विवाह कब हुआ था ?
(क) 6 फरवरी, 1947 (ख) 6 फरवरी, 1946
(ग) 5 फरवरी, 1947 (घ) 6 फरवरी,1945

उत्तरमाला –

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
ग	ख	क	ख	घ	क	घ	घ	ख	ग
11	12	13	14	15	16	17	18	19	20
ग	घ	ग	ख	घ	ग	क	घ	क	क
21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
ख	ख	क	घ	ग	क	क	ग	ग	क

अभ्यास के लिए प्रश्न : <u>वितान पाठ- 1 सिल्वर वैडिंग</u>

1. कहानी 'सिल्वर वैडिंग' में किशनदा की मृत्यु के संदर्भ में 'जो हुआ होगा' से कहानीकार का क्या तात्पर्य रहा है ?

I. लेखक मृत्यु से बहुत दुखी है

II. लेखक को मृत्यु का कारण पता है

III. लेखक मृत्यु के कारण से अपरिचित हैं

IV. लेखक को मृत्यु से कोई अंतर नहीं पड़ता

2. किशनदा के रिटायर होने पर यशोधर बाबू उनकी सहायता नहीं कर पाए थे, क्योंकि : कहानी 'सिल्वर वैडिंग' से सही विकल्प छांटिए :-

I. यशोधर बाबू की पत्नी किशनदा से नाराज़ थी |

II. यशोधर बाबू के घर में किशनदा के लिए स्थान का अभाव था |

III. यशोधर बाबू का अपना परिवार था जिसे वे नाराज़ नहीं करना चाहते थे |

IV. किशनदा को यशोधर बाबू ने अपने घर में स्थान देना चाहा था जिसे किशनदा ने स्वीकार नहीं किया |

3. सिल्वर वैडिंग के अनुसार – "यशोधर बाबू की पत्नी समय के साथ ढल सकने में सफल होती है लेकिन यशोधर बाबू असफल रहते है" यशोधर बाबू की असफलता का क्या कारण था ?

I. किशनदा उन्हें भड़काते थे

II. पत्नी बच्चों से अधिक प्रेम करती थी

III. पीढ़ी के अंतराल के कारण

IV. वे परिवर्तन को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते थे

4. सिल्वर वैडिंग कहानी की मूल संवेदना आप किसे मानेंगे ?

I. हाशिए पर धकेले जाते मानवीय मूल्य

II. पीढ़ी का अंतराल

III. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव

IV. इनमें से कोई नहीं

5. यशोधर बाबू के बारे में आपकी क्या धारणा बनती है ? सही कथन चुनिए |

I. यशोधर बाबू के विचार पूरी तरह से पुराने हैं | वे सहानुभूति के पात्र नहीं हैं |

II. यशोधर बाबू में एक तरह का द्वंद्व है जिसके कारण नया उन्हें कभी-कभी खींचता है पर पुराना उन्हें छोड़ता नहीं | इसलिए उन्हें सहानुभूति से देखने की ज़रूरत है |

III. यशोधर बाबू एक आदर्श व्यक्तित्त्व है और नयी पीढ़ी द्वारा उनके विचारों को अपनाना ही उचित है |

IV. इनमें से कोई नहीं |

6. सिल्वर वैडिंग पार्टी उन्हें समहाउ इम्प्रापर मालूम होती है परन्तु उन्हें संतोष है कि -

I. विवाह उन्होंने दो से चार हज़ार कर्ज़ा लेकर किया लेकिन उनकी सिल्वर वैडिंग पार्टी में केक, मिठाई, फल, कोल्डड्रिंक व चाय सब हैं

II. उनके बेटों ने पहली बार पार्टी आयोजित की है

III. उनके बच्चों को उनकी परवाह है व खूब तरक्की कर रहे हैं

IV. उनके बच्चे संस्कारी हो गए हैं

7. सिल्वर वेडिंग' का क्या अर्थ है ?

I. शादी की रजत जयंती
II. शादी के 25 वर्ष पूरा हो जाने का अवसर
III.उपर्युक्त दोनों
IV. इनमें से कोई नहीं

8. पाँच साढ़े पाँच बजे दफ्तर से चलते-चलते यशोधर बाबू की आदत क्या थी-

I. सबको साथ लेकर चलना।
II. सहयोगियों के साथ मनोरंजक बात करना।
III. सबसे पहले दफ्तर से जाना।
IV. फाइलों को सही जगह रखना।

9. ऑफिस में यशोधर बाबू की शादी की बात कैसे चली ?

I. ऑफिस में लेट आने पर
II. ऑफिस से जल्दी जाने पर
III. समय पर काम खत्म करने पर
IV. घड़ी के बारे में चर्चा करने पर

10. यशोधर बाबू ने दफ्तर में पार्टी के लिए पैसे दो बार दिए, एक बार दस रुपये और दूसरी बार बीस रुपये, इससे पता चलता है कि-

I. वे मितव्ययी हैं
II. वे अपव्ययी हैं
III. कंजूस हैं
IV. अनुचित खर्च करने वाले हैं

11. "सिल्वर वैडिंग' पाठ में ऑफिस से घर लौटते समय यशोधर बाबू सबसे पहले जाते थे -

I. पहाड़गंज
II. बिड़ला मंदिर
III. गोल मार्केट
IV. पंडारा रोड

12. अपने बच्चों की तरक्की से खुश होने के बाद भी यशोधर बाबू को कौनसी बात खटकती है-

I. गरीब रिश्तेदारों की उपेक्षा करना
II. अच्छा खाना खाना
III. पैदल दफ्तर जाना
IV. बिड़ला मंदिर जाना

13. दुनियादारी के हिसाब से अपने बच्चों की कौन सी बात यशोधर बाबू अपनी गलती के तौर पर स्वीकार करते हैं---

I. गोल मार्केट में रहना

II. सरकारी क्वार्टर में रहना

III. किशन दा का गांव में रहना

IV. डी. डी.ए फ्लैट के लिए पैसा न भरना

14. सिल्वर वैडिंग कहानी में यशोधर बाबू की भूमिका है ?

I. परंपरावादी व चरितनायक की

II. नए परिवेश में मिसफिट होते हुए व्यक्ति की

III. उपर्युक्त दोनों

IV. कोई नहीं

15. यशोधर बाबू के जीवन में किशनदा के योगदान से सम्बंधित असत्य कथन है -

I. यशोधर की सोच पर किशनदा का प्रभाव था

II. किशनदा ने यशोधर को अपने घर में आश्रय दिया और उसकी नौकरी लगवाई

III. किशनदा ने उन्हें सामाजिक व दफ्तरी जीवन की व्यावहारिकता सिखाई

IV. किशनदा ने उन्हें पढ़ने के लिए आर्थिक मदद दी

16. अभी तुम्हारे बब्बा की इतनी साख है कि सौ रुपये उधार ले सकें - यशोधर जी को यह कथन कहना पड़ा -

I. जब उन्हें घर का ज़रूरी सामान खरीदना था

II. जब भूषण ने कहा कि आपको बुआ को भेजने के लिए पैसे मैं तो नहीं दूँगा

III. जब उन्हें किशनदा की मदद के लिए पैसा देना था

IV. जब उन्हें साइकिल खरीदनी थी

17. यशोधर जी ने सेक्रेट्रिएट साइकिल से जाना क्यों बंद कर दिया ?

I. उन्होंने स्कूटर खरीद लिया था

II. उन्होंने कार खरीद ली थी

III. उनका बेटा साइकिल से कॉलेज जाता था

IV. उनके बेटों का पिता का साइकिल-सवार होना सख्त नागवार था

18. यशोधर बाबू के अनुसार निम्नलिखित में से समहाउ इम्प्रापर नहीं था -

I. भूषण का टी.वी. फ्रिज खरीदना

II. साधारण बेटे को असाधारण वेतन

III. स्कूटर की सवारी

IV. घर आए साधारण हैसियत वाले मेहमानों का फ्रिज का पानी पीकर अपने आप को धन्य महसूस करना

19. 'समहाउ इम्प्रापर' वाक्यांश से यशोधर के व्यक्तित्त्व व कहानी के कथ्य के बारे में पता चलता है -

I. यशोधर जी आदर्शवादी व परंपरावादी थे

II. यशोधर जी भारतीय संस्कृति को मानने वाले व पाश्चात्य संस्कृति के विरोधी थे

III. इससे कहानी में पीढ़ी अंतराल का कथ्य स्पष्ट होता है

IV. उपर्युक्त सभी

20. कहानी के अंत में गाउन पहनते वक्त उनकी आँखों में आँसू थे क्योंकि -

I. उनके बेटे ने यह नहीं कहा कि दूध मैं ला दूँगा

II. उन्हें किशनदा की याद आ गई

III. उपर्युक्त दोनों

IV. इनमें से कोई नहीं

<u>वितान पाठ 2. जूझ -आनंद यादव</u>

पाठ का सारांश- यह अंश लेखक के बहुचर्चित आत्मकथात्मक उपन्यास का है। यह एक किशोर के देखे और भोगे हुए गाँवई जीवन के खुरदरे यथार्थ और उसके रंगारंग परिवेश की विश्वसनीय जीवंत गाथा है। इस आत्मकथात्मक उपन्यास में जीवन का मर्मस्पर्शी चित्रण है।इस अंश में हर स्थिति में पढ़ने की लालसा लिए धीरे-धीरे साहित्य, संगीत और अन्य विषयों की ओर बढ़ते किशोर के कदमों की आकुल आहट सुनी जा सकती है।

लेखक के पिता ने उसे पाठशाला जाने से रोक दिया तथा खेती के काम में लगा दिया। उसका मन पाठशाला जाने के लिए तड़पता था, परंतु वह पिता से कुछ कहने की हिम्मत नहीं रखता था। उसे पिटाई का डर था। उसे विश्वास था कि खेती से कुछ नहीं मिलने वाला क्योंकि क्रमश: इससे मिलनेवाला लाभ घट रहा है। पढ़ने के बाद नौकरी लगने पर उसके पास कुछ पैसे आ जाएँगे। दीवाली के बाद ईख पेरने के लिए कोल्हू चलाया जाता था क्योंकि उसके पिता को सबसे पहले गुड़ बेचना होता था ताकि ओधिक कीमत मिल सके। हालाँकि पहले ईख काटने से उसमें रस कम निकलता था। इस वर्ष भी लेखक के पिता ने जल्दी कार्य शुरू किया। अत: ईख पेरने का काम सबसे पहले संपन्न हो गया। एक दिन लेखक धूप में कंडे थाप रही थी और वह बाल्टी में पानी भर-भरकर उसे दे रहा था। अच्छा मौका देखकर लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की माँ ने अपनी लाचारी प्रकट करते हुए कहा कि तेरी पढ़ाई-लिखाई की बात करने पर वह बरहेला सुअर की तरह गुर्राता है। लेखक ने सुझाव दिया कि वह दत्ता जी राव सरकार से उसकी पढ़ाई के बारे में बात करे। माँ तैयार हो गई। वह बच्चे की तड़पन समझती थी। अत: रात को लेखक की पढ़ाई के संबंध में बात करने के लिए दत्ता जी राव देसाई के पास गई और उनसे सारी बात बताई।

उसने यह भी बताया कि दादा सारे दिन बाजार में रखमाबाई के पास गुजार देता है। वह खेती का काम नहीं करता। उसने बच्चे की पढ़ाई इसलिए बंद कर दी ताकि वह सारे गाँव भर में आजादी के साथ घूमता रहे। यह बात सुनकर देसाई चिढ़ गए। चलते-चलते लेखक ने यह भी कहा कि यदि वह अब भी कक्षा में पढ़ने लगे तो दो महीने में पाँचवीं पास कर लेगा और इस तरह उसका साल बच जाएगा। पहले ही उसका एक साल खराब हो चुका था। राव ने लेखक से कहा कि घर आने पर दादा को मेरे पास भेज देना और घड़ी भर बाद तुम भी आ जाना। माँ-बेटा ने राव को सचेत किया कि हमारे आने की बात उसे मत बताना। राव ने उन्हें निर्भय होकर जाने को कहा। रात को दादा घर पर मालिक दिखाई नहीं दिया। खेत से आ जाने पर इधर भेजना।

यह सुनकर दादा सम्मान की बात समझकर तुरंत चला गया। आधा घंटे बाद लेखक उन्हें खाने के लिए बुलाने चला गया। राव ने लेखक से पूछा कि कौन-सी कक्षा में पढ़ता है रे तू? लेखक ने बताया कि वह पाँचवीं में था, पर अब स्कूल नहीं जाता क्योंकि दादा ने मना कर दिया। उन्हें खेतों में पानी लगाने वाला चाहिए था। राव ने दादा से पूछा तो उसने लेखक के कथन को स्वीकार कर लिया। देसाई ने दादा को खूब फटकार लगाई और कहा कि तुम्हारा ध्यान खेती में नहीं है। बीवी-बच्चों को खेत में जोतकर खुले साँड़ की तरह घूमता है तथा अपनी मस्ती के लिए लड़के के जीवन की बलि चढ़ा रहा है। उसने लेखक को कहा कि तू सवेरे पाठशाला जा तथा मन लगाकर पढ़। यदि यह मना करे तो मेरे पास आना। मैं तुझे पढ़ाऊँगा। लेखक के पिता ने उस पर गलत आदतों का आरोप लगाया-कंडे बेचना, चारा बेचना, सिनेमा देखना या जुआ खेलना, खेती व घर के काम पर ध्यान न देना आदि। लेखक ने अपने उत्तर से उन्हें संतुष्ट कर दिया।

देसाई ने पूछा कि कभी नापास तो नहीं हुआ। लेखक के मना करने पर उसे पाठशाला जाने का आदेश देकर घर भेज दिया। बाद में उसने रतनाप्पा को समझाया। दादा ने भी पाठशाला भेजने की हामी भर दी। घर आकर दादा ने लेखक से यह वचन ले लिया कि दिन निकलते ही खेत पर जाना और वहीं से पाठशाला पहुँचना। । पाठशाला से छुट्टी होते ही घर में बस्ता रखकर सीधे खेत पर आकर घंटा भर ढोर चराना और खेतों में ज्यादा काम होने पर पाठशाला से गैर-हाजिर रहना होगा। लेखक ने सभी शर्तें स्वीकार कर लीं। लेखक पाँचवीं कक्षा में जाकर बैठने लगा। कक्षा के दो लड़कों को छोड़कर सभी नए बच्चे थे। वह बाहरी-अपरिचित जैसा एक बेंच के एक सिरे पर कोने में जा बैठा। वह पुरानी किताबों को ही थैले में भर लाया। कक्षा के शरारती लड़के ने उसका मजाक उड़ाया और उसका गमछा छीनकर मास्टर की मेज पर रख दिया। फिर उसे सिर पर लपेटकर मास्टर की नकल उतारनी शुरू की। तभी मास्टर जी आ गए।

लेखक ने उसे सब कुछ बता दिया। बीच की छुट्टी में लड़कों ने उसकी धोती खोलने की कोशिश की, परंतु असफल रहे। वे उसे तरह-तरह से परेशान करते रहे। उसका मन उदास हो गया। उसने माँ से नयी टोपी व दो नाड़ी वाली चड्ढी मैलखाऊ रंग की मैंगवा ली। धीरे-धीरे लड़कों से परिचय

बढ़ गया। मंत्री नामक मास्टर आए। वे छड़ी का उपयोग नहीं करते थे। वे लड़के की पीठ पर घूसा लगाते थे। शरारती लड़के उनसे बहुत डरते थे। वे गणित पढ़ाते थे।

इस कक्षा में वसंत पाटील नाम का कमजोर शरीर वाला व होशियार लड़का था। वह शांत स्वभाव का था तथा हमेशा पढ़ने में लगा रहता था। मास्टर ने उसे कक्षा मॉनीटर बना दिया था। लेखक भी उसकी तरह पढ़ने में लगा रहा। वह अपनी कापी-किताबों को व्यवस्थित रखने लगा। शीघ्र ही वह गणित में होशियार हो गया। दोनों में दोस्ती हो गई। मास्टर लेखक को 'आनंदा' कहने लगे। अब उसका मन पाठशाला में लगने लगा। न०वा० सौंदलगेकर मास्टर मराठी पढ़ाते थे। पढ़ाते समय वे स्वयं रम जाते थे। सुरीले कंठ, छद व रसिकता के कारण वे कविता बहुत अच्छी पढ़ाते थे। उन्हें मराठी व अंग्रेजी की अनेक कविताएँ याद थीं। वे कविता के साथ ऐसे जुड़े थे कि अभिनय करके भावबोध कराते थे। वे स्वयं भी कविता रचते थे।

लेखक उनसे बहुत प्रभावित था। खेत पर पानी लगाते समय या ढोर चराते समय वह मास्टर के अनुसार ही कविताएँ गाता था। वह उन्हीं की तरह अभिनय करता। उसी समय उसे अनुभव हुआ कि अन्य कविताएँ भी इसी तरह पढ़ी जा सकती हैं। लेखक को महसूस हुआ कि पहले जिस काम को करते हुए उसे अकेलापन खटकता था, अब वह समाप्त हो गया। उसे एकांत अच्छा लगने लगा। एकांत के कारण वह ऊँचे स्वर में कविता गा सकता था, नृत्य कर सकता था। उसने कविता गाने की अपनी पद्धति विकसित की। वह अभिनय के साथ गाने लगा तथा अब उसके चेहरे पर कविता के भाव आने लगे। मास्टर को लेखक का गायन अच्छा लगा और उससे छठी-सातवीं कक्षा के बालकों के सामने गवाया। पाठशाला के एक समारोह में भी उससे गवाया। मास्टर स्वयं कविता रचते थे। उनके पास मराठी कवियों के काव्य-संग्रह थे। वे उन कवियों के संस्मरण भी सुनाते थे। इस कारण अब वे कवि उसे 'आदमी' लगने लगे थे। सौंदलगेकर स्वयं कवि थे।

इस कारण लेखक को यह विश्वास हुआ कि कवि भी उसकी तरह ही हाड़-मांस का व क्रोध-लोभ का मनुष्य होता है। लेखक को लगा कि वह स्वयं भी कविता कर सकता है। मास्टर के दरवाजे पर छाई हुई मालती की बेल पर एक कविता लिखी। लेखक ने मालती लता व कविता दोनों ही देखी थी। इससे उसे लगा कि वह अपने आस-पास, अपने गाँव, खेतों आदि पर कविता बना सकता है।

भैंस चराते-चराते वह फसलों व जंगली फूलों पर तुकबंदी करने लगा। वह उन्हें जोर से गुनगुनाता तथा मास्टर को दिखाता। कविता लिखने के लिए वह कागज व पेंसिल रखने लगा। उनके न होने पर वह लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर रेखा खींचकर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिख लेता। कंठस्थ हो जाने पर उसे पोंछ देता। वह अपनी कविता मास्टर को दिखाता था। कभी-कभी वह रात को ही मास्टर के घर जाकर कविता दिखाता। वे उसे कविता के शास्त्र के बारे में समझाते। वे उसे छद, अलंकार, शुद्ध लेखन, लय का ज्ञान कराते। वे उसे

पुस्तकें व कविता-संग्रह भी देते थे। उन्होंने उसे कविता करने के अनेक ढरें सिखाए। इस प्रकार लेखक को मास्टर की निकटता मिलती और उसकी मराठी भाषा में सुधार आने लगा। शब्दों का महत्व उसकी समझ में आने लगा।

<u>महत्वपूर्ण बहुविकल्पीय प्रश्न</u>

1. लेखक का दादा जल्दी कोल्हू क्यों चलाता था?

अ. जल्दी काम खत्म करने के लिए ब. अधिक पैसे के लिए

स. अपनी आवारागर्दी के लिए द. आराम करने के लिए

उत्तर: (ब) अधिक पैसे के लिए

2. लेखक की कक्षा के मॉनीटर का नाम क्या था?

अ. वसंत पाटील ब. चव्हाण पाटील

स. मनोहर पाटील द. राव पाटील।

उत्तर: (अ) वसंत पाटील

3. कहानी के शीर्षक 'जूझ' का अर्थ है-

अ. संघर्ष ब. चालाकी

स. मेहनत द. कठिनाई

उत्तर: (अ) . संघर्ष

4.'जूझ' पाठ के रचयिता का नाम है-

अ. फणीश्वर नाथ रेणु ब. आनंद यादव

स. धर्मवीर भारती द. मनोहर श्याम जोशी

उत्तर: (ब) आनंद यादव

5. 'जूझ' उपन्यास मूलतः किस भाषा में रचित है?

अ. मराठी ब. गुजराती

स. अवधी द. ब्रज

उत्तर: (अ) मराठी

6. 'जूझ' के कथानायक का क्या नाम बताया गया है?

अ. आनंदा ब. दत्ता जी राव

स. मोहन आनंद द. कमल आनंद

उत्तर: (अ) आनंदा

7. पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?

अ. दादा से ब. माँ से

स. दत्ता जी राव से द. सौंदलगेकर से।

उत्तर: (ब) माँ से

8. पढ़ाई के लिए लेखक अपनी माँ के साथ किसके पास गया?

अ. दत्ता जी राव ब. दादा

स. सौंदलगेकर द. इनमें से कोई नहीं

उत्तर: (अ) . दत्ता जी राव

9. सौंदलगेकर किस विषय का अध्यापक था?

अ. अंग्रेज़ी का ब. गणित का

स. मराठी का द. संस्कृत का

उत्तर (स) मराठी का

10. लेखक की माँ के अनुसार उसका पति दिनभर किसके पास रहता है?

अ. बाला बाई ब. रखमाबाई

स. लखमा बाई द. मुन्नी बाई

उत्तर: (ब) . रखमाबाई

11. खेत का कौन-सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने माँ से पढ़ाई की बात की?

अ. पानी लगाने का काम ब. बिजाई का काम

स. कटाई का काम द. कोल्हू का काम

उत्तर: (द) कोल्हू का काम

12. लेखक पढ़ना क्यों चाहता है?

अ. ज्ञान के लिए ब. नौकरी के लिए

स. विद्वान बनने के लिए द. कवि बनने के लिए

उत्तर: (ब) नौकरी के लिए

13. लेखक की माँ के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है?

अ. कुत्ते के समान ब. शेर के समान

स. जंगली सूअर के समान द. चीते के समान

उत्तर: (स) जंगली सूअर के समान

14. लेखक की माँ के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया?

अ. खर्चे से बचने के लिए ब. बीमारी से बचने के लिए

स. अनपढ़ता से बचने के लिए द. खुद काम से बचने के लिए

उत्तर: (द) खुद काम से बचने के लिए

15. दादा राव साहब के यहाँ तत्काल क्यों चला गया?

अ. अपना सम्मान समझकर ब. डरकर

स. पैसों के लालच से द. घबराकर

उत्तर: (अ) अपना सम्मान समझकर

16. लेखक के पिता का नाम क्या था?

अ. रतनाप्पा ब. कृष्णाप्पा

स. रामाप्पा द. मोहनाप्पा।

उत्तर: (अ) रतनाप्पा

17. शर्त के अनुसार पाठशाला जाने से पहले लेखक को सवेरे कितने बजे तक खेत में काम करना होता था?

अ. 10 बजे तक ब. 9 बजे तक

स. 11 बजे तक द. 8 बजे तक

उत्तर: (स) 11 बजे तक

18. स्कूल से छुट्टी के बाद लेखक को कितने घंटे पशु चराने होते थे?

अ. दो घंटे ब. तीन घंटे

स. चार घंटे द. एक घंटा

उत्तर: (द) एक घंटा

19. लेखक के कक्षा अध्यापक का नाम क्या था?

अ. वसंत ब सौंदलगेकर

स. मंत्री द. मोहन।

उत्तर: (स) . मंत्री

20. "जूझ' कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन हुआ है?

अ. पढ़ने की प्रवृत्ति का ब. कविता करने की प्रवृत्ति का

स. लेखन प्रवृत्ति का द. संघर्षमयी प्रवृत्ति का।

उत्तर: (द) संघर्षमयी प्रवृत्ति का।

21. जिस शरारती लड़के ने लेखक के सिर से गमछा छीना था, उसका नाम क्या था?

अ. वसंत ब. चह्वाण

स. मनोहर द. सुन्दर।

उत्तर: (ब) चह्वाण

22. लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था?

अ. वसंत ब. सौंदलगेकर

स. मंत्री द. रतनाप्पा

उत्तर: (स) मंत्री

23. लेखक के दादा (पिता) की कैसी प्रवृत्ति थी?

अ. परिश्रमी ब. गुस्सैल और हिंसक

स. विनम्र द. अहिंसक

उत्तर: (ब) गुस्सैल और हिंसक

24. लेखक पढ़ना क्यों चाहता था ?

अ- नौकरी के लिए ब- कारोबार के लिए

स- अ तथा ब दोनों द- इनमे से कोई नहीं

उत्तर: (स) - अ तथा ब दोनों

25. जूझ उपन्यास किस श्रेणी का उपन्यास है ?

अ- आत्मकथात्मक ब- सामाजिक

स- धार्मिक द- आर्थिक

उत्तर: (अ) - आत्मकथात्मक

26. जूझ उपन्यास को कौन सा पुरस्कार मिला ?

अ- साहित्य दर्पण ब- साहित्य अकादमी

स- नोबल द- इनमे से कोई नहीं

उत्तर: (ब) - साहित्य अकादमी

कुछ महत्वपूर्ण स्मरणीय अन्य प्रश्न:-

1.जूझ कहानी के लेखक कौन हैं - डॉ आनंद यादव

2.आनंद यादव का पूरा नाम क्या हैं - आनंद रतन यादव

3.जूझ कहानी में नायक का क्या नाम बताया गया है - आनंदा

4.आनंद यादव का जन्म कब हुआ था - सन 1935

5.जूझ कहानी किस उपन्यास से ली गई है - मराठी उपन्यास “झोबी”

6.इस उपन्यास को कौन सा पुरस्कार मिला है - साहित्य अकादमी

7.“झोबी” उपन्यास किस भाषा में लिखा गया हैं - मराठी

8.जूझ कहानी के शीर्षक का अर्थ क्या हैं - संघर्ष करना / जूझारुपन

9.जूझ कहानी क्या संदेश देती है - संघर्ष करने की सीख देती है

10.जूझ कहानी से लेखक की किस प्रवृत्ति का उद्घाटन (पता) हुआ - संघर्षमयी

11.जूझ कहानी किस शैली में लिखी गई हैं - आत्मकथात्मक शैली या आत्मकथात्मक उपन्यास । दरअसल जूझ कहानी लेखक आनंद यादव की आत्मकथा का एक हिस्सा है।

12.जूझ उपन्यास किस श्रेणी का उपन्यास है - आत्मकथात्मक

13.जूझ कहानी मराठी उपन्यास झोबी का एक हिस्सा हैं। इसका हिंदी अनुवाद किसने किया - केशव प्रथम वीर ने

14.जूझ कहानी के नायक की चरित्र की विशेषताएं क्या हैं - संघर्षशील , जुझारूपन , परिश्रमी और कविता के प्रति लगाव

15.आनंद यादव ने कौन से विषय में स्नातकोत्तर किया - मराठी एवं संस्कृत
16.लेखक आनंद यादव के पिता ने उनकी पढ़ाई कब छुड़वा दी - जब वो पांचवी में पढ़ते थे
17.लेखक ने दुबारा कौन सी कक्षा में दाखिला लिया - पांचवी कक्षा में
18.लेखक के पिता का क्या नाम था - रत्नाप्पा
19.लेखक अपने पिता को क्या कहकर पुकारते थे - दादा
20. गांव के मुखिया का नाम क्या था - दत्ताजी राव
21.लेखक अपने दादा यानि पिता के सामने बोलने की हिम्मत क्यों नहीं करते थे - क्योंकि उसके दादा गुस्सैल व हिंसक स्वभाव के व्यक्ति थे।
22.लेखक क्यों पढ़ना चाहते थे - वो पढ़ - लिखकर कोई अच्छी नौकरी पाना चाहते थे।
23.पढ़ाई के लिए पिता को राजी करने का दबाव डालने के लिए लेखक अपनी मां के साथ किसके पास गया - दत्ताजी राव के पास
24.पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की - अपनी मां से
25.लेखक को सातवीं कक्षा तक कौन पढ़ाना चाहता था - मां
26.लेखक की मां के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया - खुद काम से बचने के लिए
27.किसके कहने पर लेखक के पिता ने लेखक को स्कूल भेजना शुरू किया - गांव के मुखिया दत्ताजी राव के कहने पर
28.पाठशाला जाने का समय किस समय से था - सुबह 11:00 बजे से
29.शर्त के अनुसार पाठशाला जाने से पहले लेखक को सवेरे कितने बजे तक खेत में काम करना होता था - 11 बजे तक
30.लेखक का दादा (पिता) जल्दी कोल्हू क्यों चलवाता था - क्योंकि वह अपने गुड से अच्छी कमाई करना चाहता था या अधिक पैसे कमाने के लिए
31.जूझ पाठ के अनुसार लेखक के घर कोल्हू चलना कब से शुरू होता था - दिवाली के बाद
32.लेखक को किसने कविताएं लिखने के लिए प्रोत्साहित किया - उनके मराठी टीचर न. वा. सौंदलगेकर ने
33.सौंदलगेकर किस विषय के अध्यापक थे - मराठी
34.लेखक पढ़ना क्यों चाहता था - नौकरी करने के लिए
35.लेखक की कक्षा के मॉनिटर का क्या नाम था - बसंत पाटिल
36.पढ़ाई में सुधार के लिए लेखक ने किसका अनुसरण किया - बसंत पाटिल
37.बसंत पाटिल की नकल करने से लेखक को क्या लाभ पहुंचा - वो गणित विषय में प्रवीण हो गए , कक्षा में मॉनिटर जैसा सम्मान मिला व अध्यापक की नजरों में एक अच्छे छात्र की जगह बनी।

38.खेत का कौन सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने मां से पढ़ाई की बात की - कोल्हू का काम

39.लेखक की मां के अनुसार उसका पति दिन भर बाहर किसके पास रहता था - रखमाबाई

40.लेखक का कौन सा काम समाप्त होने के बाद लेखक ने अपनी मां से पढ़ाई की बात की - कोल्हू का काम

41.लेखक की मां के अनुसार पढ़ाई की बात करने पर लेखक का पिता कैसे गुर्राता है - जंगली सूअर के समान

42.लेखक के दादा (पिता) की प्रवृत्ति कैसी थी - गुस्सैल और हिंसक

43.दत्ता राव सरकार ने दादा को क्यों डांटा - लेखक को स्कूल न भेजने के कारण

44.लेखक का पिता , दत्ताजी राव के यहां तत्काल क्यों चला गया - अपना सम्मान समझ कर

45.दत्ताजी राव सरकार ने लेखक को क्या निर्देश दिए - अगले दिन से स्कूल जाने , मन लगाकर पढ़ाई करने तथा पिता के स्कूल ना भेजने पर तुरंत उनके पास आने का निर्देश दिया

46.स्कूल से छुट्टी के बाद लेखक को कितने घंटे पशु चराने होते थे - एक घंटा

47.लेखक के कक्षा - अध्यापक का क्या नाम था - मंत्री

48.जिस शरारती लड़के ने लेखक के सिर से गमछा छीना था , उसका क्या नाम था - चह्वाण

49.लेखक को गणित पढ़ाने वाले मास्टर का क्या नाम था - मंत्री

50.दादा ने दत्ताजी राव सरकार के सामने लेखक पर क्या आरोप लगाए - सिनेमा देखने जाना , घर व खेती के कार्य में मन न लगाना और व्यर्थ यहां - वहां घूमना।

51.दादा ने अपने बेटे के सामने स्कूल जाने के लिए क्या शर्त रखी - स्कूल जाने से पहले खेतों में पानी भरना , स्कूल से आने के बाद जानवर चराना और घर में काम अधिक होने पर स्कूल न जाना।

52.लेखक पहले दिन अपनी कक्षा की दीवार से पीठ सटाकर क्यों बैठ गया - क्योंकि शरारती बच्चे उनकी धोती खींच रहे थे।

53.आनंदा की कक्षा में शरारत किस कारण कम होने लगी - गणित के अध्यापक द्वारा शरारती बच्चों की पिटाई किए जाने के बाद।

54.लेखक को अकेलेपन में आनंद क्यों आने लगा - क्योंकि अकेले में वो अपनी कविताओं को लिख सकते थे , उनको खुलकर गा सकते थे और उनमें अभिनय भी कर सकते थे।

55.जूझ कहानी के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया - अब उन्हें अकेलापन अच्छा लगने लगा या अकेलेपन से बोरियत खत्म हो गई।

56.लेखक के मराठी शिक्षक की क्या विशेषताएं थी - उनको कविता में छंद , अलंकार , गति आरोह - अवरोह का अच्छा ज्ञान था

57.मराठी भाषा की कविताओं के अलावा सौंदलगेकर को किस भाषा की कविताएं कंठस्थ याद थी - गुजराती

58.आनंदा और उसकी मां ने , दत्ताजी राव से किस बात के लिए आग्रह किया - उन दोनों की उनके पास आने की बात दादा को न बताने का आग्रह किया।

59."आने दे अब उसे , मैं उसे सुनाता हूं कि नहीं , अच्छी तरह देख"। यह कथन किसने किससे कहा था - दत्ताजी राव ने लेखक की माता से कहा

60.अगर आनंदा और उसकी मां ने झूठ का सहारा ना लिए होता तो - आनंदा अशिक्षित ही रह जाते और वो कविताएं भी नहीं लिख पाते

61.कविता पाठ करते समय मराठी अध्यापक क्या करते थे - बीच बीच में अपने संस्मरण सुनाते थे

अभ्यास के लिए प्रश्न :

1. 'जूझ' पाठ के अनुसार कविता के प्रति लगाव से पहले और उसके बाद अकेलेपन के प्रति लेखक की धारणा में क्या बदलाव आया ? सही विकल्प छांटिए -

I. अकेलापन डरावना है
II. अकेलापन उपयोगी है
III. अकेलापन अनावश्यक है
IV. अकेलापन सामान्य प्रक्रिया है

2. 'जूझ' पाठ के अनुसार - "पढ़ाई-लिखाई के सम्बन्ध में लेखक और दत्ता जी राव का रवैया सही था |" क्योंकि -

I. लेखक खेती-बाड़ी नहीं करना चाहता था
II. लेखक व दत्ताजी राव जानते थे कि पढ़ाई- लिखाई से मनुष्य प्रगति करता है |
III. दत्ता जी राव खेती को महत्त्व देते थे
IV. लेखक केवल अपने पिता का विरोध करना चाहता था

3. जूझ पाठ में लेखक पढ़ाई क्यों करना चाहता था ?

I. ताकि वह शहर जा सके
II. ताकि वह पढ़-लिख कर नौकरी कर सके और चार पैसे उसके हाथ में आ जाए
III. ताकि वह कवि बन सके
IV. ताकि वह पाठशाला में मज़े कर सके

4. 'जूझ' शीर्षक कथानायक की किस केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ?

I. संघर्षशीलता
II. होशियार
III. खेती में रूचि
IV. विनम्रता

5. स्वयं कविता रच लेने का आत्मविश्वास लेखक के मन में कैसे पैदा हुआ ?

I. मास्टर साहब द्वारा पाठशाला के समारोह में कविता गवाने और मास्टर द्वारा शाबाशी देने से

II. मास्टर साहब के दरवाज़े पर छाई मालती की बेल को देखने व उस पर लिखी मास्टर की कविता को पढ़ने से

III. मास्टर द्वारा कवियों के संस्मरण सुनाने और कविता के शास्त्र की जानकारी देने के कारण

IV. उपर्युक्त सभी

6. श्री सौन्दलगेकर के अध्यापन की विशेषताओं से सम्बंधित असत्य कथन है -

I. उन्हें केवल मराठी की ही कविताएँ याद थीं

II. कविता गाकर सुनाते व अभिनय के साथ भाव-ग्रहण करवाते

III. अन्य कवियों की कविताएँ व उनसे मुलाक़ात के संस्मरण सुनाते

IV. सुरीला गला व रसिकता

7. लेखक के पिता ने उसे पाठशाला भेजने के लिए जो शर्तें रखी, उसमें इनमें से कौनसी शर्त नहीं थी ?

I. प्रतिदिन समय पर पाठशाला जाना

II. छुट्टी के बाद बस्ता घर रखकर खेत में ढोर चराना

III. ग्यारह बजे तक खेत में पानी देना, खेत से पाठशाला जाना

IV. खेत में ज्यादा काम होने पर पाठशाला से छुट्टी लेना

8. 'जूझ' पाठ के अनुसार वसंत पाटिल की विशेषता नहीं है ?

I. वह दुबला-पतला व होशियार था
II. वह घमंडी था
III. वह शांत स्वभाव वाला था
IV. वह घर से तैयारी करके आता था

9. 'जूझ' पाठ में लेखक का पाठशाला में विश्वास कैसे बढ़ने लगा ?

I. मास्टरों के अपनेपन के कारण
II. वसंत की दोस्ती के कारण
III. उपर्युक्त दोनों
IV. इनमें से कोई नहीं

10. लेखक ने अनंत काणेकर की कविता "चाँद रात पसरिते पांढरी गया धरणीवरी" को ----------नामक छंद में गाया जो मास्टर को अच्छा लगा **|**

I. दोहा
II. केशव करणी जाति
III. सवैया
IV. उपर्युक्त सभी

11. 'जूझ' पाठ में लेखक भैंस चराते-चराते किन विषयों पर कविता लिखता था ?

I. पाठशाला पर
II. फसलों, जंगली फूलों और वातावरण पर
III. परिवार के सदस्यों पर
IV. बच्चों पर

12. मराठी अध्यापक की किस बात से लेखक को लगा कि वह भी कविता कर सकता है ?

I. जब मास्टर ने काव्य-प्रतियोगिता रखी

II. जब लेखक ने मास्टर की दी हुई पुस्तकें पढ़ी

III. जब मास्टर ने अपने घर के दरवाज़े पर छाई हुई मालती की बेल पर कविता लिखी

IV. उपर्युक्त सभी

13.खेत में काम करते हुए अगर लेखक के पास कागज़ और पेंसिल न होते तो वह क्या करता था ?

I. कागज़ पेंसिल लेने घर जाता

II. अपनी हथेली पर लिखता

III. वह खेत में कुछ नहीं लिखता

IV. वह लकड़ी के छोटे टुकड़े से भैंस की पीठ पर लिखता या पत्थर की शिला पर कंकड़ से लिखता

14.मंत्री मास्टर के बारे में कौनसा कथन ग़लत है ?

I. वे बच्चों को मराठी पढ़ाते थे

II. वे गणित के अध्यापक थे

III. घूसा मारने के कारण बच्चे उनसे डरते थे

IV. वे पढ़ने वाले लड़कों को शाबाशी देते थे

15.दीवाली बीत जाने पर लेखक के पिता ईख पेरने का कोल्हू चलाते थे | उनका कोल्हू जल्दी चलाने का/के कारण था/थे ?

I. उनके गुड़ का अच्छा न होना

II. बाज़ार में जल्दी गुड़ लाने पर भाव अधिक मिलेगा

III. उपर्युक्त दोनों IV. इनमें से कोई नहीं

16. कविता के प्रति लगाव से पहले खेत में काम करते समय अकेलेपन के प्रति लेखक की क्या धारणा थी ?

I. ढोर चराते, पानी लगाते व दूसरे काम करते अकेलापन खटकता था

II. उसे लगता था कोई साथ में हो जिससे वह गपशप व हँसी मज़ाक कर सके |

III. उपर्युक्त दोनों

IV. अकेलापन अच्छा लगता था, समय आसानी से निकल जाता है

17.कविता के प्रति लगाव के बाद खेत में काम करते समय अकेलेपन के प्रति लेखक की क्या धारणा थी?

I. अकेलापन अच्छा लगता था, समय आसानी से निकल जाता है

II. अकेला होने पर वह ऊँची आवाज़ में गा सकता है व थुई-थुई कर नाच सकता है

III. उपर्युक्त दोनों

IV. उसे लगता था कोई साथ में हो जिससे वह गपशप व हँसी मज़ाक कर सके |

वितान पाठ-3 अतीत में दबे पाँव

- **पाठ का सार -** मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा दुनिया के दो सबसे पुराने नियोजित शहर माने जाते हैं | मुअनजो-दड़ो पाकिस्तान के सिंध प्रान्त में स्थित है और यह सिन्धु घाटी सभ्यता के अवशेषों के लिए विख्यात है | मुअनजो-दड़ो का अर्थ है मुर्दों का टीला | यह ताम्र काल का सबसे बड़ा शहर था | यह उस सभ्यता की राजधानी रहा होगा जिसका क्षेत्रफल 200 हैक्टर व आबादी 85000 रही होगी | सिन्धु नदी के पानी से बचाव के लिए टीलों पर नगर की बसावट की गई थी | हड़प्पा पाकिस्तान के पंजाब प्रान्त का पुरातात्विक स्थल जहाँ सिन्धु घाटी सभ्यता का दूसरा प्रमुख नगर बसा था | वर्ष 1922 में पुरातत्ववेत्ता राखलदास बनर्जी ने बौद्ध स्तूप के आस-पास की गई खुदाई में ईसा पूर्व के निशान पाए | लेखक ने इस बौद्ध स्तूप को नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप कहा है |

- नगर-नियोजन की अनूठी मिसाल है - मुअनजो-दड़ो | उनकी बसावट ग्रिड प्लान के अनुसार थी | वर्तमान में ब्रासीलिया, चंडीगढ़ और इस्लामाबाद ग्रिड शैली के शहर हैं | किसी भी घर का प्रवेश द्वार मुख्य सड़क पर नहीं खुलता था |घरों में बड़ा आँगन कुम्हारी या धातु व्यवसाय के लिए रखा जाता था |स्तूप वाले चबूतरे के सामने उच्च वर्ग और दक्षिण में कामगारों की बस्ती होती थी | अनुष्ठान के समय सामूहिक स्नान के लिए पक्की ईंटों से बने महाकुंड थे |

- सिन्धु-सभ्यता को जल-संस्कृति निम्नलिखित कारणों से कह सकते हैं -

1. नदी- सिन्धु सभ्यता सिन्धु नदी के किनारे बसी सभ्यता थी और नदी के पानी के नुकसान से बचने के लिए उन्होंने अपनी बसावट टीलों पर की थी |
2. कुएँ - यह संसार की पहली ज्ञात संस्कृति है जिसमें कुएँ पाए जाते थे | मुअनजो-दड़ो में पक्की ईंटों से बने लगभग सात सौ गोलाकार कुएँ थे जिनसे सिंचाई भी की जाती थी |
3. महाकुंड व स्नानघर - पवित्र जल के लिए अनुष्ठान के समय सामूहिक स्नान के लिए पक्की ईंटों से बने महाकुंड थे जिनकी पार्श्व दीवारों में सफ़ेद डामर का प्रयोग किया जाता था | उस समय प्रत्येक घर में एक स्नानघर होता था |
4. जल-निकासी -प्रत्येक घर में पक्की ईंटों से बनी नालियाँ होती थी जो बाहर एक हौद में खुलती थी | हौद का गंदा पानी भी पक्की ईंटों से बनी बंद नालियों से से आगे जाता था | मुख्य सड़क के दोनों तरफ़ समानांतर ढकी हुई नालियाँ होती थी |

- मुअनजो-दड़ो के घरों में कमरे छोटे होने के कारण -

मुअनजो-दड़ो आबादी अधिक होना | नौकरों के लिए नीचे कमरे होते थे, जो छोटे रखे जाते थे और नीचे के कमरे छोटे रखकर ऊपर की मंज़िल का निर्माण किया जाता था |

- मुख्य फ़सलें व फल - कपास, गेहूँ, जौ, सरसों, ज्वार, बाजरा, रागी,चना, बेर, खजूर, खरबूजे व अंगूर |

- एक ओर भूतकाल व इतिहास की जानकारी इसमें है तो वहीं लेखक व उनके साथियों को मुअनजो-दड़ो के घरों में दबे पाँव व चुपचाप घुसने का अपराध-बोध भी है | इसलिए पाठ का शीर्षक 'अतीत में दबे पाँव' रखा है |
- मुअनजो-दड़ो की गलियों में घूमते हुए लेखक को पश्चिमी राजस्थान के जैसलमेर जिले में स्थित कुलधरा गाँव की याद आती है |
- मुअनजो-दड़ो का अजायबघर छोटा ही है, जैसे किसी कस्बाई स्कूल की इमारत हो | मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली पचास हज़ार से अधिक चीज़ों में से कुछ ही इसमें प्रदर्शित हैं, जो इस प्रकार हैं -

काला पड़ गया गेहूँ, ताँबे और काँसे के बर्तन, मुहरें, वाद्य, ताँबे का आईना | चाक पर बने विशाल मृद-भांड (मिट्टी के बर्तन) व उन पर काले-भूरे चित्र, चौपड़ की गोटियाँ, दीये, मिट्टी के कंगन, मिट्टी की बैलगाड़ी व अन्य खिलौने | माप-तौल पत्थर, दो पाटन वाली चक्की, कंघी, रंग-बिरंगे पत्थरों के मानकों वाला हार और पत्थर के औज़ार | इस अजायबघर में प्रदर्शित चीज़ों में **औज़ार तो हैं, पर हथियार नहीं |**

- सिन्धु सभ्यता को लो-प्रोफ़ाइल सभ्यता इसलिए कहा गया क्योंकि वे छोटी-छोटी चीजों को महत्व देते थे | उनके औज़ार, नावें मूर्तियाँ व मूर्तियों पर छोटा मुकुट होता था और मुकुट पर सिरपेंच नहीं होता था | किसी भी बड़े महल व समाधियों के अवशेष भी नहीं हैं |

- सिन्धु सभ्यता का सौन्दर्य-बोध - उनकी वास्तुकला और नगर-नियोजन, धातु व पत्थर की मूर्तियाँ व मुहरें सुंदर होती थी |उनके द्वारा बनाए गए मृद्भांडों (मिट्टी के बर्तनों) पर मनुष्यों, वनस्पतियों व पशु-पक्षियों के सुंदर चित्र थे | उनका केश-विन्यास भी सुंदर था | उनकी लिपि सुघड़ अक्षरों वाली थी और खिलौने व आभूषण भी सुंदर थे | उस समय ताँबे, काँसे, हाथी दाँत व सोने की सुइयों से सुंदर कशीदाकारी (कपड़ों पर चित्र अंकित करने की कला) की जाती थी | उस समय की मूर्तियों पर गुलकारी वाले दुशाले (शाल जिस पर फूल चित्रित हो) भी पर मिलते हैं |

बहुविकल्पात्मक प्रश्न -

प्र.(1) 'अतीत में दबे पाँव' के लेखक हैं -

(क) मनोहर श्याम जोशी (ख) ओम थानवी

(ग) आनंद यादव (घ) ऐन फ्रैंक

प्र.(2) 'अतीत में दबे पाँव' के लेखक का सम्बन्ध किस समाचार-पत्र से नहीं रहा है ?

(क) राजस्थान पत्रिका (ख) जनसत्ता (दिल्ली)

(ग) जनसत्ता (कलकत्ता) (घ) पंजाब केसरी

प्र.(3) मुअनजो-दड़ो स्थित है -

(क) सिंध (पाकिस्तान) (ख) पंजाब (पाकिस्तान)

(ग) गुजरात (भारत) (घ) राजस्थान (भारत)

प्र.(4) मुअनजो-दड़ो की आबादी थी -

(क) लगभग 25000 (ख) लगभग 50000

(ग) लगभग 85000 (घ) लगभग 70000

प्र.(5) मुअनजो-दड़ो का अर्थ है -

(क) हमारा टीला (ख) रेत का टीला

(ग) मुर्दों का टीला (घ) पत्थर का टीला

प्र.(6) यह पहली ज्ञात संस्कृति है जिसमें _____ पाए जाते थे |

(क) तालाब (ख) कुएँ

(ग) नदी (घ) जीव-जंतु

प्र.(7) पुरातत्त्ववेत्ता राखलदास बनर्जी ने बौद्ध स्तूप के आस-पास की गई खुदाई में _____के निशान पाए -

(क) ईसा पूर्व (ख) ईसा पश्चात्

(ग) ईसा समकालीन समय (घ) बुद्ध के समकालीन समय

प्र.(8) मुअनजो-दड़ो का क्षेत्रफल लगभग था -

(क) 20 हैक्टर (ख) 50 हैक्टर

(ग) 100 हैक्टर (घ) 200 हैक्टर

प्र.(9) मुअनजो-दड़ो में अनुष्ठान के समय सामूहिक स्नान किसमें किया जाता था ?

(क) कुएँ में (ख) महाकुंड में

(ग) नदी में (घ) तालाब में

प्र.(10) मुअनजो-दड़ो में लगभग _____ कुएँ थे -

(क) 300 (ख) 500

(ग) 700 (घ) 900

प्र.(11) 'सिन्धु सभ्यता- एक जल संस्कृति थी' इस सम्बन्ध में कौनसा कथन असत्य है ?

(क) कुएँ आयताकार या चौकोर थे |

(ख) महाकुंड की पार्श्व दीवारों में सफ़ेद डामर का प्रयोग था |

(ग) जल-निकासी व्यवस्था बेजोड़ थी | (घ) महाकुंड में पवित्र जल होता था |

प्र.(12) निम्नलिखित में से कौनसी फ़सल सिन्धु सभ्यता के निवासी नहीं उगाते थे ?

(क) अरहर (ख) कपास

(ग) गेहूँ (घ) जौ

प्र.(13) निम्नलिखित में से कौनसा फल सिन्धु सभ्यता के निवासी नहीं उगाते थे ?

(क) खजूर (ख) खरबूजा

(ग) पपीता (घ) अंगूर

प्र.(14) मुअनजो-दड़ो से सम्बंधित कौनसा कथन असत्य है ?

(क) बसावट ग्रिड प्लान के अनुसार थी

(ख) सड़कें आड़ी व सीधी थी

(ग) घरों के प्रवेश द्वार मुख्य सड़क पर खुलते थे

(घ) घरों में बड़ा आँगन था

प्र.(15) सिन्धु घाटी सभ्यता की राजधानी कौनसा शहर रहा होगा ?

(क) हड़प्पा (ख) मुअनजो-दड़ो

(ग) सिंध (घ) गुजरात

प्र.(16) 'अतीत में दबे पाँव' में लेखक की किस स्थान की यात्रा के अनुभवों का वर्णन है ?

(क) हड़प्पा (ख) इस्लामाबाद

(ग) चंडीगढ़ (घ) मुअनजो-दड़ो

प्र.(17) सिंधु सभ्यता के लोग यातायात के साधन के रूप में प्रयोग में लाते थे -

(क) ऊँटगाड़ी (ख) बैलगाड़ी

(ग) घोड़ागाड़ी (घ) मोटरकार

प्र.(18) लेखक व उनके साथियों को अपराध बोध है -

(क) मुअनजो-दड़ो के घरों में दबे पाँव घुसने का

(ख) मुअनजो-दड़ो के अजायबघर छोटा होने का

(ग) मुअनजो-दड़ो पूरा न देख पाने का

(घ) मुअनजो-दड़ो की खुदाई करने का

प्र.(19) लेखक ने सिन्धु सभ्यता को लो-प्रोफ़ाइल सभ्यता कहा है-

(क) बड़ी चीज़ों को महत्त्व देने के कारण (ख) अधिक खेती करने के कारण

(ग) लघुता को महत्त्व देने के कारण (घ) धर्म को महत्त्व देने के कारण

प्र.(20) सिंधु सभ्यता का सौन्दर्य-बोध था-

(क) धर्म-पोषित (ख) समाज-पोषित

(ग) राज-पोषित (घ) व्यक्ति-पोषित

प्र.(21) मुअनजो-दड़ो की गलियों में घूमते हुए लेखक को किस स्थान की याद आती है ?

(क) हड़प्पा (ख) चंडीगढ़

(ग) कुलधरा (घ) दिल्ली

प्र.(22) मुअनजो-दड़ो की खुदाई में निकली चीज़ों की संख्या लगभग है -

(क) दस हज़ार से कुछ अधिक (ख) बीस हज़ार

(ग) तीस हज़ार (घ) पचास हज़ार से अधिक

प्र.(23) मुअनजो-दड़ो के अजायबघर में प्रदर्शित चीज़ों में नहीं है -

(क) लोहे के हथियार (ख) ताँबे के बर्तन

(ग) मृद्भांड (घ) चौपड़ की गोटियाँ

प्र.(24) सिन्धु सभ्यता- एक स्व-अनुशासित सभ्यता थी- इस कथन को पुष्ट करने वाला कथन नहीं है -

(क) उस समय साफ़-सफ़ाई अच्छी थी

(ख) उस समय राजतंत्र था

(ग) उस समय औज़ारों के अवशेष मिले हैं

(घ) उस समय सामाजिक व्यवस्थाएँ उत्तम थी

प्र.(25) सिंधु सभ्यता- लो-प्रोफ़ाइल सभ्यता थी- इस कथन को पुष्ट करने वाला कथन नहीं है-

(क) मूर्तियाँ छोटी होती थी (ख) औज़ार छोटे होते थे

(ग) नावों का आकार छोटा होता था (घ) महल बड़े व हथियार छोटे होते थे

प्र.(26) सिंधु सभ्यता की कौनसी विशेषता नहीं थी ?

(क) इस सभ्यता का जल-प्रबंध उत्तम था, इसलिए इसे जल-संस्कृति कहा गया है

(ख) यह सभ्यता सुनियोजित और सौन्दर्य-बोध से परिपूर्ण थी

(ग) इनकी लिपि अक्षरात्मक थी जिसे पढ़ा नहीं जा सका

(घ) इसके तांबे और कांसे के बर्तन, मुहरें, मृद्भांड व पत्थर के औजार भी मिले हैं

प्र.(27) मुअनजो-दड़ो और हड़प्पा सिन्धु सभ्यता के ----------दौर के शहर हैं -

(क) आरंभिक (ख) मध्य

(ग) परवर्ती या परिपक्व (घ) आरम्भ-मध्य

प्र.(28)"सिंधु सभ्यता साधन- संपन्न थी, पर उसमें भव्यता का आडंबर नहीं था |" पंक्ति का तात्पर्य है -

(क) इस सभ्यता में साधन बहुत थे जो देखने में आकर्षक थे |

(ख) इस सभ्यता में राजा प्रजा की तरह सादगी से रहता था |

(ग) इस सभ्यता में सभी लोग संपन्न थे और वे दिखावा नहीं करते थे |

(घ) इस सभ्यता में सभी प्रकार के साधन थे किन्तु दिखावा नहीं था |

प्र.(29) " सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौन्दर्य बोध है जो राज-पोषित या धर्म-पोषित न होकर समाज-पोषित था |" ऐसा इसलिए कहा गया है, क्योंकि-

(क) सिन्धु घाटी सभ्यता में अमीर-गरीब न थे, अतः समाज में समानता थी |

(ख) सिन्धु घाटी सभ्यता में धर्म का महत्त्व न था, अतः समाज सर्वोपरि था |

(ग) सिन्धु घाटी सभ्यता में लोगों के सुंदर कार्यों को समाज महत्त्व दिया जाता था और वे सुंदर वस्तुएँ बनाते थे |

(घ) सिंधु घाटी सभ्यता के सभी लोगों में सौन्दर्य के प्रति चेतना अधिक थी |

प्र.(30) " टूटे-फूटे खंडहर, सभ्यता और संस्कृति के इतिहास के साथ-साथ धड़कती जिंदगियों के अनछुए समयों का भी दस्तावेज हैं|" इस कथन का भाव हो सकता है -

(क) पुरातन इमारतों के अध्ययन मात्र से इतिहास की व्याख्या संभव हो पाती है |

(ख) इतिहास की समझ हेतु केवल सभ्यता और संस्कृति को जानना आवश्यक होता है |

(ग) ऐतिहासिक इमारतों में बीते हुए जीवन के चिह्न महसूस होते हैं |

(घ) ऐतिहासिक इमारतों, कला, खान-पान इत्यादि में सदा जीवन्तता होती है |

प्र.(31) मुअनजो-दड़ो की बसावट के संबंध में कौनसा कथन सही है ?

(क) पूरा मुअनजो-दड़ो छोटे-मोटे टीलों पर आबाद था

(ख) ये टीले प्राकृतिक नहीं थे

(ग) कच्ची व पक्की ईंटों से सतह को ऊपर उठाया गया ताकि सिन्धु के पानी से बचाव हो सके

(घ) सभी कथन सही हैं

प्र.(32) सन 1922 में कौन बौद्ध स्तूप की खोजबीन करना चाहते थे ?

(क) राखलदास बनर्जी

(ख) दीक्षित काशीनाथ

(ग) माधोस्वरूप वत्स

(घ) जॉन मार्शल

प्र.(33) भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के महानिदेशक जिनके निर्देश पर खुदाई का व्यापक अभियान शुरू हुआ -

(क) राखलदास बनर्जी (ख) दीक्षित काशीनाथ

(ग) माधोस्वरूप वत्स (घ) जॉन मार्शल

प्र.(34) नागर भारत का सबसे पुराना लैंडस्केप किसे कहा गया है ?

(क) बौद्ध स्तूप

(ख) हड़प्पा के घर

(ग) मुअनजो-दड़ो की गलियाँ

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(35) सिन्धु घाटी सभ्यता के अद्वितीय वास्तुकौशल को प्रदर्शित करने वाला निर्माण जो अपने मूलस्वरूप के नज़दीक बचा रह सका है -

(क) ज्ञानशाला

(ख) कोठार

(ग) सभा भवन

(घ) आनुष्ठानिक महाकुंड

प्र.(36) निम्नलिखित में से ग्रिड शैली का शहर नहीं है -

(क) ब्रासीलिया (ख) चंडीगढ़

(ग) इस्लामाबाद (घ) जम्मू

प्र.(37) मुअनजो-दड़ो की नगर-योजना आज की सेक्टर-मार्का कॉलोनियों के नीरस नियोजन की अपेक्षा ज्यादा रचनात्मक थीं क्योंकि-

(क) उसकी बसावट शहर के खुद विकसने का अवकाश छोड़ कर चलती थीं

(ख) उनका आड़ा-तिरछा नियोजन था

(ग) आधुनिक साधन सुविधाओं के कारण

(घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(38) महाकुंड के संबंध में कौनसा कथन ग़लत है ?

(क) कुंड 40 फुट लम्बे, 25 फुट चौड़े, 7 फुट गहरे होते थे

(ख)इनके तीन तरफ साधुओं के कमरे होते थे

(ग) महाकुंड की पार्श्व दीवारों में सफ़ेद डामर का प्रयोग किया जाता था

(घ) कुंड में चारों दिशाओं से सीढ़ियाँ उतरती थीं

प्र.(39) 'मेलुहा' शब्द का प्रयोग किया जाता था -

(क) हड़प्पा के लिए (ख) मुअनजो-दड़ो के लिए

(ग) मेसोपोटामिया के लिए (घ) मिस्त्र के लिए

प्र.(40) सिंधु घाटी सभ्यता की खेती और व्यापार के सम्बन्ध में कौनसा कथन गलत है ?

(क) सिंधु सभ्यता के लोग रबी की फ़सल लेते थे

(ख) यहाँ कपास की खेती होती थी

(ग) सिंधु घाटी के लोग अन्न उपजाते नहीं थे बल्कि आयात करते थे

(घ) मुअनजो-दड़ो में सूत की कताई-बुनाई के साथ रंगाई भी होती थी

उत्तर: (ग) सिंधु घाटी के लोग अन्न उपजाते नहीं थे बल्कि आयात करते थे

प्र.(41) कुलधरा कहाँ है ?

(क) जयपुर में (ख) जैसलमेर में

(ग) जम्मू में (घ) जालंधर में

प्र.(42) चंडीगढ़ के वास्तुकार थे -

(क) जॉन मार्शल (ख) माधोस्वरूप वत्स

(ग) कार्बूजिए (घ) उपर्युक्त सभी

प्र.(43) मुअनजो-दड़ो में बड़े घरों में कमरे छोटे का / के कारण हैं -

(क) शहर की आबादी अधिक होना (ख) छोटे कमरे नौकरों के लिए

(ग) उपर्युक्त दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(44) मुअनजो-दड़ो के किसी भी घर में खिड़कियों या दरवाज़ों पर छज्जों के चिह्न नहीं होने से लेखक ने क्या अनुमान लगाया ?

(क) मुअनजो-दड़ो में उस वक्त मरुभूमि नहीं थी

(ख) वहाँ रेगिस्तान ही रहा होगा

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(45) जॉन मार्शल ने मुअनजो-दड़ो पर ---------- खण्डों का विशद प्रबंध छपवाया |

(क) तीन (ख) चार

(ग) पाँच (घ) सात

प्र.(46) सिन्धु सभ्यता के सौन्दर्य बोध से सम्बंधित कौनसा कथन असत्य है ?

(क) उनके द्वारा बनाए गए मृद्भांडों पर मनुष्यों, वनस्पतियों व पशु-पक्षियों के सुंदर चित्र थे |

(ख) उनकी मुहरें सुंदर होती थी जिन पर बारीक आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थी |

(ग) उनकी लिपि सुघड़ अक्षरों वाली थी और खिलौने व आभूषण भी सुंदर थे |

(घ) उस समय बड़ी समाधियाँ व महल होते थे |

प्र.(47) मुअनजो-दड़ो में खुदाई बंद करने का कारण है -

(क) सिन्धु के पानी के रिसाव से क्षार और दलदल की समस्या के कारण

(ख) रेललाइन बिछाने के कारण

(ग) अजायबघरों में स्थान की कमी के कारण

(घ) चीज़ें अन्य स्थानों पर ले जाने के कारण

प्र.(48) मुअनजो-दड़ो किस युग के शहरों में सबसे बड़ा शहर है ?

(क) लौह युग (ख) ताम्र युग

(ग) कांस्य युग (घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(49) अतीत में दबे पाँव शीर्षक की सार्थकता को प्रकट करने वाला / वाले कथन हैं -

(क) इस पाठ से हमें अतीत (भूतकाल) में बसे सुनियोजित नगरों,सड़कों,अनाज भंडारों, यातायात के साधन के रूप में बैलगाड़ी, उनकी जीवन-शैली आदि की जानकारी मिलती है |

(ख) लेखक और उनके साथी मकान मालिकों की इजाज़त के बिना उनके घरों में धीरे से व दबे पाँव प्रवेश

कर गए |

(ग) उपर्युक्त दोनों

(घ) इनमें से कोई नहीं

प्र.(50) मुअनजो-दड़ो के कोठार में क्या संग्रह किया जाता रहा होगा **?**

(क) खुदाई में निकली चीज़ें (ख) कर के रूप में हासिल अनाज

(ग) यातायात के साधन (घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तरमाला -

1	ख	11	क	21	ग	31	घ	41	ख
2	घ	12	क	22	घ	32	क	42	ग
3	क	13	ग	23	क	33	घ	43	ग
4	ग	14	ग	24	ख	34	क	44	क
5	ग	15	ख	25	घ	35	घ	45	क
6	ख	16	घ	26	ग	36	घ	46	घ
7	क	17	ख	27	ग	37	क	47	क
8	घ	18	क	28	घ	38	घ	48	ख
9	ख	19	ग	29	ग	39	ख	49	ग
10	ग	20	ख	30	ग	40	ग	50	ख

****

केंद्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू सम्भाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र- 1 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- **इस प्रश्न-पत्र में दो खंड है - खंड 'अ' और 'ब' |**
- **खंड 'अ' में प्रश्न संख्या 1 से 6 तक हैं जिनमें कुल 45 बहुविकल्पात्मक प्रश्न हैं तथा इनमें से निर्देशानुसार 40 प्रश्नों के ही उत्तर दिए जाएँ |**
- **खंड 'अ' में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं | इन विकल्पों में से सबसे उचित का चयन कर सावधानीपूर्वक लिखिए |**
- **खंड 'ब' में प्रश्न संख्या 7 से 13 तक है जिनमें वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |**
- **निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़िए और उनका पालन कीजिए |**

खंड- 'अ' बहुविकल्पात्मक (40 अंक)		
प्र.(1)	**निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए:**	**1x10=10**
	परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है । जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी गया है - उद्योगी को सब कुछ मिलता है और भाग्यवादी को कुछ भी नहीं मिलता, अवसर उनके हाथ से निकल जाता है। कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम भाग्य है । प्रकृति को ही देखिए; सारे जड़-चेतन अपने काम में लगे रहते हैं, चींटी को पलभर चैन नहीं, मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूँद- बूँद मधु जुटाती है। मुर्गे को सुबह बांग लगानी होती है, फिर मनुष्य को बुद्धि और विवेक मिला है वह सिर्फ सफलता की कामना करता क्यों बैठा रहे? विश्व में जो देश आगे बढ़े हैं उनकी सफलता का रहस्य कठिन परिश्रम ही है। जापान को दूसरे विश्वयुद्ध में मिट्टी में मिला दिया गया था । उसकी अर्थव्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई थी लेकिन दिन-रात परिश्रम करके आज वह विश्व का प्रमुख	

औद्योगिक और विकसित देश बन गया है । चीन भी अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ा है । जर्मनी ने भी युद्ध की विभीषिका झेली पर परिश्रम के बल पर ही संभल गया। परिश्रम का महत्व वे जानते हैं जो स्वयं अपने बल पर आगे बढ़े हैं । संसार के इतिहास में अनेक चमकते सितारे केवल परिश्रम के ही प्रमाण हैं ।

हमारे पूर्व राष्ट्रपति श्री अब्दुल कलाम परिश्रम और मनोबल से ही देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए, उनका कहना था- "भाग्य के भरोसे बैठने वाले को उतना ही मिलता है जितना मेहनत करने वाले छोड़ देते हैं।" हमारे बड़े-बड़े धनकुबेर व्यापारी टाटा,बिरला, अंबानी यह सब परिश्रम के ही उदाहरण है | निरंतर परिश्रम और दृढ़ संकल्प हमारे लक्ष्य को हमारे करीब लाता है । गरीब परिश्रम करके अमीर हो जाता है और अमीर शिथिल बनकर असफल हो जाता है। भारतीय कृषक के परिश्रम का ही फल है कि देश में हरित क्रांति हुई। अमेरिका के सड़े गेहूँ से पेट भरने वाला भारत आज मजबूरी नहीं, बल्कि मजबूती से खड़ा है तो इसके पीछे इसके पीछे कठोर परिश्रम और धैर्य ही है । हमारे कारखाने दिन-रात उत्पादन कर रहे हैं, विकासशील देशों में पिछड़े माने जाने वाले हम भारतवासी आज विकसित देशों से प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं । अगर हम कहीं पिछड़े हैं तो उसका कारण परिश्रम का अभाव ही होगा। परिश्रम के बिना जीवन में कुछ नहीं मिलता | किसी ने सही कहा है- सकल पदारथ है जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं | यदि विद्यार्थी जीवन से ही परिश्रम की आदत पड़ जाएगी तो हम जीवन में कभी असफल नहीं हो सकते । विद्यार्थी जीवन तो परिश्रम की पहली पाठशाला है तो न सिर्फ हमारी शिक्षा बल्कि हमारा भविष्य भी सुरक्षित और मजबूत हो जाता है ।

(I) **उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक होगा** -

(क) भाग्य बलवान होता है (ख) आलसी जीवन

(ग) परिश्रम का महत्व (घ) इनमेंसे कोई नहीं

(II) **जीवन में सफलता पाने का सबसे बड़ा माध्यम क्या है?**

(क) पैसा (ख) विद्वत्ता (ग) चालाकी (घ) पुरुषार्थ

(III) **जापान, जर्मनी, चीन जैसे देश विपरीत परिस्थितियों से बाहर कैसे निकले?**

(क) युद्ध से (ख) व्यापार से (ग) विदेशनीति से (घ) परिश्रम से

	(IV) **हमारे लक्ष्य को हमारे करीब कौन लाता है?** (क) परिश्रम और दृढसंकल्प (ख) पैसा और शिक्षा (ग) सिर्फपैसा (घ) राजनीति (V) **आज हमारा देश बड़े-बड़े देशों के सामने किस रूपमें खड़ा है?** (क) याचक के रूप में (ख) प्रतिस्पर्धी के रूप में (ग) शत्रु के रूप में (घ) इनमें से कोईनहीं (VI) **परिश्रम की पहली पाठशाला कहाँ मिलती है ?** (क) जन्म से (ख) घर में (ग) विद्यार्थी जीवन में (घ) नौकरी करने पर (VII) **हमारे किसानों के परिश्रम से देश में कौन सी क्रांति आयी?** (क) हरित क्रांति (ख) श्वेत क्रांति (ग)लाल क्रांति (घ) सभी सही हैं (VIII) **निम्नलिखित में से कौन सी पंक्ति पुरुषार्थ या परिश्रम के महत्त्व पर सटीक बैठती है?** (क) करम गति टारे नाहीं टरे (ख) पुरुष बली नहीं होता है समय होतबलवान (ग) सबके दाता राम (घ) सकल पदारथ है जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं (IX) **इनमें से कौन सा शब्द 'विभीषिका' का समानार्थी होगा-** (क) दुष्प्रभाव (ख) त्रासदी (ग) हानि (घ) कोई नहीं (X) **'परिश्रम' शब्द में उपसर्ग है-** (क) पर (ख) परा (ग) परि (घ) परी	
प्र.(2)	**निम्नलिखित दो पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	नवीन कंठ दो कि मैं नवीन गा सकूँ, स्वतंत्र देश की नवीन आरती सजा सकूँ । नवीन दृष्टि का नया विधान आज हो रहा, नवीन आसमान में विहान आज हो रहा, खुली दसों दिशाएँ खुले कपाट ज्योति-द्वार के- विमुक्त राष्ट्र सूर्य भासमान आज हो रहा । युगांत की व्यथा लिए अतीत आज रो रहा।	

दिगंत में वसंत का भविष्य बीज बो रहा ,
कुलीन जो उसे नहीं गुमान या गरूर है ,
समर्थ शक्ति पूर्ण जो किसान या मजूर है।
भविष्य द्वार मुक्त से स्वतंत्र भाव से चलो,
मनुष्य बन मनुष्य से गले मिले चले चलो ,
समान भाव के प्रकाशवान सूर्य के तले
समान रूप गंध फूल फूल से खिले चलो।
सुदीर्घ क्रांति झेल खेल की ज्वलंत आग से
स्वदेश बल संजो रहा कड़ी थकान खो रहा।
प्रबुद्ध राष्ट्र की नवीन वंदना सुना सकूँ
नवीन बीन दो कि मैं अगीत गान गा सकूँ
नए समाज के लिए नवीन नींव पड़ चुकी
नए मकान के लिए नवीन ईंट गढ़ चुकी
सभी कुटुंब एक कौन पास कौन दूर है
नए समाज का हर एक व्यक्ति एक नूर है।

(I) **कवि नई आवाज की आवश्यकता क्यों महसूस कर रहा है?**

(क) ताकि वह स्वतंत्र देश के लिए नए गीत गा सके
(ख) ताकि वह नई आरती सजा सके
(ग) ताकि वह लोगों के अंदर नहीं जागरूकता ला सके
(घ) उपर्युक्त सभी

(II) **नए समाज का हर एक व्यक्ति एक नूर है - पंक्ति में नूर का अर्थ बताइए** |

(क) नूरमहल है (ख) हीरा है
(ग) चंद्रमा है (घ) प्रकाश के गुणों से युक्त है

(III) **कवि मनुष्य को क्या परामर्श देता है ?**

(क) आजादी के बाद हमें मिलकर आगे बढ़ना है
(ख) सूर्य व फूलों के समान समानता का भाव अपनाना है
(ग) एक नए समाज की रचना करनी है
(घ) उपर्युक्त सभी

(IV) **कवि के अनुसार कुलीन की क्या विशेषता है?**

(क) जो घमंड नहीं दिखाता है (ख) जो धनी हो
(ग) जो देश की आजादी में योगदान दें (ग) इनमें से कोई नहीं

	(V) **मनुष्य बन मनुष्य से गले मिलो चले चलो- पंक्ति का अर्थ है** (क) आगे बढ़ना (ख) गले मिलना (ग) समाज को आगे बढ़ाना (घ) देश की उन्नति के विषय में सोचना	
	अथवा	
	विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी मरो परन्तु यों मरो याद जो करे सभी | हुई न यों सु- मृत्यु तो वृथा मरे , वृथा जिए मरा नहीं वही कि जो जिया न आपके लिए यही पशु- प्रवृति है कि आप-आप ही चरे वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे | उसी उदार की कथा सरस्वती बखानती उसी उदार से धरा कृतार्थ भाव मानती | उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती तथा उसी उदार को समस्त सृष्टि पूजती अखंड आत्म भाव जो असीम विश्व में भरे वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे | (I) **'मर्त्य' का प्रयोग कवि ने किसके लिए किया है ?** (क) देवता (ख) मछली (ग) मनुष्य (घ) असुर (II) **'सु-मृत्यु' की प्रमुख विशेषता क्या है ?** (क) मरने के बाद लोग याद करते हैं (ख) घर में मृत्यु हो (ग) युद्धभूमि में मृत्यु हो (घ) रोग से मृत्यु हो (III) **पशु - प्रवृत्ति क्या है ?** (क) चारा खाना (ख) केवल अपना स्वार्थ साधना (ग) सबकी भलाई के बारे में सोचना (घ) जंगल में रहना (IV) **सरस्वती किसकी कथा बखानती है ?** (क) जो मानव दूसरों के लिए अपनी जान दे दे (ख) जो विजयी हो (ग) जो साहसी हो (घ) जो अपनी सुरक्षा हेतु जान दे दे	

	(V) **'उसी उदार की सदा सजीव कीर्ति कूजती' में कौनसा अलंकार है ?** (क) मानवीकरण (ख) उत्प्रेक्षा (ग) यमक (घ) अनुप्रास	
प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	(I) **संचार की प्रक्रिया जब बड़े पैमाने पर होती है तब उसे कहते है ?** (क) जनमाध्यम (ख) मीडिया (ग) जनसंचार (घ) सम्प्रेषण (II) **"महाराष्ट्र में बाढ़ का संकट गहराता जा रहा है | राज्य में मरने वालों की संख्या बढ़कर चार सौ पैंसठ हुई"| समाचार का यह हिस्सा उल्टा पिरामिड शैली के किस हिस्से में आएगा ?** (क) इंट्रो (ख) बॉडी (ग) समापन (घ) मुख्य हिस्सा (III) **किसी समाचार पत्र के लिए निश्चित मानदेय पर कम करने वाला पत्रकार कहलाता है ?** (क) फ्रीलांसर (ख) स्ट्रिंगर (ग) पूर्णकालिक (घ) अनुबंधित (IV)**निम्न में से कौनसा ककार सूचनात्मक ककार नहीं है ?** (क) क्या? (ख) कौन? (ग) कब ? (घ) क्यों ? (V)**संवाददाताओं के बीच काम का विभाजन आमतौर पर उनकी दिलचस्पी और उनके ज्ञान को ध्यान में रखते हुए किया जाता है | मीडिया की भाषा में इसे क्या कहते है?** (क) बीट (ख) बाईट (ग) समाचार (घ) संपादन	
प्र.(4)	**निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	दिन जल्दी-जल्दी ढलता है! *हो जाए न पथ में रात कहीं,* *मंजिल भी तो है दूर नहीं-* *यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है !* *दिन जल्दी-जल्दी ढोलता है !* *बच्चे प्रत्याशा में होंगे,* *नीड़ों से झाँक रहे होंगे-* *यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है !* *दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !* *मुझसे मिलने को कौन विकल ?*	

	मैं होऊँ किसके हित चंचल ? *यह प्रश्न शिथिल करता पद को, भरता उर में विहवलता है !* *दिन जल्दी-जल्दी ढलता है !* (I) ***इस गीत में कवि किसका वर्णन किया है ?*** (क) एकाकी जीवन की कुंठा तथा प्रेम की व्याकुलता का वर्णन किया है (ख) चिड़िया के कार्य का वर्णन किया है (ग) किसी प्रतीक्षारत व्यक्ति की व्याकुलता का वर्णन (घ) किसी का नहीं (II) **कवि के ह्रदय की व्याकुलता बढ़ने का क्या कारण है ?** (क) एकाकीपन की पीड़ा (ख) प्रेयसी का वियोग (ग) ढलता हूआ दिन (घ) क और ख दोनों (III) **'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में कवि की हताशा और निराशा का क्या कारण है** (क) बच्चे की मृत्यु के कारण (ख) पत्नी से तलाक के कारण (ग) परिवार से बिछुड़ने के कारण (घ) भाई की मृत्यु के कारण (IV) **काव्यांश में 'प्रत्याशा' शब्द का क्या अर्थ है ?** (क) लौटने की आशा (ख) खाना पीना (ग) निराशा (घ) आश्रय (V) **कवि के पैरों को कौन शिथिल कर रहा है ?** (क) ढलती रात (ख) उसके लिए कोई व्याकुल नहीं है (ग) जल्दी जल्दी ढलता दिन (घ) रास्ते का प्रेम	

प्र.(5)	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	भक्तिन का दुर्भाग्य भी उससे कम हठी नहीं था, इसी से किशोरी से युवती होते ही बड़ी लड़की भी विधवा हो गई। भयहू से पार न पा सकने वाले जेठों और काकी को परास्त करने के लिए कटिबद्ध जिठौतों ने आशा की एक किरण देख पाई । विधवा बहिन के गठबंधन के लिए बड़ा जिठौत अपने तीतर लड़ाने वाले साले को बुला लाया, क्योंकि उसका हो जाने पर सब कुछ उन्हीं के अधिकार में रहता। भक्तिन की लड़की भी माँ से कम समझदार नहीं थी, इसी से उसने वर को नापसंद कर दिया। बाहर के बहनोई का आना चचेरे भाइयों के लिए सुविधाजनक नहीं था, अतः यह प्रस्ताव जहाँ-का-तहाँ रह गया । तब वे दोनों माँ-बेटी खूब मन लगाकर अपनी संपत्ति की देख-भाल करने लगे और 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' की कहावत चरितार्थ करने वाले वर के समर्थक उसे किसी-न-किसी प्रकार पति की पदवी पर अभिषिक्त करने का उपाय सोचने लगे। (I) **भक्तिन के हठी दुर्भाग्य के संबंध में कौन सी अवधारणा शामिल नहीं है?** (क) भक्तिन की माता -पिता का बिछोह (ख) सौतेली माँ से मिले कष्ट (ग) परिवार का सुख (घ) पति की असमय मृत्यु (II) **भक्तिन के जेठ और जिठानियाँ किस बात के लिए कटिबद्ध थे?** (क) भक्तिन का आत्म सम्मान नष्ट करने के लिए (ख) भक्तिन और उसकी बेटी को अलग करने के लिए (ग) भक्तिन और उसकी बेटियों को साथ रखने के लिए (घ) भक्तिन की हर संभव सहायता करने के लिए (III) **भक्तिन की विधवा बेटी का पुनर्विवाह करवाने के मूल में जिठौत की कौन से मंशा छिपी थी ?** (क) सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वाह (ख) भक्तिन के साथ अपने रिश्ते का निर्वाह (ग) भक्तिन की जायदाद पर गिद्धदृष्टि (घ) चचेरी बहन का घर बसने की शुभेच्छा	

	(IV) **चचेरे भाइयों के लिए असुविधाजनक क्या था?** (क) अपनी पसंद के वर से भक्तिन की बेटी का विवाह होना (ख) भक्तिन की पसंद के वर से चचेरी बहन का विवाह होना (ग) भक्तिन की बेटी का पुनर्विवाह होना (घ) भक्तिन और उसकी बेटी द्वारा जायदाद संभाले रखना (V) **भक्तिन की विधवा पुत्री द्वारा अपने चचेरे भाइयों की पसंद के वर से इंकार करने का मुख्य कारण क्या था?** (क) वर का सुंदर होना (ख) भक्तिन को वर पसंद न आना (ग) चचेरे भाइयों की बदनीयती का ज्ञान होना (घ) जिम्मेदारियां न संभाल पाने का भय होना	
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x10=10**
	(I) **'आप लोगों की देखादेखी से सेक्सन की घड़ी भी सुस्त चलने लगी है' यह किसका कथन है ?** (क)यशोधर पन्त का (ख)चड्ढा का (ग)किशन दा (घ)भगवान दास का (II) **यशोधर बाबू ने मैट्रिक परीक्षा कहाँ से पास की थी ?** (क)रेम्जे स्कूल दिल्ली (ख)रेम्जे स्कूल देहरादून (ग)रेम्जे स्कूल अल्मोड़ा (घ)रेम्जे स्कूल जयपुर (III) **सामाजिक जीवन में जो कार्य सिद्धांत विरुद्ध हो तब यशोधर किस तकिया कलाम का उपयोग करते थे ?** (क)जो हुआ होगा (ख)समहाउ इम्प्रापर (ग)आई डू नॉट माइंड (घ)उपरोक्त में से कोई नहीं (IV) **सुमेलित कीजिए -** 1 सी जी एच एस से - (A) सब्जी लाना 2 पहाड़गंज से - (B) कोयला लाना 3 डिपो से - (C) दालें लाना 4 सदर बाजार से - (D) दवा लाना (क) 1 (C), 2 (B), 3 (D), 4 (A)	

(ख) 1 (B), 2 (C), 3 (A), 4 (D)
(ग) 1 (D), 2 (A), 3 (B), 4 (C)
(घ) 1 (D), 2 (A), 3 (C), 4 (B)

(V) **'जूझ' उपन्यास की मूल विषयवस्तु क्या है ?**
(क) गंवई जीवन के यथार्थ का वर्णन
(ख) गंवई जीवन के रंगारंग परिवेश का वर्णन
(ग) लड़ते-जूझते किसान-मजदूर के संघर्ष की कहानी
(घ) उपर्युक्त सभी

(VI) **आनंद यादव के पिता सबसे पहले कोल्हू क्यों चलाते है ?**
(क) ताकि गुड़ के अच्छे दाम मिल सके
(ख) ताकि गुड़ की अच्छी गुणवत्ता प्राप्त हो सके
(ग) गुड़ ज्यादा बिक सके
(घ) सबसे पहले आराम मिल सके |

(VII) **'जूझ' कहानी के आधार पर आनंदा की कौनसी विशेषता नहीं थी ?**
(क) पढ़ने की लालसा
(ख) पिता का सम्मान न करना
(ग) आत्मविश्वासी तथा कर्म
(घ) कविता के प्रति लगाव

(VIII) **कोठार किसके काम आता होगा ?**
(क) सुरक्षा के लिए
(ख) धन जमा करने के लिए
(ग) अनाज जमा करने के लिए
(घ) पानी जमा करने के लिए

(IX) **लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है?**
(क) राज-पोषित
(ख) धर्म-पोषित
(ग) समाज-पोषित
(घ) व्यापार-पोषित

(X) **दक्षिण में टूटे-फूटे घरों का जमघट किसकी बस्ती मानी गई है?**
(क) अमीरों की (ख) भिक्षुओं की
(ग) कामगारों की (घ) शिक्षकों की

	खंड- 'ब' वर्णनात्मक (40 अंक)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**	**6x1=6**
	(क) टेक्नोलॉजी की ओर बदलती दुनिया (ख) मनोरंजन के आधुनिक साधन (ग) युवा असंतोष (घ) शिक्षा का महत्व	
प्र.(8)	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए -**	**3x2=6**
	(क) कहानी और नाटक में क्या समानता होती है ? अथवा कहानी को नाटक में बदलने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है? (ख) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता क्यों दी जाती है ? अथवा रेडियो व श्रव्य माध्यम का क्या महत्त्व है? स्पष्ट कीजिए |	
प्र.(9)	**निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए -**	**4x2=8**
	(क) रेडियो समाचार लेखन के लिए बुनियादी बातों को विस्तृत रूप में लिखिए ? (ख) भारत में इंटरनेट पत्रकारिता के इतिहास का संक्षिप्त परिचय दीजिए ? (ग) पत्रकारीय लेखन क्या है ? पत्रकार के कितने प्रकार होते है ? स्पष्ट कीजिए |	
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(क) सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, उसका वर्णन अपने शब्दों में करें। (ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, किंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में 'सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती हैं? कैसे? (ग) हम समर्थ शक्तिमान और हम एक दुर्बल को लाएँगे, पंक्ति के माध्यम से क्या व्यंग्य किया है ?	

प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(क) 'अस्थिर सुख पर दुख की छाया' पंक्ति में 'दुख की छाया' किसे कहा गया हैं और क्यों? (ख) शोकग्रस्त माहौल में हनुमान के अवतरण को करुण रस के बीच वीर रस का आविर्भाव क्यों कहा गया हैं? (ग) 'छोटा मेरा खेत' कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है?	
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(क) बाज़ार किसी का लिंग ,जाति ,धर्म या क्षेत्र नहीं देखता, वह देखता है सिर्फ़ उसकी क्रय -शक्ति को। इस रूप में वह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आप इससे कहाँ तक सहमत है ? (ख) काले मेघा पानी दे ,संस्मरण के लेखक ने लोक - प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहकरण उनके निराकरण पर बल दिया है। - इस कथन की विवेचना कीजिए ? (ग) महामारी फैलने के बाद गाँव में सूर्योदय और सूर्यास्त के दृश्य में क्या अंतर होता था?	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(क) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत की तरह क्यों माना है ? (ख) लेखक ने किन विशेषताओं को आदर्श समाज की धुरी माना हैं और क्यों ? (ग) मनुष्य की क्षमता किन बातों पर निर्भर होती है ?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र- 1 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

अंक योजना व उत्तर संकेत

प्रश्न-1. अपठित गद्यांश **1x10=10**

(I) (ग) परिश्रम का महत्व (II) (घ) पुरुषार्थ

(III) (घ) परिश्रम से (IV) (क) परिश्रम और दृढसंकल्प

(V) (ख) प्रतिस्पर्धी के रूप में (VI) (ग) विद्यार्थी जीवन में

(VII) (क) हरित क्रांति (VIII) (घ) सकल पदारथ है जग माहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं

(IX) (ख) त्रासदी (X) (ग) परि

प्रश्न-2 अपठित काव्यांश **1x5=5**

(I) (घ) उपर्युक्त सभी

(II) (घ) प्रकाश के गुणों से युक्त है

(III) (घ) उपर्युक्त सभी

(IV) (क) जो घमंड नहीं दिखाता है

(V) (घ) देश की उन्नति के विषय में सोचना

अथवा

(I) (ग) मनुष्य

(II) (क) मरने के बाद लोग याद करते हैं

(III) (ख) केवल अपना स्वार्थ साधना

(IV) (क) जो मानव दूसरों के लिए अपनी जान दे दे

(V) (घ) अनुप्रास

प्रश्न-3 पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प **1x5=5**

(I) (ग) जनसंचार

(II) (क) इंट्रो

(III) (ख) स्ट्रिंगर

(IV) (घ) क्यों?

(V) (क) बीट

(पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न)

प्रश्न-4 पठित काव्यांश **1x5=5**

(I) (क) एकाकी जीवन की कुंठा तथा प्रेम की व्याकुलता का वर्णन किया है

(II) (घ) क और ख दोनों

(III) (ग) परिवार से बिछुड़ने के कारण

(IV) (क) लौटने की आशा

(V) (ख) उसके लिए कोई व्याकुल नहीं है

प्रश्न-5 पठित गद्यांश **1x5=5**

(I) (ग) परिवार का सुख

(II) (ख) भक्तिन और उसकी बेटी को अलग करने के लिए

(III) (ग) भक्तिन की जायदाद पर गिद्धदृष्टि

(IV) (घ) भक्तिन और उसकी बेटी द्वारा जायदाद संभाले रखना

(V) (ग) चचेरे भाइयों की बदनीयती का ज्ञान होना

प्रश्न-6 वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प 1x10=10

(I) (क) यशोधर पन्त का

(II)(ग) रेम्जे स्कूल अल्मोड़ा

(III) (ख) समहाउ इम्प्रापर

(IV) (ग) 1 (D), 2 (A), 3 (B), 4 (C)

(V) (घ) उपर्युक्त सभी

(VI) (क) ताकि गुड़ के अच्छे दाम मिल सके

(VII) (ख) पिता का का सम्मान न करना

(VIII) (ग) अनाज जमा करने के लिए

(IX) (ग) समाज-पोषित

(X) (ग) कामगारों की

खंड-'ब' वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेखन 6x1=6

प्रस्तावना	- 1	भाषा	- 1
रचनात्मकता	- 1	विषयवस्तु	- 3

प्रश्न-8 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में - **3x2=6**

(क) कहानी और नाटक दोनों का केंद्र बिंदु कथानक होता है | कहानी और नाटक दोनों में पात्र, देशकाल तथा वातावरण जैसे तत्व मौजूद होते है | साथ ही संवाद,द्वंद्व, उद्देश्य तथा

चरमोत्कर्ष दोनों ही विधाओं में पाए जाते है .....

अथवा

कहानी का नाट्य रूपांतर करते समय इन महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना चाहिये-

१. कहानी एक ही जगह पर स्थित होनी चाहिये।

२. कहानी में संवाद नाही होते और नाट्य संवाद के आधार पर आगे बढता है। इसलिये कहानी मे संवाद का समावेश करना जरूरी है।

३. कहानी का नाट्य रूपांतर करने से पहले उसका कथानक बनाना बहुत जरूरी है।

४. नाट्य मे हर एक पत्र का विकास कहानी जैसे आगे बढती है, वैसे होता है। इसलिये कहानी का नाट्य रूपांतर करते वक्त पात्र का विवरण करना बहुत जरूरी होता है।

५. कहानी कागजी होती है। एक व्यक्ती कहानी लिख सक्त है, पर जब नाट्य रूपांतर कि बात आती है, तर एक समूह या टीम की जरूरत होती है।

६. कहानी का नाट्य रूपांतर कारने मी निर्देशक का सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण काम होता है। निर्देशक टीम के रीढ़ की हड्डी सा होता है।

(ख) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन को प्राथमिकता देने के लाभ इस प्रकार है -

i) अप्रत्याशित लेखन के माध्यम से हर किसी को रचनात्मक एवं मौलिक लेख लिखने का अवसर मिलता है। ii) इसमें लेखक विचारों को किसी तर्क एवं चिंतन मनन के माध्यम से पुष्ट करने की कोशिश करता है तो उसके चिंतन मनन, विचार विश्लेषण एवं तार्किक क्षमता का विकास होता है।

iii) इससे आपके लेखन कौशल में अत्यधिक विकास होता है।

iv) इससे भाषा पर आपकी अच्छी पकड़ बनती है।

v) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन कम समय में अपने विचारों को संकलित कर उन्हें सुंदर और सुघड़ ढंग से अभिव्यक्त करने की चुनौती है। ऐसी चुनौतियों का सामना करने से सुदृढ़ व्यक्तित्व का निमार्ण होता है।

अथवा

संचार माध्यमों में सर्वाधिक प्रभावी माध्यम रेडियो और टेलीविजन है। रेडियों एक श्रव्य माध्यम है जिसमे समाचार, विज्ञापन, सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है। मुद्रित माध्यमों का लाभ केवल साक्षर लोग ही उठा पाते हैं परन्तु श्रव्य माध्यमों का लाभ कम पढ़े लिखे या निरक्षर उठा सकते है।

प्रश्न-9 तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में- 4x2=8

(क) रेडियो समाचार-लेखन के लिए बुनियादी बातें :

- समाचार वाचन के लिये तैयार की गई कापी साफ़-सुथरी ओर टाइप्ड कॉपी हो ।

- कापी को ट्रिपल स्पेस में टाइप किया जाना चाहिए।
- पर्याप्त हाशिया छोड़ा जाना चाहिए।
- अंकों को लिखने में सावधानी रखनी चाहिए।
- संक्षिप्ताक्षरों के प्रयोग से बचा जाना चाहिए।

(ख) भारत- पहला चरण 1993 से तथा दूसरा चरण 2003 से शुरू माना जाता है। भारत में सच्चे अर्थों में वेब पत्रकारिता करने वाली साइटें 'रीडिफ़ डॉट कॉम', इंडिया इफ़ोलाइन' व 'सीफ़ी' हैं । रीडिफ़ को भारत की पहली साइट कहा जाता है । वेब साइट पर विशुद्ध पत्रकारिता शुरू करने का श्रेय 'तहलका डॉट्कॉम' को जाता है। हिंदी में नेट पत्रकारिता वेब दुनिया' के साथ शुरू हुई। यह हिन्दी का संपूर्ण पोर्टल है। प्रभा साक्षी नाम का अखबार प्रिंट रूप में न होकर सिर्फ़ नेट पर ही उपलब्ध है। आज पत्रकारिता के लिहाज से हिन्दी की सर्व श्रेष्ठ साइट बीबीसी की है, जो इंटरनेट के मानदंडों के अनुसार चल रही है।

(ग) अखबार या अन्य समाचार माध्यमों के पत्रकार अपने पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं (ऑडिएंस) तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न रूपों का इस्तेमाल करते हैं, इसे पत्रकारीय लेखन कहते है | पत्रकार तीन प्रकार के होते है - पहला- पूर्णकालिक पत्रकार दूसरा- अंशकालिक पत्रकार तीसरा - फ्रीलांसर पत्रकार

किसी समाचार संगठन में काम करने वाला नियमित वेतन भोगी पत्रकार, पूर्णकालिक पत्रकार होता है जबकि

निश्चित मानदेय पर काम करने वाला पत्रकार, अंशकालिक पत्रकार कहलाता है | वह पत्रकार जिसका किसी ख़ास अखबार से सम्बन्ध नहीं होता है और जो भुगतान के आधार पर अलग-अलग अख़बारों के लिए लिखता है उसे फ्रीलांसर कहते हैं |

प्रश्न-10 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में

उत्तर- 3x2=6

(क) 'सबसे तेज़ बौछारें गयीं, भादो गया' के बाद प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने दिखाया है, वह इस प्रकार है -

शरद ऋतु का आगमन कई ऋतुओं के बाद हुआ है |शरद ऋतु में सुबह का सूर्य लाल व चमकदार है | शरद ऋतु में आसमान साफ़ है | शरद ऋतु में शीतल मंद हवा चल रही है और आकाश मुलायम हो गया है |

(ख) बात और भाषा परस्पर जुड़े होते हैं, परंतु कभी-कभी भाषा के चक्कर में सीधी बात भी टेढ़ी हो जाती है। इसका कारण उपयुक्त शब्दों का प्रयोग न करना होता है। मनुष्य अपनी भाषा को कठिन बना देता है तथा आडंबरपूर्ण या चमत्कारपूर्ण शब्दों से अपनी बात को कहने में स्वयं को श्रेष्ठ समझता है। इससे वह अपनी मूल बात को कहने में असफल हो जाता है। मनुष्य को

समझना चाहिए कि हर शब्द का अपना विशिष्ट अर्थ होता है, भले ही वह समानार्थी या पर्यायवाची हो। शब्दों के चक्कर में उलझकर भाव अपना अर्थ खो बैठते हैं।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति के माध्यम से यह व्यंग्य किया गया है कि मीडिया अपने आप को बहुत शक्तिशाली एवं समर्थ मानता है | कार्यक्रम का निर्माण उनकी मर्जी से ही होता है , किसी की मजबूरी और करुणा को भी वे बेच सकते हैं | प्रस्तुत कविता में भी जिस दुर्बल व्यक्ति की बात की गई है उसको भी मीडिया कर्मी द्वारा अपने अनुसार बात करने और व्यवहार करने पर बाध्य किया जाता है | मीडिया के लोगों को लगता है कि वे किसी का भी जीवन बना या बिगाड़ सकते हैं | यह उनकी अहंवादी सोच का परिचायक है |

प्रश्न-11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में

उत्तर- 2x2=4

(क) कवि ने 'दुख की छाया' मानव-जीवन में आने वाले दुखों, कष्टों को कहा है। कवि का मानना है कि संसार में सुख कभी स्थायी नहीं होता। उसके साथ-साथ दुख का प्रभाव रहता है। धनी शोषण करके अकूत संपत्ति जमा करता है परंतु उसे सदैव क्रांति की आशंका रहती है। वह सब कुछ छिनने के डर से भयभीत रहता है।

(ख) जब सभी लोग लक्ष्मण के वियोग में करुणा में डूबे थे तो हनुमान ने साहस किया। उन्होंने वैद्य द्वारा बताई गई संजीवनी लाने का प्रण किया। करुणा के इस वातावरण में हनुमान का यह प्रण सभी के मन में वीर रस का संचार कर गया। सभी वानरों और अन्य लोगों को लगने लगा कि अब लक्ष्मण की मूर्च्छा टूट जाएगी। इसीलिए कवि ने हनुमान के अवतरण को वीर रस का आविर्भाव बताया है।

(ग) कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। यह सृजन-कर्म की शाश्वतता को दर्शाता है।

प्रश्न-12 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में

उत्तर- 3x2=6

(क) यह बात बिलकुल सही है कि बाजार किसी का लिंग, जाति, धर्म या क्षेत्र नहीं देखता। वह सिर्फ ग्राहक की क्रय-शक्ति को देखता है। उसे इस बात से कोई मतलब नहीं कि खरीददार औरत है या मर्द, वह हिंदू है या मुसलमान; उसकी जाति क्या है या वह किस क्षेत्र-विशेष से है। बाजार में उसी को महत्व मिलता है जो अधिक खरीद सकता है। यहाँ हर व्यक्ति ग्राहक होता है। इस लिहाज से यह एक प्रकार से सामाजिक समता की भी रचना कर रहा है। आज जीवन के हर क्षेत्र-नौकरी, राजनीति, धर्म, आवास आदि-में भेदभाव है, ऐसे में बाजार हरेक को समान मानता है। यहाँ किसी से कोई भेदभाव नहीं किया जाता क्योंकि बाजार का उद्देश्य सामान बेचना है।

(ख) लेखक ने इस संस्मरण में लोक-प्रचलित विश्वासों को अंधविश्वास कहा है। पाठ में इंदर सेना के कार्य को वह पाखंड मानता है। आम व्यक्ति इंदर सेना के कार्य को अपने-अपने तर्कों से सही मानता है, परंतु लेखक इन्हें गलत बताता है। इंदर सेना पर पानी फेंकना पानी की क्षति है जबकि गरमी के मौसम में पानी की भारी कमी होती है। ऐसे ही अंधविश्वासों के कारण देश का बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है। हालाँकि एक बार इन्हीं अंधविश्वास की वजह से देश को एक बार गुलामी का दंश भी झेलना पड़ा।

(ग) सूर्योदय का दृश्य-महामारी फैलने की वजह गाँव में सूर्योदय होते ही लोग काँखते-कूंखते, कराहते अपने घरों से निकलकर अपने पड़ोसियों व आत्मीयों को ढाँडस देते थे। इस प्रकार उनके चेहरे पर चमक बनी रहती थी। वे बचे हुए लोगों को शोक न करने की बात कहते थे। सूर्यास्त का दृश्य-सूर्यास्त होते ही सभी लोग अपनी-अपनी झोपड़ियों में घुस जाते थे। उस समय वे चूँ तक नहीं करते थे। उनके बोलने की शक्ति भी जाती रहती थी। यहाँ तक कि माताओं में दम तोड़ते पुत्र को अंतिम बार 'बेटा!" कहकर पुकारने की हिम्मत भी नहीं होती थी। ऐसे समय में पहलवान की ढोलक की आवाज रात्रि की विभीषिका को चुनौती देती रहती थी।

प्रश्न-13 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर- **2x2=4**

(क) कालजयी संन्यासी का अर्थ है हर युग में स्थिर और अवस्थित रहना। वह किसी भी युग में विचलित या विगलित नहीं होता। शिरीष भी कालजयी अवधूत है। वसंत के आगमन के साथ ही लहक जाता है और आषाढ़ तक निश्चित रूप से खिला रहता है। जब उमस हो या तेज़ लू चल रही हो तब भी शिरीष खिला रहता है। उस पर उमस या लू का कोई प्रभाव पड़ता नहीं दिखता। वह अजेयता के मंत्र का प्रचार करता रहता है इसलिए वह कालजयी अवधूत की तरह है।

(ख) लेखक उस समाज को आदर्श मानता है जिसमें स्वतंत्रता, समानता व भाईचारा हो। उसमें इतनी गतिशीलता हो कि सभी लोग एक साथ सभी परिवर्तनों को ग्रहण कर सकें। ऐसे समाज में सभी के सामूहिक हित होने चाहिए तथा सबको सबकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए।

(ग) मनुष्य की क्षमता निम्नलिखित बातों पर निर्भर होती है -

1.शारीरिक वंश-परंपरा के आधार पर।

2.सामाजिक उत्तराधिकार अर्थात सामाजिक परंपरा के रूप में माता-पिता की प्रतिष्ठा, शिक्षा, ज्ञानार्जन आदि उपलब्धियों के लाभ पर।

3.मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

****

केंद्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू सम्भाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र- 2 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- **इस प्रश्न-पत्र में दो खंड है - खंड 'अ' और 'ब' |**
- **खंड 'अ' में प्रश्न संख्या 1 से 6 तक हैं जिनमें कुल 45 बहुविकल्पात्मक प्रश्न हैं तथा इनमें से निर्देशानुसार 40 प्रश्नों के ही उत्तर दिए जाएँ |**
- **खंड 'अ' में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं | इन विकल्पों में से सबसे उचित का चयन कर सावधानीपूर्वक लिखिए |**
- **खंड 'ब' में प्रश्न संख्या 7 से 13 तक है जिनमें वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |**
- **निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़िए और उनका पालन कीजिए |**

खंड- 'अ' बहुविकल्पात्मक (40 अंक)		
प्र.(1)	**निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए:**	**1x10=10**
	मैं सोचता हूँ, स्त्रियों के पास एक महान शक्ति सोई पड़ी हुई है । दुनिया की आधी से बड़ी ताकत उनके पास है । आधी तो इसलिए कहता हूँ कि दुनिया में स्त्रियाँ आधी तो हैं ही । आधी बड़ी इसलिए कि बच्चे उनकी छाया में पलते हैं, वे जैसा चाहें उन बच्चों को परिवर्तित कर सकती हैं । पुरूषों के हाथ में कितनी ताकत हो, लेकिन पुरूष भी एक दिन स्त्री की गोद में होता है, वहीं से अपनी यात्रा शुरू करता है । एक बार स्त्री की पूरी शक्ति जागृत हो जाए और वे निर्णय कर लें कि किसी प्रेम की दुनिया को निर्मित करेंगी, जहाँ युद्ध नहीं होंगे, जहाँ हिंसा नहीं होगी, जहाँ राजनीति नहीं होगी, जहाँ राजनीतिज्ञ नहीं होंगे, जहाँ जीवन में कोई बीमारियाँ नहीं होंगी तो ये संसार स्वर्ग से कम नहीं होगा । जहाँ भी प्रेम है, जहाँ भी करूणा है, जहाँ भी दया है, वहाँ स्त्री मौजूद है । इसलिए मैं कहता हूँ कि	

स्त्री के पास आधी से भी ज़्यादा बड़ी ताकत है और वह पाँच हज़ार वर्षों से बिलकुल सोई हुई तथा सुप्त पड़ी है । नारी की शक्ति का कोई उपयोग नहीं हो सका है । भविष्य में यह उपयोग हो सकता है । उपयोग होने का एक सूत्र यही है कि स्त्री यह तय कर लें कि उन्हें पुरूषों जैसा नहीं बनना है।

(I) **इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए -**

(क) स्त्री - स्वभाव (ख) स्त्री - जागरण

(ग) स्त्री की महत्ता (घ) स्त्री - स्वभाव का जागरण

(II)**स्त्रियों की शक्ति को सुप्त क्यों कहा गया है ?**

(क) वे अपने मूल स्वभाव को जान नहीं सकी |

(ख) वे अपने मूल स्वभाव को जान कर उस पर चल नहीं सकी

(ग) वे स्वयं को पुरुष जैसा समझती हैं |

(घ) वे स्वयं को पुरुष से हीन समझती हैं |

(III) **स्त्रियों में पुरुषों को बदलने की ताकत है, क्योंकि -**

(क) स्त्रियाँ अधिक शक्तिशाली हैं

(ख) सभी पुरुष स्त्रियों की गोद में पलते-बढ़ते हैं

(ग) स्त्रियों में सृजन की ताकत है

(घ) पुरुष स्त्रियों के बिना नहीं रह सकता

(IV) **स्त्री में कौन-से गुण प्रबल हैं ?**

(क) संघर्ष और साहस (ख) नैतिकता और समझदारी

(ग) प्रेम और करुणा (घ) शांति और उन्नति

(V) **"मैं सोचता हूँ, स्त्रियों के पास एक ..... सोई हुई पड़ी है |**

वाक्य का प्रकार बताइए -

(क) मिश्र वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य

(ग) सरल वाक्य (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं |

(VI) **दुनिया की आधी से बड़ी ताकत किनके पास है?**

(क) पुरुषों के पास (ख) स्त्रियों के पास

(ग) बच्चों के पास (घ) वृद्धों के पास

(VII) **स्त्री कितने हजार वर्षों से सोई हुई है ?**

(क) चार हजार वर्षों से (ख) पांच हजार वर्षों से

(ग) छह हजार वर्षों से (घ) सात हजार वर्षों से

	(VIII) **गद्यांश के आधार पर बताइए कि स्त्री की मौजूदगी कहाँ-कहाँ है ?** (क) जहाँ प्रेम है (ख) जहाँ करुणा है (ग) जहाँ दया है (घ) उपरोक्त सभी (IX) **किसकी शक्ति का अभी तक कोई उपयोग नहीं हो सका है? गद्यांश के आधार पर बताइए |** (क) पुरुष की (ख) नारी की (ग) देश की (घ) उपरोक्त में से कोई नहीं (X) **स्त्री - पुरुष में कौन सा समास है ?** (क) बहुव्रीहि समास (ख) द्विगु समास (ग) द्वंद्व समास (घ) अव्ययीभाव समास	
प्र.(2)	**निम्नलिखित दो पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए :**	**1x5=5**
	मनमोहिनी प्रकृति की जो गोद में बसा है। सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन-सा है? जिसके चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है। जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन-सा है? नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं। सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन-सा है? जिसके बड़े रसीले, फल, कंद, नाज, मेवे। सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन-सा है? जिसके सुगंध वाले, सुंदर प्रसून प्यारे। दिन-रात हँस रहे हैं, वह देश कौन-सा है? मैदान, गिरि, वनों में, हरियाली है महकती। आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन-सा है? जिसके अनंत वन से धरती भरी पड़ी है। संसार का शिरोमणि, वह देश कौन-सा है? सबसे प्रथम जगत में जो सभ्य था यशस्वी। जगदीश का दुलारा, वह देश कौन-सा है?	

	(I) **मनमोहिनी प्रकृति की गोद में कौन-सा देश बसा हुआ है?** (क) सुन्दर देश (ख) भारत देश (ग) नेपाल देश (घ) श्री लंका (II) **भारत की नदियों की क्या विशेषता है?** (क) इनका जल अमृत के समान है (ख) ये देश को निरंतर सींचती रहती हैं। (ग) उपरोक्त दोनों (घ) उपरोक्त दोनों गलत है | (III) **भारत के फूलों का स्वरूप कैसा है?** (क) भारत के फूल रंग बिरंगे है | (ख) भारत के फूल सुंदर व प्यारे हैं और वे दिन-रात हँसते रहते हैं। (ग) भारत के फूलो का स्वरुप एक ही रंग का है | (घ) उपरोक्त सभी (IV) **"सुख स्वर्ग-सा जहाँ है" में कौनसा अलंकार है** (क) रूपक अलंकार (ख) यमक अलंकार (ग) श्लेष अलंकार (घ) उपमा अलंकार (V) **काव्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है ?** (क) स्वर्ग सा सुन्दर (ख) वह कौनसा देश है ? (ग) भारत देश (घ) देश की सुन्दरता	
	अथवा	
	सूख रहा है समय इसके हिस्से की रेत उड़ रही है आसमान में सूख रहा है आँगन में रखा पानी का गिलास पँखुरी की साँस सूख रही है जो सुन्दर चोंच मीठे गीत सुनाती थी उससे अब हाँफने की आवाज़ आती है हर पौधा सूख रहा है हर नदी इतिहास हो रही है हर तालाब का सिमट रहा है कोना यही एक मनुष्य का कंठ सूख रहा है	

	वह जेब से निकालता है पैसे और खरीद रहा है बोतल बंद पानी बाकी जीव क्या करेंगे अब न उनके पास जेब है न बोतल बंद पानी (I) **'सूख रहा है समय' कथन का क्या आशय है ?** (क) गर्मी बढ़ रही है (ख) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे है (ग) फूल मुरझाने लगे है (घ) नदियाँ सूखने लगी है (II) **हर नदी के इतिहास होने का तात्पर्य है** (क) नदियों के नाम इतिहास में लिखे जा रहे है (ख) नदियों का इतिहास रोचक है (ग) नदियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है (घ) लोगों को को नदियों की जानकारी नहीं है (III) **"पँखुरी की साँस सूख रही है** **जो सुन्दर चोंच मीठे गीत सुनाती थी"** **ऐसी परिस्थिति किस कारण से उत्पन्न हुई ?** (क) मौसम बदल रहे है (ख) अब पक्षी के पास सुन्दर चोंच नहीं है (ग) पतझड़ के कारण पत्तियां सूख रही है (घ) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता (IV) **कवि के दर्द का कारण है -** (क) पँखुरी की साँस सूख रही है (ख) पक्षी हाँफ रहे है (ग) मानव का कंठ सूख रहा है (घ) प्रकृति पर संकट मंडरा रहा है (V) **'बाकी जीव क्या करेंगे अब' कथन में व्यंग्य है -** (क) जीव मनुष्य की सहायता नहीं कर सकते (ख) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं है (ग) जीव निराश और हताश बैठे है (घ) जीवों के बचने की कोई उम्मीद नहीं है	

प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	(I) **अमीरों की पार्टियों, फ़िल्मी गप शप, सनसनी फ़ैलाने वाली पत्रकारिता को क्या कहते है ?** (क) फ्लैश (ख) अंशकालिक (ग) स्ट्रिंगर (घ) पेज थ्री (II) **संपादन का सिद्धांत है ?** (क) तथ्यों की शुद्धता (ख) वस्तुपरकता (ग) निष्पक्षता (घ) ये सभी (III)**भारत का पहला समाचार पत्र कौनसा है ?** (क) उद्दंड मार्तंड (ख) हिंदुस्तान (ग) पंजाब केसरी (घ) नवज्योति (IV)**घटना स्थल से प्रत्यक्षदर्शियों के कथन को क्या कहते है ?** (क) फोन इन (ख) वोइस ओवर (ग) एंकर बाईट (घ) फ्रीलांसर (V) **मनोरंजन के लिए लिखा जाने वाला सुव्यवस्थित आत्मनिष्ठ लेखन क्या कहलाता है ?** (क) फीचर (ख) आलेख (ग) पेज थ्री (घ) समाचार	
प्र.(4)	**निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	कविता एक उड़ान है चिड़िया के बहाने कविता की उड़ान भला चिड़िया क्या जाने ? बाहर भीतर इस घर, उस घर कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिड़िया क्या जाने ? कविता एक खिलना है फूलों के बहाने कविता का खिलना भला फूल क्या जाने ? (I) **कवि के अनुसार कविता की उड़ान को कौन नहीं जान सकता ?** (क) चिड़िया (ख) पतंग (ग) पुष्प (घ) हवा	

	(II) **किसकी उड़ान देश,काल और परिस्थिति से बाहर संभव है ?** (क) पतंग (ख) चिड़िया (ग) कविता (घ) भ्रमर (III) **कविता की तुलना किससे की है -** (क) फूलों से (ख) धूप से (ग) मुस्कान से (घ) बच्चों से (IV) **काव्यांश के अनुसार कविता की क्या विशेषता है ?** (क) कालातीत है (ख) आनंददायक है (ग) कोई सीमा नहीं (घ) उपर्युक्त सभी (V) **कविता की उड़ान होती है -** (क) सीमित (ख) असीमित (ग) ऊँची (घ) नीची	
प्र.(5)	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	बाजार में एक जादू है वह आँख की राह का काम करता है वह रूप का जादू है पर जैसे चुबंक का जादू लोहे पर ही चलता है, वैसे ही इस जादू की भी मर्यादा है। जेब भरी हो, मन खाली हो, ऎसी हालत में जादू का असर खूब होता है । जेब खाली पर मन भरा न हो, तो भी जादू चल ही जाएगा। मन खाली है तो बाजार की अनेक चीजो का निमंत्रण उस तक पहुच जाएगा। कहीं उस वक्त जेब भरी तब तो फिर वह मन किसकी मानने वाला है! मालुम होता है यह भी कर लू, वह भी कर लू। सभी सामान जरूरी ओर आराम को बढ़ाने वाला होता है। पर यह सब जादू का असर है। जादू की सवारी उतरी की पता चलता है कि फैंसी चीजों की बहुतायत आराम में मदद नहीं देती, बल्कि खलल ही डालती है। (I) **बाजार के जादू का प्रभाव कैसे अपना असर शुरू करता है?** (क) सोचने पर (ख) देखने से (ग)बात करने से (घ) पैसे से (II) **जादू का असर खूब होता है जब -** (क) जेब भरी हो, मन खाली हो (ख) जेब खाली पर मन भरा न हो (ग) मन खाली हो (घ) जेब भरी हो (III) **बाजार के जादू का प्रभाव खत्म होने पर-**	

	(क) अच्छा लगता है (ख) आराम पहुँचने वाला है (ग) शांति मिलती है (घ) समस्या बढ़ाने वाली होती है (IV)**बाजार के जादू की तुलना किससे की गई है?** (क) लोहे से (ख) खाली मन से (ग) चुंबक से (घ) आँख (V) **फैंसी चीजे जब घर में आती है तो वह मदद करती है -** (क) आराम करने में (ख) जीवन में खलल डालती है (ग) जीवन को खुश करती है (घ) जीवन को चिंतामुक्त करने में	
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x10=10**
	(I)**यशोधर अपने ऑफिस में किस पद पर कार्यरत थे ?** (क) एजुकेशन ऑफिसर (ख) रीजनल ऑफिसर (ग) सेक्शन ऑफिसर (घ) असिस्टंट ऑफिसर (II)**निम्न में से कौनसी बात यशोधर बाबू को 'समहाउ इम्प्रापर' लगती है?** (क)साधारण पुत्र को असाधारण वेतन मिलने पर (ख)खुशहाली में रिश्तेदारों की उपेक्षा करने पर (ग)केक काटने की विदेशी परंपरा पर (घ)उपरोक्त सभी (III) **"सिल्वर वैडिंग" कहानी की मूल संवेदना क्या है ? *** (क) पीढी का अंतराल (ख) हाशिये पर धकेले जाते मानवीय मूल्य (ग) पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव (घ) इनमें से सभी (IV)**यशोधर बाबू की पत्नी का कहानी में कौन-से चरित्र का प्रतिनिधित्व करती है ?** (क) दबी हुई नारी का (ख) आधुनिकता की चाहवाली स्त्री का (ग) अपने बच्चों की तरफदार का (घ) इनमें से सभी (V) **लेखक को पाठशाला जाने से किसने रोका है ?** (क) सोंदेलगेकर ने (ख) उसकी माँ ने (ग) उसके पिता ने (घ) दत्ता जी राव देसाई ने (VI) **लेखक के पिता ने आनंद यादव की कौन-कौन सी गलत आदतों के बारे में दत्ताजी राव को बताया?** (क) कंडे और चारा बेचना (ख) सिनेमा देखना या जुआ खेलना (ग) खेती व घर के काम में ध्यान न देना (घ) उपर्युक्त सभी	

	(VII) **'जूझ' उपन्यास का हिंदी अनुवाद किसने किया था ?** (क) आनंद यादव ने (ख) केशव प्रथम वीर ने (ग) रामविलास शर्मा ने (घ) विद्याशंकर ने (VIII) **सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?** (क) सौंदर्य-बोध (ख) संस्कृति-बोध (ग) सभ्यता-बोध (घ) नागर-बोध (IX) **मुअनजो-दड़ो के सबसे ऊँचे चबूतरे पर क्या विद्यमान है?** (क) मंदिर (ख) बौद्ध स्तूप (ग) राजमहल (घ) विशाल भवन (X) **मुअनजो-दड़ो के वास्तुकला की तुलना किस नगर के साथ की गई है?** (क) दिल्ली से (ख) जयपुर से (ग) चंडीगढ़ से (घ) बीकानेर से	
	खंड- 'ब' वर्णनात्मक (40 अंक)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**	**6x1=6**
	(क) सावन की पहली झड़ी (ख) परीक्षा का एक दिन (ग) फिल्मों की सामाजिक भूमिका (घ) शिक्षा का महत्व	
प्र.(8)	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए -**	**3x2=6**
	(क) कहानी और नाटक में अंतर स्पष्ट कीजिए। **अथवा** कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन कैसे करते हैं ? (ख) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के क्या क्या नियम हो सकते है ? **अथवा** रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का क्या महत्त्व है ?	
प्र.(9)	**निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए -**	**4x2=8**
	(क) दूरदर्शन पर समाचार के विभिन्न चरणों का विस्तृत विवरण दीजिए ? (ख) **समाचार-लेखन की उल्टा पिरामिड-शैली** क्या है ? स्पष्ट कीजिए | (ग) समाचार किसे कहते है और समाचार लेखन के छह ककार क्या है ? स्पष्ट कीजिए	

प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(क) 'आत्मपरिचय' कविता दुनिया के साथ कवि की प्रीति-कलह की कविता है - कथन पर टिप्पणी कीजिए । (ख) 'परदे पर वक्त की कीमत है' कहकर कवि ने पूरे साक्षात्कार के प्रति अपना नजरिया किस रूप में रखा है ? (ग) कवितावली में उद्धृत छंदों के आधार पर स्पष्ट करें कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है |	
प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(क) भोर के नभ और राख से लीपे गए चौके में क्या समानता है ? (ख) "आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है ,बालक तो हई चाँद पै ललचाया है'- में बालक की कौन सी विशेषता अभिव्यक्त हुई है? (ग) 'चुराए लिए जाती वे मेरी आँखें' से कवि का क्या तात्पर्य है?	
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(क) 'भक्तिन' पाठ के आधार पर भक्तिन की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए| (ख) काले मेघा पानी दे पाठ में लेखक ने देशवासियों की किस मानसिकता की ओर संकेत किया है? (ग) महामारी से जूझते हुए लोगों के लिए ढ़ोलक की आवाज संजीवनी शक्ति का काम करती थी कैसे ?	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(क) सिद्ध कीजिए कि शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है ? (ख) डॉ० भीमराव अंबेडकर जातिप्रथा को श्रम-विभाजन का ही रूप क्यों नहीं मानते हैं ? (ग) समता का आशय स्पष्ट करते हुए बताइए कि राजनीतिज्ञ पुरूष के संदर्भ में समता को कैसे स्पष्ट किया गया है ?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र- 2 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

अंक योजना व उत्तर संकेत

प्रश्न-1. अपठित गद्यांश **1x10=10**

(I) (ख) स्त्री - जागरण

(II) (ख) वे अपने मूल स्वभाव को जान कर उस पर चल नहीं सकी

(III) (ख) सभी पुरुष स्त्रियों की गोद में पलते-बढ़ते हैं|

(IV) (ग) प्रेम और करुणा (V) (क) मिश्र वाक्य

(VI) (ख) स्त्रियों के पास (VII) (ख) पांच हजार वर्षों से

(VIII) (घ) उपरोक्त सभी (IX) (ख) नारी की (X) (ग) द्वंद्व समास

प्रश्न-2 अपठित काव्यांश **1x5=5**

(I) (ख) भारत देश (II) (ग) उपरोक्त दोनों

(III) (ख) भारत के फूल सुंदर व प्यारे हैं और वे दिन-रात हँसते रहते हैं।

(IV) (घ) उपमा अलंकार (V) (क) वह कौनसा देश है ?

अथवा

(I) (ख) जीवनमूल्य समाप्त हो रहे है

(II) (ग) नदियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है

(III) (घ) अब प्रकृति की ओर कोई ध्यान नहीं देता

(IV) (घ) प्रकृति पर संकट मंडरा रहा है

(V) (ख) जीवों के पास अपने बचाव के कृत्रिम उपाय नहीं है

प्रश्न-3 पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प **1x5=5**

(I) (घ) पेज थ्री (II) (घ) ये सभी (III) (क) उद्दंड मार्तंड

(IV) (ग) एकर बाईट (V) (क) फीचर

(पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न)

प्रश्न-4 पठित काव्यांश **1x5=5**

(I) (क) चिड़िया (II) (ग) कविता (III) (घ) बच्चों से (IV) (घ) उपर्युक्त सभी

(V) (ख) असीमित

प्रश्न-5 पठित गद्यांश **1x5=5**

(I) (घ) पैसे से (II) (ख) जेब खाली पर मन भरा न हो

(III) (घ) समस्या बढ़ाने वाली होती है (IV) (ग) चुंबक से

(V) (ख) जीवन में खलल डालती है

प्रश्न-6 वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प **1x10=10**

(I) (ग) सेक्शन ऑफिसर (II) (घ) उपरोक्त सभी

(III) (क) पीढी का अंतराल (IV) (ख) आधुनिकता की चाहवाली स्त्री का

(V) (ग) उसके पिता ने (VI) (घ) उपर्युक्त सभी |

(VII) (ख) केशव प्रथम वीर ने (VIII) (घ) नागर-बोध

(IX) (ख) बौद्ध स्तूप (X) (ग) चंडीगढ़ से

खंड-'ब' वर्णनात्मक प्रश्न

प्रश्न-7 दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेखन 6x1=6

प्रस्तावना	- 1	भाषा	- 1
रचनात्मकता	- 1	विषयवस्तु	- 3

प्रश्न-8 प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में - **3x2=6**

(क) कहानी और नाटक में अंतर इस प्रकार है-

<u>कहानी-</u> i) कहानी एक ऐसी गद्य विधा है जिसमें जीवन के किसी अंक विशेष का मनोरंजन पूर्ण चित्रण किया जाता है।

ii) कहानी का संबंध लेखक और पाठकों से होता है।

iii) कहानी कहीं अथवा पढ़ी जाती है।

iv) कहानी को आरंभ, मध्य और अंत के आधार पर बांटा जाता है।

v) कहानी में मंच सज्जा, संगीत तथा प्रकाश का महत्त्व नहीं है।

<u>नाटक-</u>

i) नाटक गद्य काव्य की दृश्य विधा है जिसका मंच पर अभिनय किया जाता है। दृश्य विधा होने के कारण नाटक को लंबे समय तक याद रखा जाता है।

ii) नाटक का संबंध लेखक, निर्देशक, दर्शक तथा श्रोताओं से है।

iii) नाटक का मंच पर अभिनय किया जाता है।

iv) नाटक को दृश्यों में विभाजित किया जाता है।

v) नाटक में मंच सज्जा, संगीत और प्रकाश व्यवस्था का विशेष महत्त्व होता है।

अथवा

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय दृश्य विभाजन निम्न प्रकार करते हैं-

1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित करके दृश्य बनाए जाते

हैं।

2. प्रत्येक दृश्य कथानक के अनुसार बनाया जाता है।

3. एक स्थान और समय पर घट रही घटना को एक दृश्य में लिया जाता है।

4. दूसरे स्थान और समय पर घट रही घटना को अलग दृश्यों में बांटा जाता है।

5. दृश्य विभाजन करते समय कथाक्रम और विकास का भी ध्यान रखा जाता है।

(ख) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के निम्नालिखित नियम हो सकते है -

i) आप इसमें 'मैं' शैली का प्रयोग कर सकते हैं।

ii) विविध दृष्टिकोणों से विषय पर विचार करके लिखने की शुरुआत करनी चाहिए।

iii) लेखन का विवरण और विवेचन सुसंबद्ध और सुसंगत होना चाहिए।

iv) भाषायी शुद्धता पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

V) जीवन के प्रत्येक कार्य एवं परिवेश का निरीक्षण तथा चिंतन मनन भली-भांति करना चाहिए।

अथवा

रेडियो नाटक में ध्वनि प्रभावों और संवादों का विशेष महत्त्व है जो इस प्रकार हैं -

(i). रेडियो नाटक में पात्रों से संबंधित सभी जानकारियाँ संवादों के माध्यम से मिलती हैं।

(ii). पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ संवादों के द्वारा ही उजागर होती हैं।

(iii). नाटक का पूरा कथानक संवादों पर ही आधारित होता है।

(iv). इसमें ध्वनि प्रभावों और संवादों के माध्यम से ही कथा को श्रोताओं तक पहुँचाया जाता है। (v). संवादों के माध्यम से ही रेडियो नाटक का उद्देश्य स्पष्ट होता है

(vi). संवादों के द्वारा ही श्रोताओं को संदेश दिया जाता है।

प्रश्न-9 तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में- 4x2=8

(क) किसी भी टी०वी० चैनल पर खबर देने का मूल आधार वही होता है जो प्रिंट या रेडियो पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रचलित है, यानी सबसे पहले सूचना देना। टी०वी० में भी ये सूचनाएँ कई चरणों से होकर दर्शकों के पास पहुँचती हैं। ये चरण हैं-

फ़्लैश या ब्रेकिंग न्यूज, ड्राई एंकर, फ़ोन-इन, एंकर-विजुअल, एंकर-बाइट, लाइव, एंकर-पैकेज

(ख) **समाचार-लेखन की उलटा पिरामिड-शैली**

उलटा पिरामिड शैली में समाचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सबसे पहले लिखा जाता है और उसके बाद घटते हुए महत्त्वक्रम में अन्य तथ्यों या सूचनाओं को लिखा या बताया जाता है। इस शैली में किसी घटना/विचार/समस्या का ब्यौरा कालानुक्रम की बजाय सबसे महत्वपूर्ण तथ्य या सूचना से शुरू होता है। तात्पर्य यह है कि इस शैली में कहानी की तरह क्लाइमेक्स अंत में नहीं, बल्कि खबर के बिलकुल शुरू में आ जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कोई निष्कर्ष नहीं होता। इस शैली में समाचार को तीन भागों में बाँट दिया जाता है-

1. इंट्रो-समाचार के इंट्रो या लीड को हिंदी में 'मुखड़ा' भी कहते हैं। इसमें खबर के मूल तत्व को शुरू की दो-तीन पंक्तियों में बताया जाता है। यह खबर का सबसे अह हिस्सा होता है।
2. बॉडी-इस भाग में समाचार के विस्तृत ब्यौरे को घटते हुए महत्त्वक्रम में लिखा जाता है।
3. समापन-इस शैली में अलग से समापन जैसी कोई चीज नहीं होती। इसमें प्रासंगिक तथ्य और सूचनाएँ दी जा सकती हैं। अकड़ने समाया औ जहक कमा क देतेहुएआखी कुठलों या पैमाफक हवाक समाचरसमाप्त कर दिया जाता है।

(ग) **समाचार** नवीनतम घटनाओं और समसामयिक विषयों पर अद्यतन सूचनाओं को **कहते** हैं, जिन्हें मुद्रण, प्रसारण, अंतर्जाल या अन्य माध्यमों की सहायता से आम लोगों यानी, पाठकों, दर्शकों और श्रोताओं तक पहुंचाया जाता है। समाचार लेखन के लिए छः सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। ये छः सूचनाएँ-क्या हुआ, कब हुआ, किसके (कौन) साथ हुआ, कहाँ हुआ, क्यों और कैसे हुआ प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती हैं। यही छः ककार कहलाती हैं। इनमें से प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककारे (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं।

प्रश्न-10 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में

उत्तर- **3x2=6**

(क) 'आत्मपरिचय' शीर्षक कविता में कवि अपना परिचय देता है और कहता है कि वह समाज का अंग होते हुए भी उससे अलग है। स्वयं को जानना संसार को जानने से अधिक कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता कुछ खट्टा-मीठा तो होता ही है, पर जगजीवन से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं है। कवि कहता है कि इस जग से हमारा संबंध द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक रूप में होता है। कवि दुनिया में रहकर इसी से संघर्ष करता है। इस जीवन को अनेक विरोधाभासों के मध्य जीना पडता है। कवि इन विरोधाभासों के साथ सामंजस्य बिठाते हुए जीवन में मस्ती उतार लेता है। इसीलिए कवि इसे दुनिया के साथ प्रीति कलह की कविता कहता है।

(ख) पंक्ति का शाब्दिक अर्थ यह है कि टेलीविजन के परदे पर किसी कार्यक्रम को दिखाना काफी महंगा पड़ता है इसलिए समय महत्त्वपूर्ण होता है | दूसरी ओर प्रस्तुत कविता में प्रश्नकर्ता कार्यक्रम संचालक के प्रश्नों से यह बात स्पष्ट होती है कि अपने कार्यक्रम को रोचक बनाना तथा अधिकाधिक पैसा कमाना उनकी प्राथमिकता है | वे दूरदर्शन के परदे एवं समय का इस्तेमाल अपने लाभ तथा लोकप्रियता पाने हेतु करना चाहते हैं | साक्षात्कारदाता के प्रति उनकी सहानुभूति बनावटी है तथा उसकी भावनाएँ उनके लिए कोई महत्व नही रखती |

(ग) तुलसी ने कवितावली में लिखा है कि उस समय बेरोजगारी व भुखमरी की समस्या थी | उस समय किसान, नौकर, व्यापारी, भिखारी आदि विभिन्न व्यवसायों को करने वाले लोग बेरोजगार थे | आम आदमी बेरोजगारी के कारण चिंतित था और पेट की आग बुझाने के लिए लोग अच्छे-बुरे काम करते थे | उस समय अमीर अधिक अमीर व गरीब अधिक गरीब थे | अतः स्पष्ट है कि तुलसी को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ थी |

प्रश्न-11 काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर- 2x2=4

(क) भोर के नभ और राख़ से लीपे गए चौके में यह समानता है कि दोनों ही गहरे सलेटी रंग के हैं पवित्र हैं ,नमी से युक्त हैं |

(ख) इन पंक्तियों में बालक की हठ करने की विशेषता अभिव्यक्त हुई है। बच्चे जब जिद पर आ जाते हैं तो अपनी इच्छा पूरी करवाने के लिए नाना प्रकार की हरकतें किया करते हैं| ज़िदयाया शब्द लोक भाषा का विलक्षण प्रयोग है इसमें बच्चे का ठुनकना , तुनकना ,पाँव पटकना, रोना आदि सभी क्रियाएँ शामिल हैं

(ग) चित्रात्मक वर्णन द्वारा कवि ने एक ओर काले बादलों पर उड़ती बगुलों की श्वेत पंक्ति का चित्र अंकित किया है तथा इस अप्रतिम दृश्य के हृदय पर पड़ने वाले प्रभाव को चित्रित किया है। कवि के अनुसार यह दृश्य उनकी आँखें चुराए लिए जा रहा है |मंत्र मुग्ध कवि इस दृश्य के प्रभाव से आत्म विस्मृति की स्थिति तक पहुँच जाता है।

प्रश्न-12 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर- 3x2=6

(क) भक्तिन पाठ महादेवी के द्वारा लिखित प्रसिद्ध संस्मरण है जिसमें भक्तिन महादेवी की सेविका है | वह महादेवी से उम्र में 25 वर्ष बड़ी थी जिसकी वजह से उसने अपने आप सेविका से ज्यादा अभिभावक ही माना है | उसके सेवाभाव में अभिभावक जैसा अधिकार और माँ जैसी ममता है | वह स्वभाव से कर्कश, कठोर और रूखी है फिर भी उसके मन में महादेवी के प्रति विशेष आदर, प्रेम और समर्पण भाव है | वह लेखिका को महान मानती है और उसका भला करने के फेर में लेखिका की रूचियाँ और आदतों में भी बदलाव कर देती है | उसका सेवा भाव अनुकरणीय है | वह महादेवी की छाया के सामान उसके साथ रहती है | महादेवी जिधर भी जिज्ञासा ससे देखती है भक्तिन वहीं पहुँच जाती है | भक्तिन वैसे तो डरपोक है किंतु स्वामिन के लिए वह बड़े लाट तक से लड़ने को तैयार हो जाती है | वह सचमुच समर्पित सेविका है, जिसने अपनी सद्भावना के बल पर अभिभावक पद पा लिया है |

(ख) लेखक कहता है कि देश में लोग हर समय मांग करते हैं,परंतु देश के लिए त्याग व समर्पण का भाव नहीं है। उन्हें सिर्फ अपने हित सर्वोपरि लगते हैं। एक दूसरे के भ्रष्टाचार की आलोचना करते है।विकास के नाम पर अरबों रुपयों की योजनाएँ बनती हैं , बहुत पैसा खर्च

होता है परंतु भ्रष्टाचार के कारण वह आम आदमी तक नहीं पहुँचता।उसकी हालत वैसी ही बनी रहती है।

(ग) महामारी से जूझते हिए लोगों के लिए ढ़ोलक की आवाज संजीवनी शक्ति का काम करती थी क्योंकि इसकी आवाज सुनते ही बूढ़े बच्चे एवं जवान सभी के आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था और उनकी स्पंदन शक्ति से शुन्य स्नायुओं में बिजली दौड़ जाती थी अत: आँखे मूंदते समय उन्हें कोई तकलीफ नही होती थी अर्थात उन्हें मृत्यु से डर नही लगता था इस तरह ढ़ोलक की आवाज उनमें प्रेरणा जगाती थी।

प्रश्न-13 गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर- **2x2=4**

(क) शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है| जब पृथ्वी अग्नि के समान तप रही होती है वह तब भी कोमल फूलों से लदा लहलहाता रहता है|बाहरी गरमी, धूप, वर्षा आँधी, लू उसे प्रभावित नहीं करती। इतना ही नहीं वह लंबे समय तक खिला रहता है | शिरीष विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्यशील रहने तथा अपनी अजेय जिजीविषा के साथ निस्पृह भाव से प्रचंड गरमी में भी अविचल खड़ा रहता है।

(ख) क्योंकि

1-यह विभाजन अस्वाभाविक है |

2- यह मनुष्य की रुचि पर आधारित नहीं है |

3- व्यक्ति की क्षमताओं की उपेक्षा की जाती है |

4- व्यक्ति के जन्म से पहले ही उसका पेशा निर्धारित कर दिया जाता है |

5- व्यक्ति को अपना व्यवसाय बदलने की अनुमति नहीं देती |

(ग) जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर मानवता अर्थात् मानव मात्र के प्रति समान व्यवहार ही समता है। राजनेता के पास असंख्य लोग आते हैं, उसके पास पर्याप्त जानकारी नहीं होती । सब की सामाजिक पृष्ठभूमि, क्षमताएँ, आवश्यकताएँ जान पाना उसके लिए संभव नहीं होता । अतः उसे समता और मानवता के आधार पर व्यवहार के प्रयास करने चाहिए । मनुष्य के अपने प्रयत्न पर।

****

केंद्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू सम्भाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-3 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- **इस प्रश्न-पत्र में दो खंड है - खंड 'अ' और 'ब' |**
- **खंड 'अ' में प्रश्न संख्या 1 से 6 तक हैं जिनमें कुल 45 बहुविकल्पात्मक प्रश्न हैं तथा इनमें से निर्देशानुसार 40 प्रश्नों के ही उत्तर दिए जाएँ |**
- **खंड 'अ' में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं | इन विकल्पों में से सबसे उचित का चयन कर सावधानीपूर्वक लिखिए |**
- **खंड 'ब' में प्रश्न संख्या 7 से 13 तक है जिनमें वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |**
- **निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़िए और उनका पालन कीजिए |**

खंड- 'अ' बहुविकल्पात्मक (40 अंक)		
प्र.(1)	**निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए:**	**1x10=10**
	राहे पर खड़ा है, सदा से ठूँठ नहीं है। दिन थे जब वह हरा भरा था और उस जनसंकुल चौराहे पर अपनी छतनार डालियों से बटोहियों की थकान अनजाने दूर करता था। पर मैंने उसे सदा ठूँठ ही देखा है। पत्रहीन, शाखाहीन, निरवलंब, जैसे पृथ्वी रूपी आकाश से सहसा निकलकर अधर में ही टंग गया हो। रात में वह काले भूत-सा लगता है, दिन में उसकी छाया इतनी गहरी नहीं हो पाती जितना काला उसका जिस्म है और अगर चितेरे को छायाचित्र बनाना हो तो शायद उसका-सा 'अभिप्राय' और न मिलेगा। प्रचंड धूप में भी उसका सूखा शरीर उतनी ही गहरी छाया ज़मीन पर डालता जैसे रात की उजियारी चाँदनी में। जब से होश सँभाला है, जब से आँख खोली है, देखने का अभ्यास किया है, तब से बराबर मुझे उसका निस्पंद, नीरस, अर्थहीन शरीर ही दिख पड़ा है।	

पर पिछली पीढ़ी के जानकार कहते हैं कि एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे और उसके पत्तों से, उसकी टहनियों और डालों से टकराती हवा की सरसराहट दूर तक सुनाई पड़ती थी। पर आज वह नीरव है, उस चौराहे का जवाब जिस पर उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम चारों और की राहें मिलती हैं और जिनके सहारे जीवन अविरल बहता है। जिसने कभी जल को जीवन की संज्ञा दी, उसने निश्चय जाना होगा की प्राणवान जीवन भी जल की ही भांति विकल, अविरल बहता है। सो प्राणवान जीवन, मानव संस्कृति का उल्लास उपहार लिए उन चारों राहों की संधि पर मिलता था जिसके एक कोण में उस प्रवाह से मिल एकांत शुष्क आज वह ठूँठ खड़ा है। उसके अभाग्यों परंपरा में संभवतः एक ही सुखद अपवाद है - उसके अंदर का स्नेहरस सूख जाने से संख्या का लोप हो जाना। संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की अनुभूति कम हो जाती है।

(i) **जनसंकुल का क्या** आशय **है?**

(क) जनसंपर्क (ख) भीड़भरा

(ग) जनसमूह (घ) जनजीवन

(ii) **आम की छतनार डालियों के कारण क्या होता था?**

(क) यात्रियों को ठंडक मिलती थी (ख) यात्रियों को विश्राम मिलता था

(ग) यात्रियों की थकान मिटती थी (घ) यात्रियों को हवा मिलती थी

(iii) **शाखाहीन, रसहीन, शुष्क वृक्ष को क्या कहा जाता है?**

(क) नीरस वृक्ष (ख) जड़ वृक्ष

(ग) ठूँठ वृक्ष (घ) हीन वृक्ष

(iv) **आम के वृक्ष के सामने पीपल और बरगद के शरमाने का क्या कारण था?**

(क) उसका अधिक हरा-भरा और सघन होना (ख) हवा की आवाज सुनाई देना

(ग) अधिक फल फूल लगना (घ) अधिक ऊँचा होना

(v) **आम के अभागेपन में संभवतः एक ही सुखद अपवाद था -**

(क) उसका नीरस हो जाना (ख) संज्ञा लुप्त हो जाना

(ग) सूख कर ठूँठ हो जाना (घ) अनुभूति कम हो जाना

(vi) **"अविरल" शब्द में उपसर्ग कौनसा हैं ?**

(क) विर् (ख) अ (ग) र (घ) ल

	(vii) **"नीरस" शब्द का क्या अर्थ होता है** ? (क) चतुर (ख) पत्रहीन (ग) जिसमें रस न हो (घ) परंपरा (viii) **संज्ञा लुप्त हो जाने से कष्ट की _____ कम हो जाती है।** (क) परम्परा (ख) अनुभूति (ग) जिन्दगी (घ) परीक्षा (ix) **एक जमाना था जब पीपल और बरगद भी उसके सामने शरमाते थे- कौन कहते हैं ?** (क) पिछली पीढ़ी के जानकार (ख) नई पीढ़ी के जानकार (ग) वैज्ञानिक (घ) साहित्यकार (x) **गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए |** (क) प्राणवान जीवन (ख) आम का वृक्ष (ग) मानव संस्कृति (घ) पीपल और बरगद	
प्र.(2)	**निम्नलिखित दो पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए :**	**1x5=5**
	क्या करोगे अब ? समय का जब प्यार नहीं रहा सर्वसहा पृथ्वी का आधार नहीं रहा न वाणी साथ है न पानी साथ है न कही प्रकाश है स्वच्छ जब सब कुछ मैला है आसमान गंदगी बरसाने वाले एक अछोर फैला है कही चले जाओ विनती नहीं है वायु प्राणप्रद आदंकर आदमी सब जग से गायब है	

	(i) कवि ने धरती के बारे में क्या कहा है … (क) रत्नगर्भा (ख) आधारशिला (ग) सर्वसहा (घ) माँ **(ii) 'आदमकद आदमी' से क्या तात्पर्य है** (क) मानवीयता से भरपूर आदमी (ख) ऊंचे कद का आदमी (ग) सम्पूर्ण मनुष्य (घ) सामान्य आदमी **(iii) आसमान की तुलना किससे से की गयी है…** (क) समुद्र से (ख) नीली झील से (ग) पतंग से (घ) गंदगी बरसाने वाले थैले से **(iv) प्राणदान का तात्पर्य है-** (क) प्राणों को पूर्ण करने वाला (ख) प्राण प्रदान करने वाला (ग) प्राणों को प्रणाम करने वाला (घ) प्राणों को छीन लेने वाला **(v) कवि समय से कब और क्यों कतराना चाहते हैं**? (क) किसी के पास बात करने का समय नहीं (ख) किसी को दो क्षण बैठने का समय नहीं (ग) किसी को प्यार करने का समय नहीं (घ) किसी को गप मारने का समय नहीं	
	अथवा	
	मैं पानी हूँ मैं जीवन हूँ, मुझसे सबका नाता। मैं गंगा हूँ, मैं यमुना हूँ, तीरथ भी बन जाता। मैं हूँ निर्मल पर दोष सभी, औरों के हर लेता। कल तक दोष तुम्हारे थे जो, अपने में भर लेता। पर सोचो तो मैं यों कब तक, कचरा भरता जाऊँ! मुझको जीवन भी कहते हैं, मैं कैसे मरता जाऊँ! गन्दा लहू बहा अपने में, कब तक चल पाता तन। मैं धरती की सुन्दरता हूँ, हर प्राणी की धड़कन। मेरी निर्मलता से होगी, धरती पर हरियाली। फसलों में यौवन महकेगा, हर आँगन दीवाली। नदियाँ, झरने, ताल-तलैया, कुआँ हो या कि सागर। रूप सभी ये मेरे ही हैं, एक बूँद या गागर। हर पौधे की हर पत्ती की, प्यास बुझाऊँ जीभर।	

	पर जीना दूभर होगा ये, दूषित हो जाने पर। **(i) 'तीरथ' का तत्सम रूप लिखिए-** (क) तीर (ख) तीरथंकर (ग) तीर्थ (घ) उत्तीर्ण	
	(ii) पानी की निर्मलता किसके कारण नष्ट हुई ? (क) हमारे दोष अपने में भरने के कारण (ख) लगातार बहने के कारण (ग) पत्ते भरने के कारण (घ) प्रकृति के कारण	
	(iii) पानी को धरती की सुन्दरता कहा गया है, क्योंकि .....। (वाक्य पूरा करो।) (क) बहता पानी सुन्दर लगता है। (ख) झरने लगातार बहते हैं (ग) हरियाली और फसलों से पूरी धरती सुन्दर बनती है (घ) सागर के पानी में लहरें उठती हैं **(iv) पानी के दूषित हो जाने पर क्या स्थिति होगी ?** (क) पानी साफ करने का अवसर आएगा (ख) आदमी का इस धरती पर जीना कठिन हो जाएगा (ग) पानी उबालना पड़ेगा (घ) कोई फर्क नहीं पड़ेगा **(v) इस कविता से ढूँढ़कर 'पानी' का पर्यायवाची लिखिए।** (क) निर्मल (ख) बूंद (ग) जीवन (घ) सागर	
प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	(i) सर्वाधिक खर्चीला जनसंचार माध्यम कौनसा हैं ? (क) रेडियो (ख) टेलीविजन (ग) समाचार पत्र (घ) इंटरनेट **(ii) श्रव्य जनसंचार माध्यम कौनसा हैं ?** (क) समाचार पत्र (ख) रेडियो (ग) इंटरनेट (घ) टेलीविजन	

	(iii) समाचार पत्र का संपादन करने वाले को क्या कहते हैं ? (क) प्रकाशक (ख) संवाददाता (ग) फीचर लेखक (घ) संपादक **(iv) इनमें में से समाचार पत्र की आवाज किसे कहा जाता है ?** (क) फीचर (ख) सम्पादकीय (ग) स्तम्भ लेखन (घ) संपादक के नाम पत्र **(v) विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा शैली अपेक्षित है ?** (क साहित्यिक भाषा (ख) बाजारू भाषा (ग) हिंदी उर्दू मिश्रित भाषा (घ) सहज सरल तथा बोधगम्य	
प्र.(4)	**निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	फिर हम परदे पर दिखलाएँगे फुली हुई आँख की एक बडी तसवीर बहुत बड़ी तसवीर और उसके होंठों पर एक कसमसाहट भी (आशा हैं आप उसे उसकी अपगता की पीड़ा मानेंगे) एक और कोशिश दर्शक धीरज रखिए देखिए हमें दोनों एक संग रुलाने हैं **(i) काव्यांश के रचनाकार का नाम क्या है ?** (क) शमशेर बहादुर सिंह (ख) कुँवर नारायण (ग) मुक्तिबोध (घ) रघुवीर सहाय **(ii) दर्शको में अपाहिज के लिए कैसी भावना है ?** (क) दया की (ख) द्वेष की (ग) कठोरता की (घ) द्रोह की **(iii) काव्यांश में 'कसमसाहट' का अर्थ है ?** (क) बेचैनी (ख) नाचना (ग) ख़ुशी (घ) गाना **(iv) काव्यांश में परदे पर क्या दिखाने की बात कही गई है ?** (क) फूली हुई आँख की रंगीन तसवीर	

	(ख) फूली हुई आँख की सुन्दर तसवीर (ग) फूली हुई आँख की एक छोटी तसवीर (घ) फूली हुई आँख की एक बडी तसवीर **(v) काव्यांश में परदे पर किस की कीमत बतायी है ?** (क) वक्त की (ख) प्रोग्राम की (ग) दर्शक की (घ) रोने की	
प्र.(5)	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	जाति प्रथा को यदि श्रम विभाजन मान लिया जाए, तो यह स्वाभाविक विभाजन नहीं है, क्योंकि यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है	कुशल व्यक्ति या सक्षम श्रमिक समाज का निर्माण करने के लिए यह आवश्यक है कि हम व्यक्तियों की क्षमता इस सीमा तक विकसित करें, जिससे वह अपना पेशा या कार्य का चुनाव स्वयं कर सके	इस सिद्धांत के विपरीत जाति-प्रथा का दूषित सिद्धांत यह है कि इससे मनुष्य के प्रशिक्षण अथवा उसकी निजी क्षमता का विचार किए बिना, दूसरे ही दृष्टिकोण, जैसे माता पिता के सामाजिक स्तर के अनुसार,पहले से ही अर्थात गर्भधारण के समय से ही मनुष्य का पेशा निर्धारित कर दिया जाता है। **(i) लेखक किसे श्रम विभाजन का स्वभाविक आधार नहीं मानता?** (क) जाति प्रथा (ख) कार्यकुशलता (ग) प्रशिक्षण (घ) क्षमता **(ii) लेखक कुशल श्रमिक समाज के निर्माण के लिए किसे आवश्यक मानता है** ? (क) रुचि को (ख) योग्यता को (ग) क्षमता को (घ) यह सभी **(iii) जाति प्रथा का दूषित सिद्धांत किसे कहा गया है ?** (क) कार्य के चुनाव की स्वतंत्रता (ख) रूचि के आधार पर कार्य का चुनाव (ग) जन्म से पूर्व ही पेशे का निर्धारण (घ) क्षमता का विकास **(iv) जाति के आधार पर श्रम विभाजन करना गलत है क्योंकि –** (क) यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है (ख) यह मनुष्य के प्रशिक्षण पर आधारित है (ग) यह व्यक्ति को व्यवसाय चुनने की आजादी देता है	

	(घ) इससे परंपरागत उद्योग नष्ट हो रहे हैं **(v) उपर्युक्त गद्यांश किस पाठ से लिया गया है ?** (क) मेरी कल्पना का आदर्श समाज (ख) श्रम विभाजन और जाति प्रथा (ग)श्रम का अस्वाभाविक विभाजन (घ) अंबेडकर का श्रम सिद्धांत	
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x10=10**
	(i) सब्जी लेकर यशोधर घर पहुँचे तो उनकी दशा कैसी थी? (क) द्वारिका जाने वाले सुदामा जैसी (ख) द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी (ग) बचपन के सुदामा जैसी (घ) पत्नी के साथ सुदामा जैसी **(ii) 'सिल्वर वैडिंग' पाठ के लेखक का नाम क्या है?** (क) फणीश्वर नाथ रेणु (ख) मनोहर श्याम जोशी (ग) श्याम मनोहर जोशी (घ) मनोहर वर्मा **(iii) यशोधर बाबू के कितने बेटे थे?** (क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार **(iv) यशोधर बाबू किस प्रकार के जीवन के पक्षधर थे?** (क) बनावटी (ख) धार्मिक (ग) मौज मस्ती (घ) सादगीपूर्ण **(v) यशोधर बाबू जुड़े हुए हैं-** (क) आधुनिकता से (ख) पुरानी परंपराओं से (ग) विलायती जीवन से (घ) सरकारी कार्यालय से **(vi) लेखक की माँ के अनुसार उसके पति ने लेखक को पाठशाला जाने से क्यों रोक दिया?** (क) खर्चे से बचने के लिए (ख) बीमारी से बचने के लिए (ग) अनपढ़ता से बचने के लिए (घ) खुद काम से बचने के लिए**(vii) दादा राव साहब के यहाँ तत्काल क्यों चला गया?** (क) अपना सम्मान समझकर (ख) डरकर (ग) पैसों के लालच से (घ) घबराकर **(viii) लेखक के पिता का नाम क्या था?** (क) रतनाप्पा (ख) कृष्णाप्पा	

	(ग) रामाप्पा (घ) मोहनाप्पा **(ix) सिंधु घाटी सभ्यता में कौन-से फल उगाए जाते थे?** (क) सेब और संतरे (ख) संतरे और केले (ग) खजूर और अंगूर (घ) खजूर और अमरूद **(x) सिंधु घाटी सभ्यता में कपास पैदा होती थी। इसका क्या प्रमाण है?** (क) कपास के बीज (ख) ऊन (ग) सूती कपड़ा (घ) गर्म कपड़ा	
	खंड- 'ब' वर्णनात्मक (40 अंक)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**	**6x1=6**
	(क) अनोखा पशु – कुत्ता (ख) मंच पर पहली प्रस्तुति (ग) खिड़की से बाहर का दृश्य (घ) काश ! मैं उड़ पाता	
प्र.(8)	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए -**	**3x2=6**
	(i) नाट्य रूपांतरण करते समय कौन-कौन सी समस्याएँ आती हैं ? **अथवा** सिनेमा, रंगमंच और रेडियो नाटक में क्या-क्या समानताएँ होती हैं ? **(ii)** 'रटंत' का आशय स्पष्ट करते हुए इसके हानि-लाभ पर प्रकाश डालिए। **अथवा** रेडियो नाटक के लिए पात्रों की संख्या सीमित क्यों रखनी चाहिए ?	
प्र.(9)	**निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में** **दीजिए -**	**4x2=8**
	(i) समाचार पत्र कब सम्पूर्ण समझा जाता है ? (ii) मुद्रित माध्यम की सीमाएँ बताइए ? (iii) समाचर लेखन की शैली पर प्रकाश डालिए ?	
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i) बादलों के आगमन से प्रकृति में होने वाले किन-किन परिवर्तनों को कविता रेखांकित करती है?	

	(ii) छोटा मेरा खेत कविता में कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र क्यों कहा है? (iii) कवितावली के आधार पर पुष्टि कीजिए कि तुलसी को अपने समय की आर्थिक सामाजिक समस्याओं की जानकारी थी |	
प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i) उषा कविता के आधार पर गांव की सुबह का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। (ii) सोचकर बताएँ कि पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज़, सबसे पतला कागज़, सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग क्यों किया है? (iii) कविता और बच्चे को समानांतर रखने के क्या कारण हो सकते हैं?	
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i) लेखक ने शिरीष को कालजयी अवधूत (संन्यासी) की तरह क्यों माना है? (ii) ढोलक की आवाज का पूरे गाँव पर क्या असर होता था? (iii) जीजी ने इंदर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया?	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i) बाज़ारूपन' से क्या तात्पर्य है? किस प्रकार के व्यक्ति बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं अथवा बाज़ार की सार्थकता किसमें हैं? (ii) भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई? (iii) जाति प्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण कैसे बनती रही है?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-3 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

अंक योजना व उत्तर संकेत

प्रश्न सं.	उत्तर संकेत	अंक भार
प्र.(1)	**अपठित गद्यांश** (i) (ख)भीडभरा (ii) (ग) यात्रियों की थकान मिटती थी (iii) (ग) ठूंठ वृक्ष (iv)(क)उसका अधिक हरा भरा और सघन होना (v)(घ)अनुभूति कम हो जाना (vi) (ख) अ (vii)(ग) जिसमें रस न हो (viii) (ख)अनुभूति (ix) (क) पिछली पीढ़ी के जानकार (x) (क) प्राणवान जीवन	**1x10=10**
प्र.(2)	**अपठित काव्यांश** (i)(ग) सर्वसहा (ii) (क) मानवीयता से भरपूर आदमी (iii) (घ) गंदगी बरसाने वाले थैले से (iv) (ख) प्राण प्रदान करने वाला (v) (ग)किसी को प्यार करने का समय नहीं	**1x5=5**
	अथवा	
	(i) (ग)तीर्थ (ii)(क) हमारे दोष अपने में भरने के कारण (iii) (ग)हरियाली और फसलों से पूरी धरती सुन्दर बनती हैं (iv) (ख) आदमी का इस धरती पर जीना कठिन हो जाएगा (v) (ग) जीवन	
प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प-** (i) (घ)इंटरनेट (ii) (ख) रेडियो (iii) (घ) संपादक (iv) (ख) सम्पादकीय (v) (घ) सहज ,सरल और बोधगम्य	**1x5=5**
प्र.(4)	**(पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न)** **पठित काव्यांश** (i) (घ)रघुवीर सहाय (ii) (क) दया की (iii) (क) बेचैनी (iv) (घ) फूली हुई आंख की एक बड़ी तस्वीर (v) (क) वक्त की	**1x5=5**

प्र.**(5)**	**पठित गद्यांश** (i) (क) जाति प्रथा (ii) (घ) यह सभी (iii) (ग) जन्म से पूर्व ही पेशे का निर्धारण (iv) (क) यह मनुष्य की रूचि पर आधारित नहीं है (v) (ख) श्रम विभाजन और जाति प्रथा	**1x5=5**
प्र.**(6)**	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प-** (i) (ख) द्वारिका से लौटे सुदामा जैसी (ii) (ख) मनोहर श्याम जोशी (iii) (ग) तीन (iv) (घ) सादगीपूर्ण (v) (ख) पुरानी परम्पराओं से (vi) (घ) खुद काम से बचने के लिए (vii) (क) अपना सम्मान समझकर (viii) (क) रतनप्पा (ix) (ग) खजूर और अंगूर (x) (ग) सूती कपड़ा	**1x10=10**
	<u>खंड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)</u>	
प्र.**(7)**	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेखन** प्रस्तावना - 1 भाषा - 1 रचनात्मकता - 1 विषयवस्तु - 3	**6x1=6**
प्र.**(8)**	**प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में -** नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है- i) सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है। ii) पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है। iii) संवादों को नाटकीय रूप प्रदान करने समस्या आती है। iv) संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है। v) कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है। **अथवा** सिनेमा और रंगमंच 1. सिनेमा और रंगमंच में एक कहानी होती है। 2. इनमें कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता 3. इनमें चरित्र होते हैं। 4. इनमें पात्रों के आपसी संवाद होते हैं। 5. इनमें पात्रों का परस्पर द्वंद्व होता है और अंत में समाधान।	**3x2=6**

	रेडियो नाटक 1. रेडियो नाटक में भी एक ही कहानी होती है। 2. इसमें भी कहानी का आरंभ, मध्य और अंत होता है। 3. इसमें भी चरित्र होते हैं 4. इसमें भी पात्रों के आपसी संवाद होते हैं।	
	(ii) किसी भी विषय को बिना सोचे समझे, बिना विश्लेषण किए, बिना चिंतन मनन किए केवल 'रट्टा मारकर' याद कर लेने को 'रटंत' कहते हैं। अधिकतर विद्वानों का मानना है कि 'रटंत' विद्या से बच्चे के चिंतन मनन करने की क्षमता, विचार विश्लेषण करने की क्षमता तथा मौलिक ढंग से रचनात्मक लेखन या सृजन की क्षमता नष्ट हो जाती हैं | अप्रत्याशित लेखन में तो 'रटंत' विद्या कोई काम आती ही नहीं। किंतु कुछ विद्वान मानते हैं कि किसी भी वस्तु को रटकर याद कर लेना यह विद्यार्थी विशेष का आंतरिक गुण है इसके लिए वह पुरानी शिक्षा पद्धति का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि उस समय वेद मंत्रों को, ऋचाओं को मौखिक रटकर याद कर लेना किसी प्रतिभा से कम नहीं माना जाता था। अथवा क्योंकि रेडियो नाटक में श्रोता पात्रों की पहचान उनकी आवाज के द्वारा ही करता है ऐसे में सीमित पात्रों को तो आवाज के द्वारा पहचाना जा सकता है किंतु अगर पात्रों की संख्या ज्यादा है तो श्रोता बहुत सारी आवाजों के बीच पात्र की पहचान नहीं कर पायेगा और विचलित होकर रह जायेगा।	
प्र.(9)	**तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में-** (i) समाचार पत्र तभी सम्पूर्ण समझा जाता है , जब उसका कलेवर व्यापक होता है | पाठक अपनी रुचियों की सारी ख़बरें ,जैसे साहित्य ,विज्ञानं , खेल आदि की विस्तार से जानकरी पढना चाहते है | इसके आलावा सामान्य ख़बरों से हटकर विशेष क्षेत्रों और विषयों के बारें में जानकारी देना जरूरी है | (ii) मुद्रित माध्यम की सीमाएँ : निरक्षरों के लिए मुद्रित माध्यम किसी काम के नहीं होते। ये तुरंत घटी घटनाओं को संचालित नहीं कर सकते। इसमें स्पेस तथा शब्द सीमा का ध्यान रखना पड़ता है। इसमें एक बार समाचार छप जाने के बाद अशुद्धि-सुधार नहीं किया जा सकता। (iii)उल्टा पिरामिड शैली मे समाचार पत्र के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य को सर्वप्रथम लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए महत्व क्रम में दूसरे तथ्यों या सूचनाओं को	**4x2 = 8**

	बताया जाता है। अर्थात कहानी की तरह क्लाइमैक्स अंत में नहीं वरन खबर के प्रारंभ में आ जाता है। इस शैली के अंतर्गत समाचारों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है - इंट्रो - समाचार का मुख्य भाग होता है ,बॉडी - घटते हुए क्रम में खबर को विस्तार से लिखा जाता है। ब्यौरा प्रस्तुत किया जाता है ,समापन - अधिक महत्वपूर्ण ना होने पर अथवा स्पेस ना होने पर इसे काट कर छोटा भी किया जा सकता है।	
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर-**	**3x2= 6**
	(i)बादलों के आगमन से प्रकृति में निम्नलिखित परिवर्तन होते है। • समीर बहने लगती है। बादल गरजने लगते है। मूसलधार वर्षा होती है। • बिजली चमकने लगती है। छोटे-छोटे पौधे खिल उठते हैं। • गर्मी के कारण दुखी प्राणी बादलों को देखकर प्रसन्न हो जाता है। (ii)कवि ने खेत को रस का अक्षय पात्र इसलिए कहा है क्योंकि अक्षय पात्र में रस कभी खत्म नहीं होता। उसके रस को जितना बाँटा जाता है, उतना ही वह भरता जाता है। खेत की फसल कट जाती है, परंतु वह हर वर्ष फिर उग आती है। कविता का रस भी चिरकाल तक आनंद देता है। (iii)कवितावली' में उद्धृत छंदों के अध्ययन से पता चलता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। वे समाज के विभिन्न वर्गों का वर्णन करते हैं जो कई तरह के कार्य करके अपना निर्वाह करते हैं। तुलसी दास तो यहाँ तक बताते हैं कि पेट भरने के लिए लोग गलत-सही सभी कार्य करते हैं। उनके समय में भयंकर गरीबी व बेरोजगारी थी। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच देते थे। बेरोजगारी इतनी अधिक थी कि लोगों को भीख तक नहीं मिलती थी। दरिद्रता रूपी रावण ने हर तरफ हाहाकार मचा रखा था।	
प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर-**	**2x2 = 4**
	(i) कवि ने गाँव की सुबह का सुंदर चित्रण करने के लिए गतिशील बिंब-योजना की है। भोर के समय आकाश नीले शंख की तरह पवित्र लगता है। उसे राख से लिपे चौके के समान बताया गया है जो सुबह की नमी के कारण गीला लगता है। फिर वह लाल केसर से धोए हुए सिल-सा लगता है। (ii) कवि ने पतंग के लिए सबसे हलकी और रंगीन चीज, सबसे पतला कागज,	

	सबसे पतली कमानी जैसे विशेषणों का प्रयोग किया है। वह इसके माध्यम से पतंग की विशेषता तथा बाल-सुलभ चेष्टाओं को बताना चाहता है। बच्चे भी हलके होते हैं, उनकी कल्पनाएँ रंगीन होती हैं। वे अत्यंत कोमल व निश्छल मन के होते हैं। इसी तरह पतंगें भी रंगबिरंगी, हल्की होती हैं। वे आकाश में दूर तक जाती हैं। इन विशेषणों के प्रयोग से कवि पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहता है। (iii) कविता और बच्चों में समानांतर रखने के निम्नलिखित कारण हैं- (क) बच्चों के समान कविता में शब्दों की कोई सीमा नहीं होती है। जैसे बच्चे खेलते समय सारी सीमाएँ तोड़ देते हैं, वैसे ही कविता भी सारी सीमाएँ तोड़ देती है (ख) बच्चे किसी सीमा को नहीं मानते। उनके लिए कोई अपना-पराया नहीं होता है। सब उनके अपने होते हैं। ऐसे ही कविता के लिए कोई अपना-पराया नहीं होता है। वे सभी के लिए होती है **।** (ग) जिस प्रकार बच्चों की कल्पनाएँ अनंत होती हैं, वैसे ही कवि की कल्पनाओं का अनंत रूप कविता होती है **।**	
प्र.**(12)**	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर-** (i)'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी' शिरीष को अद्भुत अवधूत मानते हैं, क्योंकि संन्यासी की भाँति वह सुख-दुख की चिंता नहीं करता। शिरीष कालजयी अवधूत की भाँति जीवन की अजेयता के मंत्र का प्रचार करता है (ii)ढोलक की आवाज़ से रात की विभीषिका और सन्नाटा कम होता था महामारी से पीड़ित लोगों की नसों में बिजली सी दौड़ जाती थी, उनकी आँखों के सामने दंगल का दृश्य साकार हो जाता था और वे अपनी पीड़ा भूल खुशी-खुशी मौत को गले लगा लेते थे। (iii) जीजी जी ने इंद्रसेना पर पानी फेंकने की बात अनेक तरह के तर्क देकर सही ठहराया। जीजी कहा कि यदि हम इंदर सेना पर पानी नहीं फेकेंगे तो भगवान हमें पानी कैसे देंगे। जिस तरह भगवान से किसी मनोकामना की पूर्ति के लिए कुछ चढ़ावा चढ़ाना पड़ता है, उसी तरह हम पानी रूप अर्ध्य भगवान पर चढ़ायेंगे तो बदले में ईश्वर पानी की बारिश करेंगे।	**3x2 = 6**
प्र.**(13)**	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर-** (i) जब सामान बेचने वाले बेकार की चीजों को आकर्षक बनाकर बेचने लगते हैं, तब बाज़ार में बाजारुपन आ जाता है। जो विक्रेता, ग्राहकों का शोषण नहीं करते	**2x2 = 4**

	और छल-कपट से ग्राहकों को लुभाने का प्रयास नहीं करते साथ ही जो ग्राहक अपनी आवश्यकताओं की चीजें खरीदते हैं वे बाजार को सार्थकता प्रदान करते हैं। (ii) भक्तिन तो देहाती थी ही पर उसके आ जाने पर महादेवी भी अधिक देहाती हो गई, पर उसे शहर की हवा नहीं लग पाई है। उसने महादेवी को भी देहाती खाने की विशेषताएँ बता-बताकर उनके खाने की आदत डाल दी। वह बताती कि मकई का रात को बना दलिया सवेरे मट्टे से सौंधा लगता है। बाजरे के तिल लगाकर बनाये पुए बहुत अच्छे लगते हैं। (iii) जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए।	

****

केंद्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू सम्भाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-4 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- **इस प्रश्न-पत्र में दो खंड है - खंड 'अ' और 'ब' |**
- **खंड 'अ' में प्रश्न संख्या 1 से 6 तक हैं जिनमें कुल 45 बहुविकल्पात्मक प्रश्न हैं तथा इनमें से निर्देशानुसार 40 प्रश्नों के ही उत्तर दिए जाएँ |**
- **खंड 'अ' में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं | इन विकल्पों में से सबसे उचित का चयन कर सावधानीपूर्वक लिखिए |**
- **खंड 'ब' में प्रश्न संख्या 7 से 13 तक है जिनमें वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |**
- **निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़िए और उनका पालन कीजिए |**

खंड- 'अ' बहुविकल्पात्मक (40 अंक)		
प्र.(1)	**निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए:**	**1x10=10**
	विज्ञान प्रकृति को जानने का महत्वपूर्ण साधन है। भौतिकता आज आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी प्रगति का स्तर निर्धारित करती है। विज्ञान केवल सत्य, अर्थ और प्रकृति के बारे में उपयोग ही नहीं बल्कि प्रकृति की खोज का एक क्रम है। विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह प्रकृति को जानने के विषय में हमें महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान देता है। व्यक्ति जिस बात पर विश्वास करता है वही उसका ज्ञान बन जाता है। कुछ लोगों के पास अनुचित ज्ञान होता है और वह उसी ज्ञान को सत्य मानकर उसके अनुसार काम करते हैं। वैज्ञानिकता और आलोचनात्मक विचार उस समय जरूरी होते हैं जब वह विश्वसनीय ज्ञान पर आधारित हों। वैज्ञानिक और आलोचक अक्सर तर्कसंगत विचारों का प्रयोग करते हैं। तर्क हमें उचित सोचने पर प्रेरित करते हैं। कुछ लोग	

	तर्क संगत विचारधारा नहीं रखते क्योंकि उन्होंने कभी तर्क करना जीवन में सीखा ही नहीं होता। प्रकृति वैज्ञानिक और कवि दोनों की ही उपास्या है। दोनों ही उससे निकटतम संबंध स्थापित करने की चेष्टा करते है, किंतु दोनों के दृष्टिकोण में अंतर है। वैज्ञानिक प्रकृति के बाल्य रूप का अवलोकन करता है और सत्य की खोज करता है, परंतु कवि बाड्य रूप पर मुग्ध होकर उससे भावों का तादात्म्य स्थापित करता है। वैज्ञानिक प्रकृति की जिस वस्तु का अवलोकन करता है, उसका सूक्ष्म निरीक्षण भी करता है। चंद्र को देखकर उसके मस्तिष्क में अनेक विचार उठते हैं उसका तापक्रम क्या है, कितने वर्षों में वह पूर्णतः शीतल हो जाएगा, ज्वार-भाटे पर उसका क्या प्रभाव होता है, किस प्रकार और किस गति से वह सौरमंडल में परिक्रमा करता है और किन तत्वों से उसका निर्माण हुआ है? वह अपने सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से उसको एक लोक ठहराता है और उस लोक में स्थित ज्वालामुखी पर्वतों तथा जीवनधारियों की खोज करता है। इसी प्रकार वह एक प्रफुल्लित पुष्प को देखकर उसके प्रत्येक अंग का विश्लेषण करने को तैयार हो जाता है। उसका प्रकृति- विषयक अध्ययन वस्तुगत होता है। उसकी दृष्टि में विश्लेषण और वर्ग-विभाजन की प्रधानता रहती है। वह सत्य और वास्तविकता का पुजारी होता है। कवि की कविता भी प्रत्यक्षावलोकन से प्रस्फुटित होती है वह प्रकृति के साथ अपने भावों का संबंध स्थापित करता है। वह उसमें मानव-चेतना का अनुभव करके उसके साथ अपनी आंतरिक भावनाओं का समन्वय करता है। वह तथ्य और भावना के संबंध पर बल देता है। उसका वस्तुवर्णन हृदय की प्रेरणा का परिणाम होता है, वैज्ञानिक की भाँति मस्तिष्क की यांत्रिक प्रक्रिया नहीं। कवियों द्वारा प्रकृति-चित्रण का एक प्रकार ऐसा भी है जिसमें प्रकृति का मानवीकरण कर लिया जाता है अर्थात प्रकृति के तत्त्वों को मानव ही मान लिया जाता है। प्रकृति में मानवीय क्रियाओं का आरोपण किया जाता है। हिंदी में इस प्रकार का प्रकृति-चित्रण छायावादी कवियों में पाया जाता है। इस प्रकार के प्रकृति-चित्रण में प्रकृति सर्वथा गौण हो जाती है। इसमें प्राकृतिक वस्तुओं के नाम तो रहते हैं परंतु झंकृत चित्रण मानवीय भावनाओं का ही होता है। कवि लहलहाते पौधे का चित्रण न कर खुशी से झूमते हुए बच्चे का चित्रण करने लगता है	

(i) विज्ञान प्रकृति को जानने का एक महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि यह-

(क) समग्र ज्ञान के साथ तादात्म्प स्थापित करता है

(ख) प्रकृति आधुनिक विज्ञान की उपास्या है

(ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है

(घ) आधुनिक वैज्ञानिक का स्तर निर्धारित करता है

(ii) 'वैज्ञानिक प्रकृति के बाहय रूप का अवलोकन करते हैं यह कथन दर्शाता है कि वे-

(क) कवियों की तुलना में अधिक श्रेष्ठ है

(ख) ज्वारभाटे के परिणाम से बचना चाहते हैं

(ग) वर्ग विभाजन के पक्षधर बने रहना चाहते हैं

(घ) प्रकृति से अविदूर रहने का प्रयास करते हैं

(iii) सूक्ष्म निरीक्षण और अनवरत चिंतन से तात्पर्य है-

(क) सौर मंडल को एक लोक और परलोक ठहराना

(ख) छोटी-छोटी सी बातों पर चिंता करना

(ग) बारीकी से सोचना व निरंतर देखना

(घ) बारीकी से देखना और निरंतर सोचना

(iv) कौन अनवरत चिंतन करता है ?

(क) सूक्ष्माचारी (ख) विज्ञानोपासक

(ग) ध्यानविलीन योगी (घ) अवसादग्रस्त व्यक्ति

(v) कौन वास्तविकता का पुजारी होता है ?

(क) यथार्थवादी (ख) काव्यवादी

(ग) प्रकृतिवादी (घ) विज्ञानवादी

(vi) कवि की कविता किससे प्रस्फुटित होती है ?

(क) विचारों के मंथन से (ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से

(ग) भावनाओं की उहापोह से (घ) प्रेम की तीव्र इच्छा से

(vii) कवि के संबंध में इनमें से सही तथ्य है-

(क) ज्वालामुखी के रहस्य जानता है

(ख) जीवधारियों की खोज करता है

(ग) सत्य का उपासक नहीं होता

(घ) प्रफुल्लित पुष्प का अध्ययनकर्ता

(viii) 'इत' प्रत्यय युक्त शब्द कौन-सा है ?

(क) झंकृत (ख) नित (ग) ललित (घ) उचित

	(ix) उपर्युक्त गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है- (क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता (ख) प्रकृति के उपासक-कवि और वैज्ञानिक (ग) वैज्ञानिक उन्नति और काव्य जगत (घ) वैज्ञानिक दृष्टिकोण-अतुलनीय **(x) प्रकृति का मानवीकरण दर्शाता है कि-** (क) कल्पना प्रधान व भावोन्मेशयुक्त कविता रची जा रही है (ख) मानवीकरण अलंकार का दुरुपयोग हो रहा है (ग) प्रकृति व मानव के सामंजस्य से उदित दीप्ति फैल रही है (घ) मानव द्वारा प्रकृति का संरक्षण हो रहा है	
प्र.(2)	**निम्नलिखित दो पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए:**	**1x5=5**
	मैंने हँसना सीखा है मैं नहीं जानती रोना। बरसा करता पल-पल पर मेरे जीवन में सोना। मैं अब तक जानन पाई कैसी होती है पीड़ा? हंस-हंस जीवन में कैसे करती है चिंता क्रीड़ा? जग है असार सुनती हूँ मुझको सुख - सार दिखाता। मेरी आँखों के आगे सुख का सागर लहराता। कहते हैं होती जाती खाली जीवन की प्याली। पर मैं उसमें पाती हूँ प्रतिपल मदिरा मतवाली। उत्साह,उमंग निरंतर रहते मेरे जीवन में। उल्लास विजय का सता मेरे मतवाले मन में।	

	आशा आलोकित करती मेरे जीवन के प्रतिक्षण। हैं स्वर्ण-सूत्र से वलयित मेरी असफलता के घन। सुख भरे सुनहले बादल रहते हैं मुझको बादल घेरे। विश्वास, प्रेम, साहस हैं जीवन के साथी मेरे।। **(i)"बरसा करता पल-पल पर मेरे जीवन में सोना" कवयित्री का सोना से अभिप्राय है-** (क) स्वर्ण (ख) कंचन (ग) आनन्द (घ) आराम **(ii) असफलता के बादलों को कवयित्री ने किससे घेरकर रखा है ?** (क)असफलता के बादलों को सोने की छड़ी से घेरकर रखा है। (ख) कवयित्री सफलता में भी असफलता की आशा से भरी रहती है। (ग) कवयित्री ने असफलता के बादलों को सोने के सूत्र से घेरकर रखा है। (घ) बादल के बरसने पर निकलने वाली बूंदों से क्योंकि इनसे नव सृजन होता है। **(iii) कवयित्री द्वारा विश्वास, प्रेम और साहस को अपना जीवन साथी बनाकर रखना यह निष्कर्ष निकालता है कि-** (क) अनुकूल परिस्थितियां सदैव वश में नहीं रह सकती। (ख) विपरीत परिस्थितियों में भी आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए। (ग) जीवन में हितकारी साथी सदैव साथ होने चाहिए। (घ) प्रेम, विश्वास व साहस की डोर सदैव लंबी होती है। **(iv) कवयित्री असफलताओं को किस रूप में स्वीकार करती हैं ?** (क) प्रसत्रता के साथ ग्रहण करती हैं। (ख) वेदनामयी अवस्था में ग्रहण करती हैं। (ग) तिरस्कृत कर देती हैं। (घ) हताश होकर स्वीकार करती हैं। **(v) कविता के लिए उपयुक्त शीर्षक है-** (क) सुख और दुख (ख) मेरा जीवन (ग) मेरा सुख (घ) परपीड़ा	

	अथवा	
	एक फ़ाइल ने दूसरी फ़ाइल से कहा बहन लगता है, साहब हमें छोड़कर जा रहे हैं इसीलिए तो सारा काम जल्दी जल्दी निपटा रहे हैं। मैं बार-बार सामने जाती हूँ रोती हूँ.गिड़गिड़ाती हूँ, करती हूँ विनती हर बार साहब जी! इधर भी देख लो एक बार। पर साहब है कि कभी मुझे नीचे पटक देते हैं। कभी पीछे सरका देते हैं और कभी-कभी तो फ़ाइलों के देर तले, दबा देते हैं अधिकारी बार-बार अंदर झांकजाता है डरते-डरते पूछ जाता है साहब कहाँ गए हैं? हस्ताक्षर हो गए.? दूसरी फ़ाइल ने उसे प्यार से समझाया जीवन का नया फलसफा सिखाया बहन! हम यूँ ही रोते हैं बेकार गिड़गिड़ाते हैं,लोग आते हैं,जाते हैं हस्ताक्षर कहाँ रुकते हैं हो ही जाते हैं। पर कुछ बातें ऐसी होती हैं जो दिखाई नहीं देती और कुछ आवाजें सुनाई नहीं देती जैसे फूल खिलते हैं और अपनी महक छोड़ जाते हैं। वैसे ही कुछ लोग कागज पर नहीं दिलों पर हस्ताक्षर छोड़ जाते हैं। **(i)फाइल क्यों रोती और गिड़गिड़ाती है?** (क) साहब की स्वार्थपरता के कारण (ख) अपना कार्य पूर्ण न होने की पीड़ा के कारण (ग) अकेलेपन की असहनीय पीड़ा के कारण (घ) फाइल का स्वभाव रोना और गिड़गिड़ाना ही है	

	(ii) जीवन के फलसफे के अनुसार किसी भी परिस्थिति में- (क) हार नहीं माननीचाहिए। (ख) विलाप नहीं करना चाहिए। (ग) हार से सबक सीखना चाहिए। (घ) जीत हार सभी कुछ अंतिम हैं। **(iii) कविता के अनुसार जो कार्य दिखाई-सुनाई नहीं देते हैं-** (क) वे अस्पष्टता के कारण बेमानी होते हैं (ख) वह यह शिक्षा देते हैं कि हमें एकाग्रचित्त होकर सुनना-देखना चाहिए (ग) वे लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ जाते हैं (घ) वे केवल सिद्ध लोगों को ही प्रभावित करते हैं **(iv) कविता का संदेश क्या है ?** (क) लोग जल्दी कार्य करने वाले अधिकारी से प्रभावित होते हैं (ख) परोपकारी कार्यों से लोग प्रभावित होते हैं (ग) कार्यालयों में फाइलों के रूप में कार्य लंबित रहता है (घ) कार्यालयों में अधिकारी साहब को ढूँढ़ते रहते हैं (v) उपर्युक्त काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक क्या होगा ? (क) हृदय स्पर्श (ख) जीवन सार (ग) जीवन दर्शन (घ) भाग्य व कर्म	
प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	(i)वर्तमान छापेखाने का अविष्कार किसने किया? (क) गुटेनबर्ग ने (ख) चिनमिन ने (ग) निहाल सिंह ने (घ) जॉनसन ने **(ii) भारत में पहला छापाखाना कब लगा?** (क) सन् 1556 में (ख) सन् 1546 में (ग) सन् 1656 में (घ) सन् 1576 में **(iii) समाचार लेखन में कितने ककार होते है ?** (क) तीन (ख) चार (ग) पांच (घ) छः **(iv) विशेष लेखन के लिए किस प्रकार की भाषा शैली अपेक्षित है?** (क) साहित्यिक भाषा (ख) सहज, सरल तथा बोधगम्य भाषा (ग) बाजारू भाषा (घ) हिन्दी उर्दू मिश्रित भाषा **(v) इनमें से विशेष लेखन का कौन-सा क्षेत्र नहीं है?** (क) सिनेमा (ख) मनोरंजन	

	(ग) स्वास्थ्य (घ) समाचार	
प्र.(4)	**निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	कविता एक उड़ान हैं चिड़िया के बहाने कविता की उड़ान भला चिडिया क्या जाने? बाहर भीतर इस घर, उस घर कविता के पंख लगा उड़ने के माने चिडिया क्या जाने ? कविता एक खिलना हैं फूलों के बहाने कविता का खिलना भला फूल क्या जाने बाहर भीतर इस घर, उस घर बिना मुरझाए महकने के माने फूल क्या जाने? कविता एक खेल हैं बच्चों के बहाने बाहर भीतर यह घर, वह घर सब घर एक कर देने के माने बच्चा ही जाने। **(i)'कविता के बहाने ' कविता में कवि को किस बात का शक है -** (क) कविता के सर्वव्यापी होने पर (ख) कविता के मनोरंजक होने पर (ग) कविता में भावानुभूति के अभाव पर (घ) यांत्रिकता के दबाव में कविता के अस्तित्व को लेकर **(ii) 'कविता के बहाने ' कविता की यात्रा कहाँ तक नहीं जाती है -** (क) फूल तक (ख) फल तक (ग) चिड़िया तक (घ) बच्चे तक **(iii) 'कविता के बहाने'कविता में कवि ने कविता की संपूर्णता की तुलना पूर्ण रूप में किससे की गई है?** (क) फूल तक (ख) बच्चे तक (ग) चिड़िया तक (घ) सभी से **(iv) कविता के बहाने ' कविता के कवि कौन है -** (क) कुँवर नारायण (ख) आलोक धन्वा (ग) रघुवीर सहाय (घ) मुक्तिबोध	

	(v) उक्त पंक्तियों में कविता एक उड़ान हैं किसके बहाने हैं ? (क) कागज के बहाने (ख) पतंग के बहाने (ग) डोर के बहाने (घ) चिड़िया के बहाने	
प्र.(5)	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	यहाँ मुझे ज्ञात होता है कि बाज़ार को सार्थकता भी वही मनुष्य देता है जो जानता है कि वह क्या चाहता है। और जो नहीं जानते कि वे क्या चाहते हैं, अपनी 'पर्चेजिंग पावर' के गर्व में अपने पैसे से केवल एक विनाशक शक्ति - शैतानी शक्ति, व्यंग्य की शक्ति ही बाज़ार को देते हैं। न तो वह बाज़ार से लाभ उठा सकते हैं, न उस बाज़ार को सच्चा लाभ दे सकते हैं। वह लोग बाज़ार का बाज़ारूपन बढ़ाते हैं। जिसका मतलब है कि कपट बढ़ाते हैं। कपट की बढ़ती का अर्थ परस्पर में सद्भाव की घटी। इस सद्भाव के ह्रास पर आदमी आपस में भाई-भाई और सुहृद और पड़ोसी फिर रह ही नहीं जाते हैं और आपस में कोरे ग्राहक और बेचक की तरह व्यवहार करते हैं। मानो दोनों एक दूसरे को ठगने की घात में हों। एक की हानि में दूसरे को अपना लाभ दीखता है और यह बाज़ार का, बल्कि इतिहास का; सत्य माना जाता है ऐसे बाज़ार को बीच में लेकर लोगों में आवश्यकताओं का आदान-प्रदान नहीं होता ;बल्कि शोषण होने लगता है तब कपट सफल होता है,निष्कपट शिकार होता है । ऐसे बाज़ार मानवता के लिए विडम्बना हैं और जो ऐसे बाज़ार का पोषण करता है, जो उसका शास्त्र बना हुआ है; वह अर्थशास्त्र सरासर औंधा है वह मायावी शास्त्र है वह अर्थशास्त्र अनीति-शास्त्र है। **(i)बाजार को सार्थकता कौन दे सकता है ?** (क) अधिक सामान खरीदने वाला (ख) बाजार नहीं जाने वाला (ग) जो जानता है कि वह क्या चाहता है (घ) इनमें से कोई नहीं **(ii) बाजार का बाजारूपन कैसे बढ़ता है ?** (क) सस्ता खरीदने से (ख) बहुत कम खरीदने से (ग) जरूरत से अधिक खरीदने से (घ) इनमें से कोई नहीं **(iii) परचेजिंग पावर से क्या आशय है ?** (क) बेचने की शक्ति (ख) बहुत कम खरीदने की शक्ति (ग) पैसों के बल पर अधिक खरीदना और दिखावा (घ) ये सभी **(iv) बाजारूपन से क्या होता है ?**	

	(क) कपट की बढ़ती ,सद्भाव की घटती (ख) सद्भाव की बढ़ती,कपट की घटती (ग) कपट और सद्भाव की बढ़ती (घ) कपट और सद्भाव की घटती **(v) जो नहीं जानते है कि वे क्या चाहते हैं , वे–** (क) बाजार को सार्थकता देते हैं (ख) बाजार से लाभ उठाते हैं (ग) बाजारूपन नहीं बढ़ाते हैं (घ) बाजारूपन बढ़ाते हैं	
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x10=10**
	(i)यशोधर बाबू किसको अपना आदर्श मानते थे? (क) भूषण को (ख) किशनदा को (ग) अपनी पत्नी को (घ) अपने साले को **(ii) यशोधर बाबू के विवाह की कौन-सी वर्षगाँठ मनाई गई?** (क) बीसवीं (ख) तीसवीं (ग) पच्चीसवीं (घ) चालीसवीं **(iii) दफ्तर के बाबुओं को अपनी सिल्वर वैडिंग के लिए यशोधर बाबू ने कुल कितने रुपये दिए?** (क) दस (ख) पंद्रह (ग) दस (घ) तीस **(iv)'सिल्वर वैडिंग' में गाउन पहनते समय यशोधर बाबू को कौन-सी बात चुभी?** (क) पत्नी द्वारा उपेक्षा (ख) भूषण के व्यंग्य वचन (ग) केक काटना (घ) दूध लाने की बात **(v) 'जूझ' के कथानायक का क्या नाम बताया गया है?** (क) आनंदा (ख) दत्ता जी राव (ग) मोहन आनंद (घ) कमल आनंद **(vi)पाठशाला जाने की बात लेखक ने सबसे पहले किससे की?** (क) दादा से (ख) माँ से (ग) दत्ता जी राव से (घ) सौंदलगेकर से **(vii) पढ़ाई के लिए लेखक अपनी माँ के साथ किसके पास गया?** (क) दत्ता जी राव (ख) दादा (ग) सौंदलगेकर (घ) इनमें से कोई नहीं **(viii) लेखक ने सिंधु सभ्यता के सौंदर्य-बोध को क्या नाम दिया है?**	

	(क) राज-पोषित (ख) धर्म-पोषित (ग) समाज-पोषित (घ) व्यापार-पोषित **(ix) सिंधु सभ्यता की खूबी क्या है?** (क) सौंदर्य-बोध (ख) संस्कृति-बोध (ग) सभ्यता-बोध (घ) नागर-बोध **(x) मुअनजो-दड़ो के घरों में टहलते हुए लेखक को किस गाँव की याद आई?** (क) कुलधरा (ख) खाभा (ग) बुलधरा (घ) शुभधरा	
	खंड- 'ब' वर्णनात्मक (40 अंक)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**	**6x1=6**
	(क) नारी शिक्षा का महत्व (ख) व्यायाम का महत्व (ग) जैसा करोगे वैसा भरोगे (घ) सच्चा मित्र	
प्र.(8)	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए -**	**3x2=6**
	(i) कहानी को नाटक में किस प्रकार रूपांतरित किया जा सकता हैं ? **अथवा** नाट्य रूपांतरण करते समय कौन कौन सी समस्याएँ आती हैं ? (ii) रेडियो नाटक की अवधि 15-20 मिनिट के बीच क्यों होनी चाहिए| **अथवा** बीट रिपोर्टर की रिपोर्ट कब विश्वसनीय मानी जाती है?	
प्र.(9)	**निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए -**	**4x2=8**
	(i) उल्टा पिरामिड शैली से आप क्या समझते है ? (ii) रिपोर्ट-लेखन की भाषा की विशेषताएँ बताइए। (iii) समाचार के छह ककार कौन-कौन-से हैं?	
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i) दिन जल्दी-जल्दी ढलता हैं- की आवृति से कविता की किस विशेषता का पता चलता हैं?	

	(ii) "कैमरे में बंद अपाहिज" करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है ? इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए | (iii) 'कविता के बहाने उसकी उड़ान और उसके खिलने का आशय स्पष्ट कीजिए।	
प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i) इस कविता के बहाने बताएँ कि 'सब घर एक कर देने के माने क्या है? (ii) तुलसीदास के कवित्त के आधार पर तत्कालीन समाज की आर्थिक विषमता पर प्रकाश डालिए | (iii) विप्लव के बादल का आह्वान क्यों किया गया है ?	
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i) बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता हैं? (ii) लोगों ने लड़कों की टोली को मेढक-मंडली नाम किस आधार पर दिया? यह टोली अपने आपको इंदर सेना कहकर क्यों बुलाती थी? (iii) पहलवान की ढोलक का गाँव वालों पर क्या प्रभाव होता था ?	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i) भक्तिन पाठ के आधार पर भक्तिन के व्यक्तित्व की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए | (ii) इंद्र सेना किसे कहा गया है और क्यों ? "काले मेघा पानी दे" के आधार पर बताइए| (iii) बाजार का जादू चढ़ने और उतरने पर मनुष्य पर क्या-क्या असर पड़ता हैं?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-4 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

अंक योजना व उत्तर संकेत

प्र. सं.	उत्तर संकेत	अंक भार
प्र.(1)	**अपठित गद्यांश** (i) (ग) महत्वपूर्ण और विश्वसनीय ज्ञान प्रदान करता है (ii) (घ) प्रकृति सर अविदुर रहने का प्रयास करते है (iii) (घ)बारीकी से देखना और निरंतर सोचना (iv) (ख)विज्ञानोपासक (v) (घ) विज्ञानवादी (vi) (ख) प्रकृति के साक्षात दर्शन से (vii) (घ) प्रफुल्लित पुष्प अध्यनकर्ता (viii) (ख) नित (ix) (क) कवि की सोच और वैज्ञानिकता (x) (ख)मानवीकरण अलंकर का दुरुपयोग हो रहा है	1x10=10
प्र.(2)	**अपठित पद्यांश** (i) (ग) आनंद (ii) (ग) कवयित्री ने असफलता के बादलों को सोने के सूत्र से घेरकर रखा है (iii) (ख) विपरीत परिस्थितियों में भी आशा का दामन नहीं छोड़ना चाहिए (iv) (क)प्रसन्नता के साथ ग्रहण करती है (v) (ख) मेरा जीवन	1x5=5
	अथवा	
	(i)(ब)अपना कार्य पूर्ण न होने की पीड़ा के कारण (ii) (ब)विलाप नहीं करना चाहिए (iii) (स) वे लोगों पर अपना प्रभाव छोड़ जाते है (iv) (अ) लोग जल्दी कार्य करने वाले अधिकारी से प्रभावित होते है (v) (ब) जीवन सार	
प्र.(3)	**अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प-** (i) (क)गुटेनबर्ग (ii) (क) सन् 1956 (iii) (घ)छह (iv) (ख) सहज ,सरल और बोधगम्य भाषा (v) (घ)समाचार	1x5=5
प्र.(4)	**(पाठ्यपुस्तक आरोह भाग - 2 बहुविकल्पात्मक प्रश्न)** **पठित काव्यांश** (i) (घ) यांत्रिकता के दबाव में कविता के अस्तित्व को लेकर (ii) (ख) फल तक (iii) (ख) बच्चे तक (iv) (क) कुंवर नारायण (v) (घ) चिड़िया के बहाने	1x5=5

प्र.(5)	**पठित गद्यांश** (i) (ग) जो जानता है कि वह क्या चाहता है (ii) (ग) जरुरत से अधिक खरीदने से (iii) (ग) पैसों के बल पर अधिक खरीदना और दिखावा (iv) (क) कपट की बढती , सद्भाव की घटती (v) (घ) बाजारुपन बढ़ाते है	**1x5=5**
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प-** (i) (ख) किशनदा को (ii) (ग) पच्चीसवीं (iii) (घ) तीस (iv) (घ) दूध लाने की बात (v) (क) आनंदा (vi) (ख) मां से (vii) (ग) सौन्दल्गेकर (viii) (ग) समाज पोषित (ix) (क) सौन्दर्य बोध (x) (क) कुलधरा	**1x10=10**
	खंड ब (वर्णनात्मक प्रश्न)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर रचनात्मक लेखन** प्रस्तावना - 1 भाषा - 1 रचनात्मकता - 1 विषयवस्तु - 3	**6x1=6**
प्र.(8)	**प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में -** (i) कहानी को नाटक में रूपांतरित करने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना आवश्यक है जो इस प्रकार है- 1. कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाता है 2. कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाता है 3. कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जाती है 4. ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है 5. कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाता है 6. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाता है **अथवा** नाट्य रूपांतरण करते समय अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जो इस प्रकार है- 1. सबसे प्रमुख समस्या कहानी के पात्रों के मनोभावों को कहानीकार द्वारा प्रस्तुत प्रसंगों अथवा मानसिक द्वंद्वों के नाटकीय प्रस्तुति में आती है 2. पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या आती है 3. संवादों को नाटकीय रूप	**3x2=6**

	प्रदान करने समस्या आती है 4. संगीत, ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था करने में समस्या होती है। 5. कथानक को अभिनय के अनुरूप बनाने में समस्या होती है। (ii) रेडियो एक श्रव्य माध्यम है और नाटक का आनंद श्रोता आवाज और ध्वनि प्रभाव के जरिये ही करता है ऐसे कम समय में तो श्रोता नाटक में एकतान बना रहता है परंतु लंबे समय तक श्रोता एकाग्र नहीं बना रह सकता और फिर रेडियो में नाटक थोड़ा लम्बा या उबाऊ होने पर श्रोता दूसरे चैनल पर उंगली घुमा सकता है अतः नाटक की अवधि 15-20 मिनिट होनी चाहिए| **अथवा** बीट रिपोर्टर को अपने बीट (क्षेत्र) की प्रत्येक छोटी-बड़ी जानकारी एकत्र करके कई स्रोतों द्वारा उसकी पुष्टि करके विशेषज्ञता हासिल करना चाहिए। तब उसकी खबर विश्वसनीय मानी जाती है।	
प्र.(9)	**तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में-** (i) इस शैली में सबसे पहले समाचार का महत्त्वपूर्ण तथ्य लिखा जाता है। उसके बाद घटते हुए अन्य तथ्यों एवं सूचनाओं को लिखा जाता है। उलटा पिरामिड शैली में कहानी का क्लाइमेक्स अंत में नहीं , बल्कि खबर के प्रारम्भ में आ जाता है। (ii) रिपोर्ट की भाषा न आलंकारिक हो, न ही मुहावरेदार। रिपोर्ट में सूचना भर होनी चाहिए। किसी भी वाक्य के एक-से अधिक अर्थ न निकलें। भाषा में प्रथम पुरुष का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए (iii) समाचार लेखन के लिए छः सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। ये छः सूचनाएँ- क्या हुआ, कब हुआ, किसके (कौन) साथ हुआ, कहाँ हुआ, क्यों और कैसे हुआ प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती हैं। यही छः ककार कहलाती हैं। इनमें से प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककारे (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं।	**4x2=8**
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर-** (i) दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'-की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अत: समय के साथ स्वयं को	**3x2=6**

	समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है। (ii)'कैमरे में बंद अपाहिज' करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है'-विचार कीजिए। यह कथन बिल्कुल सच है कि यह कविता करुणा के मुखौटे में छिपी क्रूरता की कविता है। ऊपर से तो करुणा दिखाई देती है कि संचालक महोदय अपंग व्यक्ति के प्रति सहानुभूति दर्शा रहा है, पर उसका वास्तविक उद्देश्य कुछ और ही होता है। (iii) कवि ने बताया कि चिड़िया एक जगह से दूसरी जगह उड़ती है। इसी प्रकार कविता भी हर जगह पहुँचती है। उसमें कल्पना की उड़ान होती है। कवि फूल खिलने की बात करता है। दूसरे शब्दों में, कविता का आधार प्राकृतिक वस्तुएँ हैं। वह लोगों को अपनी रचनाओं से मुग्ध करती है	
प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर-** (i) इसका अर्थ है-भेदभाव, अंतर व अलगाववाद को समाप्त करके सभी को एक जैसा समझना। जिस प्रकार बच्चे खेलते समय धर्म, जाति, संप्रदाय, छोटा-बड़ा, अमीर-गरीब आदि का भेद नहीं करते, उसी प्रकार कविता को भी किसी एक वाद या सिद्धांत या वर्ग विशेष की अभिव्यक्ति नहीं करनी चाहिए। कविता शब्दों का खेल है। कविता का कार्य समाज में एकता लाना है। (ii) कवितावली में उद्दृत छंदों से यह ज्ञात होता है कि तुलसीदास को अपने युग की आर्थिक विषमता की अच्छी समझ है। उन्होंने समकालीन समाज का यथार्थपरक चित्रण किया है। उन्होंने देखा कि उनके समय में बेरोजगारी की समस्या से मजदूर, किसान, नौकर, भिखारी आदि सभी परेशान थे। गरीबी के कारण लोग अपनी संतानों तक को बेच रहे थे। सभी ओर भूखमरी और विवशता थी। (iii) कवि पृथ्वी से पूँजीपतियों का साम्राज्य मिटा देना चाहता है ताकि जनसामान्य भी सुखद जीवन जी सके। निराला ने इस कार्य की पूर्ति हेतु बालों को क्रांति का प्रतीक माना है। इसलिए समाज से पूँजीपति वर्ग के शोषण को मिटाने के लिए कवि विप्लव के बादल का आहवान करता है।	**2x2=4**
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर-** (i) जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिज़ूल की खरीददारी करता है। वह उस सामान को खरीद लेता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं होती। वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब यह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाज़ार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर वह केवल आवश्यकता का ही सामान खरीदता है ताकि उसका पालन-	**3x2=6**

	पोषण हो सके। (ii) गाँव के किशोर, बच्चे कीचड़ में लथपथ होकर गली-गली घूमकर लोगों से पानी माँगते थे। गाँव के कुछ लोगों को लड़कों का नंग-धड़ग होकर कीचड़-कादो में लथपथ होना बुरा लगता था। वे इसे गँवारपन और अंधविश्वास समझते थे इसलिए उन्होंने लड़कों की टोली को मेढक मंडली-नाम दिया था। बच्चों का ऐसा मानना था कि वे इंद्र की सेना के सैनिक है और उसी के लिए वे लोगों से पानी का दान माँगते हैं। अत:वे स्वयं को इंदर सेना के नाम से पुकारते थे। (iii) जब पूरा गाँव महामारी के कारण मलेरिये और हैजे से त्रस्त होकर अधमरा, निर्बल और निस्तेज हो गया था तब इस भयंकर वातावरण में ढोलक की आवाज़ गाँववालों को संजीवनी प्रदान किया करती थी। उपचाराधीन और पथविहीन लोगों में संजीवनी शक्ति भरती थी। बच्चे, जवान और बूढों की आँखों के आगे दंगल का दृश्य पैदा कर देती थी।	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर-** (i) (क) व्यक्तित्व-भक्तिन अधेड़ उम्र की महिला है। उसका कद छोटा व शरीर दुबला-पतला है। उसके होंठ पतले हैं तथा आँखें छोटी हैं। (ख) परिश्रमी-भक्तिन कर्मठ महिला है। ससुराल में वह बहुत मेहनत करती है। वह घर, खेत, पशुओं आदि का सारा कार्य अकेले करती है। लेखिका के घर में भी वह उसके सारे कामकाज को पूरी कर्मठता से करती है। वह लेखिका के हर कार्य में सहायता करती है। (ii) गाँव के कुछ लोगों को लड़कों के नंगे शरीर, उछल-कूद, शोर-शराबे और उनके कारण गली में होने वाले कीचड़ से चिढ़ थी। वे इसे अंधविश्वास मानते थे। इसी कारण वे इन लड़कों की टोली को मेढक-मंडली कहते थे। यह टोली स्वयं को 'इंदर सेना' कहकर बुलाती थी। (iii) जब बाज़ार का जादू चढ़ता है तो व्यक्ति फिजूल की खरीददारी करता है। वह उस सामान को खरीद लेता है जिसकी उसे ज़रूरत नहीं होती। वास्तव में जादू का प्रभाव गलत या सही की पहचान खत्म कर देता है। लेकिन जब यह जादू उतरता है तो उसे पता चलता है कि बाज़ार की चकाचौंध ने उन्हें मूर्ख बनाया है। जादू के उतरने पर उसे वह चीज़ें आराम में खलल डालने वाली महसूस होती है ।	**2x2=4**

****

केंद्रीय विद्यालय संगठन, जम्मू सम्भाग

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-5 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश-

- **इस प्रश्न-पत्र में दो खंड है - खंड 'अ' और 'ब' |**
- **खंड 'अ' में प्रश्न संख्या 1 से 6 तक हैं जिनमें कुल 45 बहुविकल्पात्मक प्रश्न हैं तथा इनमें से निर्देशानुसार 40 प्रश्नों के ही उत्तर दिए जाएँ |**
- **खंड 'अ' में प्रत्येक प्रश्न के उत्तर में चार विकल्प दिए गए हैं | इन विकल्पों में से सबसे उचित का चयन कर सावधानीपूर्वक लिखिए |**
- **खंड 'ब' में प्रश्न संख्या 7 से 13 तक है जिनमें वर्णनात्मक प्रश्न पूछे गए हैं | प्रश्नों में उचित आंतरिक विकल्प दिए गए हैं |**
- **निर्देशों को सावधानीपूर्वक पढ़िए और उनका पालन कीजिए |**

खंड- 'अ' बहुविकल्पात्मक (40 अंक)		
प्र.(1)	**निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए:**	**1x10=10**
	शिक्षा जीवन के सर्वांगीण विकास हेतु अनिवार्य है। शिक्षा के बिना मनुष्य विवेकशील और शिष्ट नहीं बन सकता | विवेक से मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता उत्पन्न होती है। विवेक से ही मनुष्य के भीतर उसके चारों ओर घटते घटनाक्रमों के प्रति एक उचित दृष्टिकोण उत्पन्न होता है। शिक्षा ही मानव-को-मानव के प्रति मानवीय भावनाओं से पोषित करती है । शिक्षा से मनुष्य अपने परिवेश के प्रति जाग्रत होकर कर्तव्याभिमुख हो जाता है। 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर निर्बल की सहायता करना, दुखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना, दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना और दूसरों के सुख का स्वयं अनुभव करना जैसी बातें एक शिक्षित मानव में सरलता से देखने को मिल जाती हैं। इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र इत्यादि पढ़कर विद्वान ही नहीं बनता, वरन उसमें एक विशिष्ट जीवन दृष्टि, रचनात्मकता और	

परिपक्वता का सृजन भी होता है। शिक्षित सामाजिक परिवेश में व्यक्ति अशिक्षित सामाजिक परिवेश की तुलना में सदैव ही उच्च स्तर पर जीवन-यापन करता है। आज आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ बदल रहा है। शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है। व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण से छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं, जिसके कारण रूस की क्रांति, फ्रांस की क्रांति, अमेरिकी क्रांति, समाजवाद, पूँजीवाद, राजनीतिक व्यवस्था, सांस्कृतिक मूल्यों आदि की सामान्य जानकारी भी व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को नहीं है। यह शिक्षा का विशुद्ध रोज़गारोन्मुखी रूप है। शिक्षा के प्रति इस प्रकार का संकुचित दृष्टिकोण अपनाकर विवेकशील नागरिकों का निर्माण नहीं किया जा सकता। भारत जैसे विकासशील देश में शिक्षा रोज़गार का साधन न होकर साध्य हो गई है। इस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाना आवश्यक है। जहाँ मानविकी के छात्रों को पत्रकारिता, साहित्य-सृजन, विज्ञापन, जनसंपर्क इत्यादि कोर्स भी कराए जाने चाहिए, ताकि उन्हें रोज़गार के लिए भटकना न पड़े, वहीं व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को मानविकी के विषय; जैसे–इतिहास, साहित्य, राजनीतिशास्त्र, दर्शन आदि का थोड़ा-बहुत अध्ययन अवश्य करना चाहिए, ताकि समाज को विवेकशील नागरिक प्राप्त होते रहें, तभी समाज में संतुलन बना रह सकेगा।

(I) मनुष्य में सही और गलत का चयन करने की क्षमता किससे उत्पन्न होती है?

(क) शिक्षा से (ख) विवेक से

(ग) शिष्टाचार से (घ) सतर्कता **से**

(II) 'स्व' से 'पर' की ओर अग्रसर होने से क्या तात्पर्य है ?

(क) स्वयं को भूल जाना (ख) स्वयं से पराया हो जाना

(ग) परोपकार करना (घ) स्वार्थी हो जाना

(III) एक शिक्षित व्यक्ति में समाज कल्याण हेतु किन बातों का होना आवश्यक है?

(क) दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाना (ख) निर्बल की सहायता करना

(ग) दुःखियों के दुःख दूर करने का प्रयास करना(घ) सभी विकल्प सही हैं

(IV) शिक्षा के द्वारा मनुष्य में कैसी भावना उत्पन्न होती है?

(क) भौतिक उन्नति की (ख)वसुधैव कुटुंबकम की

(ग) स्वार्थ पूर्ति की (घ)अनुशासनहीनता की

(V) "शिक्षा भौतिक आकांक्षा की पूर्ति का साधन बनती जा रही है', पंक्ति का क्या आशय है?

(क) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराती है

(ख) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है

(ग) व्यावसायिक शिक्षा मनुष्य के लक्ष्य प्राप्ति का साधन बन रही है

(घ) व्यावसायिक शिक्षा मानवीय मूल्यों का विस्तार करने का साधन है

(VI) व्यावसायिक शिक्षा के अंधानुकरण का क्या परिणाम सामने आया है?

(क) छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं

(ख) छात्र का सर्वांगीण विकास तीव्र गति से हो रहा है

(ग) छात्र सामाजिक होते जा रहे हैं

(घ) छात्र अपना उत्तरदायित्व स्वयं उठा रहे हैं

(VII) व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों को किसकी जानकारी नहीं है?

(क) राजनीतिक व्यवस्था की (ख) सांस्कृतिक मूल्यों की

(ग) सामान्य इतिहास की (घ) ये सभी

(VIII) गद्यांश के अनुसार, विवेकशील नागरिकों का निर्माण करने में किसे बाधक माना गया है?

(क) आधुनिक शिक्षा को

(ख) शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को

(ग) समतामूलक समाज को

(घ) शिक्षा के प्रति व्यापक दृष्टिकोण को

(IX) व्यावसायिक कोर्स करने वाले छात्रों को किसका अध्ययन अवश्य करना चाहिए?

(क) पूँजीवाद का (ख) समाज व्यवस्था का

(ग) मानविकी विषय का (घ) मानव मूल्य का

(X) गद्यांश में किस कुप्रवृत्ति पर अंकुश लगाने की बात की गई है?

(क) शिक्षा रोजगार प्राप्ति का साधन न होकर साध्य बनने की

(ख) शिक्षा के रोजगारोन्मुखी न होने की

(ग) शिक्षा के सर्वांगीण विकास की

(घ) शिक्षा के बढ़ते मूल्य को कम करने की

प्र.(2)	**निम्नलिखित दो पद्यांशों में से किसी एक पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उस पर आधारित प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए :**	**1x5=5**
	नए युग में विचारों की नई गंगा बहाओ तुम, कि सब कुछ जो बदल दे, ऐसे तूफ़ाँ में नहाओ तुम। अगर तुम ठान लो तो आँधियों को मोड़ सकते हो अगर तुम ठान लो तो गगन के तारे तोड़ सकते हो, अगर तुम ठान लो तो विश्व के इतिहास में अपने सुयश का एक नव अध्याय भी जोड़ सकते हो, तुम्हारे बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है उसी विश्वास को फिर आज जन-जन में जगाओ तुम पसीना तुम अगर इस भूमि में अपना मिला दोगे, करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन दिला दोगे। तुम्हारी देह के श्रम-सीकरों में शक्ति है इतनी, कहीं भी धूल में तुम फूल सोने के खिला दोगे। नया जीवन तुम्हारे हाथ का हल्का इशारा है। इशारा कर वही इस देश को फिर लहलहाओ तुम। **(I)यदि भारतीय युवा वर्ग दृढ़ निश्चय कर ले, तो क्या-क्या कर सकते हैं?** (क) विश्व के इतिहास में नवीन अध्याय जोड़ सकते हैं (ख) आँधियों को मोड़ सकते हैं (ग) कठिन-से-कठिन कार्य कर सकते हैं (घ) ये सभी **(II) किसके बाहुबल पर विश्व को भारी भरोसा है?** (क) दीन-हीन के (ख) श्रमिक के (ग) युवा वर्ग के (घ) ईश्वर के **(III) कवि युवा वर्ग से क्या आग्रह कर रहा है?** (क) नए विचारों का प्रसार करे (ख) समाज की दशा में परिवर्तन लाए (ग) जन सामान्य में आत्मविश्वास की भावना उत्पन्न करे (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं **(IV)काव्यांश के अनुसार करोड़ों दीन-हीनों को नया जीवन कैसे दिलाया जा सकता है?** (क) पुराने विचारों और सोच से (ख)केवल आदर्शों के माध्यम से	

	(ग) युवा वर्ग की श्रम की शक्ति से (घ) उच्च वर्ग के शोषण द्वारा **(V) काव्यांश में किसे संबोधित किया जा रहा है ?** (क) युवा वर्ग (ख) शिक्षक वर्ग (ग) वैज्ञानिक वर्ग (घ) सभी वर्ग	
	अथवा	
	इंसानों से भरी-पूरी दुनिया में, मैं खोजती हूँ एक मनुष्य जो बाशिंदा हो इस मृत्युलोक का धरती पर आए हुए पहले नि:स्वार्थ प्राणी की तरह अपने जीवन स्वप्नों के साथ जो परिंदे की तरह उड़ता हो बचाता हो पृथ्वी का **<u>हरापन</u>** पहाड़ों की सरकती मिट्टी को फिर से पहाड़ों में रखता हुआ डालियों को जमाता हुआ पेड़ों की दूंठ में पत्तों के दोनों से बचाता हुआ बारिश का पानी मिट्टी पर पड़ी बूंदों की गंध से जिसके भीतर एक ख़ुशबू उड़ने लगती हो उसके प्रेम भरे हाथ सहलाते हों किसी का सिर जिसके भीतर रातें उगती हों दिन की तरह ऐसे मनुष्य को खोजना एक भ्रम का पीछा करना है एक ऐसा भ्रम जिसे मैं सत्य मानती हूँ। **(I) कवयित्री मृत्युलोक में किस प्रकार के मनुष्य को खोज रही है?** (क) अमरत्व प्राप्त (ख) मुक्त भोगी (ग) नि:स्वार्थी (घ) परिश्रमी **(II) पृथ्वी का हरापन बचाने से क्या अभिप्राय है?** (क) पर्यावरण संरक्षण (ख) हरियाली बचाना (ग) पेड़-पौधे लगाना (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं **(III) परिंदे की तरह उड़ना किसका प्रतीक है?** (क) बंधन में रखना (ख) पिंजरे से बाहर निकलना (ग) आकाश को छूना (घ) उन्मुक्त रहना	

	(IV) सूखे पेड़ों की जड़ों में किसको उगाने की बात कही गई है? (क) बीज को (ख) डाली को (ग) पत्ते को (घ) ये सभी **(V) प्रस्तुत काव्यांश में कवयित्री किसे सत्य मानती है?** (क) भ्रम को (ख) दिन को (ग) जीवन को (घ) स्वप्न को	
प्र.(3)	**पाठ्यपुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	(I) निम्न में से किस लेखन विधा में लेखक का नाम नहीं दिया जाता ? (क) कविता (ख) लेख (ग) फ़ीचर (घ) संपादकीय **(II) निम्न में से कौन-सा गुण संवाददाताओं में पाया जाना अपेक्षित होता है?** (क) पैनी दृष्टि (ख) निर्भीकता (ग) सत्यनिष्ठा (घ) उपर्युक्त सभी गुण अनिवार्य हैं **(III) किसी भी समाचार-पत्र के लेखन तथा संपादन से जुड़ा व्यक्ति क्या कहलाता है?** (क) संपादक (ख) पत्रकार (ग) मुख्य संवाददाता (घ) उपसंपादक **(IV) फ़ीचर क्या है ?** (क) राजनीतिक विषय पर प्रधान लेख (ख) सांस्कृतिक विषय पर प्रधान लेख (ग) आर्थिक विषय पर प्रधान लेख (घ) किसी विशेष विषय पर प्रधान लेख **(V) उल्टा पिरामिड शैली में सबसे ऊपर क्या आता है ?** (क) समापन (ख) इंट्रो (ग) बॉडी (घ) कुछ भी नहीं	
प्र.(4)	**निम्नलिखित पठित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	मेरा आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता, भ्रातृता पर आधारित होगा। क्या यह ठीक नहीं है, भ्रातृता अर्थात् भाईचारे में किसी को क्या आपत्ति हो	

	सकती है? किसी भी आदर्श समाज में इतनी गतिशीलता होनी चाहिए, जिससे कोई भी वांछित परिवर्तन समाज के एक छोर से दूसरे तक संचारित हो सके। ऐसे समाज के बहुविध हितों में सबका भाग होना चाहिए तथा सबको उनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के अनेक साधन व अवसर उपलब्ध रहने चाहिए। तात्पर्य यह है कि दूध और पानी के मिश्रण की तरह भाईचारे का यही वास्तविक रूप है और इसी का दूसरा नाम लोकतंत्र है, क्योंकि लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति ही नहीं है, लोकतंत्र मूलतः सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का नाम है। इनमें यह आवश्यक है कि अपने साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव हो। **(I) लेखक के अनुसार एक आदर्श समाज के लिए क्या अपेक्षित है?** (क) समानता (ख) स्वतंत्रता (ग) गतिशीलता (घ) लोकतंत्र **(II) सबको किनकी रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए?** (क) दलितों की (ख) स्वयं की (ग) लोकतंत्र की (घ) सरकार **(III) भाईचारे के वास्तविक रूप को क्या कहा जाता है?** (क) दूध (ख)समाज (ग) पानी (घ) प्रजातंत्र **(IV) लेखक ने दूध और पानी के मिश्रण के माध्यम से क्या बताना चाहा है ?** (क) भेदभाव की समाप्ति (ख) उच्च- निम्न का भेद (ग) उपयोगी और मूल्यहीन वस्तु (घ) समानता का लोप **(V) लोकतंत्र में क्या आवश्यक माना गया है?** (क) सरकार की महत्त्वपूर्ण भूमिका (ख) निम्न का आरक्षण (ग) साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव (घ) असमानता का भाव	
प्र.(5)	**निम्नलिखित पठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x5=5**
	खेती न किसान को, भिखारी को न भीख, बलि, बनिक को बनिज, न चाकर को चाकरी। जीविका विहीन लोग सीद्यमान सोच बस, कहैं एक-एकन सों 'कहाँ जाई, का करी?'	

	बेदहूँ पुरान कही, लोकहूँ बिलोकिअत, साँकरे सबै पै, राम! रावरें कृपा करी दारिद-दसानन दबाई दुनी, दीनबंधु! दुरित-दहन देखि तुलसी हहा करी।। **(I) प्रस्तुत काव्यांश के कवि और कविता का क्या नाम है?** (क) हरिवंश राय बच्चन 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' (ख)कुँवर नारायण 'कविता के बहाने' (ग) तुलसीदास 'कवितावली' (घ) शमशेर बहादुर सिंह 'उषा' **(II) काव्यांश में लोग किस कारण से दुःखी हैं?** (क) जीविका विहीन हो जाने से (ख) राम के वनवास चले जाने से (ग) सीता-हरण हो जाने से (घ) फसल खराब हो जाने से **(III) दरिद्रता को किसके समान बताया गया है?** (क) राम के समान (ख) रावण के समान (ग) लक्ष्मण के समान (घ) हनुमान के समान **(IV) किसके द्वारा इस संकटपूर्ण स्थिति से उभरा जा सकता है ?** (क) कवि द्वारा (ख) राम-भक्ति द्वारा (ग) दान-दक्षिणा द्वारा (घ) नए व्यापार द्वारा (V) निम्नलिखित में से किस वर्ग की स्थिति अत्यंत दयनीय है ? (क) किसान वर्ग (ख) भिखारी वर्ग (ग) व्यापारी वर्ग (घ) उपर्युक्त सभी वर्ग की	
प्र.(6)	**पूरक पाठ्यपुस्तक वितान भाग-2 के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प का चयन कर लिखिए :**	**1x10=10**
	(I) यशोधर बाबू को नौकरी कैसे मिली ? (क) अपनी मेहनत से (ख) अपने पिता की वजह से (ग) किशन दा की वजह से (घ) अच्छे अंकों की वजह से **(II) 'जूझ' कहानी में आनंद पर कविता का क्या प्रभाव पड़ा ?** (क) वह निश्चिंत हो गया (ख) अब वह अकेला नहीं रहा (ग) अकेलापन अच्छा लगने लगा (घ)सभी विकल्प सही हैं **(III) 'जूझ' कहानी में सौंदलगेकर के चरित्र की क्या खासियत है ?** (क) उनको अंग्रेज़ी और मराठी की कविताएं याद थीं	

(ख) लय और छंद का गहन ज्ञान
(ग)वे स्वयं कवि थे
(घ)उपर्युक्त सभी गुण मौज़ूद थे

(IV) यशोधर बाबू को अपनी पत्नी की कौन सी बात खटकती थी ?

(क) बिना बाजू का ब्लाउज़ (ख) रसोई के बाहर खाना खाना
(ग) हील वाले सैंडिल पहनना (घ) उपर्युक्त सभी

(V) सिल्वर वेडिंग कहानी की मूल संवेदना क्या है ?

(क) पीढ़ी का अंतराल (ख) क्षेत्र का अंतराल
(ग) स्वभाव का अंतराल (घ)उम्र का अंतराल

(VI) मुअनजो-दड़ो की खुदाई का काम बंद कर दिया गया क्योंकि---

(क) कारीगरों की कमी (ख) निर्देशक का न होना
(ग)पानी के कारण (घ) पानी के रिसाव के कारण

(VII)'जूझ' कहानी में नायक के सामने विद्यालय जाने के लिए क्या शर्त रखी गई?

(क) सुबह 11 बजे तक खेत का काम करना होगा
(ख) छुट्टी के बाद जानवरों को चराना होगा
(ग) ज़रूरत पड़ने पर काम के लिए स्कूल से छुट्टी करनी होगी
(घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं

(VIII) "सिंधु घाटी की सुंदरता समाज पोषित थी." कथन का अर्थ होगा---

(क) समाज को सर्वोपरी रखा गया
(ख)सिंधु घाटी का कोई राजा नहीं था
(ग) यहाँ की हर वस्तु सुंदर थी
(घ) यहाँ के लोग दिखावे में यकीन करते थे

(IX) यशोधर बाबू जिस भी बात या घटना के लिए 'सम हाऊ इंप्रोपर' इसका मतलब होता था कि वह बात या घटना---

(क) सरकारी नियमों के विरुद्ध है
(ख) युवा विचारों के अनुकूल नही है
(ग) वृद्धों के विचारों के अनुकूल नहीं है
(घ) यशोधर बाबू के विचारों के अनुकूल नहीं थी

(X)'जूझ' कहानी में गणित के अध्यापक बच्चों को किस बात पर पिटाई करते थे?

(क) विद्यालय विलंभ से आने के कारण

	(ख) गणित के सवाल हल न कर पाने के कारण (ग) विद्यालय में तोड़-फोड़ करने के कारण (घ) कक्षा में शरारत करने के कारण	
	खंड- 'ब' वर्णनात्मक (40 अंक)	
प्र.(7)	**दिए गए चार अप्रत्याशित विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए-**	**6x1=6**
	क. साहित्य समाज का दर्पण है । ख. जीवन संघर्ष है । ग. पुस्तकालय में बैठे विद्यार्थी घ. अनुशासन सफलता की कुंजी है ।	
प्र.(8)	**निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए -**	**3x2=6**
	(i) रेडियो नाटक और सामान्य नाटक में क्या अंतर होता है ? **अथवा** 'कहानी को नाटक में बदलने पर कहानी जीवंत हो जाती है।'स्पष्ट करें। (ii) अप्रत्याशित विषयों पर लेखन के विषय क्या हो सकते हैं? **अथवा** दृश्य श्रव्य माध्यमों की तुलना में श्रव्य माध्यम की क्या सीमाएं हैं? इन सीमाओं को किस तरह पूरा किया जा सकता है?	
प्र.(9)	**निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दीजिए -**	**4x2=8**
	(i)समाचार लेखन में कितने 'ककार' होते हैं ? विस्तार से लिखें । (ii)टी वी समाचार के विभिन्न चरणों को विस्तार से लिखें । (iii)किस प्रकार के फ़ीचर को उत्तम कहा जा सकता है ?	
प्र.(10)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i)क्या 'कैमरे में बंद अपाहिज' व्यावसायिक क्रूरता की कविता है ? (ii)'जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं' -कवि ने ऐसा क्यों कहा? (iii)'कविता के बहाने' कविता में कविता और बच्चे को समानांतर क्यों रखा गया हैं?	

प्र.(11)	**काव्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i)दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता में बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे? (ii)'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता में प्रश्नकर्ता अपाहिज व्यक्ति को उसके अपाहिजपन का अहसास क्यों दिलाना चाहता है? (iii)दीपावली की रात माँ के वात्सल्य का वर्णन कवि ने किस प्रकार किया है ?	
प्र.(12)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 60 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**3x2=6**
	(i)डॉ. भीमराव अम्बेडकर के कल्पना के आदर्श समाज का अपने शब्दों में वर्णन करें। (ii)शिरीष को कालजयी अवधूत या संयासी क्यों कहा गया है ? (iii)पहलवान की ढोलक कहानी के आधार पर बताएं कि सूर्योदय और सूर्यास्त के दृष्य में क्या अंतर होता था ?	
प्र.(13)	**गद्य खंड पर आधारित तीन प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के लगभग 40 शब्दों में उत्तर दीजिए-**	**2x2=4**
	(i)इंदर सेना और मेढक मंडली में क्या अंतर है ? (ii)बाज़ार की सार्थकता किसमें है ? (iii)क्या जातिगत श्रम-विभाजन बेरोजगारी व आर्थिक कमज़ोरी का कारण बन सकती है ?	

****

प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र-5 (सत्र 2022-23)

विषय- हिंदी आधार (कोड सं. 302)

कक्षा- बारहवीं **अधिकतम अंक : 80**

अंक योजना व उत्तर संकेत

प्र.1. अपठित गद्यांश - **1x10 = 10**

उत्तर (I) (ख) विवेक से ।

उत्तर (II) (ग) परोपकार करना ।

उत्तर (III) (घ) सभी विकल्प सही हैं ।

उत्तर (IV) (ख) वसुधैव कुटुंबकम की ।

उत्तर (V) (ख) व्यावसायिक शिक्षा वर्तमान में मात्र धन कमाने का साधन बनती जा रही है ।

उत्तर (VI) (क) छात्र सैद्धांतिक शिक्षा से दूर होते जा रहे हैं ।

उत्तर (VII) (घ) ये सभी ।

उत्तर (VIII) (ख) शिक्षा के प्रति संकुचित दृष्टिकोण को

उत्तर (IX) (ग) मानविकी विषय का ।

उत्तर (X) (क) शिक्षा रोज़गार प्राप्ति का साधन न होकर साध्य बनने की ।

प्र.2. अपठित काव्यांशों में से किसी एक को पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दें-- **1x5 = 5**

उत्तर (I) (घ) ये सभी ।

उत्तर (II) (ग) युवा वर्ग के ।

उत्तर (III) (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही है ।

उत्तर (IV) (ग) युवा वर्ग की श्रम की शक्ति से

उत्तर (V) (ग) अनुप्रास अलंकार ।

अथवा

उत्तर (I) (ग) निःस्वार्थी ।

उत्तर (II) (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं ।

उत्तर (III) (घ) उन्मुक्त रहना

उत्तर (IV) (ख) डाली को ।

उत्तर (V) (घ) स्वप्न को

प्र.3.अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर दिए गए प्रश्नों के लिए उचित विकल्प - 1x5 = 5

उत्तर (I) (घ) संपादकीय

उत्तर (II) (घ) उपर्युक्त सभी गुण अनिवार्य हैं ।

उत्तर (III) (क) संपादक

उत्तर (IV) (घ) किसी विशेष विषय पर प्रधान लेख

उत्तर (V) (ख) इंट्रो

प्र.4. पठित गद्यांश **1x5 = 5**

उत्तर (I) (क) समानता

उत्तर (II) (ख) लोकतंत्र की ।

उत्तर (III) (घ) प्रजातंत्र ।

उत्तर (IV) (क) भेदभाव की समाप्ति

उत्तर (V) (ग) साथियों के प्रति श्रद्धा व सम्मान का भाव

प्र.5. पठित काव्यांश **1x5 = 5**

उत्तर (I) (ग) तुलसीदास 'कवितावली'

उत्तर (II) (क) जीविका विहीन हो जाने से ।

उत्तर (III) (ख) रावण के समान ।

उत्तर (IV) (ख) राम-भक्ति द्वारा ।

उत्तर (V) (घ) उपर्युक्त सभी वर्ग की ।

प्र.6. निम्नलिखित दस प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुन कर दें (वितान -2)--- 1x10 = 10

उत्तर (I) (ग) किशन दा की वजह से

उत्तर (II) (घ) सभी विकल्प सही हैं ।

उत्तर (III) (घ) उपर्युक्त सभी गुण मौजूद थे ।

उत्तर (IV) (घ) उपर्युक्त सभी ।

उत्तर (V) (क) पीढ़ी का अंतराल ।

उत्तर (VI) (घ) पानी के रिसाव के कारण ।

उत्तर (VII) (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सही हैं ।

उत्तर (VIII) (क) समाज को सर्वोपरी रखा गया था ।

उत्तर (IX) (घ) यशोधर बाबू के विचारों के अनुकूल नहीं थी ।

उत्तर (X) (घ) कक्षा में शरारत करने के कारण ।

खंड- ब (वर्णात्मक प्रश्न)

प्र.7. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखें- 6x1 = 6

प्रस्तावना	- 1	भाषा	- 1
रचनात्मकता	- 1	विषयवस्तु	- 3

प्र.8. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दें-- 3x2 = 6

(i) 1 समय 2. मंच 3. दृश्य

अथवा

कहानी को अभिनय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है ।

(ii) दैनिक जीवन से जुड़े हुए किसी भी विषय पर अप्रत्याशित लेखन लिखा जा सकता है । ये विषय कुछ भी हो सकते हैं, जैसे मेरे घर का बगीचा, एकशाम पहाड़ी जीवन के नाम, दीवाल घड़ी, बारिश में बिन छतरी, तीन घंटे का अकेलापन, दिव्य शक्तियाँ और मैं, फर्ज कीजिए आप तिलचट्टा हैं, धारावाहिकों में स्त्री, समुद्र किनारे आप और आपकी यादें वगैरह-वगैरह।

अथवा

दृश्य श्रव्य माध्यम में हम नाटक को अपनी आंखों से देख भी सकते हैं और पात्रों के संवादों को सुन भी सकते हैं किंतु श्रव्य माध्यम में हम केवल सुन सकते हैं उसे देख नहीं सकते।दृश्य श्रव्य माध्यम में हम पत्रों के हाव भाव देखकर उनकी दशा का अनुमान लगा सकते हैं किंतु श्रव्य माध्यम में हम ऐसा कुछ भी नहीं कर सकते।

प्र.9. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 80 शब्दों में दें -- 4x2 = 8

उत्तर (i) छः ककार ।समाचार लेखन के लिए छः सूचनाओं का प्रयोग किया जाता है। ये छः सूचनाएँ-क्या हुआ, कब हुआ, किसके (कौन) साथ हुआ, कहाँ हुआ, क्यों और कैसे हुआ प्रश्नों के उत्तर में प्राप्त होती हैं। यही छः ककार कहलाती हैं। इनमें से प्रथम चार ककार (क्या, कब, कौन, कहाँ) सूचनात्मक व अन्तिम दो ककारे (क्यों, कैसे) विवरणात्मक होते हैं।

उत्तर(ii)**फ़्लैश/ब्रेकिंग न्यूज**- बड़ी खबर तत्काल दर्शकों तक कम-से-कम शब्दों में पहुँचाई जाती है।

ड्राई एंकर-इसमें एंकर खबर के बारे में दर्शकों को सीधे-सीधे बताता है ।
फोन-इन- एंकर रिपोर्टर से फ़ोन पर बात करके सूचनाएँ दर्शकों तक पहुँचाता है।
एंकर-विजुअल-जब घटना के दृश्य या विजुअल मिल जाते हैं, तब उन दृश्यों के आधार पर खबर लिखी जाती है, जो एंकर पढ़ता है।
एंकर-बाइट-बाइट यानी कथन। एंकर द्वारा किसी घटना की सूचना देने और उसके दृश्य दिखाने के साथ ही उस घटना के बारे में प्रत्यक्षदर्शियों या संबंधित व्यक्तियों का कथन दिखाना और सुनाना |
लाइव-लाइव यानी किसी खबर का घटनास्थल से सीधा प्रसारण।

उत्तर (iii) सरल,आकर्षक व भावानुकूल भाषा,उचित उदाहरण,सच्ची अभिव्यक्ति, तथ्यों का विश्लेषण ।

प्र.10. निम्नलिखित में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दें - 3x2= 6

उत्तर (i) हाँ, क्योंकि किसी के दुःख का व्यावसायिक लाभ लिया गया ।

उत्तर (ii) नासमझ मनुष्य सांसारिक मोह माया में पड़ा रहता है । **दाना-** सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया

नादान- सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया में डूबे मूर्ख लोग | तात्पर्य यह है कि जहाँ सांसारिक लोभ-लालच, मोह-माया है वहीं उसमें डूबने वाले मूर्ख लोग भी हैं जो प्रेम को महत्त्व नहीं देते हैं

उत्तर (iii) कविता व बच्चों की गति असीमित होती है । दोनों में ही रचनात्मक ऊर्जा होती है |दोनों ही हमें आनंद देते हैं | दोनों ही भेदभाव मिटाकर अपनत्व व भाईचारे की भावना बढ़ाते हैं

प्र.11. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दें- 2x2= 4

उत्तर (i) माँ के इंतज़ार में । बच्चे इस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे कि उनकी माँ चिड़िया शीघ्र ही आएगी, उन्हें भोजन देकर उनका भरण-पोषण करेगी | साथ ही उन्हें ढेर सारा प्यार व सुरक्षा भी देगी |

उत्तर (ii) ताकि अपाहिज व्यक्ति रोने लगे और उसे देख कर दर्शक भी रोने लगें ।

उत्तर (iii) चीनी के खिलौने ला कर व घरौंदे मे दिए जलाकर ।

प्र.12. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दें – 3x2= 6

उत्तर (i) समानता व भाईचारे पर आधारित समाज ।

उत्तर (ii) शिरीष हर हालत में आनंदित और प्रसन्न रहता है ।

उत्तर (iii) महामारी फैलने के बाद गाँव में हाहाकार मचा गया | सूर्योदय के बाद दिन में तो लोग कराहते हुए बाहर आते थे और अपने पड़ोसियों व आत्मीयजनों को ढाढ़स बंधाते किन्तु सूर्यास्त होते ही लोग अपनी-अपनी झोंपड़ियों में घुस जाते थे | उनकी बोलने की शक्ति भी समाप्त हो जाती थी | माताएँ अपने दम तोड़ते पुत्र को बेटा भी नहीं कह पाती थी |

प्र.13. किन्ही दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दें – **2x2 = 4**

उत्तर (i) पानी देने और न देने का अंतर । लेखक का मानना था कि जब चारों ओर पानी की कमी है, ऐसे में कठिनाई से इकठ्ठा किया पानी इन्दर सेना पर फेंकना पानी की निर्मम बरबादी है और यह सब अन्धविश्वास व पाखण्ड है |जीजी का मानना था कि इन्दरसेना पर पानी डालना इंद्र देवता को अर्घ्य चढ़ाना है | यह एक तरह का त्याग व दान है | जिस प्रकार किसान 30-40 मन गेहूँ उगाने के लिए 5-6 सेर गेहूँ की बीज के रूप में ज़मीन में बुवाई करता है उसी प्रकार यह भी पानी की बुवाई है | जब हम देंगे तब देवता हमें उसका चौगुना-अठगुना करके लौटाएँगे|
उत्तर (ii) ज़रूरत के समय काम आना ।

उत्तर (iii) हाँ, क्योंकि यह रुचि व योग्यता पर आधारित नहीं है । जातिप्रथा भारतीय समाज में बेरोजगारी व भुखमरी का भी एक कारण बनती रही है क्योंकि यहाँ जाति प्रथा पेशे का दोषपूर्ण पूर्वनिर्धारण ही नहीं करती बल्कि मनुष्य को जीवन भर के लिए एक पेशे में बाँध भी देती है। उसे पेशा बदलने की अनुमति नहीं होती। भले ही पेशा अनुपयुक्त या अपर्याप्त होने के कारण वह भूखों मर जाए।

****